Join The Official Private Channel

Get free access to all Newspapers Mentioned below

1) Times of India
2) Hindustan Times
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) The Hindu
7) Live Mint
8) Financial Express
9) Business standard
+All Editorial PDFs

Uploading starts from 5am. you can check specific uploading time for each of them through this Channel below

Click below to

Join

उहापोह में फंसा अमेरिका

डोनाल्ड ट्रंप की अस्थिर नीतियों की वजह से भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड डील पर बातचीत अधर में लटक गई है। यह अनिश्चितता दोनों में से किसी भी देश के लिए ठीक नहीं। हालांकि अलास्का समिट में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के प्रति ट्रंप का नरम रवैया थोड़ी उम्मीद जरूर जगाता है। ट्रेड डील के लिए अमेरिकी अधिकारियों को इसी 25 तारीख को भारत आना था, लेकिन मौखिक तौर पर बताया गया कि अब यह विजिट नहीं होगी। अभी तक नई तारीखों का ऐलान नहीं हुआ है, जिससे असमंजस बढ़ गया है। पहले माना जा रहा था कि अगस्त आखिर या सितंबर तक दोनों देश एक मिनी डील तक पहुंच जाएंगे। इसके लिए दोनों के बीच कई दौर की वार्ता भी हो चुकी है, लेकिन अब सबकुछ बिल्कुल थम जाना द्विपक्षीय रिश्तों के लिए सही नहीं। व्यापारिक समझौते में क्यों अड़चन आ रही है, इस बारे में अब सभी को पता है, लेकिन भारत की चिंताओं को समझने और बातचीत के जरिये समाधान निकालने के बजाय ट्रंप दबाव की रणनीति अपना रहे हैं। मौजूदा संकट इसलिए भी ज्यादा उलझ गया है, क्योंकि चीन की बढ़ती मनमानी को रोकने के लिए भारत को अहम साझेदार मानने के बावजूद अमेरिका आपसी संबंधों को नुकसान पहुंचाने वाले कदम उठा रहा है। हालांकि इतिहास पर नजर डालें, तो वॉशिंगटन के लिए यह नई बात नहीं लगती। 80 के दशक के आखिर में भी अमेरिका को व्यापार घाटे की चिंता सता रही थी और तब उसके निशाने पर जापान था। उसी दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति को यह अधिकार मिला कि अगर कोई देश अमेरिका के खिलाफ अनुचित व्यापार नीतियां अपनाता है, तो उस पर टैरिफ लगाया जा सके। लेकिन, यह अधिकार मिलने के बाद तत्कालीन यूएस प्रेजिडेंट जॉर्ज एचडब्लू बुश ने जापान के साथ-साथ भारत और अमेरिकी सहयोगियों-यूरोप, दक्षिण कोरिया व ताइवान पर भी एक्स्ट्रा टैक्स लाद दिया। 1989 में जब उन्होंने भारत को टारगेट किया था, तब भी सरकार का यही कहना था कि वह किसी दबाव में नहीं झुकेगी। अमेरिका फिर से इतिहास को दोहरा रहा है। ट्रंप चीन को सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी मानते हैं, लेकिन सबसे पहले समझौता उसी से किया। वहीं यूरोपीय संघ (इयू) और भारत जैसे सहयोगियों के प्रति उनका रुख ज्यादा अड़ियल है। इयू ने भले डील कर ली हो, पर उसके कई सदस्य देश इससे खुश नहीं हैं। ऐसे में भारत को ट्रंप प्रशासन से बात करते हुए अमेरिका के अतीत और आज के हालात, दोनों पर नजर रखनी होगी। यह डील अमेरिकी इकॉनमी के लिए भी उतनी ही जरूरी है, जितनी भारत के लिए।

ढहते पहाड़, फटते बादल, कब थमेगा कुदरत का कहर ?

महेश खरे

(वरिष्ठ पत्रकार)

कुदरत ने जिस धरती को अपनी नैमतों से नवाजा और संवारा है। पेड़, पानी और पहाड़ों के सौंदर्य से धरती को स्वर्ग जैसा रूप दिया है। उसी धरती के साथ जब आदमी विकास के नाम पर छेड़छाड़ करता है तो प्रकृति बदला भी उसी अनुपात में लेती है। कहीं पहाड़ दरक रहे हैं तो कहीं बादल फट रहे हैं। प्रकृति के कोप से उफनते सैलाब आए दिन कोहराम मचा रहे हैं। हम बात उस कश्मीर की कर रहे हैं जिसके बारे में कभी अमीर खुसरो ने कहा था-'गर फिरदौस बर रूये जमी अस्त। हमी अस्त, हमी अस्त, हमी अस्त।' अर्थात अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है। इस धरती को जिसने देखा उसने भी यही कहा। लेकिन, आज कुदरत के कहर से इन वादियों के कुछ हिस्सों में चीखें गूंज रहीं और आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे। कमोवेश ऐसा ही दर्दनाक मंजर उत्तरकाशी के धराली गांव में है। इस बार बरसात का मौसम जम्मू- कश्मीर, उत्तराखंड और हिमाचल समेत सीमावर्ती राज्यों में मुसीबतें लेकर आया। अब तक बादल फटने के 40 से अधिक छोटे-बड़े हादसे हो चुके हैं।

167 लोगों को बचा लिया गया है। पूर्व सीएम फारुख अब्दुल्ला ने आशंका जाहिर की है कि '500 लोग या तो बह गए हैं या मलबे में दबे हो सकते हैं।' बिलखते परिजन अपनों की खोज में भटक रहे हैं। जहां मकान, दुकान, बागान, बसें और कारें बह गई हों वहां इंसान की क्या बिसात? हर जुबान पर एक ही सवाल है। इन हरी भरी वादियों में तबाही के और कितने सैलाब बाकी हैं? पुंछ और पहलगाम भी बादल फटने के संताप से गुजर चुके हैं। किश्तवाड़ से पहले हिमाचल के रामपुर बुशहर और लाहौल स्पीति में भी कुदरत अपना रौद्र रूप दिखा चुकी है। उत्तराखंड के धराली में तो एक के बाद एक आए पांच-छह सैलाबों ने देश को झकझोर कर रख दिया है। दस दिन बाद भी 100 से अधिक लोगों की तलाश हो रही है। सैलाब से सुरक्षित बचे लोगों के अनुसार धराली की कहानी कुछ प्राकृतिक तो है ही मानव निर्मित भी है।

उत्तराखंड के धराली गांव में 5 अगस्त को बादल फटकर ऐसे जख्म दे गया जो दस दिन बाद भी हरे हैं। इसके बाद घाटी के किश्तवाड़ जिले के चिशोटी गांव में बादल सैलाब बनकर फटे और गांव में बबार्दी के निशान छोड़ गए। दोनों जगह तबाही ऐसे समय दबे पांव आई जब वहां भीड़ ज्यादा रहती है। मचैल माता मंदिर में 16-17 अगस्त को लगने वाले मेले में हर साल श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। मंदिर में दर्शन के लिए उमड़ी भीड़ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले साल दो लाख से ज्यादा श्रद्धालु आए थे। मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं का बेस कैम्प चिशोटी गांव ही है। लोग मचैल माता के दर्शन करने के लिए कार-बस से चिशोटी पहुंचते हैं। यहां से दो दिन की पैदल यात्रा शुरू होती है।

लोग बताते हैं- दोपहर में एक धमाका हुआ और जब तक कोई कुछ समझ पाता। सैलाब सामने था। कुछ लोग जो भाग सकते थे बच गए। जो नहीं भाग पाए वे या तो मलबे में दब गए या सैलाब उन्हें बहा ले गया। एनडीआरएफ, सेना और लोकल पुलिस के जवान राहत कार्य में जुटे हैं। 65 शव मिल चुके हैं। 38 घायलों की हालत गंभीर है।

167 लोगों को बचा लिया गया है। पूर्व सीएम फारुख अब्दुल्ला ने आशंका जाहिर की है कि '500 लोग या तो बह गए हैं या मलबे में दबे हो सकते हैं।' बिलखते परिजन अपनों की खोज में भटक रहे हैं। जहां मकान, दुकान, बागान, बसें और कारें बह गई हों वहां इंसान की क्या बिसात? हर जुबान पर एक ही सवाल है। इन हरी भरी वादियों में तबाही के और कितने सैलाब बाकी हैं? पुंछ और पहलगाम भी बादल फटने के संताप से गुजर चुके हैं। किश्तवाड़ से पहले हिमाचल के रामपुर बुशहर और लाहौल स्पीति में भी कुदरत अपना रौद्र रूप दिखा चुकी है।

उत्तराखंड के धराली में तो एक के बाद एक आए पांच-छह सैलाबों ने देश को झकझोर कर रख दिया है। दस दिन बाद भी 100 से अधिक लोगों की तलाश हो रही है। सैलाब से सुरक्षित बचे लोगों के अनुसार धराली की कहानी कुछ प्राकृतिक तो है ही मानव निर्मित भी है। विकास के नाम पर पहाड़ तोड़ कर रास्ते बन रहे हैं। जंगल कट रहे हैं और कांक्रीट बढ़ता जा रहा है। प्रकृति के दोहन में आदमी आक्रामक है। वह आगा पीछा नहीं देख रहा। नतीजा यह है कि जलवायु परिवर्तन के रूप में मौसम हमारे सामने समस्याएं लेकर खड़ा है।

वैसे भी किसी जगह पर बहता पानी देख कर मानव का मन रोमांच से भर जाता है। जल क्रीड़ा करने को मन मचल उठता है। ठहरे जल से बने पोखरों या तालाबों में जो हादसे होते हैं उसके पीछे सेल्फी का क्रेज तो है ही। पानी से जुड़ा रोमांच भी है। प्राचीन काल से ही नागरिकों की बसाहट नदी तालाबों या अन्य जल स्त्रोतों के किनारे होती रही है। जीवन के लिए वैसे भी जल जरूरी है। कहते भी हैं- जल ही जीवन है। धराली में भी नदी किनारे बसने की ललक या रोमांच ज्यादा नुकसान का कारण बना। हरे भरे पेड़, पहाड़ और पानी का आकर्षण कुछ ज्यादा ही होता है। सैलाब से हर्षिल गांव में झील बन गई है। यह कृत्रिम झील पूरे हर्षिल के लिए खतरा बनी हुई है। गंगोत्री नेशनल हाइवे का नामोनिशान मिट गया। अब वहां मलवा ही मलवा जमा है। समीप ही सेना का कैम्प तबाह हो गया। गायब सैनिकों को अभी भी खोजा जा रहा है। मात्र 34 सैकेंड में छोटे से धराली गांव के लोगों के घरौंदों के साथ उम्मीदों भरे सपने बह गए।

आखिर बादल फटते क्यों हैं? इसके बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जाना पहचाना है। विज्ञान कहता है जब किसी छोटे से क्षेत्र में अचानक और बहुत तेज बारिश (100 मिलीमीटर या उससे अधिक) होती है। और जब आकाश में छाए बादलों तक नमी पहुंचनी बंद हो जाती है, तब शीतल हवा के झोंके बादलों में प्रवेश कर जाते हैं। नतीजतन सफेद बादल काले बादलों में बदल जाते हैं और तेज बारिश शुरू हो जाती है। जब नमी और गर्मी का स्तर वातावरण में काफी बढ़ जाता है। तब ही बादल फटने की घटनाएं होती हैं और धरती पर पलक झपकते ही जानलेवा जलप्रलय तबाही मचाने लगती है। बादल में पानी जितनी मात्रा में होता है बाढ़ का वेग भी उसी अनुपात में कम ज्यादा होता है।

उत्तराखंड, केरल, जम्मू-कश्मीर, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में 1998 से 2022 के बीच पहाड़ ढहने की सबसे अधिक घटनाएं हुईं। इस सूची में मिजोरम सबसे ऊपर है, जहां पिछले 25 वर्षों में 12,385 भूस्खलन के हादसे हुए। 2017 अकेला ऐसा वर्ष है जिसमें 8,926 पहाड़ दरकने की घटनाएं हुईं। एक साल पहले ही तो केरल का वायनाड भूस्खलन और बाढ़ की त्रासदी झेल चुका है। एक रात में मुंडक्कई, चूरलमाला और मल्लापुरम की तबाही से अभी भी लोग उबर नहीं पाए हैं। बढ़ते शहरीकरण और जंगलों की बेतहाशा कटाई का खामियाजा गांव को ही ज्यादा उठाना पड़ता है। प्रकृति के कोप का भाजन ग्रामीण इलाके ही बनते हैं। जलवायु परिवर्तन का दंश शहर भी झेल रहे हैं। मुंबई, पुणे, दिल्ली, गुरुग्राम जैसे हाई-टेक शहरों में बाढ़ और भूस्खलन के दृश्य आम हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

बायोमेट्रिक वोटर कार्ड में विवादों का हल

पुष्परंजन

(वरिष्ठ पत्रकार)

पश्चिमी अफ्रीकी देश गाम्बिया, मैं घूमने नहीं, बच्चियों का जबरन खतना किये जाने पर रिपोर्टिंग के लिए गया था। गाम्बिया मेनलैंड अफ्रीका का सबसे छोटा देश है। इसकी उत्तरी, पूर्वी, और दक्षिणी सीमा सेनेगल से मिलती है। लगभग 28 लाख की आबादी वाले इस देश की एक-तिहाई जनसंख्या अंतर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा 1.25 डॉलर प्रतिदिन से नीचे रहती है। दिलो-दिमाग में बैठा हुआ था, कि यह अफ्रीकी देश काफी पिछड़ा हुआ होगा। लेकिन यह भ्रम वहां की पत्रकार फातो कमारा से मिलने के बाद टूट गया। उन्हीं से जानकारी मिली कि गाम्बिया दुनिया का पहला देश है, जहां मतदाताओं के लिए बायोमेट्रिक कार्ड 2009 में इश्यू किया गया था।

सितम्बर, 2010 में भारत ने आधार कार्ड जारी किया था, जिसे वोटर कार्ड से भी पहचान के वास्ते जोड़ा जाने लगा। लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। चुनाव आयोग ने नागरिकों के लिए अपने आधार नंबर को अपने मतदाता पहचान पत्र (जिसे चुनावी फोटो पहचान पत्र या ईपीआईसी भी कहा जाता है) से जोड़ना स्वैच्छिक बना दिया है। मतदाताओं को अपने कार्ड लिंक करते समय आधार प्रमाणीकरण के लिए अपनी सहमति फॉर्म 6-बी में देना आवश्यक है। एक बार सहमति दे देने के बाद उसे वापस लेने का कोई प्रावधान नहीं है। लेकिन, सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट किया है, कि आधार कार्ड होना नागरिकता का प्रमाणीकरण नहीं है। पूरा देश जिस तरह नागरिकता को लेकर बहस में उलझा है, वह भारत में वोटर पहचानपत्र की वैधता पर सवाल खड़ा करता है। क्या भारत में जारी वोटर आई कार्ड दोषपूर्ण है? और यदि है, तो उसे कैसे दुरुस्त किया जा सकता है?

कई देश नागरिकता, या उससे संबंधित पहचान के उद्देश्यों के लिए बायोमेट्रिक कार्ड का उपयोग करते हैं। अल्बानिया, ब्राजील, नीदरलैंड और सऊदी अरब ऐसे मुल्क हैं, जिनके राष्ट्रीय बायोमेट्रिक पहचान पत्र यात्रा दस्तावेजों के लिए अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (आईसीएओ) के मानक का पूरी तरह से अनुपालन करते हैं। इसके अतिरिक्त, नॉर्वे, आइसलैंड और लिश्टेन्टाइन जैसे देश, यूरोपीय संघ के मानकों का पालन करने वाले बायोमेट्रिक पहचान पत्र जारी करते हैं। कुछ देश अपनी व्यापक राष्ट्रीय पहचान प्रणालियों में बायोमेट्रिक्स का उपयोग करते हैं, जिन्हें नागरिकता या उनकी रिहाइश से जोड़ा जा सकता है। यूरोपीय संघ के सदस्य देश बायोमेट्रिक पहचान पत्र जारी करने के लिए बाध्य हैं, और इन्हें आमतौर पर ईयू और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के भीतर वैध यात्रा दस्तावेजों के रूप में स्वीकार किया जाता है।

यूरोपीय आर्थिक क्षेत्र (ईईए) के सदस्य देशों, जिनमें नॉर्वे, आइसलैंड और ऑस्ट्रिया व स्विट्जरलैंड के बीच छोटा सा देश लिश्टेन्टाइन शामिल हैं, उन्हें भी यूरोपीय संघ के नियमों के अनुरूप बायोमेट्रिक पहचान पत्र जारी करना आवश्यक है। कई देशों ने अनिवार्य राष्ट्रीय पहचान प्रणालियां लागू की हैं, जिनमें अक्सर विभिन्न पहचान उद्देश्यों के लिए बायोमेट्रिक डेटा, जैसे उंगलियों के निशान या चेहरे की पहचान, शामिल होता है। इनमें अर्जेंटीना, बेल्जियम, कोलंबिया, जर्मनी, इटली, पेरू और स्पेन जैसे देश शामिल हैं। अल्बानिया, ब्राजील, नीदरलैंड, सऊदी अरब के राष्ट्रीय बायोमेट्रिक पहचान पत्र, यात्रा दस्तावेज माने जाते हैं। पश्चिमी अफ्रीकी देश गाम्बिया ने बायोमेट्रिक पहचान पत्र, ह्यगैम्बीसह्न लागू किए हैं, जो यात्रा के साथ निवास परमिट भी है। तंजानिया भी, गाम्बिया की तरह चुनावों के लिए बायोमेट्रिक मतदाता पंजीकरण को फुल प्रूफ मानता है।

पोलैंड अपनी राष्ट्रीय पहचान प्रणाली में फि ंगर प्रिंट बायोमेट्रिक का उपयोग करता है। भारत केवल आधार प्रमाणीकरण के लिए बायोमेट्रिक्स का उपयोग करता है, जो बैंकों, कोर्ट और विभिन्न उपक्रमों में केवाईसी या रजिस्ट्रेशन के काम आते हैं। राष्ट्रमंडल पर्यवेक्षक समूह ने सिफारिश की है कि राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईडी) जैसी फोटो पहचान प्रक्रिया का उपयोग मतदाता सूची की सटीकता में उल्लेखनीय सुधार कर सकता है और चुनाव में आम विश्वास बढ़ा सकता है।

पिछले एक दशक में, बायोमेट्रिक मतदाता पंजीकरण (बीवीआर) जैसी तकनीक जटिल चुनावी चुनौतियों और जालसाजी का सामना करने के लिए रामबाण साबित हुई है। ह्यबीवीआरह्न मतदाता की विशिष्ट शारीरिक विशेषताओं का विश्लेषण करता है, ताकि उनकी पहचान और मतदान के लिए उनकी पात्रता की पुष्टि की जा सके। यह तकनीक किसी व्यक्ति की पहचान की चोरी, एक से अधिक मतदान, धोखाधड़ी, और हेरफेर के अन्य तरीकों को टारगेट करती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है आंखों की बायोमेट्रिक। आंखों की रेटिना में हेराफेरी अब तक किसी तकनीक के जरिये सम्भव नहीं हुआ है।

बायोमेट्रिक तकनीक में व्यवहार संबंधी विशेषताओं का भी विश्लेषण, व्यक्ति की आवाज, की-स्ट्रोक या हस्तलेखन शामिल हैं। अक्सर, स्कैन किए गए हस्ताक्षर मतदाता की बायोमेट्रिक प्रोफाइल का हिस्सा होते हैं। सभी बायोमेट्रिक डेटा को पहले एक कैमरे या सेंसर द्वारा एक छवि के रूप में कैप्चर किया जाता है। फिर छवि को एक बायोमेट्रिक टेम्पलेट के जरिये डेटाबेस में संगृहीत किया जाता है। इसे प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक रूप से मतदाता पहचान पत्र में जोड़ा जा सकता है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के अनुसार, सर्वेक्षण किए गए 130 देशों में से 25 प्रतिशत देश मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की पहचान के लिए बायोमेट्रिक जानकारी का उपयोग करते हैं। कई मामलों में मैन्युअल सत्यापन शामिल होता है। जैसे कि एक मतदानकर्मी, मतदाता सूची में किसी मतदाता की तस्वीर के आधार पर उसकी उपस्थिति की जांच करता है। बीवीआर का उपयोग मुख्य रूप से अफ्रीका, पश्चिम एशिया, और लैटिन अमेरिका में होना शुरू हो गया है। मोरक्को, कोलंबिया, पेरू, भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान केवल फिंगर प्रिंट स्कैन करते हैं। कई देश दोनों एकत्र करते हैं, जैसे मेक्सिको, नाइजीरिया और मोजाम्बिक। ब्राजील जैसे अन्य देश तस्वीरों और फिंगरप्रिंट के अलावा हस्ताक्षर भी एकत्र करते हैं।

ऐसा भी नहीं, कि दुनिया के सारे देश बायोमेट्रिक स्वीकार कर लें। कुछ देशों में बायोमेट्रिक डाटा, सांस्कृतिक मान्यताओं और प्रथाओं का उल्लंघन कर सकता है। मसलन, पापुआ न्यू गिनी में, मतदाता के बारे में इतनी डिटेल जानकारी होती है, जिसके दुरुपयोग का खतरा बना रहता है। बायोमेट्रिक के बारे में नकारात्मक अफवाहें भी फैलती हैं। सवाल उठता है, कि क्या दुष्ट लोग इसके डेटा में संग्रह जानकारी का जादू-टोने में इस्तेमाल कर सकते हैं?

उदाहरण के लिए, नाइजीरिया के ग्रामीण इलाकों में कुछ मतदाताओं का मानना है कि बायोमेट्रिक डेटा, जैसे कि उनकी तस्वीर, उन्हें ह्यशैतानी हरकतोंह्न का शिकार बना सकता है। सोलोमन द्वीप समूह में लोग संदेह करते हैं, कि दुष्ट आत्माओं को अपने शत्रु के शरीर पर सवारी के लिए लोग बायोमेट्रिक तस्वीरों का इस्तेमाल कर सकते हैं। फिर भी, भारत जैसा विविधताओं और बहुसांस्कृतिक देश में जादू-टोना बेमानी है। जिस तरह चुनावी पहचान के दुरुपयोग की बातें समय-समय पर उठती हैं, बायोमेट्रिक वोटर कार्ड एक बेहतर उपाय है!

यूरोपीय आर्थिक क्षेत्र (ईईए) के सदस्य देशों, जिनमें नॉर्वे, आइसलैंड और ऑस्ट्रिया व स्विट्जरलैंड के बीच छोटा सा देश लिश्टेन्टाइन शामिल हैं, उन्हें भी यूरोपीय संघ के नियमों के अनुरूप बायोमेट्रिक पहचान पत्र जारी करना आवश्यक है। कई देशों ने अनिवार्य राष्ट्रीय पहचान प्रणालियां लागू की हैं, जिनमें अक्सर विभिन्न पहचान उद्देश्यों के लिए बायोमेट्रिक डेटा, जैसे उंगलियों के निशान या चेहरे की पहचान, शामिल होता है। इनमें अर्जेंटीना, बेल्जियम, कोलंबिया, जर्मनी, इटली, पेरू और स्पेन जैसे देश शामिल हैं। अल्बानिया, ब्राजील, नीदरलैंड, सऊदी अरब के राष्ट्रीय बायोमेट्रिक पहचान पत्र, यात्रा दस्तावेज माने जाते हैं। पश्चिमी अफ्रीकी देश गाम्बिया ने बायोमेट्रिक पहचान पत्र, ह्यगैम्बीसह्न लागू किए हैं, जो यात्रा के साथ निवास परमिट भी है। तंजानिया भी, गाम्बिया की तरह चुनावों के लिए बायोमेट्रिक मतदाता पंजीकरण को फुल प्रूफ मानता है। पोलैंड अपनी राष्ट्रीय पहचान प्रणाली में फिंगर प्रिंट बायोमेट्रिक का उपयोग करता है। भारत केवल आधार प्रमाणीकरण के लिए बायोमेट्रिक्स का उपयोग करता है, जो बैंकों, कोर्ट और विभिन्न उपक्रमों में केवाईसी या रजिस्ट्रेशन के काम आते हैं। राष्ट्रमंडल पर्यवेक्षक समूह ने सिफारिश की है कि राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईडी) जैसी फोटो पहचान प्रक्रिया का उपयोग मतदाता सूची की सटीकता में उल्लेखनीय सुधार कर सकता है और चुनाव में आम विश्वास बढ़ा सकता है।

संपादकीय

"हम महानता के सबसे करीब तक होते हैं जब हम विनम्रता में महान होते हैं। - रविन्द्रनाथ टैगोर

उपराष्ट्रपति पद के लिए राजग के प्रत्याशी के तौर पर सीपी राधाकृष्णन का चुनाव प्रधानमंत्री मोदी की उसी शैली को दर्शाता है, जिसमें वह महत्वपूर्ण पदों पर चयन के लिए अप्रत्याशित निर्णय लेकर क्या विरोधी, क्या समर्थक, सभी को चौंकाते रहे हैं। हालांकि, इस चयन के सियासी निहितार्थ गहरे हैं।

एक तीर कई निशाने

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) द्वारा महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित करने की घोषणा कई मायनों में चौंकाने वाली है, जो प्रधानमंत्री मोदी की अनोखी शैली को ही प्रतिबिंबित करती है, जिसमें वह महत्वपूर्ण पदों के लिए लोगों के चयन में पारंपरिक राजनीतिक गणनाओं से हटकर अप्रत्याशित निर्णय लेकर विरोधियों के साथ अपने समर्थकों को भी चौंकाते रहे हैं। हालांकि, उनके ऐसे निर्णयों के संदेश भी कोई कम गहरे नहीं होते। तमिलनाडु और केरल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। इस संदर्भ को ध्यान में रखते हुए राधाकृष्णन की राजनीतिक पृष्ठभूमि गौर करने लायक है। चार दशकों से अधिक का राजनीतिक सफर तय कर चुके राधाकृष्णन ने अपनी यात्रा की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से की थी। कोयंबटूर लोकसभा सीट से उन्होंने दो बार चुनाव जीता। 2004 से 2007 तक वह तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष, तो 2020 से 2022 तक भाजपा के केरल प्रभारी भी रहे हैं। अब तमिल मूल के इस नेता को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाना भाजपा के दक्षिण पर अपनी पकड़ बनाने के अभियान का हिस्सा तो समझा जा ही सकता है, इससे खासकर तमिलनाडु को, जहां द्रमुक व अन्नाद्रमुक का वर्चस्व है, एक संदेश देने की कोशिश की गई है। राधाकृष्णन के नाम की एक बड़ी वजह यह भी है कि वह दक्षिण भारत में भाजपा के उन नेताओं में से हैं, जिन्हें संगठन और जनता, दोनों स्तर पर स्वीकार्यता मिली हुई है। उदयनिधि स्टालिन के सनातन धर्म संबंधी बयान पर भी उन्होंने तीखी प्रतिक्रिया दी थी। इसके अलावा, उन्होंने तमिलनाडु और महाराष्ट्र में हो रहे हिंदी विरोध को भी गलत बताया था। महाराष्ट्र के राज्यपाल रहते हुए भी उन्होंने अपेक्षाकृत कम विवादास्पद और संतुलित छवि बनाई है। यह बड़ी वजह है कि उनके नाम पर विपक्ष के लिए भी सीधी आपत्ति जताना कठिन होगा। दूसरी बात यह कि पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़ की ही भांति राधाकृष्णन भी ओबीसी समुदाय से आते हैं। सरकार जाति जनगणना कराने का एलान तो पहले ही कर चुकी है और अब इसी समुदाय से उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार खड़ा करने से विपक्ष इस मामले में तो सरकार को नहीं घेर सकता। राधाकृष्णन वैचारिक रूप से संघ और भाजपा से जुड़े रहे हैं, ऐसे में उनका चुनाव पार्टी के आंतरिक कैडर को भी एक सकारात्मक संदेश देगा। उपराष्ट्रपति पद, भले ही संविधान की दृष्टि से सीमित कार्यकारी शक्ति रखता है, किंतु बतौर राज्यसभा अध्यक्ष यह राष्ट्र को दिशा तो देता ही है। ऐसे में, तेज-तर्रार धनखड़ से उलट राधाकृष्णन जैसी संयमी और सबको साथ लेकर चलने वाली शख्सियत के सामने उनकी टक्कर का उम्मीदवार खड़ा करना विपक्षी इंडिया गठबंधन के लिए भी चुनौती होगी।

संरक्षणवाद का खतरा पहले भी मंडराया है

यह न कहें कि संरक्षणवाद ट्रंप की देन है। अतीत में भी कई राष्ट्रपतियों ने अमेरिकी हितों की रक्षा के नाम पर दूसरे देशों पर टैरिफ लगाए हैं। मुमकिन है कि यह दौर ज्यादा न खिंचे या लंबा खिंचने पर वैश्विक व्यापार की दिशा ही बदल दे। दोनों ही सूरत में भारत को ऐसे ही दृढ़ता से हालात का सामना करना चाहिए।

पिनाकी चक्रवर्ती
एनआईपीएफपी के पूर्व निदेशक

अमेरिका द्वारा पारस्परिक शुल्क (रेसिप्रोकल टैरिफ) को हथियार बनाकर शुरू की गई संरक्षणवादी व्यापार व्यवस्था ने आज वैश्विक अर्थव्यवस्था को सबसे कठिन और अनिश्चित दौर में पहुंचा दिया है। मैंने अपने पिछले कॉलम में उल्लेख किया था कि जब से डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का पद संभाला है, तब से 'पारस्परिक टैरिफ' के माध्यम से अमेरिका द्वारा लगातार ऐसे व्यापार करार थोपना सामान्य बात हो गई है, जिनका उद्देश्य केवल अमेरिकी हित साधना है।

किसी विशेष देश के साथ व्यापार को नियंत्रित करने के लिए टैरिफ का चुनिंदा ढंग से उपयोग केवल संरक्षणवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उससे आगे की चीज है। कई समीक्षकों का मानना है कि इस नीति के पीछे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अन्य देशों के सस्ते निर्यात से बचाने या देश में विनिर्माण को पुनर्जीवित करने जैसे आर्थिक कारण कम, बल्कि अमेरिका द्वारा अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन और वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश अधिक है। इस नीति के चलते अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं-एक ओर जहां चीन ने इस नीति का कड़ा विरोध किया, तो यूरोपीय संघ समझौते के दबाव में झुक गया और जापान ने ऐसा व्यापार करार किया, जिससे वास्तविक लाभ अमेरिका को ही मिला। भारत इसका डटकर विरोध कर रहा है। संभावित समझौतों से जुड़े किसी सकारात्मक फैसले पर पहुंचने के लिए दोनों देशों के बीच जारी बातचीत का भविष्य भी फिलहाल संकट में ही दिख रहा है।

अमेरिका ने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया, जिसमें रूसी तेल की निरंतर खरीद के दंडस्वरूप अतिरिक्त 25 फीसदी शुल्क भी शामिल है। इस लेख का उद्देश्य पारस्परिक शुल्कों और व्यापार समझौतों की विघटनकारी प्रकृति को देखते हुए, भारत पर इसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों ही स्तरों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों का विश्लेषण करना है।

सबसे पहले मैं उन अप्रत्यक्ष प्रभावों पर चर्चा करूंगा, जो स्वाभाविक रूप से अधिक जटिल हैं। राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा फैलाई गई व्यापारिक अनिश्चितताओं के कई वैश्विक निहितार्थ हैं। विश्व बैंक के नवीनतम आंकड़े बताते हैं कि चालू वर्ष में वैश्विक आर्थिक वृद्धि की रफ्तार धीमी पड़ने की आशंका है। ऐसी अनिश्चितताओं का भारत की प्रगति पर भी असर पड़ेगा ही। विभिन्न अनुमान बताते हैं कि पारस्परिक शुल्क के कारण भारत की वृद्धि में 50 से 100 आधार अंकों की गिरावट आ सकती है। दूसरा, रूस कच्चे तेल का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता देश है, जो कुल वैश्विक उत्पादन का 12 फीसदी से अधिक हिस्सा अकेले प्रदान करता है और उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर आता है। ऐसे में, रूसी तेल की खरीद पर रोक लगाने या रूस पर व्यापक प्रतिबंध थोपने के प्रयास लंबे समय तक टिक पाएंगे, ऐसी उम्मीद कम ही है। लेकिन अल्पावधि में कच्चे तेल की आपूर्ति में व्यवधान पैदा होने से ऊर्जा आपूर्ति में कमी आएगी, जिसके कारण बड़े पैमाने पर मुद्रास्फीति की समस्या बढ़ सकती है। भारत को भी इस चुनौती पर ध्यान देना होगा। तीसरा, आर्थिक शक्ति के जिस वैश्विक पुनर्गठन की बात की जा रही है, उससे भी कई चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप अमेरिका के आर्थिक हितों की रक्षा के नाम पर भागीदार देशों को धमकाते-डराते रहेंगे।

इसके प्रत्यक्ष प्रभावों को आसानी से समझा जा सकता है। सर्वविदित है कि अमेरिकी टैरिफ भारत से निर्यात होने वाले क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे। ये प्रभावित क्षेत्र मुख्यतः श्रम-प्रधान उद्योग हैं, जिनमें वस्त्र, रत्न एवं आभूषण, झींगा, चमड़े के सामान, रसायन तथा ऑटो-पार्ट्स प्रमुख हैं। स्पष्ट है कि इन क्षेत्रों पर नकारात्मक असर का सीधा संबंध भारत में रोजगार की स्थिति पर भी पड़ेगा। चूंकि, भारत पहले से ही उच्च बेरोजगारी दर की चुनौती से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में 'ट्रंप-टैरिफ' के कारण रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन विश्लेषण किया जाना नितांत आवश्यक है, ताकि उचित नीतिगत कार्रवाई की जा सके और जिसमें टैरिफ के कारण नौकरी खो सकने वाले लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा/आय हस्तांतरण भी शामिल हो।

पिछले कुछ महीनों में वैश्विक व्यापार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा इस तरह के लेन-देन पर आधारित होती नजर आ रही है, जहां सब कुछ राष्ट्रपति ट्रंप की व्यक्तिगत धारणा और व्याख्या पर टिका प्रतीत होता है। यह अलग बात है कि ऐसी व्यापार नीति दीर्घकाल में अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी बहुत नुकसान पहुंचा सकती है। क्या बढ़ता हुआ संरक्षणवाद वास्तव में सिर्फ ट्रंप की ही देन है? ऐसा नहीं है। 2019 में, *जर्नल ऑफ इकनॉमिक पर्सपेक्टिव* में मैरी अमिटी, स्टीफन जे. रेडिंग और डेविड ई. वीनस्टीन द्वारा प्रकाशित एक महत्वपूर्ण शोधपत्र में इस विषय पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था, जिसमें इसके व्यापक संदर्भों और प्रभावों को साफ तौर पर समझाया गया है। इसमें बताया गया कि 1971 में रिचर्ड निक्सन ने शुल्क योग्य आयात पर 10 प्रतिशत का 'अधिभार (सरचार्ज)' टैरिफ लगाया था। इसके बाद 1977 में जिमी कार्टर ने जूतों के आयात पर कोटा तय किया। 1981 में रोनाल्ड रीगन ने जापानी सरकार पर दबाव डालकर अमेरिका में जापानी ऑटोमोबाइल के निर्यात को सीमित करने वाला 'स्वैच्छिक निर्यात समझौता (वॉलंटरी एक्सपोर्ट रेस्ट्रेंट)' लागू कराया।

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए 2002 में जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने स्टील पर टैरिफ लगाया और 2009 में बराक ओबामा ने चीनी टायरों पर 35 प्रतिशत शुल्क थोप दिया। केवल जॉर्ज एच. डब्ल्यू. बुश और बिल क्लिंटन ने ही इस परंपरा का विरोध किया। बिल क्लिंटन ने तो अपने प्रशासन के पहले साल ही 1993 में उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करके व्यापार को और अधिक उदार बना दिया था। गौरतलब है कि अतीत में अमेरिका द्वारा टैरिफ लगाए जाने के इन उदाहरणों में ज्यादातर में सहयोगी देशों ने विश्व व्यापार संगठन से अमेरिका की शिकायत भी की थी।

तो क्या हम राष्ट्रपति ट्रंप के दिखावटी कदमों पर जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दे रहे हैं? क्या यह दिखावा जल्द ही खत्म होगा या फिर इसमें वैश्विक व्यापार व्यवस्था को जड़ से बदलने की क्षमता है? चाहे जो भी हो, इसके तात्कालिक प्रभाव भी खतरनाक साबित हो सकते हैं। यदि अमेरिकी टैरिफ से उपजी यह व्यापारिक अनिश्चितता लंबे समय तक बनी रहती है, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में अस्थिरता का स्तर और भी गहरा जाएगा। ऐसे में भारत को इस चुनौतीपूर्ण दौर का सामना करने के लिए सीधी टक्कर लेनी ही चाहिए।

जीवन धारा

जेम्स बाल्डविन

जब हम अपने खुद के लिए, अपने समुदाय के लिए या किसी और के लिए शिक्षा और प्रेम का हाथ थामते हैं या आवाज उठाते हैं, तब हम जीवन को और बेहतर बनाते हैं।

हर छोटा कदम मायने रखता है

***जीवन** हमेशा सीधी राह नहीं चलता। कभी चुनौतियां देता है, तो कभी-कभी तोड़ता भी है, लेकिन अंततः यह हमें नया बनाता है। जीवन में बदलाव की शुरुआत तब होती है जब हम साहस के साथ सच्चाई को देखते हैं। चाहे व्यक्तिगत दुख हो, या समाज की गलतियां, इनसे भागना बहुत आसान है, लेकिन भागने से हमें आजादी मिलने वाली नहीं। सच्चाई को साहस के साथ गले लगाना सीखना चाहिए, भले ही वह कड़वी हो। यही साहस हमें मुक्त करेगा। जब हम साहस पाते हैं, तो हम प्रेम करते हैं। प्रेम जीवन का सबसे बड़ा सबक है। प्रेम उन मुखौटों को उतार फेंकता है, जो हमें खोखला बनाते हैं।*

प्रेम हमें स्वयं को स्वीकारना सिखाता है, यह हमें माफ करना सिखाता है। जब हम किसी से प्यार करते हैं, चाहे वह परिवार हो, दोस्त हो, तब हम अपने दिल को खोलते हैं और हम सीखते हैं कि इन्सान होना क्या है। जीवन में बिना शर्त और बिना डर के प्रेम करना चाहिए, क्योंकि प्रेम बगैर जीवन अधूरा है।

जीवन की शुरुआत में हमें लगता है कि दर्द और दिल टूटना दुनिया के इतिहास में अभूतपूर्व है, लेकिन जब हम पढ़ते हैं, प्रेम करते हैं, तब पता चलता है कि जिन चीजों ने हमें सबसे अधिक सताया, वही चीजें हमें उन सभी लोगों से जोड़ती थीं, जो कभी जीवित थे। यानी हमारे पूर्वजों ने भी इसी तरह के संघर्षों का अनुभव किया है, जिससे जुड़ाव और समझ की भावना बढ़ती है। दुनिया भर में, भेदभाव, और अन्याय को, इन बेड़ियों को हम तोड़ सकते हैं। हर छोटा कदम मायने रखता है। जब हम अपने लिए, अपने समुदाय के लिए, या किसी और के लिए शिक्षा और प्रेम का हाथ थामते हैं या आवाज उठाते हैं, तब हम जीवन को और बेहतर बनाते हैं। अपनी हर चुनौती को गले लगाना जीवन का एक और महत्वपूर्ण सबक है। हम सब अपनी कहानियों के साथ पैदा होते हैं। जब हम खुद को स्वीकार करते हैं, तो इससे दूसरों को भी स्वीकार करने की ताकत पाते हैं।

जीवन कठिन हो सकता है। यह हमें निराश करता है, हमें थकाता है। लेकिन आशा कभी न छोड़ें। कोई भी बदलाव रातों-रात नहीं होता। यह धीमा है, यह दर्दनाक है, लेकिन यह संभव है। हर बार जब हम किसी के लिए दया दिखाते हैं, हर बार जब हम प्रेमभाव से लोगों से जुड़ते हैं, हर बार जब हम सच बोलते हैं, हर बार जब हम अपने सपनों के पीछे चलते हैं, हम दुनिया को बदल रहे होते हैं। अपने सपनों को जिएं। अपने डर को हावी न होने दें। जीवन एक यात्रा है, न कि मंजिल। यह उन पलों में है, जब हम हंसते हैं, रोते हैं, लड़ते हैं, और प्यार करते हैं। यह उन क्षणों में है, जब हम गलतियां करते हैं और उनसे सीखते हैं। हमेशा सच्चाई के लिए लड़ें। यही जीवन है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

प्रेमभाव रखें

सूत्र

जीवन की राहें सीधी और सपाट नहीं होतीं, यह एक घुमावदार रास्ते की तरह है, जिसमें कई मोड़ आते हैं। लेकिन हम अपने लक्ष्य तक तभी पहुंच पाएंगे, जब हम इन राहों में आने वाली चुनौतियों का सामना करेंगे। इस जीवन यात्रा में अंतिम पड़ाव आना ही है, इसलिए जब तक सांसें रहें, प्रेमभाव रखें।

दूसरा पहलू

प्राचीन रोम व यूनान में भी खेल और व्यायाम के साथ संगीत सुना जाता था। इसके शारीरिक व मानसिक लाभ दोनों हैं।

प्लूटो, सुकरात और कसरत व संगीत का मेल

आजकल सड़क पर, पार्क में, जिम में या अन्य दूसरी जगह लोगों को जॉगिंग के साथ ही संगीत सुनते हुए देखा जा सकता है। अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सुनने से व्यायाम और भी फायदेमंद हो जाता है। प्राचीन ग्रीक और रोमन लोग भी यह बात जानते थे, भले ही उस समय इसे सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं था। ग्रीक लेखक डियो क्राइसोस्टम (40-110 ईस्वी) ने 'टू द पीपल ऑफ अलेक्जेंड्रिया' नामक अपने भाषण में जिक्र किया कि लोग कोर्टरूम, व्याख्यान कक्ष, डॉक्टर के कमरे और जिम में संगीत सुनते हुए दिखाई देते थे। उस समय कसरत के साथ संगीत सुनना सामान्य समझा जाता था। प्राचीन ग्रीक के चित्रों में संगीत के साथ प्रशिक्षण लेते या प्रतिस्पर्धा करते पेशेवर एथलीटों के कई उदाहरण हैं। 5वीं सदी ईसा पूर्व के एक चित्र में, एथलीट एक प्राचीन वाद्य यंत्र 'ऑलोस' (बांसुरी) की धुन पर प्रशिक्षण लेते दिखते हैं। यूनानी लेखक फ्लेवियस फिलोस्ट्रेटस (लगभग 170-245 ईस्वी) ने बताया कि संगीत एथलीटों को न सिर्फ प्रेरित करता था, बल्कि इससे उनका प्रदर्शन बेहतर होता था। मौजूदा शोधकर्ताओं ने भी इन बातों की पुष्टि की है। वर्ष 2020 में 3,599 लोगों पर किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि व्यायाम के दौरान संगीत सुनने से थकान कम महसूस होती है और शारीरिक प्रदर्शन व सांस लेने की प्रक्रिया बेहतर होती है। हालांकि प्राचीन काल में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं थे, इसलिए लोग व्यायाम के दौरान संगीत सुनने के लिए दूसरे तरीके अपनाते थे। कुछ लोग किसी संगीतकार से संगीत बजवाते थे, तो कुछ लोग खुद गाना गाते थे। होमर की 'ओडिसी' (8वीं शताब्दी ईसा पूर्व) में फायसिया के राजा की बेटी नौसिका अपनी सहेलियों के साथ गाना गाते हुए गेंद से खेलती थी। इतिहासकार डायोजेनेस लेर्टियस के अनुसार, सुकरात की नृत्य करने की आदत थी, क्योंकि उनका मानना था कि यह शरीर को स्वस्थ रखता है। चिकित्सक गैलन ऑफ पर्गमम (129-216 ईस्वी) ने उन व्यायामों की आलोचना की, जो शरीर के केवल एक हिस्से पर केंद्रित थे। वह गेंद वाले खेलों और संतुलित संगीत के पक्षधर थे। महान दार्शनिक प्लूटो ने ज्यादा और अति भावनात्मक संगीत सुनने पर प्रतिबंध लगाने की बात की। उनका मानना था कि संगीत सादा और कम भावनात्मक होना चाहिए, वह भी संयम के साथ। अगर प्राचीन लोग आज के लोगों को कानों में संगीत की धुन बजाते हुए फुटपाथ पर दौड़ते हुए देखते, तो वे निश्चित रूप से हैरान होते। और शायद वे इसे पसंद भी करते, बशर्ते इसकी अति न की जा रही हो।

कॉन्स्टेंटाइन पेनेगायर्स

लेखक फिलोस्ट्रेटस ने बताया कि संगीत न सिर्फ खिलाड़ियों को प्रेरित करता है, बल्कि उनके प्रदर्शन को बेहतर करता है।

गैलन ने उन व्यायामों की आलोचना की, जो शरीर के केवल एक हिस्से पर केंद्रित थे। वह गेंद वाले खेलों और संतुलित संगीत के पक्षधर थे। प्लूटो संगीत को सादा और कम भावनात्मक रखने के पक्षधर थे।

आंकड़े

अपर्याप्त कैलोरी

दुनिया के कई देश ऐसे हैं, जिनकी आधी से ज्यादा आबादी को भोजन में पर्याप्त कैलोरी नहीं मिलती है, इनमें से ज्यादातर अफ्रीका महाद्वीप में हैं।

मेडागास्कर	78.3%
सेंट्रल अफ्रीका ग.	67.0%
जांबिया	65.1%
नाइजीरिया	44.4%
बुरुंडी	41.5%

आंकड़े कुल आबादी में पर्याप्त कैलोरी न मिलने के, प्रतिशत में | स्रोत : World Bank

अंतर्यात्रा

मोरया जी के तपोबल से हिंसक जीव भी दयालु बन जाते थे। लोग उन्हें अपनी समस्याएं बताते, तो वह कहते भगवान का नाम लेने से जीवन स्वयं प्रकाशमय हो जाएगा।

भगवान के नाम का दीप जलाओ

अंतर्यात्रा
संकलित

मोरगांव में वामभट्ट नाम के तपस्वी अपनी पत्नी उमाबाई के साथ रहते थे। श्रीगणेश जी उनके इष्टदेव थे। दोनों पति-पत्नी खेतों से दाने चुन-चुनकर इकट्ठा करते और उन्हीं से जीवन निर्वाह करते थे। श्रीगणेश जी की कृपा से ढलती उम्र में उन्हें एक पुत्र हुआ, जिसका नाम उन्होंने 'मोरया' रखा। मोरया जब कुछ बड़े हुए, तब उन्होंने श्रीगणेशोपासना की दीक्षा ली। कुछ वर्ष बाद मोरया जी की माता का देहांत हो गया और इसी के कुछ समय बाद उनके पिता भी परलोक सिधार गए।

माता-पिता से मिले संस्कारों की वजह से वह भगवान की भक्ति में लग गए। मोरगांव, थेडूर और चिंचवड़ नामक स्थानों पर मोरया जी ने बड़ा कठिन तप किया और अंत में चिंचवड़ में स्थायी होकर रहने लगे। बताते हैं कि चिंचवड़ से दो मील पर पवना नदी किनारे एक निर्जन वन के एकांत में उन्होंने अपनी तपस्या और कठोर कर दी। एक बार तो वह बयालीस दिन तक अपने आसन पर बैठे रहे। इस तपोबल से उन्हें सब सिद्धियां प्राप्त हो गईं। कहते हैं कि बाघ मोरया जी के पास आते ही दयालु बन जाते और सांप निर्विष हो जाते थे। हर दिन कई लोग समस्या के समाधान के लिए मोरया जी के पास आते थे। दृष्टिहीन लोग भी आते, मोरया जी सबसे कहते कि अपने मन में भगवान के नाम का दीप जलाओ, जीवन स्वयं प्रकाशमय हो जाएगा। इस तरह वह बहुत से लोगों की समस्या का समाधान करते थे।

आज का इतिहास

ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक रुपये का सिक्का टकसाल में ढाला

सिक्के की खनक और सिक्के के दो पहलू जैसे बहुत से जुमले हम रोजमर्रा की भाषा में इस्तेमाल करते हैं, लेकिन सिक्कों को पहले कब और किसने बनाया, यह इतिहास के पन्नों में दर्ज है। साल 1757 में 19 अगस्त को ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता में रुपये का पहला सिक्का बनाया था और कंपनी द्वारा बनाए गए पहले सिक्के को बंगाल के मुगल प्रांत में चलाया गया। दरअसल बंगाल के नवाब के साथ एक संधि के तहत ईस्ट इंडिया कंपनी ने साल 1757 में यह टकसाल बनाई थी। 1600 : अहमद नगर पर अकबर का आधिपत्य। 1918 : शंकर दयाल शर्मा का जन्म जो देश के नौवें राष्ट्रपति बने और 1992 से 1997 के बीच देश के इस सर्वोच्च संवैधानिक पद पर रहे। 1949 : भुवनेश्वर ओडिशा की राजधानी बना। 1960 : स्पूतनिक-5 अंतरिक्ष यान से दो कुत्ते और तीन चूहे अंतरिक्ष में भेजे गये। परीक्षण सफल रहा और बाद में यह पांचों जीवित पाए गए। 1964 : संचार उपग्रह सिनकोम 3 का प्रक्षेपण। 1966 : तुर्किये में भूकंप से लगभग 2400 लोग मारे गए।

सिर्फ मरम्मत से काम नहीं चलेगा

धराली व किश्तवाड़ की आपदाएं स्थानीय न होकर, राष्ट्रीय चेतावनियां हैं कि अब मरम्मत वाला रवैया छोड़ पूरे तंत्र को दुरुस्त करने की जरूरत आन पड़ी है।

पत्रलेखा चटर्जी | मुद्दा

हाल ही में आई धराली और उसके बाद किश्तवाड़ की आपदा वर्ष 2013 की केदारनाथ त्रासदी की भयावह यादों को जगा देती है। ये आपदाएं सख्त रूप से दोहराती हैं कि हिमालय जलवायु प्रेरित विनाश का केंद्र बनता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण बादल फटने और हिमनद झीलों के टूटने से बाढ़ें आ रही हैं। धराली और किश्तवाड़ में आई विनाशकारी बाढ़ का कारण इनमें से एक या दोनों ही रहे। ये त्रासदियां पारिस्थितिक रूप से नाजुक क्षेत्रों में आपदाओं के बढ़ते जोखिम और उनके बारे में बढ़ती अनिश्चितता के साथ-साथ भारत की जलवायु संबंधी तैयारियों में गंभीर खामियों, खासकर संवेदनशील हिमनद झीलों के व्यापक डाटाबेस के अभाव को दर्शाती हैं।

धराली व किश्तवाड़ की त्रासदियां पारिस्थितिक रूप से नाजुक क्षेत्रों में अनियोजित और अनियमित विकास के परिणामों को भी उजागर करती हैं। बीते दो दशकों में हिमालयी क्षेत्र में तीव्र गति से हुए सड़क, होटल और जलविद्युत परियोजनाओं जैसे निर्माण कार्यों में पर्यावरणीय आकलन का अभाव देखा गया है। बस्तियां उन क्षेत्रों में फैल गईं, जिन्हें कभी सुरक्षित मानते थे, लेकिन जलवायु परिवर्तन ने नियम पलट दिए हैं। बर्फ के पिघलने से बनीं हिमनद झीलें अब टाइम बम बन गई हैं तथा निगरानी तंत्र और पूर्ण चेतावनी प्रणालियों की कमी निचले इलाकों में रहने वाले समुदायों को असुरक्षित बना रही है। केदारनाथ, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश-और अब धराली व किश्तवाड़ से पर्यावरण जो संकेत देना चाहता है, वे स्पष्ट हैं। अक्सर देखा जाता है कि आपदा के बाद राहत-बचाव कार्य को लेकर तेजी दिखाई जाती है, लेकिन इस बात के प्रयास नहीं किए जाते कि इन आपदाओं से बचा जा सके। ये आपदाएं न सिर्फ बड़े स्तर पर जीवन व आजीविका को क्षति पहुंचाती हैं, बल्कि वे बुनियादी ढांचे पर चोट कर आवागमन व कच्चे माल की उपलब्धता को बाधित करके आपूर्ति श्रृंखलाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से आपूर्ति श्रृंखला में आने वाले व्यवधानों और बुनियादी ढांचे को होने वाले नुकसान के खिलाफ भारत का संघर्ष तेज होता जा रहा है, जिससे कठिन चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। ओडिशा के बाढ़ संभावित जिले जगतसिंहपुर की जिला आपदा प्रबंधन योजना 2025 में कमजोरियों को रेखांकित करते हुए बुनियादी ढांचे के उन्नयन के साथ ही जल निकासी में सुधार और आपातकालीन प्रतिक्रिया केंद्रों के निर्माण की सिफारिश की गई है। तमिलनाडु के अंबत्तूर औद्योगिक क्षेत्र ने चक्रवातों के दौरान बाढ़ के मार्गों को बहाल करने और जलभराव को रोकने के लिए 50 करोड़ रुपये की एक पहल शुरू की है। महाराष्ट्र में पश्चिमी घाटों में भूस्खलन के जोखिमों का समाधान ढलान स्थिरीकरण, पुनर्वनीकरण और आपदा मानचित्रण के माध्यम से किया जा रहा है-जिसमें इंजीनियरिंग और सामुदायिक, दोनों की सहभागिता है। फिर भी, ये पहलें एक खंडित राष्ट्रीय तस्वीर को दर्शाती हैं। भारत का ज्यादातर औद्योगिक बुनियादी ढांचा बढ़ती जलवायु अस्थिरता से निपटने के लिए अब भी अपर्याप्त है। हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक और सेबी की ओर से जलवायु जोखिम से निपटने को लेकर आदेश दिए हैं, लेकिन कड़ाई से पालन के बिना इनके कागजी कार्रवाई बनकर रह जाने की आशंका है। इस मामले में वियतनाम से कुछ सबक ले सकते हैं। वहां तूफान प्रभावित औद्योगिक केंद्रों में केंद्रीकृत आपदा तैयारी योजनाओं में व्यापक जोखिम आकलन, बाढ़ मानचित्रण और त्वरित परिसंपत्ति सुरक्षा प्रोटोकॉल शामिल होते हैं। ह्यू सिटी का विस्तृत बाढ़ मानचित्रण इस बात का उदाहरण है कि कैसे डाटा आधारित शहरी और आपूर्ति श्रृंखला नियोजन जलवायु तैयारी को बेहतर बना सकता है। इसके विपरीत भारत की प्रतिक्रियाशील बुनियादी ढांचे के उन्नयन पर निर्भरता छिटपुट और स्थान विशिष्ट तक सीमित होती है, जिसमें दीर्घकालिक लचीलेपन के लिए आवश्यक सामंजस्य का अभाव होता है।

Special arrangements by Amar Ujala

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेन्ट्स प्रा.लि. के लिए मुद्रक, प्रकाशक समीर माहेश्वरी द्वारा नवभारत प्रेस, नवभारत भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जी.ई.रोड, रायपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित. प्रधान संपादक : समीर माहेश्वरी, संपादक : राजेश आर. जोशी* (पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिये जिम्मेदार)
■ रायपुर फोन : 0771-4343434, 2535555-66-77, ■ भुवनेश्वर : 0674-2380511/2380518 ■ बिलासपुर : 07752-230591, 407748, 224563 ■ वर्ष 66 ■ अंक 85 (रजि.नं. 13045/59 आरएनआई), पो. रजिस्टर्ड नं. छ.ग./रायपुर संभाग/61/2025-27 ■ भिलाई फोन : (0788) 2294181, 4030655

19 hindi nd-06_page 02.qxd 8/18/2025 6:39 PM Page 1

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 19 अगस्त 2025

अलास्का सम्मेलन

दूर की कौड़ी है शांति

यूक्रेन में तीन साल तक चले युद्ध के बाद, अलास्का शिखर सम्मेलन के रूप में युद्ध को समाप्त करने का एक अवसर आया, जहां पुतिन और ट्रंप ने संकट के समाधान पर चर्चा के लिए मुलाकात की। दुर्भाग्य से, उम्मीदें धराशायी हो गईं क्योंकि ज्यादा कुछ नहीं हुआ और सफलता हमेशा की तरह मायावी बनी रही। शिखर सम्मेलन दिखावे, प्रतीकात्मकता और कड़े शब्दों के साथ संपन्न हुआ, लेकिन कोई ठोस समझौता नहीं हो सका। पुतिन ने इस बैठक को एक नई समझ और ट्रंप ने इसे प्रगति बताया, लेकिन इन बयानों के अलावा ज्यादा प्रगति नहीं हो सकी। संघर्ष में प्रमुख हितधारक, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की को शुरू से ही नजरअंदाज करना वास्तव में एक अच्छा विचार नहीं था। जेलेंस्की अब सोमवार को वाशिंगटन में ट्रंप से मिलेंगे। वह सुरक्षा गारंटी पर जोर दे सकते हैं और यूक्रेनी संप्रभुता को कमजोर करने वाले या उसके क्षेत्र को सौंपने वाले किसी भी समझौते को अस्वीकार कर सकते हैं। हालांकि, ट्रंप-पुतिन की मुलाकात कई अन्य मायनों में भी उल्लेखनीय रहीः 2019 के बाद से दोनों नेताओं के बीच यह पहली आमने-सामने की मुलाकात थी और इसमें दुनिया भर में सुर्खियां बटोरने के लिए जरूरी सभी दिखावे मौजूद थे। लेकिन इससे कोई खास हासिल नहीं हुआ। मूलतः, दोनों नेता सीधी बातचीत जारी रखने पर सहमत हुए।

पुतिन ने जोर देकर कहा कि बातचीत ₹बेहद स्पष्ट, ठोस और समय पर₹ हुई, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस बैठक ने मास्को और वाशिंगटन को निर्णयों के और करीब पहुंचा दिया है। ट्रम्प ने भी यही बात दोहराते हुए कहा, जब तक कोई समझौता नहीं होता, तब तक कोई समझौता नहीं होता। लेकिन ये भ्रामक शब्दजाल हैं जो किसी समझौते तक पहुंचने में विफलता को छिपा रहे हैं।

यह स्पष्ट अनुपस्थिति युद्धविराम या शांति की राह का रोडमैप थी। रिपोर्टों से पता चलता है कि पुतिन ने खेरसॉन और जापोरिज्जिया सहित अन्य अग्रिम मोर्चों पर शत्रुता समाप्त करने के बदले में डोनेट्स्क से यूक्रेन की पूरी वापसी की माँग की। ट्रम्प ने एक निजी ब्रीफिंग में जेलेंस्की को यह प्रस्ताव बताया, लेकिन यूक्रेनी नेता ने इसे दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया।

यूरोपीय नेताओं ने, किसी भी एकतरफा अमेरिका-रूस सौदेबाजी से सावधान होकर, तुरंत मास्को पर प्रतिबंधों को मजबूत करने का संकल्प लिया और इस बात पर जोर दिया कि यूक्रेन को भविष्य की वाताओं में पूर्ण रूप से शामिल होना चाहिए।

जेलेंस्की के लिए, वाशिंगटन में ट्रम्प के साथ सोमवार की बैठक निर्णायक हो सकती है। जेलेंस्की के सामने चुनौती यूक्रेन को कूटनीतिक प्रक्रिया में मजबूती से स्थापित करने की होगी, इससे पहले कि ट्रम्प-पुतिन की कोई अनुवर्ती शिखर वार्ता उनके देश के लिए शर्तें तय कर दे। कीव की प्रत्यक्ष भागीदारी के बिना कोई भी स्थायी शांति संभव नहीं है। केवल वाशिंगटन और मास्को के बीच बातचीत से किया गया कोई भी समझौता विफल होने का जोखिम उठाता है और जमीनी स्तर पर उसकी वैधता का अभाव होगा। यूक्रेन बाध्यकारी प्रतिबद्धताएं चाहता है, अस्पष्ट आश्वासन नहीं। इसमें नाटो ढांचे, अमेरिका के नेतृत्व वाली गारंटी या बहुपक्षीय यूरोपीय-अमेरिकी समर्थन शामिल हो सकता है। प्रतिबंध पश्चिम के लिए उपलब्ध कुछ उपायों में से एक हैं।

मॉको की ओर से सत्यापन योग्य कदमों के बिना, समय से पहले उनमें ढील देने से और अधिक आक्रामकता को बढ़ावा मिलने का खतरा है। हालांकि पुतिन की डोनेट्स्क की मांग को सिरे से खारिज कर दिया गया था, लेकिन मानवीय गलियारे, कैदियों की अदला-बदली या स्थानीय युद्धविराम जैसे मध्यवर्ती कदम व्यापक समझौते की दिशा में गति प्रदान कर सकते हैं। असली परीक्षा सोमवार को होगी, जब जेलेंस्की यह सुनिश्चित करने के लिए वाशिंगटन पहुंचेंगे कि यूक्रेन की आवाज न केवल सुनी जाए, बल्कि भविष्य के किसी भी समझौते का केंद्र भी बने। तभी अलास्का में दावा की गई नाजुक समझौते को युद्ध, संप्रभुता और शांति की कठोर वास्तविकताओं का सामना करना पड़ेगा।

विचारों के विरुद्ध निरर्थक लड़ाई

जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने लेखकों की 25 किताबों पर अचानक प्रतिबंध लगा दिया और उन्हें नई दंड संहिता के तहत खतरनाक करार दिया। घाटी में प्रकाशित होने वाली इन किताबों पर रोक लगाने की यह कोशिश ताकत दिखाने से ज्यादा डर का इजहार लगती है।

संतोष मैथ्यू
लेखक, पांडिचेरी विवि में प्रोफेसर हैं।

ऐसे दौर में जब दुनिया का ज्ञान बस एक क्लिक की दूरी पर है, किताबों पर प्रतिबंध लगाना नंगे हाथों से नदी पर बांध बनाने जैसा है, बेकार, अनावश्यक और नाकामी की ओर ले जाने वाला। फिर भी, 5 अगस्त को, जब श्रीनगर में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा समर्थित चिनार पुस्तक महोत्सव का आयोजन लिखित शब्दों का जश्न मनाने के लिए किया गया था, उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने 25 किताबों को दुकानों से हटाने का फैसला किया।

एजी नूरानी, सुमंत्र बोस, अरुंधति रॉय और विक्टोरिया स्कोफील्ड जैसे प्रसिद्ध लेखकों की इन कृतियों को भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 98 के तहत खतरनाक घोषित किया गया और उन पर झूठे आख्यानों को बढ़ावा देने और अलगाववाद का आरोप लगाया गया।

आदेश में इन किताबों को रखने या बांटने पर तीन साल से लेकर उम्रकैद तक की सजा की चेतावनी दी गई थी। प्रतिबंधित किताबों में नूरानी की द कश्मीर डिस्प्यूट 1947-2012 और रॉय की आजादी भी शामिल थीं। गृह विभाग का दावा था कि ये किताबें इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करती हैं, आतंकवादियों का महिमामंडन करती हैं, सुरक्षा बलों को बदनाम करती हैं और शिकायत, पीड़ित होने और आतंकवादियों की बहादुरी को बढ़ावा देती हैं।

पुलिस श्रीनगर की किताबों की दुकानों में पहुंच गई, हालांकि अभी तक किसी भी किताब की जब्ती की कोई पुष्ट रिपोर्ट नहीं है। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से ज्यादातर किताबें पेंगुइन और रूटलेज जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा प्रकाशित और सालों से प्रचलन में हैं। इनका आना न तो नया था और न ही गुप्त। यही बात सोचने पर मजबूर करती हैः अभी क्यों? समय संदिग्ध है। 5 अगस्त को अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण की छठी वर्षगांठ थी। 2019 से, जम्मू और कश्मीर एक केंद्र शासित प्रदेश के रूप में शासित है, और जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 के तहत उपराज्यपाल की शक्तियों में वृद्धि की गई है। जुलाई 2024 में कार्य संचालन नियमों में संशोधन ने मनोज सिन्हा को पुलिस, लोक व्यवस्था, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो और अभियोजन प्रतिबंधों पर व्यापक अधिकार प्रदान किए, ये शक्तियां मुख्यमंत्री के अधिकारों से अधिक हैं।

प्रतिबंध का विरोध करने वाले उमर अब्दुल्ला बताते हैं कि उन्होंने कभी किसी किताब पर प्रतिबंध नहीं लगाया और न ही लगाएंगे। हालांकि, ऐसी व्यवस्था में जहां वास्तविक शक्ति राजभवन के पास है, उनकी राय निर्णायक से ज्यादा प्रतीकात्मक है।

आधिकारिक तर्क, अलगाववादी साहित्य का व्यवस्थित प्रसार, पारदर्शिता या न्यायिक समीक्षा के बिना प्रस्तुत किया गया था। यह सेंसरशिप को एक कुंद हथियार के रूप में इस्तेमाल करने वाली सरकारों की एक लंबी परंपरा से मेल खाता है, जिसके अक्सर प्रतिकूल परिणाम होते हैं।

वास्तव में, इतिहास असफल पुस्तक प्रतिबंधों के कब्रिस्तान जैसा है। पुनर्जागरणकालीन इटली ने गिरोलामो सवोनारोला के नैतिक रोष को देखा, जिन्होंने 1497-98 में फ्लोरेंस में अनैतिक पुस्तकों और कलाकृतियों को जलाकर घमंड की आग का नेतृत्व किया था। एक साल बाद, उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया, फांसी दे दी गई, और उनके आदर्शों को भुला दिया गया, जबकि जिस साहित्य को उन्होंने नष्ट करने की कोशिश की थी, वह पूरे यूरोप में फलता-फूलता रहा।

1933 में, नाजी जर्मनी ने अल्बर्ट आइंस्टीन, फ्रांज काफ्का, सिगमंड फ्रायड और अन्य बुद्धिजीवियों की रचनाओं को निशाना बनाकर सार्वजनिक रूप से पुस्तकें जलाईं। थर्ड रीच को अब एक चेतावनी कथा के रूप में याद किया जाता है, जबकि काफ्का की मेटामोर्फोसिस दुनिया भर की कक्षाओं में पढ़ाई जाती है। भारत में भी साहित्यिक प्रतिबंधों का दौर रहा है, कथित तौर पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए रामा रीटोल्ड (1954), इसी तरह के कारणों से द दा विंची कोड (2006), और लेडी चैटरलीज लवर, लोलिता, यूलिसिस और यहां तक कि द एडवेंचर्स ऑफ टॉम सॉयर पर भी प्रतिबंध। इनमें से कोई भी वास्तव में कभी गायब नहीं हुआ, ये ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध हैं। दमन के प्रयासों ने केवल जिज्ञासा को बढ़ाया और पाठकों की संख्या बढ़ाई।

जैसा कि कहावत है, आप एक लेखक को चुप करा सकते हैं, लेकिन एक किताब को दफना नहीं सकते। आधुनिक संदर्भ में, ऐसे कृत्यों की निरर्थकता और भी स्पष्ट है। आज की दुनिया एक सूचना सुपरहाइवे पर चल रही है, जहां एक क्षेत्र में मुद्रित प्रति पर प्रतिबंध लगाने का कोई मतलब नहीं है, जब ई-पुस्तकें, पीडीएफ और स्कैन किए गए संस्करण सीमाओं के पार स्वतंत्र रूप से प्रसारित होते हैं।

आप स्याही पर प्रतिबंध लगा सकते हैं, लेकिन विचार पर नहीं। विडंबना यह है कि कश्मीर प्रतिबंध और भी खोखला लगता है क्योंकि यह केवल उस क्षेत्र के भीतर ही लागू होता है। जम्मू-कश्मीर के बाहर कोई भी व्यक्ति, या बुनियादी इंटरनेट साक्षरता वाला व्यक्ति, इन पुस्तकों को मिनटों में प्राप्त कर सकता है। नतीजा? स्थानीय लोग, जिन्होंने शायद इनके बारे में कभी नहीं सुना होगा, अब उनके शीर्षक, लेखक और खतरनाक विषय जानते हैं। सामग्री को दबाने के बजाय, यह प्रतिबंध एक अवैतनिक विज्ञापन अभियान है। एक ऐसे क्षेत्र में किताबों पर प्रतिबंध लगाना, जहां पढ़ने की एक गौरवशाली परंपरा रही है, एक खास विडंबना भी है। शेख अब्दुल्ला, कश्मीर का शेर बनने से बहुत पहले, फतेह कदल रीडिंग रूम पार्टी के सचिव थे, जो बाद में नेशनल कॉन्फ्रेंस का केंद्र बना। यह विचार कि कश्मीरी समाज किसी तरह अलग-अलग नजरियों को स्वीकार नहीं कर पाता, न सिर्फ. पाठकों की बुद्धि का अपमान करता है, बल्कि घाटी में राजनीतिक साक्षरता के इतिहास का भी अपमान करता है।

इस तरह की सेंसरशिप का एक अजीबोगरीब दुष्प्रभाव होता हैः यह अन्यथा अस्पष्ट रचनाओं को प्रतिरोध के प्रतीक बना देता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका के कॉमस्टॉक कानून ने 19वीं सदी के अंत में अश्लील साहित्य पर प्रतिबंध लगाकर नैतिकता को नियंत्रित करने का प्रयास किया यह आंदोलन इतना उग्र था कि इसने हमें कॉमस्टॉकरी शब्द दिया। नतीजा? प्रतिबंधित रचनाएं सत्ता को चुनौती देने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए अवश्य पढ़ी जाने वाली पुस्तकें बन गईं।

वर्तमान प्रतिबंध सिर्फ. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मामला नहीं है; यह इस बात की परीक्षा है कि क्या भारत का लोकतंत्र, खासकर संवेदनशील क्षेत्रों में, असहमतिपूर्ण आख्यानों को बर्दाश्त कर सकता है। राज्य बहस, विद्वत्ता और प्रति-प्रकाशनों के माध्यम से उन विचारों को चुनौती दे सकता है जिनसे वह असहमत है, और उसे ऐसा करना भी चाहिए। लेकिन भारतीय न्याय संहिता की धारा 98 को असुविधाजनक पुस्तकों पर लाठी की तरह इस्तेमाल करना, अनुनय-विनय को छोड़कर दबाव डालना है। और इस तरह का दबाव शायद ही कभी लोगों के विचार बदलता है, यह केवल उन्हें भूमिगत कर देता है।

यदि लक्ष्य कश्मीर में शांति बनाए रखना है, तो इतिहास एक अलग दृष्टिकोण सुझाता है। वाचनालय, साहित्यिक उत्सव और खुले पुस्तकालयों का कट्टरपंथ को कम करने का रिकॉर्ड प्रतिबंधों से बेहतर है। ये संवाद के लिए जगह बनाते हैं, समुदायों को विचारों का खुलेआम सामना करने की अनुमति देते हैं बजाय इसके कि उन्हें गुप्त रूप से पनपने दें। जब लोगों पर स्वयं पढ़ने और निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है, तो सामाजिक ताना-बाना मजबूत होता है, कमजोर नहीं। राज्य का कठोर रवैया रणनीतिक रूप से भी दोषपूर्ण है। अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद से, सरकार बार-बार दावा करती रही है कि जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति और प्रगति लौट रही है।

केंद्र द्वारा वित्तपोषित साहित्यिक उत्सव इसी खुलेपन को प्रदर्शित करने के लिए थे। लेकिन एक तरफ साहित्य का जश्न मनाने और दूसरी तरफ उस पर प्रतिबंध लगाने के बीच का विरोधाभास साफ दिखाई देता है। इससे उस विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचने का खतरा है जिसे ऐसे उत्सव बनाने के लिए बनाए जाते हैं।

जैसा कि इतिहास के हर असफल सेंसर ने गवाही दी है, कैलिगुला से लेकर सवोनारोला और गोएबल्स तक, लोगों को कुछ पढ़ने के लिए मजबूर करने का सबसे पक्का तरीका उन्हें यह बताना है कि वे उसे नहीं पढ़ सकते।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

ट्रंप की नीतियों के वैश्विक परिणाम

ट्रंप की नीति ने दोस्तों को भले ही दुश्मन न बना दिया हो, पर उनसे दूरी जरूर बनाई है। यह अमेरिका को रणनीतिक और कूटनीतिक रूप से मुश्किल में डाल देगा।

बंशीधर रुखइयार
लेखक, राजनीतिक टिप्पणीकार हैं।

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका को फिर से महान बनाओ के आकर्षक नारे के साथ सत्ता में आए थे। हालांकि, इस साल दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के बाद पिछले कुछ महीनों में उन्होंने ठीक इसके उलट काम किया है। ट्रंप को इस बात की चिंता थी कि अमेरिका दुनिया के दूसरे हिस्सों में निर्मित वस्तुओं और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त सेवाओं का उपभोक्ता मात्र बनकर रह गया है। उन्होंने अमेरिका को फिर से दुनिया का कारखाना बनाने का वादा किया था।

उन्हें यह एहसास नहीं था कि वस्तुओं का निर्माण आउटसोर्स किया जा रहा है क्योंकि एशिया और लैटिन अमेरिका में कुशल और अकुशल, दोनों तरह के श्रम सस्ते हैं, और यह व्यवस्था अमेरिकी अर्थव्यवस्था और नागरिकों, दोनों के लिए फायदेमंद है। इसके अलावा, आपूर्ति श्रृंखला के मौजूदा तंत्र को बदलना आसान और समय लेने वाला नहीं है। उन्होंने दुनिया के खिलाफ जो टैरिफ युद्ध छेड़ा है, वह अमेरिकी अर्थव्यवस्था को विनिर्माण और आत्मनिर्भरता की ओर वापस लाने की एक हताशा भरी कार्रवाई है। इसका अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर उल्टा असर पड़ेगा। अमेरिकी अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए अपनी टैरिफ नीति पर ट्रंप के उतार-चढ़ाव भरे बयानों ने अमेरिका को फायदे से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है।

दुनिया का कोई भी देश यह नहीं समझ पा रहा है कि ट्रंप की टैरिफ मांग के साथ कैसे तालमेल बिठाया जाए क्योंकि वह अपने लक्ष्य बदलते रहते हैं। इसने वैश्विक अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया है और अमेरिकी राष्ट्रपति पद की छवि को अभूतपूर्व रूप से धूमिल किया है।

ट्रंप की नीति ने दोस्तों को भले ही दुश्मन न बना दिया हो, पर उनसे दूरी जरूर बनाई है। यह अमेरिका को रणनीतिक और कूटनीतिक रूप से मुश्किल में डाल देगा। कोई भी समझदार अमेरिकी राष्ट्रपति भारत को चीन के करीब नहीं धकेलेगा क्योंकि यह स्पष्ट कारणों से वांछनीय नहीं है। रूस के साथ भारत की निकटता कोई नई बात नहीं है और यह भारत पर कठोर टैरिफ दरें

लगाने का एक बहाना है। भारत आजादी के बाद से ही रूस से रक्षा हथियार खरीदता रहा है और मैत्रीपूर्ण संबंध उनके रखरखाव को सुनिश्चित करेंगे। भारत नए रूसी प्लेटफॉर्म खरीदने से खुद को नहीं रोक सकता क्योंकि ये सस्ते और किफायती हैं और रूस भी तकनीक हस्तांतरण और संयुक्त उद्यम के तहत भारत में इनके निर्माण के लिए तैयार है। अमेरिका भारत को ये सुविधाएँ देने को तैयार नहीं है। अमेरिकी प्लेटफॉर्म की लागत बहुत ज्यादा है और वास्तविक युद्धक्षेत्र में उनका प्रदर्शन उनकी कीमत के अनुरूप नहीं है। इसलिए अमेरिका को अमेरिकी प्लेटफॉर्म खरीदने के लिए भारत और अन्य देशों पर दबाव बनाना पड़ता है। रूस से रियायती दरों पर रूसी कच्चा तेल खरीदना कोई नई बात नहीं है। इस बीच, ट्रंप ने भारत पर पच्चीस प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है।

रूसी कच्चे तेल के आयात और कथित तौर पर रूस को वित्तपोषित करने के लिए पच्चीस प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क भी लगाया गया है, जिससे वह यूक्रेन के साथ युद्ध जारी रख सके। यह भारत को निशाना बनाने का एक बचकाना बहाना है, जबकि अमेरिका सहित अन्य देश रूस से ऊर्जा और अन्य वस्तुएँ आयात कर रहे हैं। विवाद का केंद्र कृषि और डेयरी क्षेत्र है, जिसे ट्रम्प चाहते हैं कि भारत अमेरिकी कृषि और डेयरी उत्पादों के लिए खोल दे। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसा करने से इनकार कर दिया है। यह बिल्कुल तार्किक है क्योंकि भारत की एक बड़ी आबादी कृषि और पशुपालन पर निर्भर है और उनकी कमजोरी सस्ते और अत्यधिक सब्सिडी वाले अमेरिकी उत्पादों के सामने उजागर नहीं हो सकती। इसके अलावा, अमेरिकी अपने मवेशियों को ऐसा चारा खिलाते हैं जिसमें मांस भी होता है। धार्मिक कारणों से यह भारत को स्वीकार्य नहीं हो सकता। ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व ने विश्व अर्थव्यवस्था और वैश्विक कूटनीति को अथाह नुकसान पहुँचाया है। ट्रम्प ने कूटनीति और व्यापार के सभी नियमों की धज्जियां उड़ा दी हैं। वह चीन की दुकान में पागल सांड की तरह काम कर रहे हैं। इसका नतीजा ब्राजील और भारत की खुली अवज्ञा है।

अमेरिका और नाटो के प्रति एक गठबंधन (रूस, भारत और चीन) के रूप में आकार लेने लगा है। यह कैसे आकार लेगा, यह कहना अभी जल्दबाजी होगी। भारत और ब्राजील की जवाबी कार्रवाई से अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी नुकसान होगा। भारत और बाकी दुनिया को धैर्य रखने की जरूरत है।

अमेरिकियों को जल्द ही एहसास हो जाएगा कि ट्रम्प ने अमेरिकी राष्ट्र को कितना नुकसान पहुंचाया है। तब तक, भारतीय नेतृत्व को एक सूक्ष्म प्रतिक्रिया देनी चाहिए। साथ ही, भारतीय अर्थव्यवस्था और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सभी उपाय किए जाने चाहिए।

आप की बात

जनजातीय समाज में नई सुबह

छत्तीसगढ़ के सूरजपुर के मानी गांव से उठी एक बेटी की पुकार ने सदियों पुरानी परंपराओं की दीवारों को हिलाकर रख दिया। धइया, एक साधारण आदिवासी महिला, की आवाज ने न सिर्फ.परिवार की चुप्पी तोड़ी, बल्कि सुप्रीम कोर्ट को भी झकझोर दिया। यह ऐतिहासिक फैसला कागजों से परे, हर उस बेटी के दिल में गूंजा, जिसे कभी हक से वंचित किया गया। यह महज कानूनी जीत नहीं, बल्कि 10.42 करोड़ आदिवासियों के लिए सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, जो बेटियों को पैतृक संपत्ति में हक दिलाता है। मगर, क्या यह रूढ़ियों के तूफान में डट पाएगा? धइया के पिता ने अपनी जमीन पांच बेटों में बांट दी, बेटी को परंपराओं की आड़ में खाली हाथ छोड़ दिया। उनके बेटे ने 1993 में न्याय की गुहार लगाई, पर स्थानीय और हाईकोर्ट ने रिवाजों का हवाला देकर हक नकारा। 32 साल की अटूट लड़ाई के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने कहा–लिंग आधारित भेदभाव संविधान के अनुच्छेद 14 और 15(1) का उल्लंघन है। कोर्ट ने रिवाजों को ललकारा, जो अन्याय को पोषित करते हैं। यह फैसला सभी के लिए हर्ष का कारण नहीं। कुछ इसे संस्कृति पर खतरे की तरह देखते हैं, चिंता जताते हैं कि बाहरी लोग संपत्ति के लालच में आदिवासी बेटियों से विवाह करेंगे। जवाब में युवा आवाजें कहती हैं, जमीन की सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनें। यह फैसला बेटियों के सम्मान, पहचान और हक की जंग है।

- **आरके जैन**, बड़वानी, मप्र

भारत का स्पष्ट संकेत

भारत ने हाल ही में अमेरिका को साफ संकेत दे दिया कि देश अपने किसानों और कृषि क्षेत्र के हितों से कोई समझौता नहीं करेगा। अमेरिका चाहता है कि भारत डेरी क्षेत्र और जीएम (जेनेटिकली मॉडिफाइड) मक्का व सोयाबीन के लिए अपना बाजार खोले, लेकिन भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि इस क्षेत्र में किसी प्रकार की रियायत संभव नहीं है। इसके पीछे सिर्फ आर्थिक कारण ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाएं भी जुड़ी हैं। अमेरिका और चीन जैसे देशों ने जीएम खेती को अपनाया, परंतु इसके दुष्परिणाम सामने आए। अमेरिका में जीएम मक्का की खेती ने गैर-जीएम उत्पादन को संक्रमित कर दिया, वहीं चीन को पांचझ्रछह वर्षों में भारी नुकसान उठाना पड़ा और अंततः उन्हें जीएम खेती लगभग बंद करनी पड़ी। इन उदाहरणों से भारत ने सबक लिया और कृषि क्षेत्र में अपने किसानों की मेहनत व देश की खाद्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। भारत में डेरी उद्योग केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। मवेशियों को पशु उत्पाद आधारित आहार खिलाने की विदेशी प्रथा भारतीय समाज में स्वीकार्य नहीं है। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी का अमेरिका को दो-टूक जवाब न केवल किसानों के हक में है, बल्कि यह भारत की आत्मा और स्वाभिमान से जुड़ा हुआ निर्णय है।

- **सुभाष बुड़ावनवाला**, रतलाम

भरोसे की बुनियाद और लोकतंत्र

भारतीय लोकतंत्र में चुनाव वह आधार हैं जिन पर जनता का विश्वास और शासन की वैधता टिकी रहती है। संविधान का अनुच्छेद 324 चुनाव आयोग को स्वतंत्र और निष्पक्ष ढंग से चुनाव कराने का अधिकार देता है। हाल ही में राहुल गांधी ने चुनाव आयोग पर मतगणना और वोट चोरी से जुड़े आरोप लगाए, जिन पर आयोग ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सफाई दी। यह विवाद दिखाता है कि चुनाव केवल राजनीतिक टकराव नहीं, बल्कि संस्थागत पारदर्शिता और विश्वास की कसौटी भी हैं। वास्तविक समस्या मतदान से परिणाम तक की प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी है। वीवीपैट मिलान सीमित बूथों तक सिमटा हुआ है जबकि मांग है कि इसका दायरा बढ़े। स्ट्रॉन्गरूम की सुरक्षा, ईवीएम परिवहन और मतगणना केंद्रों की निगरानी की स्पष्ट जानकारी जनता तक नहीं पहुँचती। ऐसे में संदेह पैदा होते हैं और राजनीतिक दल इन्हें हथियार बना लेते हैं। यही वह बिंदु है जहाँ लोकतंत्र केवल प्रक्रिया नहीं बल्कि जनता की आँखों का भरोसा बन जाता है, और यही भरोसा उसकी सबसे बड़ी पूंजी है। समाधान के तौर पर चार कदम जरूरी हैं। पहला, हर बूथ का फॉर्म-17सी और मतदान डेटा आयोग की वेबसाइट पर सार्वजनिक किया जाए। दूसरा, वीवीपैट मिलान न्यूनतम 25 प्रतिशत तक कानूनी रूप से अनिवार्य हो। तीसरा, सुप्रीम कोर्ट विशेष पीठ बनाकर चुनावी विवाद छह माह में निपटाए। चौथा, स्वतंत्र तकनीकी और नागरिक ऑडिट की व्यवस्था हो।

- **अवनीश कुमार गुप्ता**, आजमगढ़

विचारणीय प्रश्न

मनावर(मध्यप्रदेश) गर्ल्स हायर सेकेंडरी की छात्रा पार्वती ने शिक्षिकाओं की प्रताड़ना से तंग आकर 14 अगस्त को आत्महत्या कर ली। इस मासूम बच्ची ने अपने सुसाइड नोट में लिखा है कि उसकी सहनशक्ति जवाब दे गई थी। उसकी सहेली ने बताया कि शिक्षिकाएं पिछले दो सालों से पूरी कक्षा के सामने,उसे ड्रेस चोर कह कर प्रताड़ित करती थी। देश में शिक्षकों द्वारा ऐसी कई घटनाएं अंजाम दी गई है, जो दांतों तले उंगली दबाने वाली होती है। भगवान के बाद इन नौनिहालों का दूसरा भगवान शिक्षक होता है। जो न केवल शिक्षा देते हैं, बल्कि बिना किसी भेदभाव के, समान रूप से, अपने बच्चों की तरह सभी बच्चों से स्नेह, दुलार भी करते हैं। इसलिए की वे न केवल बच्चों को महत्वपूर्ण सबक सिखाते हैं, बल्कि बच्चों में नैतिक कर्म, अभिव्यक्ति व व्यवहार में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण काम करते हैं, तथा उनके भविष्य निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। मगर अब इसके उल्ट तस्वीर रंग में भंग डालती है। अपवाद स्वरूप शिक्षक ऐसे हैं जो शिक्षक न होकर शैतानी प्रवृति के है, जो समूचे शिक्षा जगत पर दाग लगाने का काम करते हैं। अगर बच्ची ने नादानी, नासमझी व भूल में अगर ड्रेस चोरी कर ली, तो न केवल क्षम्य है, बल्कि उसे अच्छे नैतिक दृष्टांत द्वारा शिक्षा दी जा सकती है कि बेटा चोरी करना बहुत बुरी बात है, जो गन्दी आदत होती है। भविष्य में ऐसी गलती मत करना।

- **हेमा हरि उपाध्याय**, अक्षत खाचरोद, उज्जैन

प्रेरणा

हमारी सबसे बड़ी विरासत संपत्ति नहीं, विचार हैं। इसलिए विचारों के धनी बनिए। - **एराल्डो बानोवाक**

संपादकीय

ट्रम्प व पुतिन की बातचीत से यूक्रेन को क्या मिला?

अलास्का वार्ता के पहले ट्रम्प ने एयरफोर्स-वन में रिपोर्टर्स से कहा था कि युद्ध-विराम मेरे लिए अहम है और अगर यह नहीं होता तो गंभीर परिणाम होंगे, लेकिन वापसी की यात्रा में उनका सुर बदलकर स्थायी शांति के प्रयास का हो गया। यानी फिलहाल युद्ध विराम नहीं होगा। माना जा रहा है कि पुतिन ने युद्ध रोकने की दो शर्तें रखीं- डोनबास पर कब्जा और यूक्रेन को नाटो में शामिल न करने का वादा। अगले 24 घंटों में सीन फिर बदला और जेलेंस्की ने कहा कि ट्रम्प ने मुद्दे को और जटिल कर दिया है। उधर नाटो के नोर्डिक-बाल्टिक भाग के आठ सदस्यों के गुट ने रूस की किसी भी शर्त को न मानने का पत्र जारी किया। स्वयं ट्रम्प ने नाटो के अधिकारियों और सदस्य देशों के नेताओं से बात की लेकिन उनकी ओर से भी कोई स्पष्ट समर्थन नहीं मिला। दरअसल पुतिन डोनबास- जो यूक्रेन के कुल भूभाग का लगभग 8% है और जिसमें समृद्ध डोनेस्क शहर आता है- को रूसी कब्जे में चाहते हैं। यह क्षेत्र डोनेट्स बेसिन के औद्योगिक और कृषि उत्पादों के लिए जाना जाता है और क्षेत्र में कोयला और लौह अयस्क की प्रचुरता से देश को समृद्ध करता है। इस क्षेत्र के रूस में जाने से यूक्रेन अपनी आर्थिक ही नहीं सामरिक स्थिति भी खो देगा। फिर रूसी सीमा से लगे यूरोप के नाटो सदस्य देशों को यह भी खतरा है कि रूस का अगला निशाना वे भी हो सकते हैं।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

कुछ अच्छा करने जाएं तो बड़े होने का भाव समाप्त करें

पद, प्रतिष्ठा और योग्यता मनुष्य को भेदभाव करने के लिए मजबूर कर देती है। जब आप बड़े लोगों की गिनती में आ जाते हैं तो आपको दूसरे छोटे ही लगने लगते हैं। शंकर जी, पार्वती जी को बता रहे थे कि मैं काकभुशुंडि के यहां कथा सुनने गया- तब कछु काल मराल तनु धरि तहं कीन्ह निवास, सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउं कैलास। तब मैंने हंस का शरीर धारण कर कुछ समय वहां निवास किया और रघुनाथ जी के गुणों को आदर सहित सुनकर फिर कैलास को लौट आया। तीन बातें हैं- पहला, हंस का शरीर यानी श्रेष्ठ। आदर सहित सुना, यानी वक्ता का सम्मान किया। और कैलास लौटे, यानी अपने धरातल पर आ गए। शंकर जी की कक्षा बहुत ऊंची है, लेकिन वे बता रहे हैं कि समाज में कथा सुनने, यानी कोई अच्छा काम करने जाएं तो अपने बड़े होने का भाव समाप्त करें। समान धरातल पर आकर सब लोगों से व्यवहार करें।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

विश्लेषण • ईसाई समुदाय से हो रहा व्यवहार चिंताजनक

देश में एक और अल्पसंख्यक समुदाय न्याय का हकदार है

देश-समाज

राजदीप सरदेसाई
वरिष्ठ पत्रकार
rajdeepsardesai52@gmail.com

देश में मुसलमानों के साथ हो रहे सलूक को लेकर अकसर सवाल उठते हैं। जहां भारतीय मुस्लिमों के खिलाफ नफरती भाषा का इस्तेमाल निरंतर बढ़ता जा रहा है, वहीं एक और मुद्दा है, जिस पर कम बात की जाती है। ये है अल्पसंख्यकों में भी अल्पसंख्यक यानी देश के ईसाई समुदाय के साथ सत्ता के पेचीदा होते जा रहे समीकरण। पिछले महीने भाजपा शासित छत्तीसगढ़ के दुर्ग पुलिस थाने में केरल मूल की दो ननों को हिरासत में ले लिया गया था। उन पर मानव तस्करी और जबरन धर्मांतरण का आरोप लगाया गया। वह आदिवासी बहुल क्षेत्र है और प्रथम दृष्टया आरोप बजरंग दल की ओर से लगाए गए थे। जिन लड़कियों की कथित तौर पर तस्करी की गई थी, उन्होंने ऑन रिकॉर्ड कहा कि वे स्वेच्छा से ननों के साथ गई थीं, क्योंकि वे पेशेवर नर्स के तौर पर प्रशिक्षण लेना चाहती थीं। उनके माता-पिता ने भी कहा कि उन्होंने बेटियों को रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने के लिए जाने की अनुमति दी थी। इसके बावजूद पुलिस ने ननों को हिरासत में ले लिया। उन लोगों से मारपीट की भी खबरें आईं, जो ननों के समर्थन में आए थे। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी ननों का समर्थन करने के बजाय पुलिस का ही बचाव किया।

इस पर ताज्जुब होना भी नहीं चाहिए। 2023 के छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दौरान मैं नारायणपुर गांव में आदिवासियों के एक समूह से मिला था। उन्होंने बताया था कि कैसे वे डर के साये में जीते हैं। उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया था। वर्षों से आदिवासी ईसाइयों की 'घर वापसी' वनवासी कल्याण केंद्रों का कार्यक्रम रहा है, ताकि मिशनरियों द्वारा आदिवासियों के ईसाई धर्मांतरण का जवाब दिया जा सके।

लेकिन जिस तरह से धार्मिक स्वतंत्रता संवैधानिक अधिकार है, उसी तरह से किसी व्यक्ति द्वारा अपनी पसंद के धर्म को चुनना भी उसका हक है। बाबासाहेब आम्बेडकर और उनके समर्थकों द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की घटना को भूलना नहीं चाहिए। लेकिन संवैधानिक अधिकारों की भी सिलेक्टिव व्याख्या की जा सकती है। यही कारण है कि जहां ईसाई धर्मांतरण को जबरन और आपराधिक माना जाता है, वहीं फिर से हिंदू धर्म में वापसी को स्वैच्छिक और भला समझा जाता है।

विडम्बना यह रही कि विभिन्न दलों से जुड़े केरल के सांसदों की गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात और दखल की मांग के बाद ही ननों को जमानत मिल पाई। शाह ने तत्काल कार्रवाई की, क्योंकि ननों की गिरफ्तारी केरल में बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन गई थी। ईसाइयों की बड़ी आबादी वाले केरल में अगले साल चुनाव होने हैं। केरल में पैठ बनाने के लिए तत्पर भाजपा वहां ईसाइयों को लुभाकर एक व्यापक हिंदू-ईसाई गठजोड़ बनाना चाहती है। ऐसे में आश्चर्य नहीं कि ननों की केरल वापसी पर उनके स्वागत के लिए पहुंचे लोगों में केरल के भाजपाध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर भी थे। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ईसाइयों की बड़ी आबादी वाले अन्य राज्यों- जैसे गोवा में भाजपा शासन में है, वहीं मेघालय और नगालैंड में वह गठबंधन सहयोगी है।

रोचक यह है कि प्रधानमंत्री मोदी कैथोलिक बिशप्स कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया द्वारा पिछले साल दिसंबर में आयोजित क्रिसमस समारोह में शामिल हुए थे। वहां उन्होंने प्रभु यीशु की शिक्षाओं पर जोर दिया। प्रेम, सौहार्द और भाईचारे की हिमायत की। पिछले साल क्रिसमस पर भी उन्होंने ईसाई समुदाय के प्रमुख नेताओं को अपने घर चाय पर बुलाकर ईसा मसीह के मूल्यों पर बातचीत की। लेकिन इस सबके बावजूद धरातल पर ननों और मिशनरियों पर जबरन धर्मांतरण का आरोप लगाकर उनका उत्पीड़न किया जाता है। याद कीजिए, ओडिशा में

> **सच तो यह है कि बड़े पैमाने पर धर्मांतरण के प्रोपगंडा के बावजूद देश में ईसाई आबादी आज केवल 2.3% ही है। जबकि 1971 की जनगणना में ईसाई 2.6% थे। यानी आधिकारिक तौर पर उनकी आबादी कम ही हुई है।**

1999 में बजरंग दल नेता दारा सिंह द्वारा मिशनरी ग्राहम स्टेंस और उनके दो बच्चों की निर्मम हत्या। यह भी याद करें कि कैसे पुलिस ने हाल ही 80 वर्ष के फादर स्टैन स्वामी को नक्सलियों का हिमायती बताते हुए यूएपीए के तहत गिरफ्तार कर लिया था। अंततः अस्पताल में उनकी मौत तक हो गई। इस साल जून में सांगली से भाजपा विधायक गोपीचंद पडालकर ने भी कथित 'बलात् धर्मांतरण' में शामिल मिशनरियों पर हमला करने वालों के लिए 3 से 11 लाख रुपए तक के इनाम की पेशकश की थी। 'ओपन डोर्स' के अनुसार 2024 में भारत ईसाई उत्पीड़न के मामले में विशेष चिंता वाले देशों की सूची में 11वें स्थान पर था।

पुनश्च : एक तरफ जहां ईसाई मिशनरियों पर धर्मांतरण के लिए शिक्षा को एक 'हथियार' के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया जाता है, वहीं आपको यह नहीं बताया जाता कि भारत के कुछ बेहतरीन लोगों- जिनमें केंद्रीय मंत्री भी शामिल हैं- की पढ़ाई मिशनरी स्कूलों से ही हुई है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

दूरदृष्टि • यूक्रेन कितना झुकेगा, इस पर सब निर्भर है

अमेरिका के समकक्ष होना ही रूस की रणनीतिक जीत

कूटनीति

लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन
कश्मीर कोर के पूर्व कमांडर

एंकरेज में ट्रम्प और पुतिन के बीच हुई समिट में यूक्रेन में युद्धविराम को लेकर अंतिम सहमति नहीं बनी। ट्रम्प, पुतिन और जेलेंस्की के लिए युद्ध अब भी जारी है, लेकिन यूरोप से लेकर भारत तक दुनिया को युद्ध के खत्म होने के इंतजार की कीमत, इस मामले में अपने लचीलेपन की सीमा और शांत कूटनीति की जरूरत का आकलन करना होगा।

ट्रम्प-पुतिन वार्ता को लेकर वादा किया गया था कि उसमें यूक्रेन पर कोई फैसला लिया जाएगा। लेकिन नतीजे सीमित ही रहे। अच्छी खबर यह है कि चीजें और ज्यादा नहीं बिगड़ीं। अगर कोई समझौता नहीं हुआ तो कोई कड़वाहट भी नहीं आई। यह अपने आप में एक सकारात्मक बात है। ट्रम्प ने कहा कि कई मुद्दों पर सहमति बनी है, सिवाय एक या दो के।

आप मान सकते हैं कि ये अनसुलझे मुद्दे डोनबास पर रूस के द्वारा कब्जा बनाए रखने और क्रीमिया के हालिया स्टेटस के इर्द-गिर्द घूमते हैं। युद्धविराम की घोषणा एक अंतरिम उपाय के रूप में की जा सकती थी, जबकि व्यापक समझौते के विवरण बाद में तैयार किए जाते रहते। लेकिन ऐसा न होना यह दर्शाता है कि असहमति काफी गंभीर थी। शायद पुतिन ने खुद इस बात पर जोर दिया हो कि युद्ध तब तक जारी रहे, जब तक उनकी मुख्य मांगें पूरी नहीं हो जातीं।

एंकरेज में ट्रम्प या पुतिन की बॉडी लैंग्वेज नकारात्मक नहीं थी। अगर अंततः कोई समझौता हो जाता है, तो ट्रम्प संघर्ष के एक और क्षेत्र यानी गाजा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यूक्रेन में युद्धविराम होने से अंतरराष्ट्रीय मान्यता के लिए उनकी साख मजबूत होगी, और शायद नोबेल पुरस्कार के लिए दावा भी। जेलेंस्की को आगे की बातचीत के लिए व्हाइट हाउस बुलाने का उनका प्रयास यह दर्शाता है कि एंकरेज कूटनीति का अंत नहीं, बल्कि एक विराम मात्र था।

हालांकि, फिलहाल तो लड़ाई जारी है। यूक्रेनी सेनाएं रक्षात्मक मोर्चों पर डटी हुई हैं और यह स्थिति 2024 के अंत से शायद ही बदली है। जबकि रूसी सेनाएं अपनी अधिक ताकत और बेहतर हथियारों के साथ आगे बढ़ रही हैं। युद्ध लंबे समय से एक गतिरोध की स्थिति में है। पुतिन ने रणनीतिक लचीलापन बनाए रखा, अपनी सेना को आश्वस्त किया और घरेलू प्रतिष्ठा को चमकाया। एंकरेज में उनकी उपस्थिति और एक अमेरिकी राष्ट्रपति से बराबरी की मुलाकात ही अपने आप में एक प्रतीकात्मक जीत थी। इसने मास्को के इस कथन को पुष्ट भी किया कि प्रतिबंधों ने रूस की वैश्विक प्रासंगिकता को कम नहीं किया है।

लेकिन यूक्रेन को इस सबसे कोई फायदा न हुआ। उसे न तो युद्धविराम मिला और न ही रोजाना की बमबारी से कोई राहत। जेलेंस्की की अनुपस्थिति ने कीव में बेचैनी बढ़ा दी है। यह बताता है कि यूक्रेन की स्थिति अभी भी नाजुक बनी हुई है। पुतिन की रणनीति में बदलाव की संभावना नहीं है। इधर यूरोप गहरी दुविधाओं का सामना कर रहा है। उसके नेता एंकरेज की इस नाटकीय-वार्ता को बेचैनी से देख रहे थे। उनके लिए मूल मुद्दा हमेशा से यूरोप के लिए रूसी खतरा रहा है। अब यूरोप को खुद से पूछना होगा कि क्या वह यूक्रेन को नाटो से बाहर स्वीकार कर सकता है और इसके बावजूद उसे एक अनौपचारिक सुरक्षा साझेदारी का लाभ दे सकता है? क्या वह रचनात्मक- फिर चाहे वो उसके लिए कितने ही असुविधाजनक क्यों न हों- समझौतों पर विचार कर सकता है? जैसे कि क्रीमिया में साझा या संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में कोई बंदोबस्त, आंशिक रूप से

> **पुतिन ने अपनी सेना को आश्वस्त किया और घरेलू प्रतिष्ठा को चमकाया। ट्रम्प से बराबरी की मुलाकात ही अपने आप में प्रतीकात्मक जीत थी। इसने मास्को के इस कथन को पुष्ट किया कि रूस की वैश्विक प्रासंगिकता कम नहीं हुई है।**

असैन्यीकृत क्षेत्र या मिश्रित सुरक्षा गारंटी? ये आसान सवाल नहीं हैं, लेकिन स्पष्ट दृष्टिकोणों से इस युद्ध का अंत नहीं होने वाला। मिले-जुले समाधान ही कारगर होंगे।

शांति अभी दूर है। रूस अपने कब्जे वाले क्षेत्र को अपने पास रखने पर अड़ा है, जबकि यूक्रेन अपनी सम्प्रभुता को होने वाली किसी भी क्षति को अपने अस्तित्व पर सवालिया निशान मानता है। नाटो और यूरोपीय संघ की आकांक्षाएं यूक्रेन का लक्ष्य बनी हुई हैं, लेकिन रूस इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा। ट्रम्प, पुतिन और जेलेंस्की के बीच मास्को में एक त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन अभी तो असम्भव लगता है जब तक कि कीव ज्यादा लचीलापन न दिखाए और यूरोप सीधे तौर पर इसमें शामिल न हो। यूरोपीय नेता मूकदर्शक बने नहीं रह सकते; उनकी सुरक्षा दांव पर है। जेलेंस्की की बयानबाजी से ज्यादा उनके झुकने की क्षमता अंतिम नतीजों को प्रभावित करेगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

दैनिक भास्कर
अब आप NYT के सभी आर्टिकल DB एप पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

इस हफ्ते चर्चा में...

007 लोगो के डिजाइनर जो कैरॉफ का निधन

103 साल की उम्र
में निधन हो गया डिजाइनर जो केरॉफ का। इन्होंने ही जेम्स बॉन्ड का लोगो बनाया था।

54 फीसदी
वयस्क ही शराब पीते हैं अमेरिका में गैलप के सर्वे के अनुसार, 90 साल के इतिहास में सबसे कम।

05 हजार से ज्यादा
पेटेंट कराए हैं चीन ने पिछले दो दशकों में क्लीन एनर्जी के क्षेत्र में।

टेक्नोलॉजी

मेटा के एआई बॉट्स की सुरक्षा जांच शुरू

सेशिला कॉन्ग

अमेरिकन सीनेटर जोश हॉली ने घोषणा की कि वे मेटा के एआई मॉडल की जांच शुरू कर रहे हैं। जांच इस पर केंद्रित होगी कि क्या ये उत्पाद बच्चों के लिए खतरा बन सकते हैं। हॉली ने मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग को पत्र लिखकर इस जांच की जानकारी दी। इस पत्र में उन्होंने कंपनी से उन दस्तावेज और बातचीत का ब्योरा मांगा है, जो रॉयटर्स की रिपोर्ट से जुड़े हैं, जिसमें दावा किया गया कि मेटा के एआई बॉट्स ने बच्चों के साथ 'रोमांटिक' और 'सेंसिटिव' बातचीत की अनुमति दी थी।

हॉली ने एक्स पर तीखा कमेंट किया, 'क्या बिग टेक पैसे के लिए कोई भी हद पार करेगा? पिछले एक दशक से मेटा, जो इंस्टाग्राम और फेसबुक की मालिक है, नाबालिग उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षा उपायों को लेकर बढ़ती जांच का सामना कर रहा है। 40 से अधिक राज्यों ने कंपनी पर मुकदमा दायर किया है, जिसमें दावा किया गया है कि इसके उत्पाद बच्चों की मानसिक सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं।

© The New York Times

बिजनेस मत्स्य-झींगा उद्योग तबाह होने की कगार पर होंगे, टेक्सटाइल-गारमेंट भी अछूते नहीं रहेंगे

भारत पर 25% एक्स्ट्रा टैरिफ लगा तो कालीन, रत्न जैसे उद्योगों पर संकट, 25 लाख लोग हो जाएंगे गरीब

एलेक्स ट्रेवेली

भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा तबका बुरे स्वप्न के दौर से गुजर रहा है। क्योंकि 27 अगस्त को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा लगाए गए 25% टैरिफ को दोगुना किया जाना है। इससे कई व्यवसाय तेजी से बंद होने की कगार पर पहुंच जाएंगे।

उत्तरप्रदेश के भदोही में कालीन बनाने का काम करने वाले इश्तिआक अहमद खान कहते हैं कि हम 25% टैरिफ से ही हैरान थे। लेकिन अब यह 50 प्रतिशत होगा, इससे बहुत से लोग बेरोजगार हो जाएंगे।

भारत में कालीन उद्योग बड़ा कारोबार है। इसकी 98% वस्तुएं विदेश भेजी जाती हैं। हाल के वर्षों में इस स्टॉक का लगभग 60% अमेरिका के खरीदारों के पास जाता रहा है। अमेरिकी आयातकों के लिए अब 43 हजार रुपए के गलीचे पर करीबन 11 हजार रुपए टैरिफ लगेगा। आगे 21 हजार भी हो सकता है।

भदोही उत्तर भारत के कालीन बेल्ट का केंद्र है। यहां हजारों कालीन निर्माता हैं। वे मामूली मुनाफे में काम चलाते हैं, वे अमेरिकी ग्राहकों के सामने आई भारी मूल्य वृद्धि झेलने की स्थिति में नहीं हैं। इश्तिआक का अनुमान है कि क्षेत्र में रहने वाले 25 लाख लोग बस गुजारा-बसारा करने जैसी गरीबी में पहुंच जाएंगे।

इश्तिआक की कंपनी में काम करने वाले लगभग 80% अभी भी किसान हैं। वे सरकार के मुफ्त पांच किलो अनाज पर निर्भर रहते हैं। लेकिन धागा कातना और रंगना, डिजाइन करना, बुनाई और कालीन की फिनिशिंग करने के काम से उन्हें करीबन 15 हजार रुपए महीना अतिरिक्त मिलता है। इश्तिआक कहते हैं सबसे बुरा हाल हमारे हमारे मजदूरों और बुनकरों का होगा। कालीन उद्योग के अलावा भी कई क्षेत्रों पर खतरा है। 7 अगस्त को ट्रम्प ने 50% टैरिफ की घोषणा की, तो जेम्स उद्योग संघ के अध्यक्ष किरीट भंसाली ने लिखा कि भारतीय रत्नों के वैश्विक व्यापार का 30% खतरे में है। अमेरिका रत्नों का सबसे बड़ा खरीदार है।

मछली व झींगा व्यवसाय के लिए टैरिफ तबाही के समान होंगे। केन्द्र ने राज्यों को अपनी कंपनियों का ध्यान रखने को कहा है।

वहीं टेक्सटाइल्स, गारमेंट और फर्नीचर से जुड़े उद्योगों पर भी नकारात्मक असर पड़ेगा। ये लाखों श्रमिकों को रोजगार देते हैं। इनसे होने वाली अरबों की कमाई ने संकट के समय भारत को आर्थिक रूप से मजबूत बनाए रखने में मदद की है। © The New York Times

कश्मीर के शोरूम में हैंडमेड कारपेट दिखाता शख्स।

11 लाख करोड़ का कारोबार हुआ था भारत-अमेरिका के बीच पिछले साल

25 लाख लोग प्रभावित होंगे कालीन उद्योग के

30% बाजार प्रभावित होगा रत्न उद्योग का टैरिफ से

दवाएं, सेमीकंडक्टर का बाजार अभी टैरिफ से बाहर

अमेरिका में इस्तेमाल होने वाली जेनेरिक दवाओं का प्राथमिक उत्पादक भारत है। अमेरिका इसका सबसे बड़ा उपभोक्ता है। लेकिन ट्रम्प प्रशासन के इस सेक्टर पर टैरिफ में कटौती ने फिलहाल उद्योग को बचा रखा है। इस समय भारतीय दवाओं का आयात मुफ्त है। लेकिन ट्रम्प कह चुके हैं कि जल्द ही इस पर 150% टैरिफ लगेगा और अंततः 250% भी, जिससे अमेरिका में घरेलू उत्पादन शुरू हो सके। सेमीकंडक्टर्स के लिए भी ऐसी छूटें हैं, इसलिए यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि भारत का तेजी से बढ़ रहा इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण बच पाएगा या नहीं। तेल और गैस भी जटिल मुद्दा है, क्योंकि ऊर्जा उत्पाद अभी भी टैरिफ से मुक्त हैं। भारत के रूसी तेल खरीदने की वजह से अमेरिका ने टैरिफ बढ़ाया था।

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से 103 मिनट का भाषण दिया। उन्होंने पाक से लेकर उन्नति के कई मुद्दे छुए। इसमें उन्होंने ट्रम्प या टैरिफ का जिक्र किए बगैर देश के अकेले आगे बढ़ने की बात पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस तरह देश को आगे बढ़ने से कोई स्वार्थ नहीं रोक सकता है।

समस्या

यूएस ने गाजावासियों के वीसा रोके, बीमार प्रभावित

जस्टिन पोर्टर, पेरिन बेहरोज

ट्रम्प प्रशासन ने गाजा के लोगों को विजिटर वीसा देना बंद कर दिया है।इस वीसा के रद्द होने का सीधा असर गाजा के बीमार लोगों पर पड़ेगा। दरअसल इसी वीसा की मदद से गाजा के बीमार लोग इलाज के लिए अमेरिका आया करते थे। इनमें खास तौर पर बच्चे और गंभीर बीमारियों से जूझ रहे युवा शामिल हैं। स्टेट डिपार्टमेंट ने एक्स पर पोस्ट में लिखा कि हम अभी गाजा के लोगों के लिए विजिटर वीसा रोक रहे हैं, जब तक कि हाल ही में जारी हुए मानवीय व मेडिकल वीसा की प्रक्रिया की जांच नहीं कर लेते। अमेरिकी सरकार ने यह कदम राइट विंग की एक्टिविस्ट लौरा लूमर के कैंपेन के बाद उठाया गया है। लूमर ने अमेरिका आने वाली इस तरह की उड़ानों को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया था। वहीं दूसरी ओर फिलिस्तीन के परिवारों और बच्चों तक मदद पहुंचाने वाले एक संगठन का कहना है कि विजिटर वीसा की मदद से इसी महीने अमेरिकी अस्पतालों में 11 बच्चों को बचाया गया था। इन बच्चों में अधिकांश ने गाजा संघर्ष में अपने हाथ गंवा दिए थे। उधर इजराइल में सैकड़ों लोगों ने एक रैली निकाली। इस रैली की मदद से लोग तत्काल सीजफायर और बंधकों की रिहाई की मांग कर रहे थे। वहीं इजराइली मिलिट्री अपने हमलों को विस्तार देने की तैयारी में थी।

© The New York Times

ओपिनियन अमेरिका से सस्ती व जल्दी दवाएं तैयार करने वाले सेंटर्स बने

चीन बन रहा बायोटेक्नोलॉजी का नया ग्लोबल हब

जैकब ड्रेयर

शंघाई से थोड़ी दूर, वूशी शहर में चीन अपने चिकित्सा क्षेत्र का भविष्य गढ़ रहा है। यह फैक्ट्रियों और लैब का हब है। यहां दुनियाभर की दवा कंपनियां दवाओं को कहीं और से जल्दी और सस्ते में विकसित कर सकती हैं। ट्रम्प प्रशासन द्वारा चीन पर लगाए गए शुल्कों के बावजूद, स्थानीय अधिकारी गर्व से कहते रहे कि उनका शोध केंद्र फल-फूल रहा है। जनवरी से चीनी बायोटेक्नोलॉजी शेयर्स में 60% से अधिक की वृद्धि हुई है, जो इस दावे को पुख्ता करती है।

चीन अमेरिका को बायोटेक्नोलॉजी में पछाड़ने की कोशिश में नहीं है, बल्कि अपनी अलग राह चुन रहा है। अमेरिका जहां कटिंग-ऐज ट्रीटमेंट का केंद्र है, वहीं चीन की बायोटेक कंपनियां सस्ती दवाएं और जेनरिक उत्पाद प्रदान करने पर काम कर रही हैं। ये उत्पाद दुनियाभर के लाखों लोगों के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, क्रिस्पर जैसी जीन-एडिटिंग तकनीक में नवाचार नहीं, बल्कि दवा अनुसंधान, परीक्षण और उत्पादन को सस्ता और कुशल बनाना उनका लक्ष्य है।

वूशी एप्टेक जैसी कंपनियां इस चीनी दृष्टिकोण का उदाहरण हैं। ये ऐसी कंपनी है, जो दवा खोज से लेकर उत्पादन तक सब कुछ संभालती है। इसके ग्राहकों में इनोवेंट, जियांगसू जैसी चीनी कंपनियों के साथ ही फाइजर, ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन और एस्ट्रॉजेनेका जैसी अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियां भी शामिल हैं। एक अनुमान के अनुसार अमेरिका में इस्तेमाल होने वाली हर चौथी दवा में वूशी एप्टेक की भूमिका रही है। इसमें कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की दवाएं भी शामिल हैं।

हालांकि अमेरिकी एजेंसियों को मिलने वाला रिसर्च फंड चीन से कहीं ज्यादा है, लेकिन फंड मिलने में होने वाली देरी अमेरिका को पीछे कर सकती है। अमेरिका, चीन को गंभीरता से ले रहा है अप्रैल में कॉन्ग्रेस ने बायोटेक में चीन से निपटने के लिए 5 सालों में 15 अरब डॉलर निवेश करने की सिफारिश की थी।

© The New York Times

तेजी से बढ़ रहा टैलेंट

चीन में हर साल अमेरिका से चार से पांच गुना ज्यादा मेडिकल ग्रेजुएट्स तैयार होते हैं। अमेरिका में हुए सर्वे में 75% वैज्ञानिकों ने कहा कि वे अमेरिका छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। चीन में दवाओं के क्लीनिकल ट्रायल की मंजूरी में कम समय लगता है और क्लीनिकल ऑपरेशन की कॉस्ट भी अमेरिका की तुलना में 30 फीसदी तक कम है।

एआई 20% कंपनियां एआई स्केल कर रही

कंपनियों के सीईओ एआई पर दे रहे हैं जोर, लेकिन रोडमैप की कमी

जॉर्डिन होलमेन

कंपनियों के सीईओ एआई उपयोग पर जोर दे रहे हैं। शिकागो की लॉ फर्म मेयर ब्रॉउन के चेयरमैन जॉन वैन गॉर्प ने पार्टनर्स को बताया कि वे किस तरह कानूनी पेशेवरों के लिए बने एआई टूल का इस्तेमाल करते हैं। डे ड्रीम फैशन स्टार्टअप में, शुक्रवार का लंच एआई टूल्स के उपयोग पर चर्चा को समर्पित होता है।

ममूथ कंपनी के संदीप चोकसी ने भी सुझाव दिया कि एआई पर काम कर रहे कर्मचारियों को लीडरशिप मीटिंग्स में बुलाया जाए।

मैनेजमेंट कंसल्टिंग फर्म बेन एंड कंपनी के प्रमुख चक व्हिटन एआई को कंपनियों में शामिल करने के महत्व को समझते हैं। वेलनेस एप हेडस्पेस के सीईओ टॉम पिकेट का कहना है हर सीईओ समझने की कोशिश कर रहा है कि भविष्य के लिए तैयार हैं या नहीं। कुछ सीईओ कर्मचारियों को गूगल सर्च से पहले जेमिनी सर्च करने के लिए कह रहे हैं।

© The New York Times

77% एआई को जरूरी मान रहे

गार्टनर ने मई में सीईओ के बीच सर्वे कराया। इसमें 456 सीईओ शामिल थे। 77% का मानना था कि एआई व्यापार के लिए परिवर्तनकारी है। वहीं बेन के सर्वे के मुताबिक आधी कंपनियों के पास एआई इंटीग्रेशन का रोडमैप नहीं है। चक व्हिटन कहते हैं कि केवल 20% कंपनियां ही एआई को स्केल कर रही हैं।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

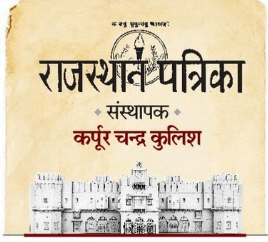

प्रतियोगी परीक्षाओं में कुप्रबंधन के शिकार युवा

सरकारी नौकरियों के प्रति मोह रखने वाली युवा पीढ़ी उस वक्त खुद को ठगा सा महसूस करती है जब उसको इन नौकरियों के लिए होने वाली भर्ती परीक्षाओं में परेशानियों से दो-चार होना पड़ता है। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) की ओर से हाल ही हुई इंस्पेक्टर लेवल की एसएससी परीक्षा फेज-13 भी अव्यवस्थाओं की ऐसी भेंट चढ़ी कि साढ़े पांच लाख परीक्षार्थियों में से 55 हजार परीक्षार्थियों की मेहनत पर पानी फिर गया। इस परीक्षा में कहीं सर्वर ही क्रैश कर गया तो कहीं सिस्टम ही फ्रीज हो गया। तकनीकी खामियों का आलम यह कि परीक्षा के दौरान माउस व की-बोर्ड तक जवाब दे गए। परीक्षार्थियों को ऐन मौके पर परीक्षा केन्द्र बदलने और गलत केन्द्र आवंटित करने का नुकसान भी झेलना पड़ा।

विभिन्न स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में सुचारू तंत्र की अपेक्षा की जाती है। परीक्षार्थियों से इसकी एवज में शुल्क भी वसूला जाता है। केंद्रीय सेवाओं की इंस्पेक्टर लेवल की एसएससी परीक्षा के लिए अभ्यर्थी सालों जी तोड़ मेहनत करते हैं। समझा जा सकता है कि अपनी पूरी ताकत झोंकने वाले युवाओं के दिल पर ये परेशानियां झेलने के बाद क्या बीती होगी? इस परीक्षा में एसएससी का कुप्रबंधन खुलकर सामने आ गया। हैरत इस बात की है कि उसने परीक्षा के आयोजन का अनुबंध ऐसी कंपनी को सौंप दिया जो चार साल में चार बार मापदंडों पर खरी नहीं उतरी। उसकी हर परीक्षा प्रतियोगियों के लिए प्रताड़ना साबित हुई। प्रशिक्षण महानिदेशालय ने 2020 में उसे अयोग्य करार दिया, वहीं यूपीएससी ने 2021 में उसे टेंडर से ही बाहर कर दिया। इसके बावजूद इस कंपनी को एसएससी ने अपनी इस परीक्षा के आयोजन का जिम्मा यह तर्क देते हुए दे दिया कि इस कंपनी ने टेंडर में सबसे कम रकम भरी थी। तो क्या गुणवत्ता की अनदेखी की जानी चाहिए? क्या लाखों परीक्षार्थियों का भविष्य सरकार के बजट को ध्यान में रखकर तय होना चाहिए?

परीक्षाओं के पारदर्शी व व्यवस्थित तरीके से कराने के बजाय सिर्फ इस बात को महत्त्व मिले कि टेंडर में कम रकम वाली कंपनी को ही जिम्मा दिया जाए तो फिर अव्यवस्थाएं भला कौन व कैसे रोक पाएगा? दुर्भाग्यजनक पहलू यह है कि केन्द्र से लेकर राज्य स्तर की भर्ती परीक्षाओं में गाहे-बगाहे पेपरलीक, धांधली व मनमानी के उदाहरण सामने आने लगे हैं। एसएससी ने भले ही 55 हजार अभ्यर्थियों की परीक्षा दोबारा करने की व्यवस्था दी है, लेकिन युवाओं को जो मानसिक तनाव झेलना पड़ा है उसकी भरपाई तो हो ही नहीं सकती। परीक्षा दे चुके पांच लाख परीक्षार्थियों को परिणाम का अब और इंतजार करना होगा, क्योंकि संपूर्ण परीक्षा परिणाम एक साथ ही आने वाला है। यानी प्रताड़ना उन्हें भी हैं जो परीक्षा दे चुके। युवाओं का भरोसा जीतने के लिए यह जरूरी है कि सरकारी नौकरियों में भर्ती की पारदर्शी व्यवस्था की जाए। ऐसी व्यवस्था जिसमें एसएससी की इस परीक्षा जैसा माहौल नहीं बने।

पक्ष-विपक्ष : आवारा कुत्तों के जीवन को बेहतर और समाज को सुरक्षित बनाने वाला समाधान चाहते हैं दोनों पक्ष

इतिहास बताता है, कुत्तों को हटाने से बढ़ता है संकट

सूरत नगर निगम आयुक्त के आदेश पर 1994 में दो हफ्तों में शहर के सभी कुत्ते मार दिए गए। कुत्ते नहीं रहे तो चूहों ने जमीन पर कब्जा कर लिया और दो हफ्ते बाद घातक बीमारी ब्यूबोनिक प्लेग के तीन मामले सामने आए। पूरे देश में लोग मास्क पहनने लगे, निर्यात रुक गया और पर्यटन ठप पड़ गया। 1880 के दशक में पेरिस में सभी कुत्ते-बिल्लियां मारने और माओ के समय चीन में गौरैया खत्म करने के आदेश के नतीजे भी विनाशकारी रहे। गौरया के विनाश से भयानक अकाल पड़ गया, गौरैया से नियंत्रित होने वाली टिड्डियां अनियंत्रित हो गई और उन्होंने देश को बर्बाद कर दिया। हाल ही सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए सभी कुत्तों को सड़कों से हटाने का जो आदेश दिया है, उसमें न तो मौजूदा कानूनों और न ही इससे होने वाले हानिकारक परिणामों पर विचार किया गया है।

डब्ल्यूएचओ के 1:100 के अनुपात (हर सौ लोगों पर एक कुत्ता) के सर्वे के आधार को मानें तो भारत में कुल 1.4 करोड़ कुत्ते हैं। अगर दिल्ली, राजस्थान या तमिलनाडु जैसे राज्य यह आदेश लागू करें तो बजट का आधे से अधिक हिस्सा पाउंड बनाने में खर्च हो जाएगा। दिल्ली में इसका अर्थ होगा- 3,000 शेल्टर, 1.5 लाख सफाईकर्मी, 500 वैन, दर्जनों पशु-चिकित्सक व गार्ड और 15,000 करोड़ रुपए का खर्च (जमीन छोड़कर)। सिर्फ खाने पर ही हर हफ्ते 5 करोड़ रुपए लगेंगे, जो फिलहाल समाज खुद वहन करता है। राज्यों में तो यह बोझ कई गुना बढ़ जाएगा। पाउंड बार-बार असफल साबित हुए हैं। 30 साल पहले जोधपुर का पाउंड कुछ हफ्तों में ही बंद करना पड़ा, क्योंकि सभी कुत्ते मर गए और हालत इतनी खराब हो गई कि स्टाफ अंदर नहीं जा सकता था। मोहाली का पाउंड भी इन्हीं कारणों से आज खाली पड़ा है। कुत्तों को हटाने से बंदरों का उत्पात भी बढ़ेगा, क्योंकि अभी कुत्तों के डर से वे थोड़ा दूर-दूर ही रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 30 साल पहले कुत्तों की नसबंदी को एकमात्र प्रभावी समाधान बताया था। दुर्भाग्यवश, इसके लिए नियम तो बनाए गए, लेकिन कार्यक्रम को कोई ठोस रूप व पर्याप्त वित्तीय मदद नहीं दी गई। एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया के पास इसके लिए न्यूनतम स्टाफ है और कोई अलग बजट भी नहीं। राज्यों में कुत्तों की नसबंदी के लिए शहरी विकास मंत्रालय से जारी फंड बड़े शहरों तक ही पहुंचता है, नगरपालिकाओं को खुद संसाधन जुटाने पड़ते हैं। कई केंद्र अनुभवहीन या धोखेबाज एनजीओज के भ्रष्टाचार के अड्डे बन गए हैं, जो स्थानीय अधिकारियों की मिलीभगत से आंकड़े बढ़ाकर अधिक फंड लेते हैं और रोजाना कुत्तों को इधर से उधर करते रहते हैं, जिससे काटने की घटनाएं बढ़ती हैं।

कुत्ते के काटने के आंकड़ों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना बंद करना होगा। सच्चाई यह है कि एंटी-रेबीज का पूरा कोर्स पांच इंजेक्शन का होता है और हर इंजेक्शन को अलग घटना के रूप में गिना जाता है। इसलिए संसद में पिछले साल बताए गए 37 लाख मामलों को पांच से विभाजित करने पर वास्तविक घटनाएं लगभग 7.2 लाख निकलती हैं। इनमें भी कोई आधिकारिक आंकड़ा पालतू और आवारा कुत्तों के काटने में आनुपातिक अंतर नहीं बताता, लेकिन अनौपचारिक अनुमान 70:30 का है। रेबीज से होने वाली 54 मौतों की तुलना में कार दुर्घटनाओं में हर हफ्ते लगभग 2,000 मौतें होती हैं। इस समस्या के समाधान में लखनऊ पूरे देश के लिए अनुकरणीय है। यहां उत्कृष्ट नसबंदी केंद्र भी है और सभी पालतू कुत्तों का पंजीकरण भी अनिवार्य है। विदेशी नस्लों के मालिकों को 500 रुपए वार्षिक शुल्क देना होता है, जबकि भारतीय कुत्तों को अपनाने वालों के लिए कोई शुल्क नहीं है।

नीदरलैंड ने तो पूर्ण सरकारी फंडिंग से व्यापक राष्ट्रीय नसबंदी कार्यक्रम चलाकर आवारा कुत्तों की समस्या ही खत्म कर दी। अक्टूबर 2022 में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि सड़क के कुत्तों को कैद में नहीं रखा जा सकता और आवारा कुत्तों को खिलाने वालों को उन्हें गोद लेने या शेल्टर में रखने के नागपुर पीठ के आदेश को रोक दिया था। एक स्वतः संज्ञान आदेश इसे कैसे पलट सकता है। भारत में पहले से ही पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और पशु जन्म नियंत्रण नियम जैसे स्पष्ट कानूनी प्रावधान हैं। कोई भी कार्रवाई इन्हीं के दायरे में होनी चाहिए।

(मेनका गांधी लंबे समय से एनिमल राइट्स एक्टिविस्ट के रूप में कार्यरत हैं)

मेनका गांधी
पूर्व केंद्रीय मंत्री
@patrika.com

1.53 करोड़ कुत्ते हैं अनुमानित देशभर में

37 लाख से ज्यादा डॉग बाइट के केस हुए 2024 में देशभर में

54 लोगों की मौत हुई रेबीज से 2024 में, 2022 में सुप्रीम कोर्ट का एक अलग फैसला भी

इंसानों की सुरक्षा सर्वोपरि, शेल्टर होम ही विकल्प

इन दिनों आवारा कुत्तों को लेकर देशभर में बहस छिड़ी हुई है। ऐसा दिखाया जा रहा है मानो इस मुद्दे पर दो खेमे बन गए हैं- एक, जो कुत्तों को शेल्टर होम भेजने के खिलाफ हैं और दूसरे वे जो उन्हें सड़कों से हटाना चाहते हैं। लेकिन सच्चाई इससे अलग है। हकीकत यह है कि केवल 10 फीसदी से भी कम तथाकथित डॉग लवर्स इस बहस को चला रहे हैं, जबकि देश की 90 फीसदी जनता इन कुत्तों से त्रस्त है। दिल्ली का उदाहरण देख लीजिए। सैकड़ों की संख्या में रेजीडेंट वैलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) हैं। ये सुप्रीम कोर्ट के फैसले के साथ हैं। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में कहा है कि इंसानों की सुरक्षा सर्वोपरि है और आवारा कुत्तों को सड़कों से हटाकर शेल्टर होम में रखना सरकार की जिम्मेदारी है। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ तथाकथित पशु-प्रेमी और एनजीओ इसे भावनात्मक मुद्दा बनाकर आम जनता की पीड़ा को अनसुना कर रहे हैं।

हमारी संस्कृति में पशु-पक्षियों की रक्षा के लिए हर पशु-पक्षी को किसी न किसी देवता के साथ बिठाया गया है। ताकि लोग उनका भी सम्मान करें। हमारा आंदोलन भी कुत्तों को सम्मान दिलाने के लिए है क्योंकि यदि ये इसी तरह से काटते रहे तो लोग इनसे नफरत करने लगेंगे। हमारे बचपन में घर-घर यह परंपरा थी कि पहली रोटी गाय को और आखिरी रोटी कुत्ते को दी जाती थी। उस समय गली-मोहल्ले में मुश्किल से एक-दो कुत्ते होते थे, जो सबके परिचित थे और किसी के लिए खतरा नहीं थे। लेकिन आज गली-कूचों में झुंड के झुंड कुत्ते घूमते हैं और आए दिन उनके द्वारा किए हमले की खबरें आती हैं। दिल्ली में ही आज करीब दस लाख आवारा कुत्ते हैं। अगर आज से भी नसबंदी और वैक्सीनेशन पूरी रफ्तार से शुरू हो जाए तो भी इन दस लाख कुत्तों का क्या होगा, जो सड़कों पर हैं। ये इसी तरह से क्या काटते रहेंगे और आम जनता भय के साये में जीती रहेगी?

हर साल लाखों लोग कुत्तों के हमलों का शिकार होते हैं। हमारे देश में रेबीज जैसी बीमारी से मौतें होती हैं। बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए यह सबसे बड़ा खतरा है। हमारे देश में रेबीज जैसी भयंकर बीमारी से हर साल कई लोग मर जाते हैं। जिसे रेबीज हो जाए उसकी जीने के बहुत कम उम्मीद रहती है।

ज्यादातर शेल्टर होम के विरोधी वे लोग हैं जिन्होंने घर में देसी-विदेशी कुत्ता पाल रखा है, पर वे इन आवारा कुत्तों को गोद नहीं लेंगे। ये कहते हैं कि सरकार के पास न इतना फंड है और न इतने शेल्टर है फिर इन आवारा कुत्तों को कहां रखेंगे? लेकिन यदि ऐसा करके इनको बता दिया जाए ये तब भी नहीं मानेंगे। ये कहते हैं शेल्टर होम मत भेजो। स्टरलाइजेशन और वैक्सीनेशन से कंट्रोल करो। यदि इनकी बात मान भी लेते हैं तो फिर जो दस लाख कुत्ते सड़क पर अभी हैं और काटते रहते हैं उनका क्या इलाज है?

ज्यादातर कुत्ता प्रेमियों ने अपने एनजीओ बना रखे हैं जिनमें ये विदेशी फंड लेते हैं, इनकी असली चिंता ये हैं। दिल्ली में एमसीडी ने इन जैसी 20 एनिमल वेलफेयर एसोसिएशन को स्टरलाइजेशन-वैक्सीनेशन का काम दे रखा था। इन्होंने ही यह काम ठीक से नहीं किया। इन एसोसिएशन ने ना तो कोई शेल्टर होम बनाएं, न ही वे इन कुत्तों को गोद लेने के लिए तैयार हैं। और न ही जिनको ये कुत्ते काटते हैं उनकी कोई मदद करते हैं।

आज तक कुत्तों की भलाई के लिए भी इन्होंने ना कोई आवाज उठाई और ना ही इनके लिए काम किया। अब जब सरकार सुप्रीम कोर्ट का आदेश पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है, तब इन कुत्ता प्रेमियों को भी चाहिए कि वे सरकार की मदद करें क्योंकि हमारा लक्ष्य है मानव और पशु एक साथ विश्वास के साथ रह सकें।

यह लड़ाई 'कुत्ता-प्रेम' बनाम 'कुत्ता-विरोध' की नहीं है। यह लड़ाई मानव जीवन और सुरक्षा की है। इंसान और कुत्तों- दोनों की भलाई इसी में है कि इंसानों के लिए सड़कें सुरक्षित हों और कुत्तों को सही ढंग से शेल्टरों में रखा जाए। बड़े पैमाने पर कुत्तों के लिए शेल्टर होम बनाए जाएं। वहां इनकी उचित देखभाल की जाए। डॉग लवर्स वहां जाकर खाना खिलाएं। नसबंदी और वैक्सीनेशन अभियान युद्ध-स्तर पर चलाया जाए। भीड़भाड़ और पर्यटन वाले क्षेत्रों से कुत्तों को तुरंत हटाया जाए। सुप्रीम कोर्ट के आदेश का सख्ती से पालन हो।

(विजय गोयल पिछले दो वर्षों से कुत्तों की समस्या पर आंदोलन चला रहे हैं)

विजय गोयल
पूर्व केंद्रीय मंत्री
@patrika.com

बुक इनसाइट

फ्रेश, ग्रीन लाइफ

सेबेस्टियन कास्टिलो की नई किताब फ्रेश, ग्रीन लाइफ एक अनोखी आत्मकथात्मक कहानी है जो एक युवा लेखक के जीवन, आत्म-सुधार और अकेलेपन के सफर को बयान करती है। यह उपन्यास एक सर्द रात में होने वाली एक नववर्ष की पार्टी के इर्द-गिर्द घूमती है जहां नायक, जिसका नाम भी सेबेस्टियन कास्टिलो है अपने अतीत और भावनाओं से जूझता है। किताब की शुरुआत तब होती है जब सेबेस्टियन जो एक दिल की बीमारी के बाद खुद को एक साल के लिए अलग-थलग कर लेता है एक निमंत्रण स्वीकार करता है। यह निमंत्रण उसके पुराने प्रोफेसर के घर पार्टी में जाता है जहां उसकी पुरानी सहपाठी रुचि मारिया से मिलने की उम्मीद है। कहानी में हास्य, दर्शन और आत्म-चिंतन का मिश्रण है। उपन्यास की भाषा सरल और प्रभावशाली है।

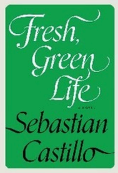

प्रसंगवश

बदइंतजामी के राजमार्गों पर हादसों में कुचल रहे परिवारों के सपने

न तो टोल वसूल रही कंपनियों को चिंता है और न ही एनएचएआइ प्रबंधन को

हाईवे पर बिना चेतावनी सूचक संकेतक लगाए खड़े ट्रक से टकराए मोटरसाइकिल सवार की मौत के साथ ही पूरे परिवार की खुशियां छिन गई। जयपुर-दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर बिलौंची पुलिया के पास हुए हादसे ने हाईवे पर पेट्रोलिंग इंतजामों की भी पोल खोल दी है। राजस्थान में यह कोई पहला मौका नहीं जब आम तौर पर सुरक्षित समझे जाने वाले हाईवे पर ऐसी लापरवाही सामने आई हो। फर्क इतना ही है कि तमाम लापरवाही सामने आने के बावजूद हादसों में जान गंवाने वाले परिवारों की कराह कोई नहीं सुनता। हैरत की बात यह है कि नियमों में वाहनों को सिर्फ पार्किंग स्थल पर पार्क करने के प्रावधान के बावजूद ट्रक बिना चेतावनी संकेतक के सड़क पर खड़ा था। अपनी लापरवाही स्वीकार करने के बजाय एक्सप्रेस हाईवे के गश्ती दल का यह टका सा जवाब तो और लाचारी भरा है कि अवैध रूप से खड़े वाहन हटाने के बाद फिर खड़े हो जाते हैं, हम कुछ नहीं कर सकते। इसका मतलब तो यही है कि राजमार्ग पर वाहन लेकर निकलने वाले अपनी सुरक्षा की भी चिंता खुद करें। क्योंकि न तो भारी-भरकम टोल वसूलने वाली कंपनियों को चिंता है और न ही पेट्रोलिंग के काम में लगे सिस्टम को।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

यह बात सही है कि अधिकांश मामलों में चालक की लापरवाही सामने आती है। लेकिन जब नियम-कायदों का उल्लंघन पार्किंग व्यवस्था में ही होने लगे तो फिर दोष किसको दें? भारत में हर साल करीब 1.5 लाख लोग सड़क हादसों में जान गंवाते हैं। जब टोल टैक्स वसूली करोड़ों में होती है, तो फिर आम जनता को सुरक्षित सड़कें क्यों नहीं मिलतीं? एनएचएआइ प्रबंधन और टोल कंपनियां सड़क पर खड़े वाहनों को हटाने की जिम्मेदारी से पल्ला क्यों झाड़ लेती है? ऐसे हादसे राजमार्ग प्रबंधन में जुटे लोगों के चेहरे पर करारा तमाचा है। अगर समय पर पेट्रोलिंग होती, चेतावनी संकेत लगाए जाते, या सड़क पर खड़े वाहनों को हटाने की पुख्ता व्यवस्था होती, तो शायद बिलौंची पुलिया के पास यह हादसा भी नहीं होता। ऐसे हादसों की रोकथाम के लिए एनएचएआई और टोल कंपनियों के प्रबंधन को सड़कों को सुरक्षित रखने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे।

- युगलेश शर्मा
yuglesh.sharma@epatrika.com

आत्म दर्शन

संभव व असंभव की उपासना परम ब्रह्म की प्राप्ति का साधन नहीं

संभव की उपासना का फल है- दैविक और सूक्ष्म लोकों की प्राप्ति। यह सृष्टि के प्रकट रूपों की उपासना है। असंभव की उपासना का फल है- अव्यक्त कारण की स्थिति में प्रवेश। यह सूक्ष्मतम कारण की उपासना है, जो ब्रह्म का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कराती। इन दोनों के फल अलग-अलग हैं और दोनों ही परम ब्रह्म की प्राप्ति के साधन नहीं हैं। वे केवल क्रमिक साधन हैं, जो साधक को अंततः आत्मज्ञान की ओर ले जा सकते हैं, यदि उनसे आगे बढ़ा जाए। 'संभव' सृष्टि का प्रकट रूप, देवता, सूक्ष्म जगत; इसकी उपासना से मन की एकाग्रता और सूक्ष्म अनुभव मिलते हैं। 'असम्भव' अव्यक्त कारण, प्रकृति, माया; इसकी उपासना से साधक कारण अवस्था तक पहुंचता है। परंतु अद्वैत वेदांत कहता है- इन दोनों का अंतिम लक्ष्य ब्रह्म नहीं है। वे केवल सीढ़ियां हैं, सीढ़ियों पर रुक जाने से शिखर तक नहीं पहुंचा जा सकता। जैसे कोई यात्री दो अलग-अलग मार्गों से यात्रा की तैयारी करे, एक मार्ग सुंदर दृश्यों वाला, दूसरा रहस्यमय घाटियों से होकर जाने वाला, परंतु दोनों ही मार्ग यदि पर्वत-शिखर तक न पहुंचें, तो यात्रा अधूरी रह जाती है। वैसे ही संभव और असंभव की उपासनाएं, यदि ब्रह्म-साक्षात्कार तक न ले जाएं, तो वे अलग-अलग अनुभव तो देती हैं, पर मुक्ति नहीं।

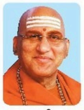

स्वामी अवधेशानंद गिरि
@patrika.com

कोलॉसी ऑफ मेमनन : मिस्र की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर

मिस्र की नील घाटी में खड़े यह दो विराट पत्थर की प्रतिमाएं 'कोलॉसी ऑफ मेमनन' कहलाते हैं। इन्हें लगभग 1350 ईसा पूर्व फिरौन अमेनहोटेप तृतीय के विशाल स्मारक मंदिर के प्रवेश द्वार पर स्थापित किया गया था। समय के साथ मंदिर नष्ट हो गया, पर ये प्रतिमाएं अब भी अडिग खड़ी हैं। यूनानी और रोमी यात्रियों के लिए ये अद्भुत दृश्य हुआ करती थीं। उत्तरी प्रतिमा पर यूनानी-रोमी काल के लगभग 107 शिलालेख आज भी अंकित हैं, जिनमें ग्रीक पौराणिक राजा मेमनन का उल्लेख मिलता है। इसी कारण इन मूर्तियों को 'मेमनन' नाम मिला। यह स्थल मिस्र की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर और मानव कला-कौशल का अनुपम उदाहरण है। यह प्रतिमाएं आज भी दुनिया भर के पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करती हैं।

फैक्ट फ्रंट

छिपने की कला वाला पोटू पक्षी

दुनिया में ऐसे कई पक्षी हैं जो अपनी सुंदरता और रंगों के लिए जाने जाते हैं लेकिन कुछ पक्षी अपनी अनोखी आदतों और छिपने की कला से प्रसिद्ध होते हैं। इन्हीं में से एक है पोटू पक्षी। यह पक्षी मुख्य रूप से सेंट्रल और साउथ अमरीका के जंगलों में पाया जाता है। पोटू पक्षी का आकार उल्लू जैसा होता है। इसकी बड़ी-बड़ी गोल आंखें और चौड़ी चोंच इसे अलग पहचान देती हैं। इसका रंग हल्का भूरा होता है जिससे यह आसानी से पेड़ की सूखी डाल या लकड़ी के टुकड़े जैसा दिखाई देता है। यही कारण है कि यह पक्षी दिन के समय आसानी से नजर नहीं आता। दिन में यह पक्षी उड़ता नहीं, बल्कि किसी सूखी टहनी या पेड़ के ठूंठ पर बैठकर एकदम लकड़ी के हिस्से जैसा लगने लगता है।

आपकी बात

अर्थव्यवस्था को फायदा होगा

जीएसटी की दरें पूरी तरह से व्यावहारिक व उपयोगी होंगी। दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं के दाम कम होंगे। इससे खपत और मांग बढ़ेगी, अर्थव्यवस्था को फायदा होगा। सबसे मुख्य बात यह है कि जीएसटी रजिस्ट्रेशन, रिफंड और रिटर्न की प्रक्रिया आसान हो जाएगी। इससे लघु उद्योगों को लाभ मिलेगा। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

- लता अग्रवाल, चित्तौड़गढ़

दरें सुविधाजनक होने से लाभ

जीएसटी सुधार में 2 स्लैब रखने का प्रस्ताव उत्तम है। इससे सरकार को न केवल राजस्व एकत्र करने में सुविधा होगी बल्कि रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतें भी कम होंगी। कर उगाही के सरल नियमों से आम व्यापारी और उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी। अभी जीएसटी में जटिलताओं की शिकायतें व्यापारी वर्ग की ओर से की जा रही हैं। समय की मांग यही है कि दरें और नियम जितने सुविधाजनक होंगे, सरकार और आम लोगों को फायदा होगा।

- हरिप्रसाद चौरसिया, देवास

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'जीएसटी सुधार के तहत केवल 2 स्लैब करने से क्या बदलाव आएंगे?' ऑनलाइन भी देखें।
https://shorturl.at/EdkZ2

आज का सवाल

'हिट एंड रन' के बढ़ते मामलों पर किस तरह अंकुश लगाया जा सकता है?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

विश्व फोटोग्राफी दिवस आज | छायांकन प्रकृति में घुले रंगों, दृश्य-छटाओं, व्यक्ति की भंगिमाओं से भरा-भाव भव है

अच्छा छायाचित्र वही जिसे देखकर फिर से देखने का मन करे

डॉ. राजेश कुमार व्यास
संस्कृतिकर्मी, कवि और कला समीक्षक
@patrika.com

दृश्य-छटाओं का अनुकीर्तन है छायांकन कला

छायांकन दृश्यबंध कला है। एक दृश्य में और भी अनदेखे बहुत से दृश्यों को उद्घाटित करने की कला। कैमरा वहां प्रमुख नहीं होता, उससे दृश्य सिरजने वाला महत्त्वपूर्ण होता है। यह यथार्थ का कलान्वेषण है। कैमरा बरतने वाला यदि कला-मन का होगा तो वह देखे-अदेखे की लय, गति और यति (ठहराव) को भी सौंदर्य प्रदान कर देगा।

विश्व छायांकन दिवस फोटोग्राफी से जुड़ी कला, इसके विज्ञान और इतिहास से ही नहीं जुड़ा है, यह इसमें निहित शिल्प का समर्पण है। कलाओं की वैदिक कालीन संज्ञा शिल्प कही गई है। शिल्प माने संगीत, नृत्य, नाट्य, वास्तु, चित्र और तमाम दूसरी कलाएं। शिल्प का अर्थ ही है, गढ़ना। सृजन के उत्स संग कौशल। छायांकन कला छवि में निहित सुंदर-असुंदर का भाव-भव है। सुप्रसिद्ध यूनानी कवि होमर ने कभी कहा था, जो अभिनव है वही सुंदर है। छायांकन कला का सच भी यही है। मानव मन की संवेदनाओं, छाया-प्रकाश संयोजन और एक ही दृश्य में बहुत सा और भी जब चाहे आप वहां तलाश सकते हैं। अच्छा

छायाचित्र वही होता है जिसे देखकर फिर से देखने का मन करे। छायांकन ही क्यों, दूसरी सभी कलाओं संग भी यही होता है। कुछ सुना और बार-बार सुनने का मन करे, नृत्य की कोई भंगिमा देखी और फिर से देखने को उत्सुक हों, कलाकृति को निहारा और फिर से उसके रंगों की लय में मन भटके-समझ लें वह अनुकरण नहीं अनुकीर्तन है। माने गुणगान!

जर्मनी के ज्योतिर्विद और वैज्ञानिक जॉन हर्शेल ने 1839 ईस्वी में अपने एक मित्र को लिखे पत्र में पहले पहल फोटोग्राफी शब्द का इस्तेमाल किया था। इससे पहले 1826 में फ्रांसीसी आविष्कर्ता निप्से ने विश्व का पहला फोटोग्राफ लिया। इसे देखकर पेरिस में चित्रकार प्राध्यापक पॉल देला रोष ने कहा था कि चित्रकला आज से मर गई है। पर आज फोटोग्राफी चित्रकला को समृद्ध कर रही है। मुझे लगता है, दृश्य को पकड़ते बहुतेरी बार छायाकार उस निःसंग को भी पकड़ता है जिसमें मौन भी हमसे बतियाता है। इसीलिए कहा जाता है, हजारों-हजार शब्दों में जो नहीं कहा जा सकता वह एक छायाचित्र कह देता है। छायांकन कला दृश्य में निहित रंगों का पुनराविष्कार करती है। कैमरे में जो लेंस लगे होते हैं वह दृश्य में निहित रंगों में सुधार कर हमें परोसते हैं। माने वहां वस्तु, किसी मुद्रा में निहित प्रकाश कम-ज्यादा है तो उसे नियंत्रित कर इच्छित परिणाम ले सकते है। यही छायांकन की कला-साधना है।

राजा रवि वर्मा प्रातः चार बजे उठते और चित्र बनाते। क्यों? इसलिए कि तब भोर का उजास छा रहा होता और रात्रि के अंधकार का गमन हो रहा होता है। प्रकृति के इन रंगों की अनुभूति उन्होंने चित्रों में संजो ली। छायांकन में भी तो यही होता है! वामन ठाकरे बड़े चित्रकार हुए पर चुना उन्होंने फोटोग्राफी को। कहते हैं, पूर्व राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद स्वयं को फोटोजेनिक नहीं मानते थे। वह चाहते थे उनका ऐसा फोटो निकले जो सुंदर हो। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के ख्यातनाम छायाकारों ने प्रयास किया पर पार नहीं पड़ी। अंततः वामन ठाकरे याद आए। वह पहुंचे और जो लोग राष्ट्रपति से मिलने आ रहे थे, उनके साथ बतियाते उन्हें देखते रहे। लंबा समय बीत गया। राष्ट्रपति ने कहा 'तुम फोटो क्यों नहीं ले रहे हो?' ठाकरे ने कहा, 'वही तो कर रहा हूं।' फखरुद्दीन चौंके। असल में वामन उनके भांत-भांत के पोज देख रहे थे। अंततः एक पोज को कैमरे में उन्होंने संजो लिया। यह इतना सुंदर था कि वही बाद में सार्वजनिक प्रसारित हुआ।

कला की यही साधना है। किसी एक दृश्य में छायाकार घंटों तपता है या अनायास को लपक लेता है, तब कहीं वांछित पाता है। इसीलिए कहूं, छायांकन प्रकृति में घुले रंगो, दृश्य-छटाओं, व्यक्ति की भंगिमाओं से भरा-भाव भव है। छायांकन के सृजन स्रोतों पर जाएंगे तो संस्कृति, परंपरा, इतिहास को वहां ध्वनित होते पाएंगे। क्षण जो बीत गया है उसकी स्मृतियां भी झिलमिलाती वहां नजर आएंगी।

भारत में शुभांशु शुक्ला

पृथ्वी पर लौटने के लगभग एक महीने बाद भारत आये वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का जिस तरह जोरदार स्वागत हुआ, वह अंतरिक्ष में उनकी विराट उपलब्धि को देखते हुए स्वाभाविक ही है. शुभांशु शुक्ला न सिर्फ 41 वर्षों बाद अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री बने, बल्कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले वह पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री भी हैं. उनका यह अनुभव भविष्य के गगनयान मिशन और भारत के अपने अंतरिक्ष स्टेशन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है. वह आइएसएस के एक्सिओम-4 निजी अंतरिक्ष मिशन का हिस्सा थे, जो 25 जून को फ्लोरिडा से रवाना हुआ था और 26 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचा था. कुल 18 दिनों के मिशन के दौरान शुभांशु शुक्ला ने 60 से अधिक प्रयोग किये और 20 आउटरीच सत्र आयोजित किये थे. उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुभांशु शुक्ला की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए कहा था कि उनकी अंतरिक्ष यात्रा ने एक पूरी पीढ़ी को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है और यह आगामी मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम गगनयान के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा. स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उन्हें बधाई देते हुए कहा था कि देश का हर नागरिक अंतरिक्ष क्षेत्र की इस प्रगति से गौरवान्वित है. शुभांशु शुक्ला की वापसी के उपलक्ष्य में लोकसभा में विशेष चर्चा का आयोजन किया गया. केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोल देने के बाद भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था आठ अरब डॉलर की हो गयी है, जिसके अगले दशक में 45 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है. उन्होंने यह भी कहा कि भारत 2035 तक अपना अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन बनायेगा और 2040 तक एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री चांद पर कदम रखेगा. हालांकि कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने शुभांशु शुक्ला के अंतरिक्ष मिशन की तारीफ करते हुए कहा कि इसने देश की नयी पीढ़ी को विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग, गणित और अंतरिक्ष अध्ययन में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है, जो भारत के दीर्घकालिक अंतरिक्ष लक्ष्यों के लिए आवश्यक है. अलबत्ता ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर विपक्ष का गैरहाजिर रहना ठीक नहीं था, क्योंकि शुभांशु शुक्ला की उपलब्धि राष्ट्रीय उपलब्धि है. शुभांशु शुक्ला की कहानी न केवल देशवासियों को प्रभावित करती है, बल्कि भारत को अंतरिक्ष में नयी ऊंचाइयों तक ले जाने का भी संदेश देती है.

बेहद गौरवशाली अंतरिक्ष अभियान के बाद शुभांशु शुक्ला की वतन वापसी पर जोरदार स्वागत तो हुआ ही, लोकसभा में उनकी उपलब्धियों पर चर्चा भी हुई. उनकी कहानी भारत को अंतरिक्ष में नयी ऊंचाइयों तक ले जाने का संदेश देती है.

देश को चाहिए यूनिवर्सल सिटिजन कार्ड

प्रभु चावला
एडिटोरियल डायरेक्टर
द न्यू इंडियन एक्सप्रेस
prabhuchawla@newindianexpress.com

पिछले दिनों बॉम्बे हाइकोर्ट ने बता दिया कि आधार, पैन और वोटर आइडी नागरिकता के सबूत नहीं हैं. ऐसे में, किसी को उसकी भारतीय नागरिकता का प्रमाणपत्र कहां से मिलेगा? चुनाव आयोग वोट देने के इच्छुक नागरिकों से 11 दस्तावेज मांगता है. जाहिर है, देश को यूनिवर्सल सिटिजन कार्ड चाहिए. ऐसा कार्ड, जो पहचान के साथ नागरिकता और वोट देने का भी प्रमाणपत्र हो. देश के 95 करोड़ मतदाताओं की पहचान संदिग्ध होना अस्वीकार्य है.

आजादी के 78 वर्ष बीत जाने के बावजूद, हर ध्वजारोहण के दौरान किये जाने वाले विकास के वादों के बावजूद, नये भारत के तथाकथित डिजिटल केंद्र में अरबों खर्च करने के बावजूद एक भारतीय नागरिक अपने पहचान पत्रों के साथ बेबस खड़ा है. सुप्रीम कोर्ट की पहले की चेतावनी पर सहमति जताते हुए बॉम्बे हाइकोर्ट ने भ्रम तोड़ दिया है : पहचान के पवित्र टोकन समझे जाने वाले आधार, पैन और वोटर आइडी नागरिकता के सबूत नहीं हैं. यह एक धोखा है, नौकरशाही की कलई उतार देने वाली ऐसी घटना है, जिसकी चपेट में देश के 95 करोड़ मतदाता हैं. जिन दस्तावेजों को प्रमाणपत्र बताया गया था, उन्हें अचानक खोखला बता दिया गया है. ऐसे में, चाकू की तरह बेधक सवाल सामने है कि अगर ये कार्ड हमारी नागरिकता साबित नहीं करते, तो नागरिकता किससे साबित होती है? यह भी कि अगर राज्य इस प्रश्न का जवाब नहीं देता, तो फिर इस देश का क्या करें, जिसे हम अपना समझते आये हैं?

बॉम्बे हाई कोर्ट का फैसला बाबू अब्दुल रउफ सरदार के लिए वज्रपात की तरह है, जिन्हें अदालत ने जमानत नहीं दी. आरोप है कि बांग्लादेश से अवैध रूप से भारत आये इस व्यक्ति ने यहां भारतीय नागरिकता से संबंधित जाली प्रमाणपत्र बना लिये. अदालत में न्यायमूर्ति अमित बोरकर की टिप्पणी स्पष्ट और दोटूक थी कि 'आधार, पैन और मतदाता प्रमाण पत्रों के होने भर से कोई इस देश का नागरिक नहीं बन जाता.' उनका यह भी कहना था कि ये दस्तावेज रोजगार पाने के प्रमाणपत्र हैं, इनसे नागरिकता कानून, 1955 के तहत नागरिकता साबित नहीं होती. उसी दिन सर्वोच्च न्यायालय ने एक दूसरे मामले में भारत निर्वाचन आयोग का समर्थन करते हुए कहा कि आधार नागरिकता के प्रमाण का निर्णायक सबूत नहीं हो सकता. घुसपैठ पर अदालतों की सख्ती समझ में आती है, पर क्या सरकारी एजेंसियां भी अदालती आदेशों को बिना सोचे-विचारे उन पर लागू कर सकती हैं, जो अविभाजित भारत में पैदा हुए थे और जिन्होंने स्वतंत्र भारत को अपने आवास के रूप में चुना? जो आजाद भारत में पैदा हुए, उनका क्या? ये सारी बातें एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ले जाती हैं. किसी को उसकी भारतीय नागरिकता का प्रमाणपत्र कहां से मिलेगा? नौकरशाही में तकरार की वजह से आरओसी (सिटिजन ऑफ रजिस्टर) को 2011 से अद्यतन नहीं किया गया है. आरओसी संभवतः अकेला विश्वसनीय दस्तावेज है, जिसे सरकारी अधिकारियों द्वारा हर दशक में तैयार किया जाता है. अब चुनाव आयोग ने नागरिकता प्रदान करने का तंत्र खुद ही विकसित कर लिया है. वह वोट देने के इच्छुक नागरिकों से 11 दस्तावेज मांगता है. चुनाव आयोग को अब जन्म प्रमाणपत्र, मैट्रिक के प्रमाणपत्र, स्थायी निवास प्रमाणपत्र, शादी के प्रमाणपत्र तथा माता-पिता के जन्म प्रमाणपत्र चाहिए. यह आश्चर्यजनक है कि आधार, पैन और चुनाव आयोग के फोटो प्रमाणपत्र नागरिकता के प्रभावी सबूत नहीं हैं. ऐसा क्यों है, इसका कोई सुसंगत जवाब नहीं दिया गया है. आयोग को याद दिलाने की जरूरत है कि सिर्फ 2.5 फीसदी भारतीयों के पास पासपोर्ट और मात्र 14.71 प्रतिशत भारतीयों के पास मैट्रिक के प्रमाणपत्र हैं. यह अनुमान लगाना कठिन है कि कितने भारतीयों के पास जन्म प्रमाणपत्र होगा. अदालत में चुनाव आयोग द्वारा पेश आंकड़ा भी बताता है कि ज्यादातर भारतीयों के पास ये दस्तावेज नहीं हैं.

आधार पर सरकार ने 2023 तक 12,000 करोड़ रुपये खर्च किये. दावा किया गया कि बैंक खाता खोलने, टैक्स चुकाने, संपत्ति के लेन-देन और हवाई अड्डे जैसी संवेदनशील जगहों पर प्रवेश में यह दस्तावेज काम आयेगा. कार खरीदने, घर किराये पर लेने और टैक्स फाइल करने के लिए तो यह अनिवार्य है, पर इससे नागरिकता साबित नहीं होती. चुनाव आयोग कहता है कि मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के लिए आधार पर्याप्त नहीं. जिस सरकार ने आधार को हमारे अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण बताया था, वही अब कंधे उचका कर कहती है, 'सॉरी, यह नागरिकता साबित करने के लिए नहीं है.' चुनाव आयोग द्वारा जारी मतदाता पहचानपत्र दशकों से मतदान करने का सबूत माना जाता रहा है, पर अब आयोग को अपनी ही मतदाता सूची गड़बड़ लग रही है, क्योंकि इसमें अवैध रूप से आये घुसपैठियों के नाम भी हैं. सुरक्षित नागरिकता प्रमाणपत्र की दिशा में अब तक ठोस पहल क्यों नहीं की गयी, जैसे अमेरिका में सोशल सिक्योरिटी नंबर या ब्रिटेन में नेशनल इंश्योरेंस नंबर है? बॉम्बे हाइकोर्ट के फैसले पर एडवोकेट सौरव अग्रवाल की टिप्पणी बेधक है, 'सरकार और न्यायपालिका के लिए नागरिकता के प्रमाण से जुड़े दस्तावेज मुहैया कराने का समय आ गया है. यह आश्चर्यजनक है कि आधार का औचित्य ठहराने के लिए सरकार को सुप्रीम कोर्ट में इतनी कवायद करनी पड़ी और लोगों की निजता के अधिकार का हनन करने के बाद आधार को अब कागज का एक टुकड़ा बताया जा रहा है.'

जाहिर है, देश को यूनिवर्सल सिटिजन कार्ड चाहिए. ऐसा कार्ड, जो पहचान के साथ-साथ नागरिकता और वोट देने का भी प्रमाणपत्र हो. देश के 95 करोड़ मतदाताओं की पहचान संदिग्ध होना अस्वीकार्य है. आजादी के 78 साल बाद भारत अपने नागरिकों को परिभाषित करने की कोशिश में लगा है. यह हास्यास्पद ही नहीं, लोकतांत्रिक अपमान भी है. क्या मैं एक भारतीय नागरिक हूं? मेरे पास आधार, पैन और वोटर आइडी कार्ड हैं, लेकिन चूंकि मैं इस देश की मौजूदा सरहद से बाहर वहां पैदा हुआ, जिसे पाकिस्तान कहते हैं और चूंकि मेरे माता-पिता के दस्तावेज समय के साथ नष्ट हो गये, इसलिए जब तक मैं पर्याप्त सबूत न दिखाऊं, अदालतें मुझे नाम और देशविहीन ही मानेंगी. यह सिर्फ मेरा बोझ नहीं है- यह एक सामूहिक बीमारी है. यह एक ऐसी कागजी कार्यवाही है, जिसका कोई प्रयोजन नहीं है, नौकरशाही ऐसी है, जिसमें करुणा नहीं है. ऐसे में, पहचान पूछताछ में बदल गयी है. सरकार को खामोशी तोड़ते हुए संदेह के माहौल को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए. उसे एक ऐसा संप्रभु कार्ड तैयार करना चाहिए, जो नागरिकता का प्रमाण हो. ऐसे में, इस देश के करोड़ों भारतीय अपने पहचानपत्रों को तब तक जकड़े रखेंगे, जब तक उन्हें यह न कहा जाए कि ये प्लास्टिक के टुकड़ों के अलावा कुछ नहीं हैं. कौन भारतीय है, आजादी के 78 वर्ष बाद भी इसका जवाब हवा में है. जाहिर है, सबसे निर्मम सच हमारे सामने है. फिलहाल तो मैं मतदाता हूं. लेकिन भविष्य के बारे में भला क्या कह सकता हूं?

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

खेल-शक्ति बनना है, तो खिलाड़ियों का सम्मान करें

मनोज चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार
chaturvedi.manoj23@gmail.com

लवलीना बोरगोहेन एक ओलिंपिक पदक ला चुकी हैं. वह और पदक लाने की क्षमता रखती हैं. इसलिए उन्हें अपने हिसाब से तैयारी का फेडरेशन को मौका देना चाहिए. लिहाजा नियम ऐसे बनें, जिनसे खिलाड़ियों का हित सधे. तभी हम ओलिंपिक जैसे खेलों में दर्जनभर पदक जीत कर सही मायने में जश्न मना सकेंगे.

भारत में खिलाड़ियों को हीरो का दर्जा दिया जाता है. इसकी वजह यह है कि वे अपना अधिकांश समय राष्ट्र की प्रतिष्ठा बनाने में लगा देते हैं. इसलिए जब कभी इन खिलाड़ियों के साथ कोई अपमानित करने वाली घटना होती है, तो बहुत दुख होता है. हम अभी ओलिंपिक जैसे खेलों में बहुत आगे नहीं हैं और मुश्किल से कुछ ही पदक जीत कर ला पाते हैं. इन खेलों में पदक जीतने वालों के लिए तो सम्मान प्रदर्शित करना हम सभी का फर्ज बनता है. महिला बॉक्सर लवलीना बोरगोहेन ओलिंपिक में पदक जीतने वाली भारत की गिनी-चुनी खिलाड़ियों में शामिल हैं. उन्होंने यह उपलब्धि 2020 के टोक्यो ओलिंपिक में हासिल की थी. पिछले दिनों उन्होंने भारतीय बॉक्सिंग महासंघ के कार्यकारी निदेशक अरुण मलिक पर लैंगिक भेदभाव और अपमानजनक व्यवहार का जो आरोप लगाया, वह मर्माहत करने वाला है. हालांकि मलिक ने इन आरोपों को नकारा है और भारतीय ओलिंपिक संघ ने इन आरोपों की जांच के लिए समिति भी बना दी है. इसलिए सही स्थिति क्या है, यह तो जांच के बाद ही सामने आ पायेगी.

पर ओलिंपिक पदक विजेता लवलीना यदि कोई आरोप लगा रही हैं, तो कुछ हुआ ही होगा. राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले खिलाड़ियों के लिए सम्मान प्रकट करना बेहद जरूरी है. कई बार खेलों का संचालन करने वाले पदाधिकारी यह भूल जाते हैं कि उन्हें जो भी वाहवाही मिलती है, उसकी वजह खिलाड़ियों की उपलब्धियां ही हैं. इसलिए यह बेहद जरूरी है कि जिनके बूते आप सम्मान पा रहे हैं, उन्हें सम्मान दें. लवलीना का पूरा मामला निजी कोच को राष्ट्रीय शिविर और विदेश में ट्रेनिंग के दौरान साथ रखने का है. यह कहा गया कि राष्ट्रीय शिविर में निजी कोचों को साथ रखने की फेडरेशन की अनुमति नहीं है. समझने वाली बात यह है कि संध्या गुरंग लवलीना की कोच हैं और वह भारतीय टीम की सहायक कोच भी हैं. यही नहीं, वह द्रोणाचार्य अवॉर्ड भी पा चुकी हैं. ऐसे में यह समझ से परे है कि फेडरेशन ने इस तरह की नीति बनायी ही क्यों है. एक तरफ तो हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रयास करने की बात करते हैं. दूसरी तरफ इन प्रयासों में फेडरेशन स्वयं ही बाधा बन रहा है. लवलीना ने खेल मंत्री मनसुख मांडविया सहित कई लोगों को भेजी शिकायत में आरोप लगाया है कि उनसे कहा गया कि चुप रहो, सिर नीचा करो, जैसा कहा जा रहा है, वैसा करो. यदि यह बात सच है, तो बेहद दुखद है. इस तरह की भाषा तो किसी सामान्य व्यक्ति के प्रति भी इस्तेमाल नहीं की जानी चाहिए, देश का सम्मान बढ़ाने वाली खिलाड़ी के प्रति तो कतई नहीं. वैसे यह बातचीत ऑनलाइन हुई थी, इसलिए इसकी फुटेज आसानी से मिल जायेगी. यदि बात सही साबित होती है, तो इस मामले को जल्द से जल्द सुलझाने की जरूरत है.

हम एक तरफ तो विश्व में खेल शक्ति बनने की बातें करते हैं, दूसरी तरफ कई बार हमारा व्यवहार इसके विपरीत हो जाता है. भारतीय महिला टेनिस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने में यदि किसी खिलाड़ी का हाथ है, तो वह निश्चित ही सानिया मिर्जा हैं. उन्होंने ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंटों तक में सफलताएं पायी हैं, जिनके बारे में इनसे पहले कोई भारतीय महिला खिलाड़ी सोचती तक नहीं थी, परंतु 2005 में कुछ मौलानाओं ने उनके छोटी स्कर्ट पहन कर खेलने को इस्लाम के खिलाफ मान फतवा तक जारी कर दिया था, पर पक्के इरादे वाली सानिया ने अपनी मर्जी से चलना जारी रखा. महान टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस को भी कई बार ओलिंपिक में जोड़ी बनाने को लेकर अपमानित होना पड़ा. भारत में क्रिकेट से दीवानगी की हद तक प्यार किया जाता है. अभी कुछ समय पहले केएल राहुल लखनऊ सुपर जाएंट्स की कप्तानी कर रहे थे और उनकी टीम के हैदराबाद टीम से बुरी तरह से हार जाने पर उसके मालिक ने केएल राहुल को मैदान पर ही बेइज्जत कर दिया. इस घटना की हर किसी ने निंदा की, पर सवाल यह है कि खेल संचालक के दिमाग में यह बात आयी ही क्यों. इसकी एक वजह यह लगती है कि आइपीएल जैसे खेल में मालिक बहुत पैसा लगाते हैं और उनका इरादा वसूली का होता है, इसलिए अपना आपा खोने की आशंका बनी रहती है. इसी तरह, कुछ समय पहले हार्दिक पांड्या को रोहित शर्मा के स्थान पर मुंबई इंडियंस का कप्तान बनाये जाने पर अपमानित किया गया था. हमें समझना होगा कि ऐसी घटनाओं से खेल का भला नहीं होने वाला है.

खेल फेडरेशनों का मकसद देश के लिए अच्छे खिलाड़ी तैयार करके ओलिंपिक, एशियाई खेल और कॉमनवेल्थ जैसे खेलों में ज्यादा से ज्यादा पदक जीतना होता है. हम सभी जानते हैं कि लवलीना एक ओलिंपिक पदक ला चुकी हैं तथा वह और पदक लाने की क्षमता रखती हैं, तो उन्हें अपने हिसाब से तैयारी का फेडरेशन को मौका देना चाहिए. इसलिए नियम ऐसे बनें, जिनसे खिलाड़ियों का हित सधे. ऐसा होने पर ही हम ओलिंपिक जैसे खेलों में दर्जनभर पदक जीत कर सही मायने में जश्न मना सकेंगे.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

देश दुनिया

खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे नागरिकों के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

लगातार बढ़ती मुद्रास्फीति, बढ़ती बेरोजगारी और अपर्याप्त सरकारी सहायता बांग्लादेश में लोगों को गरीबी की ओर धकेल रही है. हर दिन गरीब और निम्न आय वर्ग के लोग सुबह-सुबह टीसीबी (ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ऑफ बांग्लादेश) ट्रकों के सामने चावल, दाल और खाद्य तेल जैसी बुनियादी चीजें खरीदने के लिए कतार में खड़े दिखाई देते हैं, जो आम बाजारों की तुलना में थोड़े सस्ते दामों पर बिकती हैं. पर इनमें से कई लोग खाली हाथ घर लौट जाते हैं क्योंकि सामान जल्दी खत्म हो जाता है. खाने-पीने और अन्य जरूरी सामान की बढ़ती कीमतों से निपटने के लिए कुछ लोगों ने कथित तौर पर अपने खाने की गुणवत्ता कम कर दी है, यहां तक कि इलाज और बच्चों की पढ़ाई भी बंद कर दी है. गरीब, निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोग अपनी वर्तमान आय से अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं. खाद्य संकट पर वैश्विक रिपोर्ट 2025 में गंभीर खाद्य असुरक्षा से पीड़ित लोगों के मामले में बांग्लादेश को विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर रखा गया है. यह दीर्घकालिक चुनौती अब बढ़ती मुद्रास्फीति, स्थिर वेतन और धीमी अर्थव्यवस्था के कारण और भी बढ़ गयी है. बांग्लादेश सांख्यिकी ब्यूरो के अनुसार, जुलाई में समग्र मुद्रास्फीति बढ़कर 8.55 प्रतिशत और खाद्य मुद्रास्फीति बढ़कर 7.56 प्रतिशत हो गयी, जबकि वास्तविक वेतन में लगातार 42 महीनों से गिरावट जारी है. इसका अर्थ है कि आय बढ़ती लागतों के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रही है. इस संकट से निपटने के लिए सरकार को ऐसी नीतियों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाये और रोजगार सृजन को बढ़ावा दे. सामाजिक सुरक्षा जाल का विस्तार, कृषि व लघु उद्यमों में निवेश, और उचित वेतन वृद्धि सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है. इसके लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है, इसके बिना देश में खाद्य असुरक्षा और गरीबी की स्थिति और बदतर हो सकती है.

The Daily Star

बोधि वृक्ष

एक जोड़ एक बराबर एक

गणित का जो एक सूत्र हमें स्कूल में गणित की कक्षा में नहीं पढ़ाया जाता, उसमें हमें महारत हासिल करने की जरूरत है. स्कूल में हम सीखते हैं कि एक जोड़ एक दो होता है. पर अध्यात्म में हम सीखते हैं कि एक जोड़ एक बराबर एक होता है. यानी हमारी आत्मा जब परमात्मा से मिलती है, तो वह दो नहीं एक हो जाती है. प्रभु के साथ इस एकता का अनुभव करना तभी संभव है जब हम यह महसूस करते हैं कि हम सब एक ही हैं. इस दिव्य अनुभव को हम केवल ध्यान-अभ्यास के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं. नहीं तो सारी उम्र हम यह सोचते हैं कि हम और परमात्मा अलग हैं. हमारा यही द्वैत हमें परमात्मा से मिलने से रोकता है. हमारा अहंकार हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम परमात्मा से ही नहीं, बल्कि दूसरों से भी अलग हैं. जब हम अपना अहंकार खो देते हैं, तभी हम आध्यात्मिक रूप से तरक्की करते हैं और उतना ही अधिक हम स्वयं को परमात्मा के नजदीक पाते हैं. जैसे-जैसे हमारा अहंकार कम होता जाता है, वैसे-वैसे हमें यह अनुभव होना शुरू हो जाता है कि हम सब एक हैं. ध्यान-अभ्यास हमें सभी जीवों को एक समान देखने में मदद करता है. जब हम इस आध्यात्मिक चेतना से जुड़ते हैं, तब हमारे अंदर एक बहुत बड़ा बदलाव आता है. हम दूसरों के साथ प्रेम और सम्मान के साथ व्यवहार करना शुरू कर देते हैं. हमारा अहंकार कम हो जाता है और हम महसूस करते हैं कि आत्मा के स्तर पर हम सभी एक समान हैं. ऐसी स्थिति में हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें. जब हम अपना द्वैत खो देते हैं, तब हम परमात्मा के साथ एक हो जाते हैं. हम अनुभव करते हैं कि केवल एक ही परमात्मा है जो कई हिस्सों में विभाजित है. आइए! हम प्रतिदिन ध्यान-अभ्यास में समय व्यतीत करें, क्योंकि इससे न केवल हमारा आध्यात्मिक विकास होगा, बल्कि पूरे विश्व में शांति का प्रसार होगा. यदि प्रत्येक व्यक्ति इस अनुभूति को प्राप्त कर ले कि एक जोड़ एक बराबर एक होता है, तो दुनिया एक दिन शांति और प्रेम का स्थल बन जायेगी.

-संत राजिंदर सिंह जी महाराज

कुछ अलग

सबके अपने-अपने जाने-पहचाने समाज

संतोष उत्सुक
व्यंग्यकार
santoshutsuk@gmail.com

राजनीति के बाग में चुनाव की बहार फिर से आयी हुई थी. पार्टियों के अस्थायी चुनावी कार्यकर्ता रात में चीयर्स करते हुए, लोकतंत्र की तारीफ करने में मगन थे. बात होते-होते आरक्षण पर पहुंची और पहुंच कर ठहर गयी. एक बोला, आरक्षण ने बेड़ा गर्क कर दिया. दूसरा बोला, हमारे भाईचारे को निगल लिया है. तीसरे ने कहा, अब तो सिर्फ राजनीति है, आरक्षण की नदियां तो हमेशा से देश में बह रही हैं. बांसुरी वाले के जमाने से बात शुरू करें, तो यमुना का तट उनके लिए आरक्षित रहा. वहां वह बांसुरी की सुरीली तान छेड़ते थे और लोगों को कर्म का संदेश देते थे. यह उनका 'ईश्वरीय रिजर्व' था. राजाओं और शहंशाहों का जिक्र हो, तो वे जिस पर चाहे हमला कर सकते थे. मनमाना लगान वसूलते थे. किसी भी युवती, शाही कुमारी का अपहरण या उससे शादी कर सकते थे. यह सब 'शाही रिजर्वेशन अभियान' के अंतर्गत होता था. उसी युग में अंग्रेज पधारे और सबसे सफल फॉर्मूला 'डिवाइड एंड रूल' के माध्यम से नाक में दम कर दिया, देश की धन-दौलत, अमूल्य धरोहरें बटोर लीं और 'ब्रिटिश रिजर्व' की स्थापना की.

फिर आया हमारे अपने अंग्रेजों का युग, जिन्होंने जाति और धर्म आधारित राजनीतिक सांचा ईजाद किया. उनका 'रिजर्वेशन वृक्ष' अवसरानुसार उपजाऊ खाद और सिंचाई से 'रिजर्वेशन शूल वटवृक्ष' बन गया है. कैसे-कैसे बना, एक बुद्धू ने पूछा. बताया- पत्नी, साली, बेटा, बेटी, भाई, बहन, चाचा, भतीजा, दोस्त, चमचों को फायदे और पद भेंट किये. उन्होंने इस 'राजनीतिक आरक्षण मेला' में खूब घोटाले किये. लाठी, बंदूक, नोट और धर्म के बल पर 'शक्ति आरक्षण योजना' भी लांच की जो हिट रही. हमारे नीति-निर्माताओं ने हिट अंग्रेजी शैली 'डिवाइड एंड रूल' को पुनः लांच करते हुए नये नियमों के अनुसार जाति एवं धर्म के आधार पर सभी देशवासियों को बांट दिया. अपने अंग्रेजों का ईमानदारी से अनुसरण करते हुए दूसरे नेताओं व अनेताओं ने भी गरीबों और अमीरों के बीच की बढ़ती दूरी को हमेशा के लिए आरक्षित कर यह साबित कर दिया कि देश के नायकों के पास सब कुछ करने का अधिकार है. राजनीतिज्ञों ने सखा नौकरशाहों से हाथ मिला अनगिनत योजनाओं का धन अपनी कुर्सी के आकार के मुताबिक आरक्षित कर दिया.

बहुत देर से सुन रहे एक कार्यकर्ता ने बताया कि उनकी पार्टी ने राजनीतिक आरक्षण परंपरा के अनुसार इस बार भी जाति, संप्रदाय और धर्म के आधार पर चुनावी टिकट बांटे हैं. इसे चुनाव में जीत सुनिश्चित करने की 'आरक्षण नीति' कहते हैं. सभी कार्यकर्ता संतुष्ट थे कि वे अलग-अलग पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता होते हुए भी, देश की स्थापित आरक्षण संस्कृति को मिल कर आगे बढ़ा रहे हैं.

आपके पत्र

लालकिले से संघ का गुणगान गलत

15 अगस्त को पीएम ने लाल किले से एक ऐसी संस्था की प्रशंसा की, जिसका नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कहीं नहीं मिलता. प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के 100 साल पूरे होने पर उसके 'सेवा' कार्यों की तारीफ की और इसे 'भारत की जनसांख्यिकी को बदलने की साजिश' से लड़ने वाला बताया. यह बयान कई सवाल खड़े करता है. क्या लाल किले जैसे राष्ट्रीय मंच का इस्तेमाल किसी एक संगठन की विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए किया जाना चाहिए? क्या यह चुनावी रणनीति का हिस्सा है.

प्रसिद्ध यादव, पटना

आवारा कुत्तों को संरक्षण की जरूरत

कुत्ता मानव के बीच रहता है, जो उनके द्वारा दिये गये भोजन पर आश्रित होता है. अनजान लोगों का पीछा करना कुत्ता का स्वभाव है, लेकिन आजकल वे हिंसक हो गये हैं. बढ़ते प्रदूषण और शोर- शराबा की वजह से कुत्तों के स्वभाव में बदलाव आया है. सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली में आवारा कुत्तों को पकड़ कर आश्रय स्थल भेजने एवं उनकी नसबंदी करने का आदेश दिया है. सर्वोच्च न्यायालय का आदेश व्यावहारिक रूप से सही प्रतीत होता है. विदेशी नस्ल के स्थान पर हमें देशी नस्ल के कुत्तों को पालकर उन्हें आश्रय प्रदान करना चाहिए.

हिमांशु शेखर, गया जी

पोस्ट करें : प्रभात खबर, प्लॉट संख्या डी-9-10, पाटलिपुत्र इंडस्ट्रियल एरिया, पटना (बिहार) - 800013, ■ मेल करें : patna @prabhatkhabar.in पर ■ ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । मुंबई । मंगलवार, 19 अगस्त 2025

हिंदी-चीनी भाई-भाई!

चीन के विदेश मंत्री वांग यी की भारत यात्रा का मकसद दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग और समझ को बढ़ाना है। हालांकि मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए इस यात्रा की अहमियत कहीं ज्यादा हो जाती है। अमेरिका की नीतियों की वजह से ग्लोबल जियो-पॉलिटिक्स जिस तरह से बदल रही है, इस दौरे को भी उससे जोड़कर देखा जाएगा।

कॉमन फैक्टर । गलवान के बाद दोनों देशों के रिश्ते बिगड़ गए थे, उसे पटरी पर वापस लाने के लिए नई दिल्ली और पेइचिंग, दोनों ने काफी मेहनत की है। सीमा पर तनाव पहले से कम हुआ है, लेकिन दोनों ओर की सेनाएं अभी भी आमने-सामने तैनात हैं। अच्छी बात यह है कि दोनों देशों के बीच बातचीत जारी है। चीनी विदेश मंत्री उसी सिलसिले को आगे बढ़ाने भारत आए हैं। हालांकि अमेरिका की वजह से इसे नया आयाम भी मिला है।

भारत में चीनी विदेश मंत्री

अमेरिकी जुड़ाव । डॉनल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में भारत और चीन, दोनों को ही टारगेट किया है। भारत पर इसी महीने के आखिर से 25% एक्स्ट्रा टैरिफ का बोझ पड़ सकता है। इन दोनों देशों के वॉशिंगटन के साथ रिश्तों के आयाम अलग-अलग हैं और मॉस्को के साथ इनका लेनदेन भी जुदा है, लेकिन स्थितियां ऐसी उलझ गई हैं, जहां सारी बातें एक जगह आकर मिल रही हैं।

सहयोग और प्रतिद्वंद्विता । टैरिफ के असर को कम से कमतर करने के लिए भारत को मौजूदा व्यापारिक साझेदारों के साथ संबंध मजबूत करने और नए पार्टनर तलाशने की जरूरत है। यही जरूरत चीन की भी है। ऐसे में दोनों देश व्यापारिक सहयोग बढ़ाकर टैरिफ के नुकसान को कम कर सकते हैं। हालांकि इससे वह प्रतिद्वंद्विता नहीं बदलेगी, जो ग्लोबल सप्लाई चेन में चीन के स्थान पर भारत के उभरने से शुरू हुई है।

चालबाजी से सावधान । चीन के साथ रिश्तों की विडंबना रही है कि सीमा पर तनाव के बावजूद व्यापार नहीं रुकता और उसमें भी पेइचिंग अड़ंगा लगाने से नहीं चूकता। अब जैसे, टेक्नॉलजी ट्रांसफर रोकने के लिए चीन दोनों देशों की कंपनियों के बीच होने वाले करार में जानबूझकर देरी कर रहा है। रेयर अर्थ मिनरल्स के निर्यात पर वह कड़ाई करता ही रहता है। वहीं उसके साथ भारत का व्यापार घाटा भी रेकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है - वित्त वर्ष 2024-25 में 99.2 अरब डॉलर। द्विपक्षीय बातचीत में इन सब मुद्दों पर चर्चा होनी चाहिए।

संवाद बढ़े । पीएम नरेंद्र मोदी SCO समिट में हिस्सा लेने के लिए चीन जाने वाले हैं। वहां उनकी मुलाकात चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग से हो सकती है। इससे पहले वांग यी की यात्रा अजेंडा तय करने के लिए महत्वपूर्ण है। दोनों देशों का संवाद बढ़ाना उनके हित में है।

धूप-छांव

रिश्तों में बंधी दृष्टि

प्रणव प्रियदर्शी

'तुम रिश्तों में बंधे हो यार, रिश्तों से ऊपर उठकर नहीं देख पाते चीजों को।' बात मैंने सुनी, इल्जाम को समझा, लेकिन उसे अपने भीतर तक घुसता हुआ महसूस नहीं किया क्योंकि वह मुझे मेरा सच नहीं लगा। वे उस युवावस्था के दिन थे, जब पूरी दुनिया आपको अपनी मुट्ठी में नजर आती है।

मैं खुद को खुली नजरों वाला शख्स मानता था और इसलिए मुझे यह भी लगता था कि हर तरह के सच को स्वीकार करने की हिम्मत, उसकी तैयारी मेरे अंदर है। लिहाजा, खुद को करीबी दोस्तों की स्क्रूटनी के लिए प्रस्तुत करने में कभी हिचकता नहीं था। उस दिन भी बातचीत का विषय मेरा संकुचित नजरिया ही था। मुंबई महानगर में अर्से से रह रहे उस दोस्त की बात पर आंशिक रूप से सहमत होने में मुझे कोई दिक्कत नहीं थी। नया होने के बावजूद मुंबई के जीवन की यह सचाई मैंने महसूस कर ली थी कि वहां आम व्यवहार में लोगों को रिश्तों की सीमाएं समझने और उससे ऊपर उठने में खास दिक्कत नहीं होती। दोस्त की गर्लफ्रेंड हो या पत्नी, उसे वे सहज ही एक अलग इंसान के रूप में देखते और उसके साथ वैसे ही व्यवहार करते हैं। हमारे अपने शहरों की पारंपरिक दृष्टि उन्हें दोस्त की पत्नी के रूप में देखने और उस रिश्ते के प्रति आदर को रेखांकित करते रहने में ही आधी जिंदगी निकाल देती है। बहन, बेटी, मां या पति, भाई और पिता जैसे रिश्तों में कैद करके इंसान को देखना उसकी संभावनाओं को कम करना है। इसी बात को रेखांकित करने के मकसद से उस दोस्त ने कहा, 'मान लो, तुम बहुत परेशान हो और अपनी मां के पास पहुंचते हो। तुम इसे अपना अधिकार समझते हो। लेकिन तुम्हारी मां एक इंसान भी है। हो सकता है जिस समय तुम बेटे के रूप में उसके पास पहुंचो, वह अपनी किसी उलझन में हो और तुम्हारी समस्या पर उतना ध्यान न दे पाए...।'

मैं पूरी बात सुनने तक का धैर्य नहीं दिखा पाया, बीच में ही बोल पड़ा. 'वह मां है ना, उसे इसका अधिकार नहीं है। मैं जब भी पहुंचूं, वह मुझे सुनेगी, उसे सुनना ही होगा।' दोस्त का हैरत से भरा चेहरा आज भी मेरी नजरों के सामने आ जाता है, 'तुम्हें अंदाजा भी नहीं है कि ऐसे पलों में तुम कितने क्रूर हो जाते हो।'

बोल वचन

ककई का रस

राहुल पाण्डेय

गर्मी के दिनों में तन और मन दोनों को अगर कोई शीतलता दे सकता है, तो वह है ककई। कुएं के शीतल जल में ककई घोलकर पीते ही सारी गर्मी शांत हो जाती है। क्या होती है ककई? गुड़ बनाने के लिए जब गन्ने का रस उबाला जाता है तो उसकी दो से तीन तार की चाशनी को कनस्तर में भर दिया जाता है। असल में यह चोइंटा या लहंटा बनने से पहले का उत्पादन है। ककई को थोड़ा और गाढ़ा करने पर बनता है चोइंटा, जिसे खींच-खांचकर गजक की परतें बनाई जाती हैं। ककई को ग्रामीण इलाकों का फास्ट-फूड कह सकते हैं, क्योंकि इसका रस तैयार होने में पांच मिनट भी नहीं लगते। वैसे ककई का खांड़ से जुड़ा यह अर्थ अधिकतर अवध में ही चलता है। ककई कंघी को भी कहते हैं, खासकर उस कंघी को, जिससे सिर से जुएं निकाली जाती हैं। इसके दांत काफी महीन होते हैं। पुराने लोगों को अब भी याद होगी हथेली में समा जाने वाली लाल रंग की ककई, जिसके दोनों ओर दांत होते थे। बुंदेलखंड में इसका नाम ककई इसलिए पड़ा क्योंकि वहां कभी यह काठ की बनती थी। ब्रज में ककई जुलाहों का वह औजार भी है, जिससे वे कपड़े बुनते हैं। ब्रज में ही ककई का पेड़ भी होता है, जिसे संस्कृत में वृष्यगंधा कहते हैं। यह वृक्ष भी है, लता भी है और कपास भी। जाहिर है, ककई के इतने अर्थों के लिए comb काफी नहीं है। इसके लिए इंग्लिश को खांड़ से भी मीठा होना होगा।

AI Image

बॉर्डर मसले पर चीन ने जब ग़लती स्वीकार की और सेनाएं पीछे हटाईं, तभी डिसइंगेजमेंट प्रक्रिया शुरू हुई

चीन से रिश्ते सुधरे, सावधान भी है इंडिया

हर्ष वी. पंत

ऐसे समय में, जब भारत और अमेरिका के बीच व्यापार को लेकर तनाव बढ़ता नजर आ रहा है, प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा को काफी अहम माना जा रहा है। वहीं, चीन के विदेश मंत्री वांग यी सोमवार को दो दिवसीय यात्रा पर भारत आ रहे हैं। भारत और चीन के संबंधों में सुधार पिछले वर्ष अक्टूबर में हुए एक समझौते के बाद शुरू हुआ था। उस समझौते ने यह संभावना बनाई कि प्रधानमंत्री मोदी इस महीने के आखिर में होने वाले SCO समिट के लिए चीन जा सकते हैं। ऐसे समय में इस यात्रा के अर्थ जरूर तलाशे जाएंगे।

मतभेद कायम । जब व्यापार वार्ता चल रही थी, उसी बीच प्रधानमंत्री मोदी फरवरी में अमेरिका की यात्रा पर गए थे। लेकिन यह वार्ता अभी रुकी लग रही है। यहां तक कि अमेरिका का ट्रेड डेलिगेशन, जो इस महीने के आखिर में भारत आने वाला था, उसने भी दौरा रद्द कर दिया है। उसकी वजह यह है कि भारत और अमेरिका के बीच कृषि बाजार तक पहुंच (एग्रीकल्चर मार्केट एक्सेस) को लेकर मतभेद हैं।

ट्रंप का फैक्टर । ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा को राजनीतिक दृष्टि से भी देखा जाएगा। इसे भारत की उस कोशिश के रूप में देखा जाएगा कि वह चीन के साथ संबंधों को सामान्य करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है क्योंकि अमेरिका की तरफ से दबाव बन रहा है। डॉनल्ड ट्रंप इसमें एक फैक्टर जरूर हैं, लेकिन भारत और चीन के संबंधों को पूरी तरह अमेरिका से जोड़कर देखना भी वाजिब नहीं होगा।

गलवान के बाद । जब 2020 में गलवान का संकट हुआ था, तब भारत ने स्पष्ट कर दिया था कि चीन के साथ संबंध तभी सामान्य होंगे, जब वह अपनी फौज हटाएगा। साथ ही, बॉर्डर पर मार्च 2019 से पहले की स्थिति बहाल करेगा। भारत ने संकट का जिम्मेदार चीन को ठहराया था और कहा था कि चीन ने सीमा पर यथास्थिति बदली, जिससे गलवान जैसा संकट उत्पन्न हुआ। इसलिए जब तक चीन अपनी गलती स्वीकार नहीं करता और पीछे नहीं हटता, तब तक राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध सामान्य नहीं हो सकते।

चीन ने गलती मानी । इसी को देखते हुए पिछले अक्टूबर और उसके बाद भी भारत ने चीन से दूरी बनाए रखी। हालांकि संबंध पूरी तरह खत्म नहीं हुए। संवाद का चैनल खुला रहा और दोनों देशों के बीच व्यापार भी पहले की तरह चलता रहा। पिछले अक्टूबर में जब भारत और चीन इस समझौते पर पहुंचे कि हमें गलवान संकट में अपनी सेनाओं को पीछे हटाना है, तब चीन ने एक तरह से अपनी गलती मानी। चीन की सेना पीछे हटी और उसके बाद भारत ने सामान्यीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। इसके बाद लगातार उच्चस्तरीय संवाद होते रहे और अब प्रधानमंत्री चीन जा रहे हैं।

पीएम की चीन यात्रा
- भारत-चीन संबंधों को अमेरिका से जोड़ना गलत
- चीन के रवैये पर निर्भर करेगा भारत का रुख
- चीन में अभी भी भारत के प्रति नकारात्मकता

बदलता रवैया । इससे साफ है कि भारत की चीन नीति किसी और को देखकर नहीं बन रही है, बल्कि इस बात को ध्यान में रखकर बन रही है कि चीन भारत के प्रति अपना रवैया किस तरह बदल रहा है। बॉर्डर मसले पर चीन ने जब गलती स्वीकार की और सेनाएं पीछे हटाईं, तभी डिसइंगेजमेंट की प्रक्रिया शुरू हुई और भारत-चीन संबंधों में सामान्यीकरण शुरू हुआ। लेकिन यह मानना भी गलत होगा कि इससे कोई बहुत बड़ा बदलाव आने वाला है।

तकनीकी समायोजन । यह केवल एक तकनीकी समायोजन है। भारत चाहेगा कि जो व्यापार, दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक संबंध गलवान के बाद रुक गए थे, उनकी बहाली हो। 2020 के बाद भारत ने बॉर्डर पर इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा किया है, इसे बढ़ाया और मजबूत किया है और अपनी सैन्य क्षमता में भी इजाफा किया है। भारत ने अन्य देशों के साथ आर्थिक जुड़ाव भी बढ़ाया है। भारत यह नहीं चाहेगा कि चीन के ऊपर आर्थिक या सामरिक निर्भरता बने।

जारी है प्रतिस्पर्धा । यह भी सच है कि चीन का रवैया भले ही बदला हो, लेकिन उसमें भारत के प्रति जो नकारात्मकता और सामरिक प्रतिस्पर्धा है, वह खत्म नहीं हुई है। यही कारण है कि हाल ही में हुई SCO की रक्षा मंत्रियों की बैठक में चीन ने पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत द्वारा आतंकवाद पर लाए जाने वाले घोषणापत्र को कमजोर करने की कोशिश की। इसी वजह से भारत ने उस संयुक्त घोषणापत्र पर साइन नहीं किए। यइसका मतलब साफ है कि चीन लगातार यह कोशिश करता रहेगा कि वह पाकिस्तान को भारत के सामने खड़ा करे। भारत लगातार यह कोशिश करता रहेगा कि चीन के साथ संबंध सामान्य हों, लेकिन अपनी शर्तों और परिस्थितियों पर।

आमने-सामने । इसलिए अब यह देखना दिलचस्प होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान क्या कोई नया समझौता होता है या संबंधों को कोई नई दिशा मिलती है या नहीं। मौजूदा सामरिक स्थिति में भारत और चीन दोनों आमने-सामने खड़े दिखाई देंगे, चाहे सीमा क्षेत्र में अस्थायी रूप से सैनिक मौजूद हों। लेकिन इसी बीच उच्चस्तरीय बातचीत और बिजनेस इंगेजमेंट का दौर भी शुरू हो चुका है।

(लेखक लंदन के किंग्स कॉलेज में प्रफेसर हैं)

कूलन में केलिन में कछारन में...बगरयो विकास है

आलोक सिंह भदौरिया

दिल्ली दूरदर्शन में एक चौहान अंकल थे। पापा के मित्र। उनके साथ यूपी के कुछ शहरों में सफर करने का सौभाग्य मिला। हम तीन-चार लोग सर्किट हाउस में रुकते थे। सर्दी के दिन थे, अंकल शाम को खाना खाने के बाद बैग से बोतल निकालकर पूछते थे, भतीजे शेरनी का दूध पिएगा। मैं हाथ जोड़ लेता। अंकल पैग बनाते, चुपचाप गटकते, कंबल ओढ़कर सो जाते।

एक दिन ऐसी ही एक शाम अंकल बोले, एक मजे की बात बताता हूं। मैं तुम्हारी चाची को रोज अखबार पढ़कर सुनाता था, कभी-कभी चाची भी अखबार पर नजर मार लेती थी। अक्सर, खबरों की हेडलाइन कुछ ऐसे होती, किशोर चेन लूटकर फरार... किशोर जेब काटते पकड़ा गया... किशोर दुकान का शटर काटते रंगे हाथों पकड़ा गया। एक दिन चाची ने पढ़ा- ट्रेन की पटरी पार कर रहा था, रेल से कटकर किशोर की मौत।

चाची सन्न रह गई, कुछ देर मौन रही फिर अखबार पलटकर रख दिया। अंकल बोले, कुछ दिन बाद तेरी चाची फिर अखबार पढ़ रही थी। मैं पास बैठा था। अचानक हाथ पकड़कर बोली, अरे इसे देखियो तो... खबर थी- किशोर ने पत्थर मारकर बुजुर्ग का सिर फोड़ा। चाची बोली, अरे मैं तो न्यूं समझी थी कि वा दिनां किशोर मर गया, इससे पीछा छूटा, यो तो फिर जिंदा हो लिया।

AI Image

ऐवें कुछ भी

अंकल की हंसी छूट गई। चाची से बोले, अरे बावली किशोर किसी बालक का नाम नॉ है। नाबालिग लड़के को अखबार वाले किशोर लिखे करै हैं। पता नहीं चाची को समझ आया कि नहीं। ऐसी ही एक चाची से एक रिपोर्टर ने पूछा, चाची इस बार चुनाव में किसको वोट दोगी? विकास को या फिर जात-पात के मुद्दे पर वोट डालोगी? चाची को एक बार में नहीं सुनाई दिया तो रिपोर्टर ने फिर से सवाल दोहराया। चाची ने बड़ी मासूमियत से सवाल पूछा, बेटा इ विकास कौन जात-बिरादरी से है?

विकास का हाल किशोर की तरह ही हो गया है। नाम एक रूप अनेक। या यों कहें कि विकास की हालत बसंत की तरह हो गई है... कूलन में केलिन में कछारन में कुंजन में, बनन में बागन में बगरयो बसंत है...तो जहां तहां विकास है। शहरों की कुंज गलियों से लेकर नदियों के कछारों में, ऑल वेदर रोड के किनारे खड़े पहाड़ी जंगलों में... हर जगह विकास ही विकास है। गली-गली में सड़क खुदी है, नदियों से रेत का कोटा-पट्टा चल रहा है, जंगलों में सैकड़ों हजारों पेड़ काटे जा रहे हैं। लेकिन नाम बेचारे विकास का बदनाम हो रहा है। कुल्लू, कश्मीर से छीर गंगा तक सैलाब आ रहे हैं। कुछ लोग कह रहे हैं नदी बस्ती में चली आई बाकी के कह रहे हैं कि बस्ती नदी में बस गई थी।

इसी पर याद आई उदय की कहानी। पापा तब बदायूं में पोस्टेड थे। उदय स्टाफ के सदस्य थे। सांसारिक दुनिया की समझ उनमें इतनी थी कि सब्जी मंडी में मुल्ला जी और सरदार जी में भेद नहीं कर पाते थे। अक्सर मुल्ला जी को सरदार जी और सरदार जी को मुल्ला जी कह कर भरपूर गालियां खाते और देते थे। एक बार उदय अपनी एटलस साइकल पर तेजी से आ रहे थे। घर के पास शीशम का विशाल वृक्ष था, उदय जी की एटलस उसमें घुस गई। उदय चित्त हो गए। जानने वाले उन्हें किसी तरह उठाकर घर लाए। होश में आने पर उदय से पूछा गया कि यह हुआ कैसा, उदय बोले, भइया जी हम तो सड़क पर चले जा रहे थे ये शीशम का पेड़ अचानक बीच सड़क पर आ गया। एकदम विकास की तरह।

GST सुधारों से किन्हें होगा बड़ा फ़ायदा

अखिलेश प्रताप सिंह

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर पीएम नरेंद्र मोदी के एक ऐलान ने नई बहस छेड़ दी है। बहस इस बात को लेकर है कि यह ऐलान इस वक्त क्यों हुआ और इससे किसे क्या मिलने वाला है। पीएम ने गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स यानी GST में नेक्स्ट जेनरेशन रिफॉर्म्स की बात कही। यह वही GST है, जिसे विपक्ष 'गब्बर सिंह टैक्स' कहकर सवाल उठाता आ रहा है। दूसरी ओर, केंद्र सरकार बताती रही है कि VAT के दौर में जितना टैक्स लगता था, उससे कम टैक्स GST में है, लिहाजा इसके चलते चीजों के दाम बढ़ने की बात कहना सही नहीं है। सरकार यह भी बताती रही है कि GST जैसे बड़े कदम से अप्रत्यक्ष कर प्रणाली बेहतर हुई और कर राजस्व में भी इजाफा हुआ है। 2017 में संसद में विशेष आयोजन के जरिए लागू किए गए GST के बारे में पीएम ने लाल किले से कहा कि 8 साल बाद अब समय की मांग है कि इसकी एक बार समीक्षा की जाए। पीएम ने कहा कि इस दिवाली एक बहुत बड़ा तोहफा देशवासियों को मिलने वाला है।

विशुद्ध राजनीति

कसौटी

तोहफा है अहम

आम बजट में सरकार ने अनुमान दिया था कि इस साल GST कलेक्शन पिछले साल से 11% ज्यादा रहेगा और करीब 11 लाख 78 हजार करोड़ रुपये का राजस्व मिलेगा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि GST का ग्रॉस कलेक्शन इस वित्त वर्ष में पिछले साल के मुकाबले करीब 12% से ऊपर चल रहा है। रिफंड के बाद नेट GST कलेक्शन भी इस दौरान लगभग 11% ज्यादा है। यानी बजट अनुमान के हिसाब से मामला सही राह पर है।

हालांकि आंकड़े यह भी बता रहे हैं कि वित्त वर्ष 2025 में 6.5% की GDP ग्रोथ 4 वर्षों में सबसे कम थी और RBI का अनुमान है कि मौजूदा वित्त वर्ष में भी यह 6.5% रहेगी। IMF कह रहा है कि ग्रोथ 6.4% रहेगी। यह स्थिति ठीक नहीं है। हाल के वर्षों में इकॉनमी औसतन 8% की दर से बढ़ रही थी। अगर 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य पाना है, तो उसके लिए भी औसत रफ्तार 8% सालाना से ज्यादा ही चाहिए।

ऐसे में बजट में 12 लाख रुपये तक की सालाना आमदनी को इनकम टैक्स फ्री करने के बाद अब GST में केवल 5% और 18% की दो दरें रखने से अर्थव्यवस्था को सहारा मिलेगा। लोग खरीदारी बढ़ा सकते हैं। यह इस मायने में अहम है कि GDP में 61% से ज्यादा हिस्सा वस्तुओं और सेवाओं की खपत का है। खपत बढ़ेगी तो कंपनियां उत्पादन बढ़ाएंगी। मैन्युफैक्चरिंग ग्रोथ को सहारा मिलेगा, जो पिछले वित्त वर्ष में घटकर 4.5% पर आ गई थी। GST सुधारों पर लंबे समय से काम चल रहा है, लेकिन यह सब ऐसे समय में और भी जरूरी हो गया है, जब भारत से जाने वाली चीजों पर अमेरिका ने 50% आयात शुल्क थोप दिया है। इससे भारत का निर्यात ज्यादा प्रभावित हुआ, तो कंपनियों को उत्पादन घटाना पड़ सकता है, जिसके बाद उन्हें ज्यादा कामगारों की जरूरत भी नहीं रह जाएगी। यह खतरनाक स्थिति होगी। ऐसे में देश में उपभोग बढ़ाने के उपायों की अहमियत बढ़ गई है। निर्यात प्रभावित होने की पूरी भरपाई तो इससे नहीं होगी, लेकिन टैक्स छूट और GST रेट घटने से एक सहारा मिल सकता है।

GST से जुड़े सारे फैसले GST काउंसिल करती रही है। इस बार भी केंद्र ने जो प्रस्ताव किए हैं, उन पर काउंसिल ही निर्णय करेगी। लेकिन पीएम के ऐलान करने से यह साफ संदेश कारोबारियों और मिडल क्लास में गया है कि दरें घटाने की अगुआई राज्य सरकारें नहीं, केंद्र सरकार कर रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में सीटें घटने के बाद NDA सरकार ने पहले 12 लाख रुपये सालाना की इनकम पर टैक्स जीरो करते हुए मिडल क्लास को खुश किया था।

एक तीर से कई निशाने

इस बार GST दरों में कमी के प्रस्ताव से आम लोगों के साथ कारोबारी और उद्योग जगत को भी संदेश मिला है कि उनकी शिकायतों को सरकार अनसुना नहीं कर रही। कारोबारी शिकायत करते रहे हैं कि GST में क्लासिफिकेशन की अलग-अलग व्याख्याओं और इनवर्टेड ड्यूटी स्ट्रक्चर के चलते कामकाजी पूंजी फंसे रहने से उन्हें परेशानी होती है। अब केंद्र सरकार ने व्यापक सुधारों के जो प्रस्ताव दिए हैं, उनमें ये समस्याएं घट सकती हैं। केंद्र ने यह भी जांच-परख लिया है कि दरें घटने से राजस्व पर जो भी आंच आएगी, उसकी भरपाई खपत और टैक्स बेस बढ़ने से कुछ ही महीनों में हो जानी चाहिए। यानी सरकारी खजाने को बड़ा झटका नहीं लगना और लगे हाथों मिडल क्लास और कारोबारियों में अपने सपोर्टर बेस को खुश करने का उपाय भी हो गया।। संसद से सड़क तक विपक्षी दलों की जोर-आजमाइश के बीच सरकार ने एक बड़ा दांव चल दिया है। इसका नतीजा GST कलेक्शन और GDP ग्रोथ के आंकड़ों के साथ राज्यों के आगामी चुनावों में दिख जाएगा।

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

बेटियों की हुंकार

छत्तीसगढ़ के सूरजपुर से उठी एक बेटी की पुकार ने सदियों पुरानी परंपराओं की दीवार को हिलाकर रख दिया है। धइया, एक साधारण आदिवासी महिला, की आवाज ने न सिर्फ परिवार की चुप्पी तोड़ी, बल्कि सुप्रीम कोर्ट को भी झकझोर दिया। यह ऐतिहासिक फैसला कागजों से परे, हर उस बेटी के दिल में गूंजा, जिसे कभी हक से वंचित किया गया। यह महज कानूनी जीत नहीं, बल्कि 10.42 करोड़ आदिवासियों के लिए सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, जो बेटियों को पैतृक संपत्ति में हक दिलाता है। मगर, क्या यह रूढ़ियों के तूफान में डट पाएगा? धइया के पिता ने अपनी जमीन बेटों में बांटी और बेटी को छोड़ दिया था। सुप्रीम कोर्ट के एक ऐतिहासिक फैसले ने आदिवासी स्त्रियों को पैतृक संपत्ति में हकदार बना दिया है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत', ईमेल से

कैसे हटे दहेज प्रथा

विवाह एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए विवाह-संस्कार का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्य और पिछड़े वर्ग जहां अपनी परंपरा का निर्वाह कर रहे हैं, वहीं उच्च और मध्यम वर्ग परंपरा के पाटों में पिसने लगा है। विवाह विवशता में बदल रहा है। समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा इससे घुटन महसूस कर रहा है। दहेज प्रथा के तहत लड़की के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। यहां तक कि दहेज के लोभी भेड़िए लड़की को जलाकर हत्या तक कर देते हैं। अब भी समय है, तोड़ दो बेड़ियों को, मिटा दो दुष्प्रथाओं को।

कांतिलाल मांडोत, ईमेल से

readersmail.nbt@gmail.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

खबर : ऑनलाइन गेमिंग पर 40% GST लगा सकती है सरकार।
टिप्पणी : टैक्स भरपूर वसूलेंगे, मगर पूरी तरह पाबंदी नहीं लगाएंगे।

सुभाष बुड़ावन वाला

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें www.speakingtree.nbt.in

मन को शांत रखें इसकी बेचैनी ही है दुख का कारण

स्वामी अच्युतानंद

मन विचारों का एक गुच्छा मात्र है। विचार आते हैं, कुछ क्षण ठहरते हैं और फिर विलीन हो जाते हैं। लेकिन इन विचारों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। हमें नहीं पता कि अगले पल कौन-सा विचार जन्म लेगा। जब बुरे विचार उठते हैं तो हम और अधिक पीड़ा अनुभव करते हैं। इस प्रकार हम अपने ही मन के बंदी बन जाते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति है अशांत रहना। विचारों की निरंतर धारा मन को बेचैन रखती है और यही बेचैनी हमारे दुखों का एक बड़ा कारण है। वेदांत कहता है कि यह संसार एक मायाजाल है। माया दो तरह से काम करती है- पहला, सत्य को ढक देती है और दूसरा, असत्य को सत्य जैसा दिखाती है। इसी कारण हम संसार के वास्तविक स्वरूप को पहचान नहीं पाते और उसके आकर्षण में बंध जाते हैं। हम संसार से जैसे-जैसे जुड़ते जाते हैं, हमारे भीतर अशांति बढ़ती जाती है। इससे मुक्ति का एक ही उपाय है- वैराग्य। इस बाहरी दुनिया को छोड़कर ही मुक्ति के दरवाजे तक जाया जा सकता है।

प्रश्न उठता है, हम वैराग्य कैसे अपनाएं? ज्ञानमार्ग कहता है कि इसका उपाय है विवेक और विश्लेषण। हमें निरंतर देखना होगा कि क्या शाश्वत है और क्या अस्थायी। हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएं हैं, सब नश्वर हैं। समय के साथ सबका विनाश हो जाएगा। जब हम इस सत्य को गहराई से समझ लेते हैं, तो अपने आप ही इन चीजों से मोह टूटने लगता है। मन को स्थिर करने का दूसरा उपाय है, ध्यान। ध्यान का अर्थ है, मन को एक ही विचार पर टिकाना और शेष विचारों को त्याग देना। जिस देवता या इष्ट पर आप विश्वास करते हैं, उसी पर मन को केंद्रित कर दीजिए। निरंतर उसी का चिंतन कीजिए। धीरे-धीरे आपके मन की चंचलता कम होगी और वह स्थिर हो जाएगा।

राजयोग में कहा गया है कि आत्मा का वास्तविक स्वरूप सदैव मन में उतरता है। लेकिन मन की अस्थिरता उसे बाहर नहीं आने देती है। इसके लिए ध्यान जरूरी है। ध्यान ही मन को शांत रखता है। शांत रहकर ही हम अपने असली स्वरूप को पहचान सकते हैं। शंकराचार्य ने कहा है - मनो बुद्धि अहंकार चित्तानि नाहम्। शिवोऽहम्, शिवोऽहम्। यानी मैं मन, बुद्धि, अहंकार या चित्त नहीं हूं। मैं शिव हूं, केवल शिव। जब हम मन का विनाश कर देते हैं, तभी सत्य का साक्षात्कार होता है।

गुरु का संदेश बड़ा स्पष्ट है- अपने मन को देखो और मन को मजबूत बनाओ। इसका अर्थ है कि मन में उठ रहे विचारों को निरंतर देखो। उनके स्रोत को पहचानो और वहीं पर उन्हें समाप्त कर दो। यही मन को जीतने का मार्ग है। और जब मन की लहरें शांत हो जाती हैं, तब आत्मा का निर्मल स्वरूप प्रकट होता है। और तब अनुभव होता है, हम मन नहीं हैं, हम चैतन्य हैं, हम सत्य हैं।

आर.एन.आई. पंजीयन नंबर 1613/1957 स्वत्वाधिकारी बेनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड के लिए आर. कृष्णमूर्ति द्वारा टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, डॉ. डी. एन. रोड, फोर्ट, मुंबई 400001 से प्रकाशित और उनके द्वारा (1) टाइम्स ऑफ इंडिया सबर्बन प्रेस, आकुर्ली रोड, निकट वेस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे, कांदिवली (पू.) मुंबई 400101 एवं (2) टाइम्स ऑफ इंडिया प्रिंट सिटी, प्लॉट नं. 4, टी.टी.सी. इंडस्ट्रियल एरिया, ठाणे बेलापुर रोड, ऐरोली, नवी मुंबई-400708. फोन नं. (022) 2760 9999 ; फैक्स: (022) 2760 5275। फोन मुंबई: (022) 66353535, 22733535 रेस्पांस: (022) 66353636, 22733636 फैक्स: (022) 22731889, 22731144, कांदिवली (022) 28872324 से मुद्रित। **स्थानीय संपादक (मुंबई) : सुंदर चंद ठाकुर** (पी. आर. बी. अधिनियम के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी) सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। सड़क व रेल परिवहन सेवा शुल्क: मुंबई, ठाणे व रायगड जिलों से बाहर 1.00 रुपया। विमान सेवा शुल्क: रायपुर, नागपुर, गोवा एवं वाया 2.00 रुपये, इंदौर, चेन्नै एवं वाया 3.00 रुपये, अहमदाबाद, बेंगलुरु, कोचीन, कोयम्बतूर, एरनाकुलम, हैदराबाद, कोझीकोड, मंगलूर, त्रिवेंद्रम, उदयपुर, वाइजग एवं वाया 4.00 रुपये, दिल्ली, कोलकाता, एवं वाया 5.00 रुपये।

आवश्यक सुधार

उपभोग बढ़ाने के लिए कुछ राजस्व जोखिम में डालने से अर्थव्यवस्था को मदद मिलेगी

टी वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) प्रणाली को पुनर्गठित करने के केंद्र सरकार के प्रस्ताव साहसिक और समयानुकूल हैं। सरकार का दावा है कि इनसे मध्यम वर्ग और व्यापारिक समुदाय को लाभ होगा। 12% वाले स्लैब में शामिल 99% वस्तुओं को 5% कर दर में और 28% वाले स्लैब में शामिल 90% वस्तुओं को 18% कर दर में बदलने से अधिकांश उपभोक्ताओं पर कर का बोझ काफी कम हो जाएगा। स्लैब की संख्या को युक्तिसंगत बनाने और समान उत्पादों को एक ही स्लैब में स्थानांतरित करने से अस्पष्टता और मुकदमेबाजी भी कम होगी, जो वर्तमान जीएसटी व्यवस्था में व्यवसायों के लिए प्रमुख मुद्दे हैं। इसके अलावा, जबकि अधिकांश ध्यान दर पुनर्गठन प्रस्तावों पर केंद्रित है, पंजीकरण, रिटर्न दाखिल करने और रिफंड से संबंधित प्रक्रियात्मक सुधार भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। जीएसटी को सरल बनाना केवल दरों की बहुलता को कम करने के बारे में नहीं है, बल्कि करदाताओं के लिए प्रणाली को समझना आसान और कम समय लेने वाला बनाना भी है। पंजीकरण को आसान बनाना, रिटर्न को सरल बनाना और रिफंड में तेज़ी लाना, केंद्र द्वारा किए जा रहे स्वागत योग्य सुधार हैं। नए आयकर विधेयक और इस वर्ष के बजट में आयकर स्लैब में बदलाव के साथ, ये जीएसटी सुधार 2025 को कर सुधारों के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष के रूप में उजागर करेंगे - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर दोनों। हालाँकि सरकार ने इन कटौतियों के राजस्व प्रभाव का कोई आधिकारिक अनुमान नहीं लगाया है, लेकिन सूत्रों के अनुसार उसे इसका असर पड़ने की उम्मीद है। दो साल पहले, भारतीय रिजर्व बैंक ने अनुमान लगाया था कि औसत जीएसटी दर 11.6% थी, जिसके अब काफी कम होने की उम्मीद है।

हालाँकि, सरकार को पूरा विश्वास है कि खपत में वृद्धि और कर आधार के विस्तार से राजस्व हानि का अधिकांश हिस्सा कम हो जाएगा। कई वस्तुओं पर केवल 5% कर लगाने के निर्णय से, इनपुट टैक्स क्रेडिट घोटालों और कर चोरी को मिलने वाले प्रोत्साहन भी काफी हद तक समाप्त हो जाएँगे।

घरेलू खपत को बढ़ावा देने के लिए कुछ मात्रा में राजस्व को जोखिम में डालने की इच्छा अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है, खासकर ऐसे समय में जब टैरिफ अनिश्चितताओं के कारण निर्यात मांग लड़खड़ा रही है। यह देखना बाकी है कि राज्य सरकारें इस प्रस्तावित राजस्व आत्मसमर्पण पर कैसे प्रतिक्रिया देंगी। वे पहले से ही केंद्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए सोलहवें वित्त आयोग की पैरवी कर रहे हैं। ये कर कटौती इस बात की संभावना को और भी कम कर देगी कि पेट्रोलियम उत्पाद – राज्यों के राजस्व का एक प्रमुख स्रोत – निकट भविष्य में जीएसटी में शामिल किया जाएगा। राजनीतिक रूप से, राज्यों के लिए इन कर दरों में कटौती का सीधे विरोध करना मुश्किल होगा, लेकिन वे एक बार फिर केंद्र पर मुआवजे के लिए दबाव डाल सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि केंद्र अगले कुछ हफ्तों में अपना मामला रखने के लिए राज्यों से संपर्क करेगा। यह महत्वपूर्ण है कि उनकी चिंताओं को भी ध्यान में रखा जाए।

परिचित गतिरोध

प्लास्टिक के इस्तेमाल को सीमित करने पर बातचीत आपसी विश्वास पर आधारित होनी चाहिए। प्लास्टिक

जी प्रदूषण को खत्म करने पर एक सार्वभौमिक संधि के प्रति वैश्विक प्रतिरोध अभी भी ज़िद्दी और व्यापक बना हुआ है। पिछले हफ़्ते, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा 2022 के बाद से सदस्य देशों को प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक संधि पर सहमत कराने का छठा प्रयास, विरोध के चिरपरिचित भंवर में फँस गया।

देशों के प्रमुख समूहों के बीच इस बात पर असहमति थी कि क्या प्लास्टिक प्रदूषण से व्यापक रूप से निपटने के लिए प्लास्टिक उत्पादन को खत्म करना आवश्यक है। सभी देश इस बात पर सहमत हैं कि कंटेनर के रूप में इसकी अपार व्यावहारिकता और सामर्थ्य के बावजूद सर्वव्यापी पॉलिथीन बैग एक नागरिक संकट में बदल गया है। भारत लगभग 3.4 मिलियन टन (MT) प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करता है लेकिन केवल 30% का ही पुनर्चक्रण करता है। इसकी प्लास्टिक की खपत 2016-17 में 14 मीट्रिक टन से 2019-20 में 20 मीट्रिक टन से अधिक 9.7% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ी है। भारत में लगभग 20 एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं - कप, स्ट्रॉ, चम्मच - के उत्पादन पर प्रतिबंध है। हालांकि इसने कुछ हद तक व्यवहारिक परिवर्तन को प्रेरित किया है - कागज और कपड़े के थैलों पर अधिक निर्भरता -

यूएनईपी के अनुसार, दुनिया में सालाना 430 मीट्रिक टन से ज़्यादा प्लास्टिक का उत्पादन होता है, जिसमें से दो-तिहाई अल्पकालिक उत्पाद होते हैं जो जल्द ही कचरा बन जाते हैं। कुल मिलाकर, 46% प्लास्टिक कचरा ज़मीन पर पड़ा रहता है, जबकि 22% का कुप्रबंधन होता है और वह कूड़ा बन जाता है। 2019 में, प्लास्टिक, जो जीवाश्म कच्चे तेल का एक व्युत्पन्न है, ने 1.8 अरब मीट्रिक टन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन उत्पन्न किया, जो वैश्विक कुल उत्सर्जन का लगभग 3.4% है।

इसलिए, प्लास्टिक को एक अपशिष्ट प्रबंधन समस्या के रूप में देखा जा सकता है जिसका समाधान बाज़ार को कचरा संग्रहण और पुनर्चक्रण के बेहतर काम के लिए प्रोत्साहन देकर किया जा सकता है। हालाँकि, कुछ देश ऐसे भी हैं जो इस दिशा में दशकों से किए जा रहे प्रयासों की ओर इशारा करते हैं, लेकिन उन्हें सीमित सफलता ही मिली है।

इसके अलावा, इस बात के और भी सबूत इकट्ठा हो गए हैं कि प्लास्टिक, जो कि जैविक रूप से विघटित नहीं होता, मानव, पशु और समुद्री खाद्य प्रणालियों में अपनी जगह बना रहा है। द्वीपीय राष्ट्र और क्षेत्र अपने तटों पर बहकर आ रहे प्लास्टिक कचरे से अटे पड़े हैं। फिर प्लास्टिक के दानेदार रूप हैं—या सूक्ष्म प्लास्टिक—जिनमें नुकसानदेह होने की संभावना है। इसलिए, एकमात्र वास्तविक समाधान स्रोत पर ही इसे कम करना है। हालाँकि, सभी राष्ट्र विषाक्तता के इस पहलू पर सहमत नहीं हैं। इसलिए, संधि-संबंधी वार्ताओं में, वे उत्पादन में कटौती के आह्वान को व्यापार बाधाएँ थोपने और टैरिफ अनिश्चितता के सामान्य माहौल को बढ़ाने की रणनीति के रूप में देखते हैं। जब तक देश ऐसी वार्ताओं से पहले अधिक विश्वास का निर्माण नहीं कर सकते और एक-दूसरे की बात खुले दिमाग से नहीं सुन सकते, तब तक और बैठकें करना निरर्थक ही रहेगा। वे सुखद दिन, जब कुछ देश पर्यावरण पर प्रस्तावों को यह मानकर आगे बढ़ा सकते थे कि 'सामान्य हित' निर्विवाद है, बहुत पहले बीत चुके हैं।

अलास्का की हवाएँ, भारत और ट्रम्प-पुतिन शिखर सम्मेलन

सुहासिनी हैदर

टी यूनाइटेड और अलास्का के बीच "अलास्का मोमेंट"
राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और
रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने
15 अगस्त, 2025 को अन्य में अनुवाद किया जाएगा
श्री ट्रम्प यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की और यूरोपीय नेताओं के साथ बातचीत कर रहे हैं, जिससे रूस-यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने के लिए एक संभावित त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जिससे यूक्रेन के लिए उनके उद्देश्य और भी स्पष्ट हो गए हैं। हालाँकि, नई दिल्ली के लिए, अलास्का शिखर सम्मेलन से वे स्पष्ट परिणाम नहीं निकले जिनकी भारत के दो सबसे करीबी दोस्तों के नेताओं के बीच बैठक से पहले कई लोगों ने उम्मीद की थी। न ही इसने भारतीय कूटनीति की उस अजीबोगरीब असुरक्षा की भावना को कम किया, जिसका सामना एक बैठक में इतना कुछ दांव पर लगा होने के बावजूद उसके परिणामों में इतनी कम भूमिका होने के कारण भारतीय कूटनीतिक रूप से असहज थी।

मोटे तौर पर, नरेंद्र मोदी सरकार को उम्मीद थी कि अमेरिका-रूस के बीच सुलह से रूस के साथ संबंधों को लेकर भारत पर अमेरिका का कुछ दबाव कम होगा। हालाँकि, ट्रम्प-पुतिन के बीच बातचीत में गर्मजोशी तो दिखी, लेकिन इससे भारत के प्रति श्री ट्रम्प का रुख कम नहीं हुआ। वह कई मुद्दों पर भारत को आड़े हाथों लेते रहे हैं।

ख़ास तौर पर, उम्मीदें बढ़ीं कि अलास्का बैठक के परिणामस्वरूप रूसी तेल ख़रीदने पर भारत पर अमेरिका द्वारा लगाए गए 25% द्वितीयक प्रतिबंधों को वापस लिया जाएगा; भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता फिर से शुरू होगी, जिसे श्री ट्रंप ने रूसी तेल मुद्दे पर रोक दिया था; और पहले से लागू 25% पारस्परिक शुल्क में भी संशोधन किया जाएगा। फ़ाइनेंशियल टाइम्स में एक कड़े शब्दों वाले लेख ("भारत की तेल लॉबी पुतिन की युद्ध मशीन को फ़ंड कर रही है - इसे रोकना होगा") में, पीटर नवारो, जो श्री ट्रम्प के सहयोगी हैं, ने कहा कि "भारत की तेल लॉबी पुतिन की युद्ध मशीन को फ़ंड कर रही है - इसे रोकना होगा।"

व्यापार और विनिर्माण पर ट्रम्प के वरिष्ठ सलाहकार ने ऐसी आशाओं को लगभग ध्वस्त कर दिया, तथा यह स्पष्ट कर दिया कि दोहरे शुल्क अमेरिका की "दोतरफा नीति" है, जिसका उद्देश्य "भारत को वहीं चोट पहुंचाना है, जहां उसे चोट पहुंचती है", रूसी आयातों के लिए तथा बाजार पहुंच पर उसके प्रतिबंधों के लिए।

भारत की नीतियों में कोई बदलाव नहीं, न ही इस बात का कोई संकेत था कि श्री ट्रम्प दूसरे मुद्दे पर नरम पड़ेंगे: ऑपरेशन सिंदूर (7-10 मई) और युद्धविराम समझौते के बारे में मोदी सरकार के बयान के प्रति उनका जवाबी बयान। श्री ट्रम्प ने न केवल भारत की नीतियों में कोई बदलाव किया, बल्कि यह भी कहा कि वे अपनी नीतियों में कोई बदलाव नहीं करेंगे।
ट्रम्प ने दोहराया कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान युद्धविराम में मध्यस्थता की है, तथा व्यापार को दोनों पक्षों को एकजुट करने के लिए एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया है, लेकिन अब उन्होंने कहा है कि इसके बाद परमाणु युद्ध हो सकता था, क्योंकि दोनों पक्ष "हवाई जहाज मार गिरा रहे थे", यह कथन मोदी सरकार के कथन से काफी अलग है, जिसने अब तक यह स्वीकार किया है कि इस युद्ध में उसे कोई नुकसान नहीं हुआ है।

इस प्रकार, शिखर सम्मेलन से पहली सीख यह होनी चाहिए यह हो: हालाँकि श्री ट्रम्प का श्री पुतिन के साथ फिर से जुड़ाव और सौहार्द मास्को के लिए मददगार हो सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भारत के प्रति उनकी नीतियों में बदलाव आएगा। बहरहाल, भारत पर लगाए गए द्वितीयक प्रतिबंधों के पीछे का तर्क संदिग्ध है, और रूस को दंडित करने से ज़्यादा सत्ता के खेल से जुड़ा है। श्री ट्रम्प के सत्ता में आने के बाद से अमेरिका ने खुद रूस के साथ अपना व्यापार बढ़ाया है और चीन का रूसी तेल आयात भारत से लगातार ज़्यादा रहा है। रूसी राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए और चीन की कार्रवाइयों को नज़रअंदाज़ करते हुए भारत पर प्रतिबंध लगाना, यही संकेत देता है कि इसके पीछे क्या कारण हैं।

इसमें दिखाई देने वाली गर्माहट
ट्रम्प-पुतिन के बीच हुई बातचीत से भी कोई कम चिंताजनक बात सामने नहीं आई।
भारत के प्रति अमेरिकी रुख; सबक

नई दिल्ली का कहना है कि उसे एक कदम उठाने की जरूरत है। यदि कठोर रुख वह अपनी एजेंसी वापस पाना चाहता है

क्योंकि अमेरिका की कार्रवाई कहीं और है। कई लोगों ने सुझाव दिया है कि श्री ट्रम्प ने नाराज़गी में यह कदम उठाया है - इस बात से नाराज़ कि श्री मोदी ने पाकिस्तानियों के साथ मध्यस्थता करने के उनके दावों को नज़रअंदाज़ कर दिया। रिपोर्टों से पता चलता है कि श्री मोदी ने रियाद या वाशिंगटन में पाकिस्तानी नेतृत्व के साथ बैठक करने के अमेरिकी प्रयासों का भी विरोध किया, और परिणामस्वरूप 17 जून को मोदी-ट्रम्प की बातचीत बेहद कटु और असहज रही। श्री ट्रम्प का ज़्यादा स्पष्ट ध्यान उनके शांति प्रयासों को मान्यता दिलाने और संभावित नोबेल शांति पुरस्कार पाने पर है, और मोदी सरकार पहले ही ऑपरेशन सिंदूर युद्ध विराम का श्रेय उन्हें देने का मौका चूक चुकी है, जिसे श्री ट्रम्प स्पष्ट रूप से चाहते हैं।

नई दिल्ली को यह तय करना होगा कि क्या वह वाशिंगटन के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहती है, या फिर पीछे हटकर ट्रंप प्रशासन को अपना सबसे बुरा हाल करने देना और फिर उसकी प्रतिक्रिया का आकलन कर दुनिया के दूसरे हिस्सों पर अपनी ऊर्जा लगाना ज़्यादा समझदारी भरा कदम होगा। श्री मोदी की जापान और फिर शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के लिए चीन की आगामी यात्राओं, संयुक्त राष्ट्र महासभा के लिए अमेरिका की संभावित यात्रा और फिर जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए दक्षिण अफ्रीका की यात्रा से भारत के व्यापारिक संबंधों को और मज़बूत करने के रास्ते खुल सकते हैं। श्री पुतिन भी जल्द ही भारत दौरे पर आने वाले हैं। भारत-अमेरिका संबंधों के लिए एक अहम मोड़ आगामी क्वाड शिखर सम्मेलन (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) होगा, जिसकी मेजबानी भारत इस साल के अंत में करने वाला है। यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि श्री ट्रंप भारत आएंगे या नहीं, खासकर अगर तब तक भारत-अमेरिका व्यापार समझौता नहीं होता है, और क्या भारत सरकार उनके स्वागत के लिए कोई तैयारी करेगी।

सार पर लौटते हुए दूसरी सीख यह होनी चाहिए कि "शिखर सम्मेलन" को भारत के व्यापक हितों से आगे न निकलने दिया जाए। एक दशक से अधिक समय से, विदेश नीति का "मोदी मंत्र" व्यक्तिगत जादू और केमिस्ट्री के बारे में रहा है, जो द्विपक्षीय संबंधों पर उनकी छाप के रूप में अन्य देशों के नेताओं के साथ एक-एक करके काम करता है। नतीजतन, विदेश यात्राओं को उनके बीच वास्तविक समझौतों और रियायतों के बजाय संयुक्त सार्वजनिक उपस्थितियों, हाथ मिलाने और गले लगाने के साथ-साथ प्रधान मंत्री को दिए जाने वाले विशेष सम्मान और पुरस्कारों की संख्या से आंका गया है। हालाँकि, चीन के साथ, 2014-19 के बीच श्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच 18 आमने-सामने की बैठकों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा और गैलवान संघर्ष के साथ चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के उल्लंघनों का पूर्वानुमान लगाने के लिए अपेक्षित समझ पैदा नहीं की।

अमेरिका के साथ भी, ट्रम्प 1.0 कार्यकाल के दौरान श्री मोदी की करीबी मुलाकातें (2019 में टेक्सास में 'हाउडी मोदी' रैली और 2020 में गुजरात में 'नमस्ते ट्रम्प' रैली), और साथ ही ट्रम्प 2.0 प्रशासन के तहत फरवरी 2025 में उनकी वाशिंगटन की शुरुआती यात्रा से दोनों नेताओं को एक-दूसरे को समझने में पर्याप्त मदद मिली होगी। इसके बाद जो झटके लगे हैं, उन्हें देखते हुए शायद अब समय आ गया है कि शैली की बजाय मूल भावना पर ध्यान केंद्रित किया जाए। लेकिन ट्रम्प के दौर में उस मूल भावना की तलाश करना और भी मुश्किल हो जाता है, क्योंकि ज़्यादातर विदेश नीति के फैसले श्री ट्रम्प खुद ले रहे हैं और एक छोटा सा

व्हाइट हाउस में उनके इर्द-गिर्द ही चर्चा का विषय बना हुआ है, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद या विदेश विभाग में भारत से संबंधित मामलों पर नियुक्तियाँ कम ही की जा रही हैं। 'अच्छे दिनों' में, भारत में अमेरिकी राजदूत के बिना भी, दिल्ली और वाशिंगटन ने अच्छा काम किया है। लेकिन वर्तमान में, यह स्पष्ट है कि भारत के बारे में गहरी जानकारी रखने वाले एक वरिष्ठ दूत के साथ-साथ अमेरिकी राष्ट्रपति की भी पहुँच संबंधों में उथल-पुथल से निपटने के लिए आवश्यक है।

राजनीतिक संतुलन बनाए रखें पिछले कुछ महीनों का तीसरा सबक यह है कि भारत को राजनयिक संबंधों में द्विदलीयता को पुनः प्राप्त करना चाहिए, और राजनीतिक स्पेक्ट्रम के दोनों ओर संबंध बनाने और बनाए रखने चाहिए, चाहे कोई भी पार्टी सत्ता में हो। अमेरिका में, डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना ट्रम्प-मोदी रैलियों से नाखुश थी क्योंकि वे 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से कुछ महीने पहले आयोजित की गई थीं, और भारत को बाद में जो बिडेन प्रशासन के साथ संबंधों की मरम्मत में कुछ समय बिताना पड़ा। चार साल बाद, इसने रिपब्लिकन दावेदार श्री ट्रम्प को नाराज़ कर दिया, खासकर जब उन्होंने सत्ता में रहने के दौरान घनिष्ठ व्यक्तिगत सौहार्द और इस तथ्य के बीच अंतर महसूस किया कि श्री मोदी और उनके दूतों ने उनके सत्ता से बाहर होने पर उनके साथ समय नहीं बिताया, जिसमें तीन बार श्री मोदी द्वारा श्री बिडेन के साथ वार्ता करने के लिए 2021, 2023 और 2024 में अमेरिका की यात्रा भी शामिल है। अपने निकटस्थ गृह में, यह द्विदलीयता पड़ोसी देशों - बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल और मालदीव - के साथ भारत के संबंधों को भी प्रभावित करने वाली सिद्ध हुई है।

चौथा, अमेरिका द्वारा अनुमति दिए जाने के बाद, यहां तक कि पहले खरीद को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करने के बाद, भारत के तेल आयात पर श्री ट्रम्प के दंड से पता चलता है कि वैश्विक शक्ति कितनी कमजोर हो सकती है और किसी विशेष शासन को खुश करने के लिए भारत के लिए अपने सिद्धांतों को त्यागना कितना निरर्थक है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनिवार्य प्रतिबंधों को स्वीकार करने का भारत का समय-सम्मानित सिद्धांत 2018 में टूट गया जब सरकार ने श्री ट्रम्प की ईरानी तेल और फिर वेनेजुएला के तेल के खिलाफ प्रतिबंधों की धमकियों के आगे झुक गए, संभवतः इस बार रूसी तेल के उपयोग के खिलाफ भी यही मांग करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। इस तरह के अनुचित आदेशों को स्वीकार करके, भारत न केवल सस्ता तेल छोड़ने में आर्थिक नुकसान का जोखिम उठाता है। यह अमेरिका की विदेश नीति के उद्देश्यों में भी शामिल हो जाता है

इसके विपरीत, जब भारत ऐसे कदमों का विरोध करता है, तो उसे वैश्विक दक्षिण में अन्य देशों का समर्थन प्राप्त हो जाता है।
और जबकि वे इस पर आपत्ति जताते हैं, पश्चिमी शक्तियां अनिच्छा से इन मामलों में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को स्वीकार करती हैं।

अंत में, नई दिल्ली को उन अमेरिकी कार्रवाइयों से निपटने के लिए उपायों और प्रतिउपायों पर विचार करना चाहिए जो भारत के हितों को बुरी तरह प्रभावित करती हैं - जैसे पारस्परिक और दंडात्मक शुल्क जो भारतीय वस्तुओं को उसके निर्यातक प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में कम प्रतिस्पर्धी बना देंगे, भारत में अमेरिकी विनिर्माण पर प्रतिबंध, या अमेरिका में काम करने वाले भारतीयों पर प्रेषण कर। भारत की एजेंसी को वापस पाने के लिए एक मजबूत रुख की आवश्यकता होगी - ऐसा रुख जो भारत से हजारों किलोमीटर दूर एक शिखर बैठक में अलास्का की हवाओं से प्रभावित न हो।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

suhasini.h@thehindu.co.in

वैश्विक भुखमरी को समाप्त करने का मार्ग भारत से होकर गुजरता है

मैक्सिमो टोरेरो
कलन
खाद्य और औषधि प्रशासन के मुख्य अर्थशास्त्री हैं।
कृषि
संगठन का
संयुक्त राष्ट्र (एफएओ)

अब नीचे की ओर जा रही दुनिया
वैश्विक दीर्घकालिक कुपोषण के साथ अपने रास्ते पर एक मोड़ लेना शुरू कर रहा है
भूख के खिलाफ लड़ाई। संयुक्त राष्ट्र की हाल ही में जारी की गई विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2025 की रिपोर्ट बताती है कि 2024 में 673 मिलियन लोग (दुनिया की आबादी का 8.2%) कुपोषित थे। यह 2023 में 688 मिलियन से कम है। हालाँकि हम अभी तक पूर्व-महामारी के स्तर (2018 में 7.3%) पर नहीं लौटे हैं, यह उलटफेर COVID-19 के दौरान अनुभव की गई तेज वृद्धि से एक स्वागत योग्य बदलाव का संकेत देता है।

भारत ने इस वैश्विक परिदृश्य में निर्णायक भूमिका निभाई है।
प्रगति। ये लाभ खाद्य सुरक्षा और पोषण में नीतिगत निवेश का परिणाम हैं, जो डिजिटल तकनीक, बेहतर शासन और बेहतर सेवा वितरण द्वारा तेजी से संचालित हो रहे हैं।

घरेलू उपभोग पर नवीनतम राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़ों का उपयोग करके संशोधित अनुमान दर्शाते हैं कि भारत में कुपोषण की व्यापकता 2020-22 में 14.3% से घटकर 2022-24 में 12% हो गई है। निरपेक्ष रूप से, इसका अर्थ है कि भूख से ग्रस्त लोगों की संख्या में 3 करोड़ की कमी आई है - जो जनसंख्या के आकार और कोविड-19 महामारी से उत्पन्न व्यवधान की गहराई को देखते हुए एक प्रभावशाली उपलब्धि है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) का रूपांतरण इस प्रगति के केंद्र में भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली है, जिसमें व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इस प्रणाली को डिजिटलीकरण, आधार-आधारित लक्ष्यीकरण, रीयल-टाइम इन्वेंट्री ट्रैकिंग और बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के माध्यम से पुनर्जीवित किया गया है। इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट-ऑफ-सेल सिस्टम और वन नेशन वन राशन कार्ड प्लेटफ़ॉर्म की शुरुआत ने पूरे देश में राशन को सुलभ बना दिया है, जो विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों और कमजोर परिवारों के लिए महत्वपूर्ण है।

भूख के खिलाफ विश्व की लड़ाई में भारत की निर्णायक भूमिका खाद्य सुरक्षा और पोषण में उसके नीतिगत निवेश का परिणाम है।

इन नवाचारों से भारत को महामारी के दौरान खाद्य सहायता को तेजी से बढ़ाने और 800 मिलियन से अधिक लोगों के लिए सब्सिडी वाले खाद्य पदार्थों तक पहुंच सुनिश्चित करने में मदद मिली।

अब, कैलोरी की प्रगति के स्थान पर पोषण की प्रगति को स्थान देना होगा। भारत में स्वस्थ आहार की लागत 60% से अधिक आबादी के लिए वहन करने योग्य नहीं है, जिसका कारण पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों की ऊँची कीमतें, अपर्याप्त कोल्ड चेन और अकुशल बाज़ार संबंध हैं। इसके बावजूद, भारत ने कैलोरी की गुणवत्ता में सुधार के लिए निवेश शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, 2021 में शुरू की गई प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण (पीएम पोषण) स्कूल-फ़ीडिंग योजना और एकीकृत बाल विकास सेवाएँ अब आहार विविधता और पोषण संवेदनशीलता पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं, जिससे बाल विकास और जन स्वास्थ्य में दीर्घकालिक सुधारों की नींव रखी जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में नए आंकड़े भी प्रगति दर्शाते हैं देश ने खाद्य असंतुलन के बावजूद स्वस्थ आहार को अधिक किफायती बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
जो कुछ हो रहा है वह एक बड़ी संरचनात्मक चुनौती को रेखांकित करता है: भूखमरी में कमी के बावजूद, कुपोषण, मोटापा और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी बढ़ रही है। यह विशेष रूप से शहरी और ग्रामीण गरीब आबादी में अधिक है।

कृषि-खाद्य प्रणाली में बदलाव की ज़रूरत है। भारत अपनी कृषि-खाद्य प्रणाली में बदलाव लाकर इस चुनौती का सामना कर सकता है। इसका मतलब है दालों, फलों, सब्ज़ियों और पशु-उत्पादों जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों का उत्पादन और उनकी सामर्थ्य बढ़ाना, जो अक्सर कम आय वाले परिवारों की पहुँच से बाहर होते हैं। इसका मतलब है कटाई के बाद के बुनियादी ढाँचे, जैसे कोल्ड स्टोरेज और डिजिटल लॉजिस्टिक्स सिस्टम, में निवेश करना ताकि खेत और बाज़ार के बीच होने वाले अनुमानित 13% खाद्यान्न नुकसान को कम किया जा सके। ये नुकसान सीधे तौर पर खाद्यान्न को प्रभावित करते हैं।

उपलब्धता और सामर्थ्य।
इसके अतिरिक्त, भारत को महिलाओं के नेतृत्व वाले खाद्य उद्यमों और स्थानीय सहकारी समितियों, जिनमें किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) भी शामिल हैं, के लिए समर्थन को और मजबूत करना चाहिए, विशेष रूप से वे जो जलवायु-अनुकूल फसलों की खेती करते हैं, क्योंकि ये पोषण और आजीविका दोनों को बढ़ा सकते हैं।

भारत को अपनी कृषि-खाद्य प्रणालियों में बदलाव लाने के लिए अपने डिजिटल लाभ में निवेश जारी रखना होगा। एग्रीस्टैक, ई-नाम और भू-स्थानिक डेटा उपकरण जैसे प्लेटफ़ॉर्म बाज़ार पहुँच को मज़बूत कर सकते हैं, कृषि नियोजन में सुधार कर सकते हैं और पोषण-संवेदनशील हस्तक्षेपों की पहुँच बढ़ा सकते हैं।

आशा का प्रतीक संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) का मानना है कि कृषि-खाद्य प्रणाली में बदलाव के मामले में भारत की प्रगति केवल राष्ट्रीय आवश्यकता नहीं है; बल्कि यह वैश्विक योगदान भी है। विकासशील देशों में अग्रणी होने के नाते, भारत डिजिटल शासन, सामाजिक सुरक्षा और डेटा-संचालित कृषि में अपने नवाचारों को वैश्विक दक्षिण के अन्य देशों के साथ साझा करने की अच्छी स्थिति में है। भारत का अनुभव दर्शाता है कि भूखमरी को कम करना न केवल संभव है, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, स्मार्ट निवेश और समावेशन के साथ इसे बढ़ाया भी जा सकता है।

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को पूरा करने के लिए, जिनमें भुखमरी उन्मूलन से संबंधित एसडीजी 2 (भूखमरी-मुक्ति) भी शामिल है, केवल पाँच वर्ष शेष हैं, भारत का हालिया प्रदर्शन इस लेखक को आशा प्रदान करता है। लेकिन इस गति को बनाए रखने के लिए, पोषण प्रदान करने के बजाय पोषण, लचीलापन और अवसर प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

भुखमरी की घड़ी चल रही है। भारत अब भूखमरी से ग्रस्त नहीं है। बस अपना पेट भर रहा है। वैश्विक भुखमरी को समाप्त करने का रास्ता भारत से होकर गुजरता है, और हमें वहाँ तक पहुँचने के लिए इसका निरंतर नेतृत्व आवश्यक है।

संपादक के नाम चिठी

भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) का जवाब मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के लिए पठनीय मतदाता सूची प्रकाशित करने और मतदाता सूची को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करने से इनकार करने के संबंध में दिया गया बचाव, स्पष्ट रूप से, बेहद खराब है। नेता लोकसभा में विपक्ष ने भारत निर्वाचन आयोग की अक्षमता को उजागर किया है।

मतदाता सूची अपलोड करने के संबंध में पारदर्शिता की कमी के बारे में वैध प्रश्नों पर हाल ही में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए उत्तर और अन्य प्रासंगिक मुद्दे बेतुके थे।

सी. राघवन, चेन्नई

भारत में चुनावों के संरक्षक के रूप में, भारत निर्वाचन आयोग को नैतिक रूप से उच्च स्थान लेना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी आरोपों और शंकाओं का समाधान हो जाए। पूरी तरह से जाँच की जानी चाहिए। हमारे चुनावों और लोकतंत्र में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है।

एनएस गिरिनाथ परंजोथी, इरोड, तमिलनाडु

ईसीआई द्वारा अपनाए गए लहजे और तेवर अहंकार और अहंकार को दर्शाते हैं। कांग्रेस का तर्क है कि उसके नेता द्वारा बताए गए आँकड़े चुनाव आयोग के अपने डेटाबेस से हैं। चुनाव आयोग मीडिया के कई अहम सवालों पर टालमटोल करता रहा।

इतने बड़े पैमाने पर अभ्यास आयोजित करने के पीछे कोई स्पष्टीकरण नहीं था। मानसून के बीच में। चुनाव आयोग एक तटस्थ निर्णायक होने के अपने संवैधानिक दायित्व को निभाने में विफल रहा है। यह चिंताजनक है।

एसके चौधरी, बेंगलुरु

letters@thehindu.co.in पर भेजे गए पत्रों में डाक पता अवश्य होना चाहिए।

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • मंगलवार • 19 अगस्त • 2025
www.rashtriyasahara.com

दलील पर दलील

बिहार में वोट अधिकार यात्रा कर राहुल गांधी जिस वक्त वोट चोरी का आरोप मढ़ रहे थे, ठीक उसी वक्त मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार दिल्ली में जवाबी कार्रवाई का ऐलान कर रहे थे। उन्होंने प्रेस कांफ्रेस के मार्फत से राहुल के सवालों का जवाब देते हुए आरोपों को बेबुनियादी ठहराया। बिना हलफनामा दाखिल किए, इनकी जांच नहीं होने की बात करते हुए ज्ञानेश ने कहा, यदि राहुल सात दिन के भीतर माफी नहीं मांगते तो इन आरोपों को बेबुनियादी समझा जाएगा। गांधी ने आयोग पर वोट चोरी के आरोप लगाते हुए पांच सवाल किए थे। जिनमें चुनाव आयोग द्वारा बड़े पैमाने में वोटर लिस्ट में फर्जीवाड़ा करने, भाजपा के एजेंट की तरह काम करने, मतदान के वीडियो सबूत नष्ट करनेडिजिटल फॉर्मेट में मतदाता सूची न मुहैया कराने व विपक्ष के सवालों के जवाब की बजाए उसे धमकाने के कारण पूछे थे।

इसमें बिहार में चल रहे मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया पर भी सवाल शामिल थे। आयोग का दावा है कि वह मजबूती से मतदाताओं के साथ खड़ा है। कुमार ने वोट चोरी जैसे शब्दों के प्रयोग को करोड़ों मतदाताओं व लाखों चुनाव कर्मचारियों की ईमानदारी पर हमला बताया। आयोग का दावा है कि देश के तीन लाख नागरिकों की एपिक संख्या मिलती-जुलती है। जिसके संज्ञान में आते ही बदलाव किया गया। कांग्रेस ने ज्ञानेश कुमार पर भाजपा प्रवक्ता की तरह बात करने का आरोप लगाते हुए संवैधानिक रूप से दायित्व निभाने की सलाह दी। बेशक अपनी पहली प्रेस कांफ्रेस में मुख्य संवैधानिक संस्था के मुखिया की बजाए राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी की तरह बात करके ज्ञानेश विपक्ष के आरोपों के सटीक जवाब देने से बचते नजर आए। जल्दबाजी में उठाए गए उनके इस कदम से नाराज विपक्ष ज्ञानेश के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने पर विचार कर रहा है। ध्यान देने वाली है कि मुख्य चुनाव आयुक्त या अन्य चुनाव आयुक्तों को अधिनियम 2023 के अनुसार उसी आधार पर हटाया जा सकता है, जिस आधार पर न्यायाधीश को हटाया जा सकता है। हालांकि विपक्ष के पास इसे पारित कराने भर की संख्या नहीं है, मगर अपनी दलील की पुष्टि के लिए वे सार्वजनिक मंच से विरोध करने में सफल होते नजर आना चाहेंगे। शीर्ष अदालत में मामला होन के चलते दोनों पक्षों को किसी तरह के आरापों-प्रत्यारोपों पर लगाम लगानी चाहिए। यह गंभीर मसला है, मुनासिब होगा कि आरोपों को सिद्ध करने या खारिज करने में कोई संदेह की गुंजाइश नहीं छोड़ी जानी चाहिए।

खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता

देश में तिलहन के घटते रकबे के चलते कुछ विशेषज्ञों ने शंका जताई है कि भारत 2030-31 तक खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर होने के लक्ष्य को शायद ही हासिल कर पाए। खाद्य तेलों की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए सरकार ने 2030-31 तक देश में खाद्य तेलों का उत्पादन 2.54 करोड़ टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। लेकिन किसानों की प्राथमिकताएं बदलते जाने से इस मंसूबे पर पानी फिरता दिखलाई पड़ रहा है। इस खरीफ सीजन में सोयाबीन और मूंगफली जैसी तिलहन फसलों की कम रकबे में बुआई हुई है। आकलन है कि इन फसलों के रकबे में इस बार करीब छह प्रतिशत की गिरावट आई है। बीते वर्ष तिलहन फसलों की बुआई 161 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में की गई थी, जो घट कर 156 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रह गई है। सोयाबीन की बुआई में भी छह प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। बुआई का यह रुख स्पष्ट रूप से किसानों की प्राथमिकताओं में परिवर्तन का संकेत है, जो यकीनन खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा अवरोधक होगा।

भारत खाद्य तेलों की अपनी कुल खपत का करीब 60 प्रतिशत आयात करता है, और इसी आंकड़े के चलते भारत दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य तेल आयातक देश है। बीते वर्ष भारत ने 1,41,950 करोड़ रुपये से ज्यादा का खाद्य तेल आयात किया था। 2003-04 में खाद्य तेलों का आयात 44 लाख टन था, जो अब बढ़ कर 1.6 करोड़ टन पर पहुंच चुका है। दरअसल, किसानों की प्राथमिकताएं बदलना आने वाले समय भारत में खाद्य तेल परिदृश्य पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। किसान अब तिलहन की उपज लेने की बजाय मक्का जैसी नकदी फसल को तरजीह दे रहे हैं। इसलिए कि मक्के की उपज में लागत के मुकाबले लाभ ज्यादा है। पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण की नीति ने पिछले चार-पांच वर्षों में मक्का के दाम को करीब-करीब दोगुना कर दिया है। पशु चारा और सस्ते प्रोटीनयुक्त खाद्य उद्योग में भी मक्का की मांग तेजी से बढ़ी है। इसलिए किसान तिलहन की फसल पर मक्का की पैदावार को प्राथमिकता दे रहे हैं। बेशक, इससे तिलहन का घरेलू उत्पादन उत्तरोत्तर घट सकता है। शंका है कि मौजूदा रुझान जारी रहा तो अगले छह-सात वर्षों में भारत का खाद्य तेल आयात दो करोड़ टन से भी ज्यादा हो सकता है, और आत्मनिर्भरता के मंसूबे पर तो पानी ही फिर जाएगा।

साइबर स्लेवरी/अमित बैजनाथ गर्ग

ठगी का नया पैंतरा

सेक्सटॉर्शन, निवेश, हनीट्रैप, ई-ट्रेडिंग फ्रॉड, डेटिंग एप फ्रॉड, साइबर बुलिंग, फर्जी लोन एप्स, जॉब ऑफर फ्रॉड, इनकम टैक्स फ्रॉड और डिजिटल अरेस्ट के बाद इन दिनों साइबर ठगी का एक नया रूप सामने आ रहा है, जिसे 'साइबर स्लेवरी' यानी 'साइबर गुलामी' कहा जा रहा है। दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में आकर्षक नौकरियों के नाम पर भारतीय प्रवासी अब एक नये तरह के जाल में फंस रहे हैं, जहां भारतीयों को उच्च वेतन वाली नौकरियों का भ्रामक वादा करके साइबर गुलामी करवाई जा रही है।

साइबर स्लेवरी के इस खतरनाक ट्रेंड में तकनीकी रूप से दक्ष और पढ़े-लिखे युवाओं को विदेश में आकर्षक नौकरियों का लालच देकर दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में फंसाया जा रहा है, जहां उन्हें बंधक बनाकर साइबर अपराध करवाए जा रहे हैं। यह संगठित गिरोह खासतौर पर लाओस, म्यांमार और कंबोडिया जैसे देशों में सक्रिय हैं। हाल ही में सरकार और पुलिस ने लोगों को साइबर स्लेवरी के खतरनाक ट्रेंड को लेकर गंभीर चेतावनी दी है। पुलिस का कहना है कि इन देशों में युवाओं को आईटी सेक्टर में शानदार नौकरी देने का झांसा दिया जाता है। जैसे ही वे वहां पहुंचते हैं, उनके पासपोर्ट और अन्य दस्तावेज छीन लिए जाते हैं और उन्हें प्रताड़ित कर साइबर ठगी के लिए मजबूर किया जाता है।

असल में साइबर गुलामी शोषण का एक आधुनिक रूप है, जिसमें व्यक्तियों को अवैध रूप से बंधक बनाकर साइबर धोखाधड़ी में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है। इसके तहत व्यक्तियों को उच्च वेतन वाले डाटा एंट्री पदों को हासिल करने का लालच देकर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में ले जाया जाता है, जहां उनसे जबरन साइबर धोखाधड़ी करवाई जाती है। असल में साइबर गुलामी अभूतपूर्व गंभीरता और पैमाने के संगठित अपराध के रूप में उभर रही है। अनुमान बताते हैं कि हजारों पीड़ित धोखाधड़ी वाले परिसरों में बंदी बनाए गए हैं। हालांकि धोखाधड़ी वाले संदेशों से परेशान होना अब रोजमर्रा की बात हो गई है, लेकिन यह असुविधा वास्तव में आधुनिक गुलामी के एक नए घातक रूप में दिखाई दे रही है।

बदतर होते हालात

ओवर टूरिज्म
वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली

निःस्संदेह टूरिज्म हो या ओवर टूरिज्म इससे देशों, राज्यों, नगरों या गांवों की आर्थिकी बढ़ने की संभावनाएं रहती ही है। किन्तु इसके बावजूद पूरे विश्व में सभी देश, सभी शहर या स्थानीय वासी ओवरटूरिज्म से खुश नहीं हैं। विशेषकर यूरोप में लोकप्रिय पर्यटक महानगरों नगरों में अतिशय पर्यटन का विरोध हो रहा है। भारतीय पर्यटक नगरी में पर्यटकों की भारी भीड़ से, उनके व्यवहार से, जामों से और उनके कारण बढ़ते उपभोक्ता सामग्रियों व कूड़ा कचरे के अंबार से देर-सबेर भारत भी ओवरटूरिज्म के विरोध से अछूता नहीं रहेगा। यूरोप में भी ओवर टूरिज्म का विरोध करने वाले प्रदर्शनकारियों का कहना है कि इससे घरों के किराये बढ़ गए हैं, हमारी गलियां भीड़ भरी हो गई हैं और स्थानीय संस्कृति का क्षरण हो रहा है। यही सब भारत में भी अत्याधिक पर्यटनग्रस्त प्रमुख पर्यटक नगरियों के नागरिक भी अनुभव कर रहे हैं।

भारत में ओवर टूरिज्म की कीमत स्थानीय लोग जाम में फंस हर काम में अतिरिक्त समय लगा दे रहे हैं। आने-जाने में देरी से जरूरी काम भी छूट जाते हैं या उन्हें टालना पड़ता है। इससे आर्थिक हानि भी हो जाती है। तनाव अलग से पैदा होता है। ये वह लागत है जो पर्यटन से बढ़े राजस्व का ढिंढोरा पिटते सरकारों या हितधारकों के आकलन में नहीं होता है। किन्तु जिसे हर अपने गांव-शहर के ओवर टूरिज्म से पिसा स्थानीय नागरिक चुका रहा है।

हर काम के लिए घर से पहले निकलने और देरी से घर पहुंचने की मजबूरी रहती है। इसमें घर के कई ओवर टूरिज्म की मुख्य पहचान हम भारी जाम से करते हैं। देहरादून मसूरी जाम में इसी माह एक प्र्यटक की मौत हुई, परन्तु ऐसी घटनाएं अन्यत्र से भी सुनने को आने लगी हैं। सरकारी तौर पर ये जानकारी शिमला में जून 20 और जून 23 के बीच कुल तीन दिनों में ही साठ हजार पर्यटक वाहन नगर में प्रवेश किए थे। ये नित्य के स्थानीय परिवहन के अतिरिक्त है। इस जून 2025 में जिले के पुलिस अधिकारी के अनुसार देहरादून से मसूरी जाने को सामान्य दिनों में प्रति दिन 4 से आठ हजार वाहन होते हैं। इन दिनों वीकेंड में पंद्रह हजार वाहन आ रहे हैं। हालात ऐसे हो जाते हैं कि स्थानीय जन अपने ही शहर में ही कैद हो जाता है। यूरोप में जगह-जगह स्थानीय लोग 'टूरिस्ट गो होम' के नारे लग रहे हैं। ओवर टूरिज्म के खिलाफ लोग अभियान चला रहे हैं। इटल , स्पेन और पुर्तगाल में तो बहुत जोर पकड़ रहा है। 'पर्यटकों घर जाओ', 'एक पर्यटक का बढ़ना एक स्थानीय निवासी का कम होना' जैसे पोस्टर व नारे लग रहे हैं। वे कहते हैं उनका जीना दूभर हो गया है। किराये के घरों का दाम

बहुत बढ़ गया है। बड़े-बड़े होटलों के खोलने व उनमें विस्तार होने का विरोध हो रहा है। इस 15 जून को बड़े प्रदर्शन हुए। बार्सीलोना की तो खबर थी कि कि प्रदर्शनकारियों ने वाटर गनों को लेकर पर्यटकों के पसंदीदा स्थलों में पर्यटकों को निशाना बनाया। बार्सीलोना प्रदर्शनों का प्रमुख केंद्र बन गया है।

उसकी जनसंख्या सोलह लाख है, जबकि गत वर्ष वहां 26 लाख टूरिस्ट आए। स्थानीय लोग कह रहे हैं, देखिए हम जहां देख रहे हैं पर्यटक ही पर्यटक दिख रहे हैं। आपका सामना उन लोगों से होता है जिनको आप नहीं जानते और जो आपको नहीं जानते हैं। प्रदर्शनकारियों के अनुसार यह असहाय होने का भाव भी पैदा कर देता है। पिछले साल यूरोप में 70 लाख पर्यटक आए थे। ग्रीस में उसकी संख्या के चार गुणा पर्यटक आए थे। लगभग सभी पर्यटक शहरों में जहां विरोध हो रहा है वहां स्थानीय जनसंख्या के सात आठ गुणा तक पर्यटक पहुंच रहे हैं। भारत में भी यात्रियों के पारम्परिक मूल्यों की दृष्टि से अनुचित आचरण व्यवहार से भी परेशानी पैदा हो रही है। शायद ही कोई चाहेगा कि टूरिस्ट या जनता उसके क्षेत्र में अशांति पैदा करे। वायनाड के एक बांध के समीप के एक गांव के किसान बांध पहुंच रील बनाने वाले पर्यटकों की उद्दंड भीड़ से परेशान हो प्रशासन से इस पर रोक लगाने की मांग की है। वे कहते हैं इससे दुर्घटनाएं बढ़ी हैं। खेतों को नुकसान हुआ है, निजता का भी हनन हुआ है। पर्यटकों के मनमाने ढंग से जहां-तहां रुकने से लगभग सभी पर्यटन मार्गों पर दुर्घटनाओं के जोखिम बढ़े हैं। सेल्फी के मोहपाश में फंसकर कई पर्यटकों ने पहाड़ियों में, नदियों में और झीलों में अपना अमूल्य जीवन गंवाया है।

सड़क मार्गों का जाम तो शुरुआत भर है। ओवर टूरिज्म का असर तो किसी पर्यटन नगरी में पहुंचकर खास पर्यटन स्पॉट में जाकर दिखता है। चाहे वो झील हों, झरने हों, नदी हो, पार्क हो या म्यूजियम हो। यही नहीं इससे स्थानीय निवासियों के साफ पर्यावरण और शांति में रहने के अधिकार पर चोट पहुंच रही है। इससे हजारों की संख्या में पर्यटकों के पहुंचने से, उनके सैकड़ों वाहनों के पहुंचने से न शांति रह गई न साफ हवा। प्लास्टिक का प्रदूषण अलग से है। सरकारें ये क्यों सोचती हैं कि सदैव ही स्थानीय लोग कुछ धनराशि के फायदे के लिए अपनी शांति खो देंगे। पैसा बढ़ता भी है तो बाजार के दुकानदारों का। सामान की कमी बताकर ओवर रेटिंग से भी उनका मुनाफा बढ़ता है। ज्यादा दाम पर्यटक ही नहीं चुकाते रोज उन बाजारों व शहरों में रहने वाले भी चुकाते हैं। किन्तु किसी भी शहर में कुल दुकानदारों व कुल स्थानीय निवासियों का अनुपात क्या है? विक्रेता ज्यादा हैं या खरीदार। महंगे हुए आवश्यक चीजों को होटल वाले तो ज्यादा दामों में खरीद ही लेंगे, परन्तु गृहणी तो लाभ कमाने के लिए नहीं घर की रसोई के लिए खरीदती है।

पारिस्थितिकी तंत्र व प्राकृतिक संसाधनों पर भार बढ़ना तो अलग ही विषय है। ओवर टूरिज्म का भार पूरे देश में ही हिमालयी राज्यों को यदि छोड़ भी दें तो केरल, महाराष्ट्र, तामिलनाडु में भी देखा जा रहा है। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, मध्य के पहाड़ी या पठारी अधिकारिक ईकोसेन्सेटिव या हैजार्ड पोर्न घोषित जोन में भी हो रहा है। बियरिंग कैपेसिटी जानकर ओवर टूरिज्म को सस्टेनेबल टूरिज्म में बदलने के लिए यह जानना जरूरी होगा कि विशेष संवेदनशील व आपदा जोखिमों वाले पर्यटन स्थलों के बियरिंग कैपेसिटी आकलन के मानक व पद्धतियां सामान्य पर्यटक नगरों सी नहीं होंगी। पर्यटकों को समझना होगा कि सुंदर, प्राकृतिक व संवेदनशील पर्यटक स्थलों की सुंदरता बनाए रखना ज्यादा जरूरी है, जिससे लोग आगे भी आते रहें और मूल निवासियों को भी नुकसान न हो।

(लेख में विचार निजी हैं)

बियरिंग कैपेसिटी जानकर ओवर टूरिज्म को सस्टेनेबल टूरिज्म में बदलने के लिए यह जानना जरूरी होगा कि विशेष संवेदनशील व आपदा जोखिमों वाले पर्यटन स्थलों के बियरिंग कैपेसिटी आकलन के मानक व पद्धतियां सामान्य पर्यटक नगरों सी नहीं होंगी। पर्यटकों को समझना होगा कि सुंदर, प्राकृतिक व संवेदनशील पर्यटक स्थलों की सुंदरता बनाए रखना ज्यादा जरूरी है, जिससे लोग आगे भी आते रहें और मूल निवासियों को भी नुकसान न हो

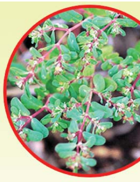

चमत्कारिक 'छोटी दूधी' पेट और त्वचा, दोनों का रखती है ख्याल

- भारत समेत कई उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अक्सर खाली पड़ी जमीन पर छोटा सा पौधा औषधीय गुणों को समेटे हुए पाया जाता है, जिसे हम 'छोटी दूधी' कहते हैं। इसे खरपतवार मान कर नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन आयुर्वेद में इसे कई बीमारियां दूर करने में इस्तेमाल किया जाता है।
- छोटी दूधी का वैज्ञानिक नाम 'यूफॉर्बिया थाइमीफोलिया' है। इसे अंग्रेजी में 'थाईम लीव्ड स्पर्ज' कहते हैं। यह 'युफोरबिएसी' परिवार से संबंधित है, जो जमीन पर फैला हुआ होता है। इसकी टहनियां पतली और लाल रंग की होती हैं तो फूल बहुत छोटे और हरे-लाल रंग के होते हैं, जो पत्तियों की बगल में गुच्छों में लगे होते हैं
- अमेरिकी नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के मुताबिक छोटी दूधी दस्त, कब्ज, अपच जैसी दिक्कतों से राहत दिलाने में मददगार है। बाल झड़ने की समस्या दूर करने में भी यह सहायक है

(मीडिया इनपुट्स)

धर्मनिरपेक्ष पार्टियों ने अपने मुस्लिम-प्रथम धर्मनिरपेक्षतावाद से मुसलमानों के लिए 'विलगाव' के हालात पैदा कर दिए हैं जहां उन्हें आधुनिक शिक्षा और भारत के बहुलतावादी मूल्यों के साथ समन्वय करने में दिक्कतें आ रही हैं। यही तो जिन्ना और माउंटेबेटन ने भारत की आजादी की बेला में अपेक्षा की थी।

मिन्हाज मर्चेंट, लेखक
@MinhazMerchant

कार्यस्थल पर मर्यादा ही असली परीक्षा

मुद्दा | प्रियंका सौरभ

शिक्षण संस्थान केवल पढ़ाई-लिखाई की जगह नहीं होते, बल्कि समाज का आईना और भविष्य का निर्माण स्थल होते हैं। यहां का वातावरण सीधे तौर पर बच्चों की सोच, शिक्षकों की प्रेरणा और पूरे संस्थान की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। एक स्वस्थ और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई विलासिता नहीं, बल्कि बुनियादी आवश्यकता है। विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं और महिला कर्मचारियों के लिए यह सुनिश्चित करना कि वे अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें, किसी भी संस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

हाल के वर्षों में कई घटनाएं सामने आई हैं, जहां महिला शिक्षिकाओं ने अपने ही सहयोगियों या वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए अनुचित व्यवहार, अशोभनीय संदेश और निजी तौर पर अनुचित हरकतों की शिकायत की है। देशभर से समय-समय पर ऐसी खबरें आती रही हैं- कभी खाली पीरियड में एकांत में लंबी बातचीत, कभी व्यक्तिगत नंबर पर अनावश्यक और निजी संदेश, कभी नजर और शब्दों से अपमानजनक संकेत, तो कभी काम में मदद या पदोन्नित के बदले अनुचित मांग। ये सब केवल व्यक्तिगत आचरण की गड़बड़ी नहीं हैं, बल्कि कार्यस्थल की गरिमा और सुरक्षा को तोड़ने वाली गंभीर प्रवृत्तियां हैं। ऐसी घटनाएं केवल एक महिला के मानसिक स्वास्थ्य को चोट नहीं पहुंचातीं, बल्कि पूरे वातावरण को विषैला बना देती हैं। असुरक्षा का भाव महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करता है। महिलाओं की कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत में यौन उत्पीड़न (कार्यस्थल पर) अधिनियम, 2013 यानी 'पॉश अधिनियम' लागू है। इसके तहत प्रत्येक संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य है, जिसकी अध्यक्ष महिला हो और आधे से अधिक सदस्य महिलाएं हों। शिकायत दर्ज होने पर सात कार्य दिवस में प्रारंभिक सुनवाई और नब्बे दिनों में जांच पूरी करनी होती है। दोषी पाए जाने पर प्रशासनिक और अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। शिकायतकर्ता के साथ किसी भी प्रकार के प्रतिशोध को रोकना भी संस्थान की जिम्मेदारी है। दुर्भाग्य से, अनेक स्थानों पर यह समिति केवल कागजों में ही सीमित रहती है। समाधान केवल सजा देने में नहीं, बल्कि रोकथाम में है। इसके लिए कुछ बुनियादी कदम हर

शैक्षणिक संस्थान में तुरंत लागू किए जाने चाहिए। महिला शिक्षिकाओं के लिए अलग और सुरक्षित स्टाफ रूम होना चाहिए, ताकि वे अपने कार्य से जुड़ी चर्चाएं और आवश्यक बातचीत आराम से कर सकें। महिला कर्मचारियों और छात्राओं के लिए अलग, स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय की व्यवस्था हो। परिसर के प्रमुख स्थानों, गलियारों, प्रवेश-द्वारों, खेल के मैदान और कॉमन एरिया में उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे लगाए जाएं और वे हमेशा सक्रिय रहें। फुटेज को कम से कम नब्बे दिनों तक सुरक्षित रखा जाए और केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही उसकी पहुंच हो। खाली पीरियड में महिला और पुरुष शिक्षक अपने-अपने स्टाफ रूम में ही रहें। बिना किसी औपचारिक कार्य के, एकांत में लंबे समय तक बैठना या बातचीत करना प्रतिबंधित हो। शिक्षकों और सहकर्मियों के बीच निजी संदेश केवल कार्य संबंधी हों और वह भी कार्य समय में ही भेजे जाएं। संस्थान में ऐसा गोपनीय तंत्र हो जहां पीड़ित बिना डर और शर्म के शिकायत दर्ज करा सके। यह ऑनलाइन पोर्टल, सीलबंद शिकायत बॉक्स या हेल्पलाइन नंबर के रूप में हो सकता है। शिकायत आने पर तुरंत जांच हो, आरोपी और पीड़ित को अलग किया जाए और दोषी पाए जाने पर बिना देरी कड़ी कार्रवाई की जाए। शिकायतकर्ता की गोपनीयता की रक्षा संस्थान की सर्वोच्च जिम्मेदारी होनी चाहिए। महिला सुरक्षा केवल कानूनी या प्रशासनिक मामला नहीं है, यह सामाजिक सोच का भी मुद्दा है। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि कार्यस्थल पर सम्मान, मर्यादा और सीमाएं क्या होती हैं। स्कूलों में लैंगिक संवेदनशीलता और आत्मसम्मान पर आधारित विशेष कक्षाएं शुरू की जानी चाहिए।

समाज को यह समझना होगा कि महिला सुरक्षा किसी एक वर्ग का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे समाज और देश की गरिमा का प्रश्न है। सुरक्षित कैंपस और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और संस्थान की विश्वसनीयता का आधार है। यह केवल महिला का मुद्दा नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति का मुद्दा है जो अपने कार्यस्थल को गरिमा और मर्यादा से भरपूर देखना चाहता है। अगर हम अब भी चुप रहे तो अगली घटना का इंतजार करना पड़ेगा और तब तक किसी का आत्मविश्वास, किसी का करियर और किसी की जिंदगी बर्बाद हो चुकी होगी। अब समय है चुप्पी तोड़ने का-नियम बनाने का, उन्हें कड़ाई से लागू करने का और हर शैक्षणिक संस्थान को सचमुच सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल बनाने का। यह हर शिक्षक, हर कर्मचारी, हर छात्र और पूरे समाज की जिम्मेदारी है। तभी हम आने वाली पीढ़ी को न केवल किताबों का ज्ञान, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी सीख-सम्मान और सुरक्षा-भी दे पाएंगे।

सृजनात्मक शक्ति | ओशो

कभी आपने नहीं सोचा होगा, इतने पेंटर हुए, इतने मूर्तिकार हुए, इतने चित्रकार, इतने कवि, इतने आर्किटेक्ट, लेकिन स्त्री कोई एक बड़ी चित्रकार नहीं हुई! कोई एक स्त्री बडी आर्किटेक्ट, वास्तुकला में अग्रणी नहीं हुई! कोई स्त्री ने बहुत बड़े संगीत को जन्म नहीं दिया! कोई एक स्त्री ने कोई बहुत अदभुत मूर्ति नहीं काटी! सृजन का सारा काम पुरुष ने किया है। और कई बार पुरुष को ऐसा खयाल आता है कि क्रिएटिव, सृजनात्मक शक्ति हमारे पास है। स्त्री के पास कोई सृजनात्मक शक्ति नहीं है, लेकिन बात उलटी है। स्त्री पुरुष को पैदा करने में इतना बड़ा श्रम कर लेती है कि और कोई सृजन करने कि जरूरत नहीं रह जाती। स्त्री के पास अपना एक क्रिएटिव एक्ट है। एक सृजनात्मक कृत्य है, जो इतना बड़ा कि न, पत्थर की मूर्ति बनाना और एक जीवित व्यक्ति को बड़ा करना...लेकिन स्त्री के काम को हमने सहज स्वीकार कर लिया है। और इसीलिए स्त्री की सारी सृजनात्मक शक्ति उसके मां बनने में लग जाती है। उसके पास और कोई सृजन की न सुविधा बचती है, न शक्ति बचती है। न कोई आयाम, कोई डायमेंशन बचता है। न सोचने का सवाल है। एक छोटे से घर को सुंदर बनाने में लेकिन हम कहेंगे, छोटे से घर को सुंदर बनाना, कोई माइकल एंजिलो तो पैदा नहीं हो सकता, कोई वानगाग तो पैदा नहीं हो जाएगा। कोई इजरा पाउंड तो पैदा नहीं होगा। कोई कालिदास तो पैदा नहीं होगा। एक घर में ठहरता था, मैं हैरान हो गया। गरीब घर है। बहुत सम्पन्न नहीं है, लेकिन इतना साफ सुथरा, इतना स्वच्छ मैंने कोई घर नहीं देखा, लेकिन उस घर की प्रशंसा करने कोई कभी नहीं जाएगा। घर की गृहणी उस घर को ऐसा पवित्र बना रही है कि कोई मंदिर भी उतना स्वच्छ और पवित्र नहीं मालूम पड़ता है, लेकिन उसकी कौन फिक्र करेगा? कौन माइकेल एंजलो,कालिदास और वानगाग में उसकी गिनती करेगा? वह खो जाएगी। या : एक ऐसा काम कर रही है, जिसके लिए कोई प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। क्यों नहीं मिलेगी? नहीं मिलेगी यह, यह दुनियां पुरुषों की दुनिया है। स्त्री के विकास, स्त्री की संभावनाओं, स्त्रियों की जो पोटेशियलिटीज हैं, उनके जो आयाम, ऊंचाइयां हैं, उनको हमने गिनती में ही नहीं लिया है। अगर एक आदमी गणित में कोई नई खोज कर ले तो नोबल प्राइज मिल सकता है, लेकिन स्त्रियां निरंतर सृजन के बहुत नये आयाम खोजती हैं। कोई नोबल प्राइज उनके लिए नहीं है!

रीडर्स मेल

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

दोनों हाथों से बजती है ताली

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय के साथ कानूनों और व्यवस्था में थोड़ा बहुत परिवर्तन भी जरूरी होता है। मोदी सरकार ने देश में आर्थिक सुधार करने के लिए जीएसटी का फैसला लिया था, लेकिन यह फैसला बिना किसी तैयारी और उतावलेपन में लिया गया। क्योंकि जीएसटी के लिए नित प्रतिदिन सरकार ने इसके नियम बदले। बार-बार जीएसटी में बदलाव करने से क्या उपभोक्ता और छोटे-बड़े दुकानदार असमंजस के चक्रव्यूह में नहीं घिरे होंगे? हालांकि अब लगभग व्यापारी और कारोबारी जीएसटी की परिभाषा समझ चुके हैं। सरकार को चाहिए कि वो कि वो कर की कमाई मे पारर्दिशता लाने के लिए भी कुछ कदम उठाए अर्थात करों की कमाई की बैलेस सीट मीडिया के जरिए जन-जन तक पहुंचाए। अगर सरकार हरेक नागरिक को अच्छी आधुनिक बच्चों की शिक्षा की टेंशन ले, बेरोजगारों को उनकी योग्यता अनुभव अनुसार भत्ता या नौकरी का इंतजाम करे और बुढ़ापे को सुरक्षित करने के लिए गंभीरता दिखाए तो आमजन भी हर तरह के कर, चाहे वो प्रॉपर्टी कर हो या इनकम देने के प्रति गंभीरता दिखाएगा।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

नोबेल के लिए ट्रंप की जिद

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नोबेल शांति पुरस्कार के पीछे भागना राजनीति से ज्यादा व्यक्तिगत अहंकार का मामला लगता है। उन्हें हर हाल में यह साबित करना है कि वे बराक ओबामा से किसी भी मायने में पीछे नहीं हैं। ओबामा को यह सम्मान मिला था, तो ट्रंप भी चाहते हैं कि इतिहास उन्हें उसी कतार में खड़ा करे। फर्क बस इतना है कि ओबामा को यह सम्मान उनकी शांति की सोच के लिए मिला था, जबकि ट्रंप इसे धमकी और दबाव की राजनीति से हासिल करना चाहते हैं। नॉर्वे के वित्त मंत्री को फोन पर टैरिफ की धमकी देना इस बात का सबूत है कि उनके लिए 'शांति' महज एक प्रदर्शन है। असलियत यह है कि ट्रंप की विदेश नीति कई बार युद्ध भड़काने वाले फैसलों से जुड़ी रही है। ईरान पर हमला, गाजा को हथियार देना या पाकिस्तान से मिली-जुली राजनीति शांति नहीं, बल्कि तनाव को ही बढ़ावा देती है।

महेन्द्र तिवारी, ई मेल से

शिक्षा-चिकित्सा पर बेपरवाही

शिक्षा एवं चिकित्सा किसी भी देश के नागरिक के लिए प्रथम मूलभूत आवश्यकताएं हैं जिस पर केंद्र सरकार और राज्य सरकार अपने जिम्मेदारी निभा रही है। बावजूद इसके देश में शिक्षा और चिकित्सा आम आदमी की पहुंच से आज भी दूर है। इसी को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने शिक्षा एवं चिकित्सा के निजीकरण एवं बाजारीकरण पर कड़ा प्रहार किया है। मोहन भागवत का यह बयान साहसिक एवं निष्पक्ष बयान है जिस पर केंद्र एवं राज्य सरकारों को जरूर संज्ञान लेना चाहिए और भविष्य में शिक्षा एवं स्वास्थ्य आम आदमी के पहुंच से बाहर ना हो। आम आदमी के लिए टेक्निकल/मेडिकल शिक्षा के लिए निजी क्षेत्र के विश्वविद्यालय में दाखिला एक बहुत बड़ी समस्या है। गरीबों की जिंदगी भर की कमाई फीस देने में लग जाती है। यह भी कड़वा सच है कि आज तक 'सबको शिक्षा समान शिक्षा' का लक्ष्य किसी राज्य सरकार ने पूरा नहीं किया है।

वीरेन्द्र कुमार जाटव, दिल्ली

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
वर्ष-35, अंक 5
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **जिया कादरी** द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3, 4 सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा तथा 1209-1210, बारहवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित।
। **स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र*** ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय -011-23352369, 011-23352372, **दूरभाष - नोएडा प्रेस** 0120-2444755, 2444756 **फैक्स** - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

पंजाब केसरी संपादकीय

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

चुनाव आयोग और विपक्षी दल

बिहार में चल रहे विशेष सघन मतदाता पुनरीक्षण (एसआईआर) पर जिस तरह देश की विपक्षी पार्टियों और चुनाव आयोग के बीच रस्साकसी शुरू हुई है उसका सीधा प्रभाव भारत के मतदाताओं पर पड़ रहा है। विपक्षी दल खासकर कांग्रेस पार्टी जिस तरह चुनाव आयोग को सीधे निशाने पर ले रही है और चुनाव आयोग उसका सख्त पलट जवाब दे रहा है, उससे निकलने वाले परिणाम भारत के लोकतन्त्र को भी प्रभावित किये बिना नहीं रह सकते। स्वतन्त्र भारत में यह पहला अवसर है जब विपक्षी राजनीतिक पार्टियां चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल उठा रही हैं और कह रही हैं कि आयोग सत्तारूढ़ दल के प्रभाव में काम कर रहा है। जरूरत इस बात की है कि एसआईआर पर विवाद जल्द से जल्द खत्म हो। मामला सर्वोच्च न्यायालय में भी चल रहा है जिसके बीच ही मुख्य चुनाव आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार गुप्ता ने मतदाता पुनरीक्षण के मुद्दे पर प्रेस कान्फ्रेंस कर डाली और कांग्रेस नेता श्री राहुल गांधी द्वारा लगाये गये आरोपों को झूठा बताया। श्री ज्ञानेश कुमार अच्छी तरह जानते हैं कि चुनाव आयोग को किसी भी राजनीतिक दल से किसी प्रकार का मतलब नहीं होता। इसलिए उनका यह बयान कि राहुल गांधी सात दिनों के भीतर अपनी शिकायत के साथ शपथ पत्र दाखिल करें अन्यथा लगाये गये झूठे आरोपों पर देश से माफी मांगें, पूरी तरह अवांछित है।

वास्तव में ये शब्द कहते हुए श्री ज्ञानेश कुमार को यह ध्यान रखना चाहिए था कि श्री गांधी लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं। उन्होंने कर्नाटक राज्य के एक विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची में भारी संख्या में फर्जी मतदाताओं के होने की बात कही है। श्री गांधी ने चुनाव आयोग द्वारा दी गई मतदाता सूची में ही गड़बड़ी होने की बात सप्रमाण कही है। अत: चुनाव आयोग की जिम्मेदारी बनती है कि वह पूरे मामले की सघन जांच कराये। भारत के संसदीय लोकतन्त्र में ऐसे मौके कई बार आये हैं जब किसी राजनीतिक दल की लिखित शिकायत पर आयोग ने सख्त जांच कराई है। पिछले 79 वर्षों के भारत के इतिहास में ऐसा मौका पहली बार देखने को मिल रहा है जब मुख्य चुनाव आयुक्त किसी राजनेता से माफी मांगने के लिए कह रहा है और शपथ पत्र देने का निर्देश दे रहा है। यहां यह समझना बहुत जरूरी है कि चुनाव आयोग की कारगुजारियों से सरकार का कोई मतलब नहीं है, चाहे वह सरकार किसी भी राजनीतिक दल की हो। हमारे संविधान निर्माताओं ने देश में चुनाव कराने की प्रक्रिया और इसके पूरे तन्त्र को इसी उद्देश्य से स्थापित किया था कि हर हालत में चुनाव आयोग बिना किसी लाग-लपेट और भेदभाव के देश के चुने हुए सदनों के चुनाव करायेगा और इसके लिए मतदाता मंडल का निर्माण करेगा। यह मतदाता मंडल 18 वर्ष से ऊपर के हर भारतीय नागरिक का होगा।

> चुनाव आयोग ऐसी संवैधानिक संस्था है जो भारत के पूरे लोकतन्त्र को अपने कन्धे पर ढोती है क्योंकि उसका कार्य समाप्त होने के बाद ही इस तन्त्र के तीन मुख्य खम्भे अपना कार्य करने में सक्षम हो पाते हैं। बेशक न्यायापालिका पूरी तरह स्वतन्त्र व अराजनीतिक होती है और वह देश में संविधान का शासन देखने के कर्त्तव्य से बन्धी होती है। जबकि कार्यपालिका व विधायिका चुनाव परिणामों पर मयस्सर होती हैं। इसी प्रकार चुनाव आयोग भी पूरी संवैधानिक शुचिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देता है। मगर क्या कयामत है कि श्री ज्ञानेश कुमार फरमा रहे हैं कि राहुल गांधी देश से माफी मांगें। ऐसा करके वह उस लक्ष्मण रेखा को लांघ गये जो संविधान ने ही उनके लिए खींची है।

इसका मतलब यही है कि चुनाव आयोग का मुख्य कार्य सर्वप्रथम ऐसी मतदाता सूची का निर्माण करना होगा जिसमें आलीशान मकान में रहने वाले व्यक्ति से लेकर सड़क पर ही सोने वाले व्यक्ति का नाम दर्ज होगा। इन सबके वोट की कीमत एक बराबर होगी। संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने इसे राजनीतिक समानता की संज्ञा दी थी। यह समानता एक वोट के अधिकार से ही आयी जिसे महात्मा गांधी ने स्वयंभू मतदाता के रूप में निरुपित किया। लोकतन्त्र का असली मालिक यही मतदाता होता है। यह बेवजह नहीं है कि भारत में हर पांच साल बाद हर राजनीतिक दल का नेता जनता के बीच जाता है और कसम उठाता है कि यदि वह चुनाव जीतता है तो जनता या मतदाता का हुक्म बजायेगा। मतदाता बहुत सोच-समझ कर अपना वोट जब किसी राजनीतिक दल के प्रत्याशी को डालता है तो वह लोकतन्त्र का राजा होता है। अत: यदि मतदाता सूची से किसी भी भारत के नागरिक का नाम कट जाता है तो यह उसके साथ बेइमानी होती है। इसके उलट यदि मतदाता सूची में फर्जी नाम जुड़ जाते हैं तो यह लोकतन्त्र को प्रदूषित करते हैं।

बिहार में अभी तक 65 लाख मतदाताओं के नाम काट दिये गये हैं जिनमें 22 लाख ऐसे नागरिक हैं जिनकी मृत्यु हो चुकी है। मगर बहुत से मृत लोग जीवित पाये जा रहे हैं। इसे हम गफलत कहेंगे। चुनाव आयोग से अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसी गलती नहीं करेगा क्योंकि सूची बनाने का काम उसी का है। जहां तक शपथ पत्र का सवाल है तो खुद मुख्य चुनाव आयुक्त भी यह शपथ नहीं ले सकते कि उनके द्वारा बनाई गई सूची पूर्णत: त्रुटिहीन है। दरअसल चुनाव आयोग ऐसी संवैधानिक संस्था है जो भारत के पूरे लोकतन्त्र को अपने कन्धे पर ढोती है क्योंकि उसका कार्य समाप्त होने के बाद ही इस तन्त्र के तीन मुख्य खम्भे अपना कार्य करने में सक्षम हो पाते हैं। बेशक न्यायापालिका पूरी तरह स्वतन्त्र व अराजनीतिक होती है और वह देश में संविधान का शासन देखने के कर्त्तव्य से बन्धी होती है। जबकि कार्यपालिका व विधायिका चुनाव परिणामों पर मयस्सर होती हैं। इसी प्रकार चुनाव आयोग भी पूरी संवैधानिक शुचिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देता है। मगर क्या कयामत है कि श्री ज्ञानेश कुमार फरमा रहे हैं कि राहुल गांधी देश से माफी मांगें। ऐसा करके वह उस लक्ष्मण रेखा को लांघ गये जो संविधान ने ही उनके लिए खींची है। समझने वाली बात यह है कि राजनीतिक दलों की पूरी व्यवस्था देखने का काम जब चुनाव आयोग करता है तो उसे संविधान ने कुछ न्यायिक अधिकार भी दिये हैं। इन अधिकारों के चलते वह सभी राजनीतिक दलों को एक समान देखने के धर्म से बन्धा होता है। उसके लिए सत्ता पक्ष या विपक्ष के कोई मायने नहीं होते। वह केवल राजनैतिक दल की हैसियत ही पहचानता है।

हमारे संविधान निर्माता इतनी खूबसूरत व्यवस्था करके गये हैं कि सभी राजनीतिक दलों की नकेल एक 'अराजनैतिक' संस्था चुनाव आयोग को दे दी। चुनाव आयोग सरकार का अंग न होते हुए भी देश में राजनीतिक प्रशासन प्रणाली की आधारशिला रखता है लेकिन विपक्ष व चुनाव आयोग की लागडांट अब सीधे जनता व चुनाव आयोग के बीच तनाव पैदा करता दिखता है। इस स्थिति को हर सूरत में टाला जाना चाहिए।

युद्धों से केवल विध्वंस का बीज...

जहां मध्यस्थता करवाने वाला शांतिप्रिय कम, व्यापारी अधिक नजर आता है
तब-तब यह विश्व युद्धों की आग में झोंक दिया जाता है,
प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों से एक बच्चा भी यह समझ जाता है,
कि युद्धों से केवल विध्वंस का बीज उगाया जाता है...!!

गीता पाढा

कहां नाच रहे हो मि. मुनीर, कुछ होश है ?

विजय दर्डा
संपादक : लोकमत समूह
पूर्व राज्यसभा सांसद

सर्कस आप सब ने कभी न कभी देखा ही होगा, उसमें एक जोकर होता है। सीरियस एडवेंचर वाले कारनामों के बीच वह कुछ ऐसी हरकत करता है कि लोग हंस पड़ें। कुछ मनोरंजन हो जाए। आखिर तनाव भी आदमी कब तक झेले? अब आप सोचेंगे कि सर्कस के जोकर की याद मुझे क्यों आ गई? दरअसल पाकिस्तानी सेना अध्यक्ष आसिम मुनीर साहब की एक हरकत ने मुझे जोकर की याद दिलाई है जो टैरिफ युद्ध के इस गंभीर माहौल में भारत पर हमले की शुरूआत पूरब से करने की बात कर रहे हैं।

वैसे जोकर के किरदार के प्रति भी मेरे मन में बड़ा सम्मान है इसलिए मुनीर को जोकर कहने में भी संकोच हो रहा है। मुनीर की हालत बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना जैसी है। आपने देखा होगा कि बारात में कुछ लोग अचानक आकर नाचने लगते हैं, वे ऐसा दिखावा करते हैं जैसे दूल्हे के असली दोस्त वही हों। लोग उन पर पैसे लुटाने लगते हैं, उन्हें भ्रम हो जाता है कि वाकई वे दूल्हे के असली दोस्त हैं। मुनीर साहब की हालत कुछ ऐसी ही है, अरे जनाब यह तो ध्यान रखो कि कहां नाच रहे हो, किसके आगे नाच रहे हो, क्या बोल रहे हो, कुछ होश है क्या?

वैसे आप इस बात पर आपत्ति जता सकते हैं कि मैंने मुनीर के आगे साहब शब्द क्यों लगाया। दरअसल उन्होंने पूरब से हमले की बात की है तो मुझे फिल्म पूरब और पश्चिम का गाना याद आ गया... है प्रीत जहां की रीत सदा, मैं गीत वहां के गाता हूं, भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं। इसी गाने की एक पंक्ति है...हमें प्यार निभाना आता है और ये पाकिस्तान तो भारत की ही औलाद है तो वहां के सेना अध्यक्ष को हमें सम्मान देते हुए साहब क्यों नहीं कहना चाहिए। वो लफंगा हो गया तो ये उसकी तकदीर। हमारी तासीर तो प्यार भरी ही होनी चाहिए।

अमेरिका की धरती पर खड़े होकर बावले मुनीर जब हिंदुस्तान के पूरब पर हमले की बात रहे थे तो मैं आश्चर्यचकित था कि पाकिस्तान के पुराने पूर्वी हिस्से की क्या उन्हें याद नहीं आती? उसी पूर्वी हिस्से का नाम अब बंगलादेश है। मि. मुनीर, याद कर लेते कि 71 की जंग में पाकिस्तान को बचाने के लिए अमेरिका ने एक युद्धपोत भेजा था, इसके बावजूद इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो फाड़ कर दिए थे। हमारी फौज ने 94 हजार पाकिस्तानी फौजियों को सरेंडर कराया था। आपकी फौज अपना पूर्वी हिस्सा तो बचा नहीं सकी और भारत के पूर्वी हिस्से पर हमले की बात करते हो। चलो, कारगिल को ही याद कर लेते, मुशर्रफ ने तो बड़ी कुटिल व्यूह रचना की थी। भारत को तोड़ने के मंसूबे बना लिए थे लेकिन जब भारत ने ठोकना शुरू किया तो नवाज शरीफ अमेरिका के चरणों में लोट गए। इतिहास के पन्ने तो पलट लिया करो मि. मुनीर, मसखरे जैसी हरकत से अपने देश की जग हंसाई क्यों कराते हो?

मैं कई बार पाकिस्तान आया हूं, विदेशों में भी मुझे पाकिस्तानी लोग मिलते हैं। आपकी अवाम बड़ी प्यारी है, उन्हें क्यों धोखा दे रहे हो? जंग करनी है तो खुद की बेईमानी और जाहिलपने से करो। जंग गरीबी से करो ताकि अवाम को कम से कम आटा, दाल और तेल तो मिल जाए। भारत के खिलाफ आग उगलने से पाकिस्तानी अवाम की जिंदगी नहीं सुधरेगी। पाकिस्तानी सेना और आईएसआई की हरकतों का दुष्परिणाम है कि पाकिस्तानी मरीज आज इलाज के लिए भारत नहीं आ पा रहे हैं, इलाज कराने क्या उन्हें अमेरिका भेजोगे?

और जहां तक मशहूर उद्योगपति मुकेश अंबानी को आपकी धमकी का सवाल है तो मुझे बड़े-बुजुर्गों की कही एक बात याद आ रही है कि आदमी को अपनी औकात में रहना चाहिए। मुकेश अंबानी पर टिप्पणी से पहले एक बार खुद की हैसियत तो देख लेते। एक बार यह तो जान लेते कि मुकेश अंबानी किस हैसियत के मालिक हैं, मुकेश अंबानी के बारे में कुछ नहीं पढ़ा हो तो चलो, मैं ही बता देता हूं, इस वक्त मुकेश अंबानी की कुल संपत्ति 8.5 लाख करोड़ रुपए से भी ज्यादा है। अब आप याद कीजिए 2024-25 के पाकिस्तानी सालाना बजट को जो भारतीय रुपयों में महज 4.5 लाख करोड़ का ही था। यानी पाकिस्तानी बजट से करीब दो गुना संपत्ति मुकेश अंबानी के पास है, हम भारतीय उन्हें एक व्यक्ति के रूप में नहीं देखते, बल्कि उन्हें अपने आप में संस्थाओं का समूह मानते हैं। हम भारतीय नाज करते हैं उन पर और आपको क्या लगता है मि. मुनीर? आपकी मिसाइलें जामनगर पहुंच जाएंगी और हम तमाशा देखते रहेंगे? हम वो बुरा हाल करेंगे जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। क्यों ऐसा बड़बोलापन दिखाते हो?

बड़बोलेपन से याद आया कि आपके मुल्क के एक मंत्री हुआ करते थे शेख राशिद जो फरमाते थे कि पाकिस्तान ने पाव-पाव भर के ऐसे परमाणु बम बना रखे हैं जो लोगों का धर्म देखकर निशाना बनाएगा। कितने जाहिलपने की बात है ना। आजकल कहां हैं वो? खैर छोड़िए..! अपन तो आपकी बात करें, एक बार फिर परमाणु बम की जो धमकी आपने दी है, वह कुछ ऐसा ही है कि 'हम भी डूबेंगे सनम, तुम्हें भी ले डूबेंगे' हमारे परमाणु बम हालांकि शांति के लिए हैं लेकिन एक बार यह तो सोच लेते कि भारत कितना विशाल है और पाकिस्तान कितना पिद्दी सा है। हम तो फिर भी कुछ न कुछ बचे रह जाएंगे...तेरा क्या होगा कालिया।

लाल किले की प्राचीर से दिखी आत्मनिर्भर भारत की तस्वीर

रोहित माहेश्वरी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 12वीं बार राष्ट्र को संबोधित किया। पीएम के संबोधन में आत्मनिर्भर भारत की जो सुखद तस्वीर दिखाई दी, पीएम ने आत्मनिर्भर भारत को विकसित और सशक्त भारत की नींव बताया। प्रधानमंत्री मोदी लाल किले से 103 मिनट तक बोले। यह किसी भी प्रधानमंत्री का, लाल किले से अभी तक सबसे लंबा भाषण है। प्रधानमंत्री ने कई मुद्दों को छुआ और यह एक परंपरा रही है। उन्होंने देश के रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष, तकनीक और कृषि जैसे प्रमुख क्षेत्रों में हुई उपलब्धियों को गिनाते हुए भारत की आत्मनिर्भर यात्रा का उल्लेख किया। अंतरिक्ष में भारत का स्टेशन बनाने की बात भी कही। हाल ही में अंतरिक्ष से यात्रा कर लौटे शुभांशु शुक्ला का भी प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री के पूरे भाषण के एक-एक शब्द पर विचार करें तो इस बात का सहज आभास होता है कि पिछले एक दशक में भारत कितना बदला है। भारत के सोचने, समझने और कार्यशैली में कितना बड़ा अंतर आया है। पीएम ने जितनी भी घोषणाएं लाल किले की प्राचीर से की, वो सभी अहम हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण और सुखद घोषणा यह की कि साल के अंत तक हम 'मेड इन इंडिया' सेमीकंडक्टर चिप बनाने लगेंगे। यदि यह घोषणा जमीनी स्तर पर साकार हो जाए तो आने वाले 10-15 सालों में भारत वाकई 'सोने की चिड़िया' वाला देश बन सकता है। यह अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि वैश्विक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के आंकलन हैं।

भारत एक व्यापक, विविध देश है, जनसंख्या 146 करोड़ से अधिक है, निवेश पर्याप्त हैं और सरकार की प्राथमिकता है, लिहाजा व्यापक स्तर पर 'चिप' का उत्पादन संभव है। हालांकि हम अभी चीन, अमेरिका, ताइवान सरीखे देशों से बहुत पीछे हैं। वे 'चिप्स क्रांति' के देश हैं, जबकि भारत अभी शोध के दौर में रहा है। दुनिया डिजिटल क्रांति के दूसरे चरण में प्रवेश कर रही है, जहां सेमीकंडक्टर और चिप निर्माण एक रणनीतिक ताकत बन चुके हैं लेकिन भारत अब भी तैयारियों के शुरुआती मोड़ पर खड़ा है। हालांकि गुजरात और बेंगलुरु में कुछ प्लांट लगाए गए हैं। स्टार्ट-अप भी काम कर रहे हैं लेकिन अभी राष्ट्रीय उत्पादन के लिहाज से हम पीछे हैं। चीन आज दुनिया की 'डिजिटल रीढ़' है। माइक्रो चिप से लेकर मोबाइल फोन और सर्वर तक, हर जगह उसकी उपस्थिति है। अब भारत के लिए चिप का राष्ट्रीय उत्पादन, विस्तार और रोजगार 'तकनीकी संप्रभुता' का सवाल है। भारत के पास प्रतिभाशाली इंजीनियर और डिजाइनर हैं जो दुनिया की सबसे बड़ी टेक कंपनियों के लिए 'चिप निर्माण' के सूत्रधार बने हैं। यदि प्रधानमंत्री मोदी अपनी घोषणा को साकार कराने और उसे निरंतरता देने में सफल रहे तो सेमीकंडक्टर चिप भारत के लिए 'तेल' साबित हो सकते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण और देशव्यापी घोषणा प्रधानमंत्री ने जीएसटी को लेकर की है। सरकार ने अपने प्रस्ताव जीएसटी परिषद को विचारार्थ भेज भी दिए हैं। जीएसटी के दायरे में 10 लाख से ज्यादा वस्तुएं हैं। उसकी स्लैब दरें 12 फीसदी से घटाकर 5 फीसदी की जाती हैं तो यह देश के लिए वाकई 'दीपावली का तोहफा' होगा। ये वस्तुएं सस्ती हो सकती हैं-टूथ पाउडर, नमकीन, सूखे मेवे, टूथपेस्ट, साबुन, पेन किलर दवाएं, सब्जियां, कंडेंस्ड मिल्क, कुछ मोबाइल और कम्प्यूटर, सिलाई मशीन, प्रेशर कुकर, 1000 रुपए से ज्यादा के रेडीमेड कपड़े, 500-1000 रुपए की रेंज वाले जूते, बर्तन, ज्योमेट्री बॉक्स, नक्शे, कृषि मशीनरी, सोलर वाटर हीटर, पब्लिक वाहन, स्टोव, सीमेंट, फ्रिज, टीवी, एसी, वॉशिंग मशीन आदि। जाहिर है कि आम आदमी को राहत मिलेगी। अब सिर्फ दो ही स्लैब होंगे-5 फीसदी और 18 फीसदी। जीएसटी के दायरे में आने वाली मक्खन, फ्रूट जूस आदि वस्तुएं भी सस्ती होंगी।

सरकार का आंकलन है कि जीएसटी की दरें घटाने से लघु, सूक्ष्म, मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में नौकरियों के अवसर बढ़ेंगे, ठेका श्रमिक बढ़ेंगे, आम आदमी की खर्च योग्य आय भी बढ़ेगी। देश की अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और जीडीपी 0.6 फीसदी से 0.7 फीसदी तक बढ़ सकती है। रोजगार देश की एक बुनियादी समस्या है। प्रधानमंत्री मोदी ने 1 लाख करोड़ रुपए की 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' की घोषणा की है। दावा किया जा रहा है कि इससे करीब 3.5 करोड़ युवाओं को नौकरियां और रोजगार मिल सकेंगे।

लाल किले से गर्व भरे भाव में प्रधानमंत्री मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' का जिक्र करते हुए कहा कि भारत अब अपनी सुरक्षा के लिए किसी और पर निर्भर नहीं है। 'ऑपरेशन सिंदूर' इसका सबसे सटीक उदाहरण है, जिसमें भारत ने स्वदेशी तकनीक और हथियारों के दम पर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। देश ने स्वदेशी हथियार और टेक्नोलॉजी से खुद को इतना मजबूत बना लिया है कि किसी भी खतरे का जवाब तेजी से और अपने तरीके से दे सकता है। पीएम मोदी ने युवाओं से अपील की कि भारत को जेट इंजन जैसी उन्नत रक्षा तकनीक खुद बनानी चाहिए।

लाल किले से धरती से लेकर आसमान तक का जिक्र प्रधानमंत्री ने किया। उन्होंने ऐलान किया कि भारत जल्द ही अपना खुद का अंतरिक्ष स्टेशन बनाएगा। उन्होंने ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि भारत अब सिर्फ अंतरिक्ष में मौजूद नहीं है, बल्कि नेतृत्व करने की स्थिति में है। 300 से ज्यादा भारतीय स्टार्ट-अप स्पेस टेक्नोलॉजी, सैटेलाइट और एक्सप्लोरेशन पर काम कर रहे हैं, ये देश के अंतरिक्ष क्षेत्र को नए युग में ले जा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि किसानों को सशक्त बनाने के लिए अब उर्वरकों का उत्पादन देश में ही बढ़ाना जरूरी है। अभी भारत एक बड़ी मात्रा में उर्वरक आयात करता है जिससे खर्च भी बढ़ता है और आत्मनिर्भरता भी प्रभावित होती है। घरेलू उत्पादन से खाद्य सुरक्षा, किसान कल्याण और अर्थव्यवस्था तीनों को मजबूती मिलेगी।

नागरिकों से अपील करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि 'स्वदेशी' सिर्फ एक विकल्प नहीं, बल्कि गर्व की बात होनी चाहिए। उन्होंने दुकानदारों से अपील की कि वे अपनी दुकानों पर 'स्वदेशी' बोर्ड लगाएं और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा दें। यह केवल एक अभियान नहीं, बल्कि आर्थिक आजादी की दिशा में जनभागीदारी है। वोकल फॉर लोकल का जिक्र इससे पहले भी कई बार प्रधानमंत्री कर चुके हैं। जिस तरह अमेरिका टैरिफ की धमकियां भारत को दे रहा है। ऐसे में हमें ज्यादा से ज्यादा सामान देश के कारीगरों द्वारा बनाया हुआ खरीदना चाहिए। इससे देश की आर्थिकी को तो बूस्ट मिलेगा ही, वहीं रोजगार का सृजन भी होगा।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

प्रधानमंत्री ने 'मिशन सुदर्शन चक्र' की शुरुआत की घोषणा की, जिसका मकसद भारत की रक्षा क्षमताओं को और मजबूत करना है। यह मिशन श्रीकृष्ण के पौराणिक सुदर्शन चक्र से प्रेरित है और देश की रणनीतिक स्वायत्तता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि भारत अपनी परंपरा और टेक्नोलॉजी को साथ लेकर आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी का यह भाषण सिर्फ घोषणाओं का पुलिंदा नहीं, बल्कि भारत को आत्मनिर्भर, सशक्त और वैश्विक नेता बनाने की दिशा में ठोस रोडमैप है। हर क्षेत्र चाहे वो रक्षा हो, कृषि, तकनीक या स्वास्थ्य, भारत अब 'निर्भर नहीं, निर्णायक' बनने की ओर बढ़ चुका है।

विश्व फोटोग्राफी दिवस : एक तस्वीर हजार शब्दों की, यादें होती हैं कैद

एक तस्वीर हजार शब्दों के बराबर होती है। यह कथन फोटोग्राफी की ताकत को बयां करता है, जो समय को ठहरा देती है और क्षणभंगुर पलों को हमेशा के लिए अमर कर देती है। हर साल 19 अगस्त को 'विश्व फोटोग्राफी दिवस' मनाया जाता है, एक ऐसा दिन जो उन तस्वीरों को समर्पित है जो न केवल आंखों को सुकून देती हैं, बल्कि दिल को छूती हैं और कहानियां कहती हैं। फोटोग्राफी की कहानी 19वीं सदी से शुरू होती है। 1839 में फ्रांस के दो वैज्ञानिकों, जोसेफ नीसफोर नीप्स और लुई डागुएरे ने डागोरोटाइप प्रक्रिया का आविष्कार किया, जिसे दुनिया की पहली फोटोग्राफी तकनीक माना जाता है। 19 अगस्त 1839 को फ्रांसीसी सरकार ने इस प्रक्रिया का पेटेंट खरीदकर इसे दुनिया के लिए मुफ्त घोषित किया, और यही वह दिन था जो 'विश्व फोटोग्राफी दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा।

वह दौर था जब फोटो खींचने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता था। पहली तस्वीर को कैद करने में कई मिनट लगते थे, और उपकरण इतने जटिल थे कि केवल विशेषज्ञ ही इसका इस्तेमाल कर पाते थे। लेकिन समय के साथ तकनीक ने फोटोग्राफी को हर घर तक पहुंचा दिया। आज स्मार्टफोन के दौर में हर जेब में एक कैमरा है, और हर कोई फोटोग्राफर बन सकता है।

फोटोग्राफी केवल खूबसूरत नजारे कैद करने तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक बदलाव का भी एक सशक्त माध्यम है। युद्ध, भुखमरी, प्राकृतिक आपदाओं और मानवाधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने में फोटोग्राफी ने हमेशा अहम भूमिका निभाई है। 1972 में वियतनाम युद्ध के दौरान निक उट द्वारा खींची गई 'द टेरर ऑफ वॉर' तस्वीर ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया था। यह तस्वीर युद्ध की भयावहता को दर्शाने का एक जीवंत उदाहरण है।

भारत में फोटोग्राफी के इतिहास की बात करें, तो 19वीं सदी में अंग्रेजों ने भारत में फोटोग्राफी की शुरुआत की, और धीरे-धीरे यह कला भारतीयों के बीच लोकप्रिय हो गई। आज भारत में फोटोग्राफी न केवल एक शौक है, बल्कि एक पेशा भी है, जिसने कई लोगों को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई। रघू राय, दयानिता सिंह और होमी व्याल्ला जैसे फोटोग्राफरों ने अपनी तस्वीरों से भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता को दुनिया के सामने पेश किया।

'विश्व फोटोग्राफी दिवस' पर फोटोग्राफरों को यह मौका मिलता है कि वे अपनी कला के जरिए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में योगदान दें। हर साल 'विश्व फोटोग्राफी दिवस' एक खास थीम के तहत मनाई जाती है। इस बार की थीम मेरी पसंदीदा तस्वीर है। यह थीम हर फोटोग्राफर को अपने सबसे प्रिय क्षण को साझा करने के लिए प्रेरित करती है। यह थीम व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को सामने लाती है, जो फोटोग्राफी को और भी खास बनाती है।

आज डिजिटल युग में फोटोग्राफी ने नए आयाम छुए हैं। ड्रोन फोटोग्राफी, अंडर वॉटर फोटोग्राफी, मैक्रो फोटोग्राफी और 360 डिग्री फोटोग्राफी जैसे क्षेत्रों ने इस कला को और विस्तृत किया है। स्मार्टफोन कैमरों की गुणवत्ता में सुधार और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग फोटोग्राफी को और सुलभ बना रहा है। लेकिन इसके बावजूद, एक अच्छी तस्वीर के लिए तकनीक से ज्यादा जरूरी है रचनात्मकता और संवेदनशीलता। **-आईएएनएस**

कोविड-19 के कारण रक्त वाहिकाएं पांच साल तक बूढ़ी हो सकती हैं

नई दिल्ली, (भाषा): कोविड-19 संक्रमण से खासकर महिलाओं में रक्त वाहिकाओं की उम्र लगभग पांच साल बढ़ सकती है। एक नए अध्ययन में यह जानकारी दी गई है। यह प्रभाव उन महिलाओं में ज़्यादा पाया गया, जिन्होंने कोविड-19 से उबरने के बाद भी लगातार लक्षणों का अनुभव किया-जिसे मुख्य रूप से 'लॉन्ग कोविड' कहा जाता है। इसमें सांस लेने में तकलीफ और थकान जैसी दिक्कतें होती हैं।

'यूनिवर्सिटी पेरिस सिटी', फ्रांस की प्रमुख शोधकर्ता रोज़ा मारिया ब्रूनो ने कहा, महामारी के बाद से, हमने जाना है कि (कोरोना वायरस) से संक्रमित कई लोगों में ऐसे लक्षण रह जाते हैं जो महीनों या सालों तक रह सकते हैं। हालांकि, हम अब भी यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि शरीर में ऐसा क्या होता है जिससे ये लक्षण पैदा होते हैं।

'यूरोपियन हार्ट जर्नल' में प्रकाशित इस अध्ययन में ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील और यूरोप सहित 16 देशों के लगभग 2,400 लोगों पर अध्ययन किया गया, जिनमें से लगभग आधी महिलाएं थीं।

- उम्र बढ़ने के साथ रक्त वाहिकाएं सख्त हो जाती हैं, लेकिन कोविड-19 संक्रमण इस प्रक्रिया को तेज कर सकता है

उम्र बढ़ने के साथ रक्त वाहिकाएं सख्त हो जाती हैं, लेकिन कोविड-19 संक्रमण इस प्रक्रिया को तेज कर सकता है और स्ट्रोक और दिल के दौरे सहित हृदय रोग विकसित होने का जोखिम बढ़ा सकता है।

अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों की रक्त वाहिकाओं की उम्र को एक उपकरण का उपयोग करके मापा गया, जो यह देखता है कि रक्तचाप की लहर कितनी तेजी से कैरोटिड धमनी (गर्दन में) और ऊरु धमनियों (पैरों में) के बीच पहुंचती है। ज़्यादा मान रक्त वाहिकाओं की ज़्यादा कठोरता और उम्र बढ़ने का संकेत देता है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

प्रवाह

75 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

संरक्षणवाद का दर्शन ही युद्ध का दर्शन है।
-लुडविग वॉन मिसेस

उपराष्ट्रपति पद के लिए राजग के प्रत्याशी के तौर पर सीपी राधाकृष्णन का चुनाव प्रधानमंत्री मोदी की उसी शैली को दर्शाता है, जिसमें वह महत्वपूर्ण पदों पर चयन के लिए अप्रत्याशित निर्णय लेकर क्या विरोधी, क्या समर्थक, सभी को चौंकाते रहे हैं। हालांकि, इस चयन के सियासी निहितार्थ गहरे हैं।

एक तीर कई निशाने

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) द्वारा महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित करने की घोषणा कई मायनों में चौंकाने वाली है, जो प्रधानमंत्री मोदी की अनोखी शैली को ही प्रतिबिंबित करती है, जिसमें वह महत्वपूर्ण पदों के लिए लोगों के चयन में पारंपरिक राजनीतिक गणनाओं से हटकर अप्रत्याशित निर्णय लेकर विरोधियों के साथ अपने समर्थकों को भी चौंकाते रहे हैं। हालांकि, उनके ऐसे निर्णयों के संदेश भी कोई कम गहरे नहीं होते। तमिलनाडु और केरल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। इस संदर्भ को ध्यान में रखते हुए राधाकृष्णन की राजनीतिक पृष्ठभूमि गौर करने लायक है। चार दशकों से अधिक का राजनीतिक सफर तय कर चुके राधाकृष्णन ने अपनी यात्रा की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से की थी। कोयंबटूर लोकसभा सीट से उन्होंने दो बार चुनाव जीता। 2004 से 2007 तक वह तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष, तो 2020 से 2022 तक भाजपा के केरल प्रभारी भी रहे हैं। अब तमिल मूल के इस नेता को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाना भाजपा के दक्षिण पर अपनी पकड़ बनाने के अभियान का हिस्सा तो समझा जा ही सकता है, इससे खासकर तमिलनाडु को, जहां द्रमुक व अन्नाद्रमुक का वर्चस्व है, एक संदेश देने की कोशिश की गई है। राधाकृष्णन के नाम की एक बड़ी वजह यह भी है कि वह दक्षिण भारत में भाजपा के उन नेताओं में से हैं, जिन्हें संगठन और जनता, दोनों स्तर पर स्वीकार्यता मिली हुई है। उदयनिधि स्टालिन के सनातन धर्म संबंधी बयान पर भी उन्होंने तीखी प्रतिक्रिया दी थी। इसके अलावा, उन्होंने तमिलनाडु और महाराष्ट्र में हो रहे हिंदी विरोध को भी गलत बताया था। महाराष्ट्र के राज्यपाल रहते हुए भी उन्होंने अपेक्षाकृत कम विवादास्पद और संतुलित छवि बनाई है। यह बड़ी वजह है कि उनके नाम पर विपक्ष के लिए भी सीधी आपत्ति जताना कठिन होगा। दूसरी बात यह कि पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़ की ही भांति राधाकृष्णन भी ओबीसी समुदाय से आते हैं। सरकार जाति जनगणना कराने का एलान तो पहले ही कर चुकी है और अब इसी समुदाय से उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार खड़ा करने से विपक्ष इस मामले में तो सरकार को नहीं घेर सकता। राधाकृष्णन वैचारिक रूप से संघ और भाजपा से जुड़े रहे हैं, ऐसे में उनका चुनाव पार्टी के आंतरिक कैडर को भी एक सकारात्मक संदेश देगा। उपराष्ट्रपति पद, भले ही संविधान की दृष्टि से सीमित कार्यकारी शक्ति रखता है, किंतु बतौर राज्यसभा अध्यक्ष यह राष्ट्र को दिशा तो देता ही है। ऐसे में, तेज-तर्रार धनखड़ से उलट राधाकृष्णन जैसी संयमी और सबको साथ लेकर चलने वाली शख्सियत के सामने उनकी टक्कर का उम्मीदवार खड़ा करना विपक्षी इंडिया गठबंधन के लिए भी चुनौती होगी।

संरक्षणवाद का खतरा पहले भी मंडराया है

यह न कहें कि संरक्षणवाद ट्रंप की देन है। अतीत में भी कई राष्ट्रपतियों ने अमेरिकी हितों की रक्षा के नाम पर दूसरे देशों पर टैरिफ लगाए हैं। मुमकिन है कि यह दौर ज्यादा न खिंचे या लंबा खिंचने पर वैश्विक व्यापार की दिशा ही बदल दे। दोनों ही सूरत में भारत को ऐसे ही दृढ़ता से हालात का सामना करना चाहिए।

अमेरिका द्वारा पारस्परिक शुल्क (रेसिप्रोकल टैरिफ) को हथियार बनाकर शुरू की गई संरक्षणवादी व्यापार व्यवस्था ने आज वैश्विक अर्थव्यवस्था को सबसे कठिन और अनिश्चित दौर में पहुंचा दिया है। मैंने अपने पिछले कॉलम में उल्लेख किया था कि जब से डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का पद संभाला है, तब से 'पारस्परिक टैरिफ' के माध्यम से अमेरिका द्वारा लगातार ऐसे व्यापार करार थोपना सामान्य बात हो गई है, जिनका उद्देश्य केवल अमेरिकी हित साधना है।

किसी विशेष देश के साथ व्यापार को नियंत्रित करने के लिए टैरिफ का चुनिंदा ढंग से उपयोग केवल संरक्षणवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उससे आगे की चीज है। कई समीक्षकों का मानना है कि इस नीति के पीछे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अन्य देशों के सस्ते निर्यात से बचाने या देश में विनिर्माण को पुनर्जीवित करने जैसे आर्थिक कारण कम, बल्कि अमेरिका द्वारा अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन और वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश अधिक है। इस नीति के चलते अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं-एक ओर जहां चीन ने इस नीति का कड़ा विरोध किया, तो यूरोपीय संघ समझौते के दबाव में झुक गया और जापान ने ऐसा व्यापार करार किया, जिससे वास्तविक लाभ अमेरिका को ही मिला। भारत इसका डटकर विरोध कर रहा है। संभावित समझौतों से जुड़े किसी सकारात्मक फैसले पर पहुंचने के लिए दोनों देशों के बीच जारी बातचीत का भविष्य भी फिलहाल संकट में ही दिख रहा है।

पिनाकी चक्रवर्ती
एनआईपीएफपी के पूर्व निदेशक

अमेरिका ने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया, जिसमें रूसी तेल की निरंतर खरीद के दंडस्वरूप अतिरिक्त 25 फीसदी शुल्क भी शामिल है। इस लेख का उद्देश्य पारस्परिक शुल्कों और व्यापार समझौतों की विघटनकारी प्रकृति को देखते हुए, भारत पर इसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों ही स्तरों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों का विश्लेषण करना है।

सबसे पहले मैं उन अप्रत्यक्ष प्रभावों पर चर्चा करूंगा, जो स्वाभाविक रूप से अधिक जटिल हैं। राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा फैलाई गई व्यापारिक अनिश्चितताओं के कई वैश्विक निहितार्थ हैं। विश्व बैंक के नवीनतम आंकड़े बताते हैं कि चालू वर्ष में वैश्विक आर्थिक वृद्धि की रफ्तार धीमी पड़ने की आशंका है। ऐसी अनिश्चितताओं का भारत की प्रगति पर भी असर पड़ेगा ही। विभिन्न अनुमान बताते हैं कि पारस्परिक शुल्क के कारण भारत की वृद्धि में 50 से 100 आधार अंकों की गिरावट आ सकती है। दूसरा, रूस कच्चे तेल का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता देश है, जो कुल वैश्विक उत्पादन का 12 फीसदी से अधिक हिस्सा अकेले प्रदान करता है और उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर आता है। ऐसे में, रूसी तेल की खरीद पर रोक लगाने या रूस पर व्यापक प्रतिबंध थोपने के प्रयास लंबे समय तक टिक पाएंगे, ऐसी उम्मीद कम ही है। लेकिन अल्पावधि में कच्चे तेल की आपूर्ति में व्यवधान पैदा होने से ऊर्जा आपूर्ति में कमी आएगी, जिसके कारण बड़े पैमाने पर मुद्रास्फीति की समस्या बढ़ सकती है। भारत को भी इस चुनौती पर ध्यान देना होगा। तीसरा, आर्थिक शक्ति के जिस वैश्विक पुनर्गठन की बात की जा रही है, उससे भी कई चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप अमेरिका के आर्थिक हितों की रक्षा के नाम पर भागीदार देशों को धमकाते-डराते रहेंगे।

इसके प्रत्यक्ष प्रभावों को आसानी से समझा जा सकता है। सर्वविदित है कि अमेरिकी टैरिफ भारत से निर्यात होने वाले क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे। ये प्रभावित क्षेत्र मुख्यतः श्रम-प्रधान उद्योग हैं, जिनमें वस्त्र, रत्न एवं आभूषण, झींगा, चमड़े के सामान, रसायन तथा ऑटो-पार्ट्स प्रमुख हैं। स्पष्ट है कि इन क्षेत्रों पर नकारात्मक असर का सीधा संबंध भारत में रोजगार की स्थिति पर भी पड़ेगा। चूंकि, भारत पहले से ही उच्च बेरोजगारी दर की चुनौती से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में 'ट्रंप-टैरिफ' के कारण रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन विश्लेषण किया जाना नितांत आवश्यक है, ताकि उचित नीतिगत कार्रवाई की जा सके और जिसमें टैरिफ के कारण नौकरी खो सकने वाले लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा/आय हस्तांतरण भी शामिल हो।

पिछले कुछ महीनों में वैश्विक व्यापार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा इस तरह के लेन-देन पर आधारित होती नजर आ रही है, जहां सब कुछ राष्ट्रपति ट्रंप की व्यक्तिगत धारणा और व्याख्या पर टिका प्रतीत होता है। यह अलग बात है कि ऐसी व्यापार नीति दीर्घकाल में अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी बहुत नुकसान पहुंचा सकती है। क्या बढ़ता हुआ संरक्षणवाद वास्तव में सिर्फ ट्रंप की ही देन है? ऐसा नहीं है। 2019 में, *जर्नल ऑफ इकनॉमिक पर्सपेक्टिव* में मैरी अमिटी, स्टीफन जे. रेडिंग और डेविड ई. वीनस्टीन द्वारा प्रकाशित एक महत्वपूर्ण शोधपत्र में इस विषय पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था, जिसमें इसके व्यापक संदर्भों और प्रभावों को साफ तौर पर समझाया गया है। इसमें बताया गया कि 1971 में रिचर्ड निक्सन ने शुल्क योग्य आयात पर 10 प्रतिशत का 'अधिभार (सरचार्ज)' टैरिफ लगाया था। इसके बाद 1977 में जिमी कार्टर ने जूतों के आयात पर कोटा तय किया। 1981 में रोनाल्ड रीगन ने जापानी सरकार पर दबाव डालकर अमेरिका में जापानी ऑटोमोबाइल के निर्यात को सीमित करने वाला 'स्वैच्छिक निर्यात समझौता (वॉलंटरी एक्सपोर्ट रेस्ट्रेंट)' लागू कराया।

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए 2002 में जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने स्टील पर टैरिफ लगाया और 2009 में बराक ओबामा ने चीनी टायरों पर 35 प्रतिशत शुल्क थोप दिया। केवल जॉर्ज एच. डब्ल्यू. बुश और बिल क्लिंटन ने ही इस परंपरा का विरोध किया। बिल क्लिंटन ने तो अपने प्रशासन के पहले साल ही 1993 में उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करके व्यापार को और अधिक उदार बना दिया था। गौरतलब है कि अतीत में अमेरिका द्वारा टैरिफ लगाए जाने के इन उदाहरणों में ज्यादातर में सहयोगी देशों ने विश्व व्यापार संगठन से अमेरिका की शिकायत भी की थी।

तो क्या हम राष्ट्रपति ट्रंप के दिखावटी कदमों पर जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया दे रहे हैं? क्या यह दिखावा जल्द ही खत्म होगा या फिर इसमें वैश्विक व्यापार व्यवस्था को जड़ से बदलने की क्षमता है? चाहे जो भी हो, इसके तात्कालिक प्रभाव भी खतरनाक साबित हो सकते हैं। यदि अमेरिकी टैरिफ से उपजी यह व्यापारिक अनिश्चितता लंबे समय तक बनी रहती है, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में अस्थिरता का स्तर और भी गहरा जाएगा। ऐसे में भारत को इस चुनौतीपूर्ण दौर का सामना करने के लिए सीधी टक्कर लेनी ही चाहिए।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जेम्स बाल्डविन

जब हम अपने खुद के लिए, अपने समुदाय के लिए या किसी और के लिए शिक्षा और प्रेम का हाथ थामते हैं या आवाज उठाते हैं, तब हम जीवन को और बेहतर बनाते हैं।

हर छोटा कदम मायने रखता है

__जीवन__ हमेशा सीधी राह नहीं चलता। कभी चुनौतियां देता है, तो कभी-कभी तोड़ता भी है, लेकिन अंततः यह हमें नया बनाता है। जीवन में बदलाव की शुरुआत तब होती है जब हम साहस के साथ सच्चाई को देखते हैं। चाहे व्यक्तिगत दुख हो, या समाज की गलतियां, इनसे भागना बहुत आसान है, लेकिन भागने से हमें आजादी मिलने वाली नहीं। सच्चाई को साहस के साथ गले लगाना सीखना चाहिए, भले ही वह कड़वी हो। यही साहस हमें मुक्त करेगा। जब हम साहस पाते हैं, तो हम प्रेम करते हैं। प्रेम जीवन का सबसे बड़ा सबक है। प्रेम उन मुखौटों को उतार फेंकता है, जो हमें खोखला बनाते हैं।

प्रेम हमें स्वयं को स्वीकारना सिखाता है, यह हमें माफ करना सिखाता है। जब हम किसी से प्यार करते हैं, चाहे वह परिवार हो, दोस्त हो, तब हम अपने दिल को खोलते हैं और हम सीखते हैं कि इन्सान होना क्या है। जीवन में बिना शर्त और बिना डर के प्रेम करना चाहिए, क्योंकि प्रेम बगैर जीवन अधूरा है।

जीवन की शुरुआत में हमें लगता है कि दर्द और दिल टूटना दुनिया के इतिहास में अभूतपूर्व है, लेकिन जब हम पढ़ते हैं, प्रेम करते हैं, तब पता चलता है कि जिन चीजों ने हमें सबसे अधिक सताया, वही चीजें हमें उन सभी लोगों से जोड़ती थीं, जो कभी जीवित थे। यानी हमारे पूर्वजों ने भी इसी तरह के संघर्षों का अनुभव किया है, जिससे जुड़ाव और समझ की भावना बढ़ती है। दुनिया भर में, भेदभाव, और अन्याय को, इन बेड़ियों को हम तोड़ सकते हैं। हर छोटा कदम मायने रखता है। जब हम अपने लिए, अपने समुदाय के लिए, या किसी और के लिए शिक्षा और प्रेम का हाथ थामते हैं या आवाज उठाते हैं, तब हम जीवन को और बेहतर बनाते हैं। अपनी हर चुनौती को गले लगाना जीवन का एक और महत्वपूर्ण सबक है। हम सब अपनी कहानियों के साथ पैदा होते हैं। जब हम खुद को स्वीकार करते हैं, तो इससे दूसरों को भी स्वीकार करने की ताकत पाते हैं।

जीवन कठिन हो सकता है। यह हमें निराश करता है, हमें थकाता है। लेकिन आशा कभी न छोड़ें। कोई भी बदलाव रातों-रात नहीं होता। यह धीमा है, यह दर्दनाक है, लेकिन यह संभव है। हर बार जब हम किसी के लिए दया दिखाते हैं, हर बार जब हम प्रेमभाव से लोगों से जुड़ते हैं, हर बार जब हम सच बोलते हैं, हर बार जब हम अपने सपनों के पीछे चलते हैं, हम दुनिया को बदल रहे होते हैं। अपने सपनों को जिएं। अपने डर को हावी न होने दें। जीवन एक यात्रा है, न कि मंजिल। यह उन पलों में है, जब हम हंसते हैं, रोते हैं, लड़ते हैं, और प्यार करते हैं। यह उन क्षणों में है, जब हम गलतियां करते हैं और उनसे सीखते हैं। हमेशा सच्चाई के लिए लड़ें। यही जीवन है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

प्रेमभाव रखें

सूत्र

जीवन की राहें सीधी और सपाट नहीं होतीं, यह एक घुमावदार रास्ते की तरह है, जिसमें कई मोड़ आते हैं। लेकिन हम अपने लक्ष्य तक तभी पहुंच पाएंगे, जब हम इन राहों में आने वाली चुनौतियों का सामना करेंगे। इस जीवन यात्रा में अंतिम पड़ाव आना ही है, इसलिए जब तक सांसें रहें, प्रेमभाव रखें।

दूसरा पहलू

प्राचीन रोम व यूनान में भी खेल और व्यायाम के साथ संगीत सुना जाता था। इसके शारीरिक व मानसिक लाभ दोनों हैं।

प्लूटो, सुकरात और कसरत व संगीत का मेल

आजकल सड़क पर, पार्क में, जिम में या अन्य दूसरी जगह लोगों को जॉगिंग के साथ ही संगीत सुनते हुए देखा जा सकता है। अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सुनने से व्यायाम और भी फायदेमंद हो जाता है। प्राचीन ग्रीक और रोमन लोग भी यह बात जानते थे, भले ही उस समय इसे सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं था। ग्रीक लेखक डियो क्राइसोस्टम (40-110 ईस्वी) ने 'टू द पीपल ऑफ अलेक्जेंड्रिया' नामक अपने भाषण में जिक्र किया कि लोग कोर्टरूम, व्याख्यान कक्ष, डॉक्टर के कमरे और जिम में संगीत सुनते हुए दिखाई देते थे। उस समय कसरत के साथ संगीत सुनना सामान्य समझा जाता था। प्राचीन ग्रीक के चित्रों में संगीत के साथ प्रशिक्षण लेते या प्रतिस्पर्धा करते पेशेवर एथलीटों के कई उदाहरण हैं। 5वीं सदी ईसा पूर्व के एक चित्र में, एथलीट एक प्राचीन वाद्य यंत्र 'ऑलोस' (बांसुरी) की धुन पर प्रशिक्षण लेते दिखते हैं।

कॉन्स्टेंटाइन पेनेगायर्स

लेखक फिलोस्ट्रेटस ने बताया कि संगीत न सिर्फ खिलाड़ियों को प्रेरित करता है, बल्कि उनके प्रदर्शन को बेहतर करता है।

यूनानी लेखक फ्लेवियस फिलोस्ट्रेटस (लगभग 170-245 ईस्वी) ने बताया कि संगीत एथलीटों को न सिर्फ प्रेरित करता था, बल्कि इससे उनका प्रदर्शन बेहतर होता था। मौजूदा शोधकर्ताओं ने भी इन बातों की पुष्टि की है। वर्ष 2020 में 3,599 लोगों पर किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि व्यायाम के दौरान संगीत सुनने से थकान कम महसूस होती है और शारीरिक प्रदर्शन व सांस लेने की प्रक्रिया बेहतर होती है। हालांकि प्राचीन काल में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं थे, इसलिए लोग व्यायाम के दौरान संगीत सुनने के लिए दूसरे तरीके अपनाते थे। कुछ लोग किसी संगीतकार से संगीत बजवाते थे, तो कुछ लोग खुद गाना गाते थे। होमर की 'ओडिसी' (8वीं शताब्दी ईसा पूर्व) में फायसिया के राजा की बेटी नौसिका अपनी सहेलियों के साथ गाना गाते हुए गेंद से खेलती थी।

गैलन ने उन व्यायामों की आलोचना की, जो शरीर के केवल एक हिस्से पर केंद्रित थे। वह गेंद वाले खेलों और संतुलित संगीत के पक्षधर थे। प्लूटो संगीत को सादा और कम भावनात्मक रखने के पक्षधर थे।

इतिहासकार डायोजेनेस लेर्टियस के अनुसार, सुकरात की नृत्य करने की आदत थी, क्योंकि उनका मानना था कि यह शरीर को स्वस्थ रखता है। चिकित्सक गैलन ऑफ पर्गमम (129-216 ईस्वी) ने उन व्यायामों की आलोचना की, जो शरीर के केवल एक हिस्से पर केंद्रित थे। वह गेंद वाले खेलों और संतुलित संगीत के पक्षधर थे। महान दार्शनिक प्लूटो ने ज्यादा और अति भावनात्मक संगीत सुनने पर प्रतिबंध लगाने की बात की। उनका मानना था कि संगीत सादा और कम भावनात्मक होना चाहिए, वह भी संयम के साथ। अगर प्राचीन लोग आज के लोगों को कानों में संगीत की धुन बजाते हुए फुटपाथ पर दौड़ते हुए देखते, तो वे निश्चित रूप से हैरान होते। और शायद वे इसे पसंद भी करते, बशर्ते इसकी अति न की जा रही हो।

-द कन्वर्सेशन से

आंकड़े

अपर्याप्त कैलोरी

दुनिया के कई देश ऐसे हैं, जिनकी आधी से ज्यादा आबादी को भोजन में पर्याप्त कैलोरी नहीं मिलती है, इनमें से ज्यादातर अफ्रीका महाद्वीप में हैं।

मेडागास्कर	78.3%
सेंट्रल अफ्रीका ग.	67.0%
जांबिया	65.1%
नाइजीरिया	44.4%
बुरुंडी	41.5%

आंकड़े कुल आबादी में पर्याप्त कैलोरी न मिलने के, प्रतिशत में | स्रोत : World Bank

मोरया जी के तपोबल से हिंसक जीव भी दयालु बन जाते थे। लोग उन्हें अपनी समस्याएं बताते, तो वह कहते भगवान का नाम लेने से जीवन स्वयं प्रकाशमय हो जाएगा।

भगवान के नाम का दीप जलाओ

अंतर्यात्रा
संकलित

मोरगांव में वामभट्ट नाम के तपस्वी अपनी पत्नी उमाबाई के साथ रहते थे। श्रीगणेश जी उनके इष्टदेव थे। दोनों पति-पत्नी खेतों से दाने चुन-चुनकर इकट्ठा करते और उन्हीं से जीवन निर्वाह करते थे। श्रीगणेश जी की कृपा से ढलती उम्र में उन्हें एक पुत्र हुआ, जिसका नाम उन्होंने 'मोरया' रखा। मोरया जब कुछ बड़े हुए, तब उन्होंने श्रीगणेशोपासना की दीक्षा ली। कुछ वर्ष बाद मोरया जी की माता का देहांत हो गया और इसी के कुछ समय बाद उनके पिता भी परलोक सिधार गए।

माता-पिता से मिले संस्कारों की वजह से वह भगवान की भक्ति में लग गए। मोरगांव, थेडूर और चिंचवड़ नामक स्थानों पर मोरया जी ने बड़ा कठिन तप किया और अंत में चिंचवड़ में स्थायी होकर रहने लगे। बताते हैं कि चिंचवड़ से दो मील पर पवना नदी किनारे एक निर्जन वन के एकांत में उन्होंने अपनी तपस्या और कठोर कर दी। एक बार तो वह बयालीस दिन तक अपने आसन पर बैठे रहे। इस तपोबल से उन्हें सब सिद्धियां प्राप्त हो गईं। कहते हैं कि बाघ मोरया जी के पास आते ही दयालु बन जाते और सांप निर्विष हो जाते थे। हर दिन कई लोग समस्या के समाधान के लिए मोरया जी के पास आते थे। दृष्टिहीन लोग भी आते, मोरया जी सबसे कहते कि अपने मन में भगवान के नाम का दीप जलाओ, जीवन स्वयं प्रकाशमय हो जाएगा। इस तरह वह बहुत से लोगों की समस्या का समाधान करते थे।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 19 अगस्त, 1954

दक्षिण-पूर्वी एशिया रक्षा संगठन का असर कम करने की तैयारी

दक्षिण-पूर्वी एशिया रक्षा संगठन के असर को कम करने की तैयारी

अमेरिका व उसके समर्थक देश जिस दक्षिण-पूर्वी एशिया संगठन की रचना कर रहे हैं, उसके असर को कम करने के लिए भारत की ओर से तैयारियां शुरू हो गई हैं। चीन की भी यही इच्छा है कि अमेरिका इससे अलग रहे।

सिर्फ मरम्मत से काम नहीं चलेगा

धराली व किश्तवाड़ की आपदाएं स्थानीय न होकर, राष्ट्रीय चेतावनियां हैं कि अब मरम्मत वाला रवैया छोड़ पूरे तंत्र को दुरुस्त करने की जरूरत आन पड़ी है।

पत्रलेखा चटर्जी

मुद्दा

हाल ही में आई धराली और उसके बाद किश्तवाड़ की आपदा वर्ष 2013 की केदारनाथ त्रासदी की भयावह यादों को जगा देती है। ये आपदाएं सख्त रूप से दोहराती हैं कि हिमालय जलवायु प्रेरित विनाश का केंद्र बनता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण बादल फटने और हिमनद झीलों के टूटने से बाढ़ें आ रही हैं। धराली और किश्तवाड़ में आई विनाशकारी बाढ़ का कारण इनमें से एक या दोनों ही रहे। ये त्रासदियां पारिस्थितिक रूप से नाजुक क्षेत्रों में आपदाओं के बढ़ते जोखिम और उनके बारे में बढ़ती अनिश्चितता के साथ-साथ भारत की जलवायु संबंधी तैयारियों में गंभीर खामियों, खासकर संवेदनशील हिमनद झीलों के व्यापक डाटाबेस के अभाव को दर्शाती हैं।

धराली व किश्तवाड़ की त्रासदियां पारिस्थितिक रूप से नाजुक क्षेत्रों में अनियोजित और अनियमित विकास के परिणामों को भी उजागर करती हैं। बीते दो दशकों में हिमालयी क्षेत्र में तीव्र गति से हुए सड़क, होटल और जलविद्युत परियोजनाओं जैसे निर्माण कार्यों में पर्यावरणीय आकलन का अभाव देखा गया है। बस्तियां उन क्षेत्रों में फैल गईं, जिन्हें कभी सुरक्षित मानते थे, लेकिन जलवायु परिवर्तन ने नियम पलट दिए हैं। बर्फ के पिघलने से बनीं हिमनद झीलें अब टाइम बम बन गई हैं तथा निगरानी तंत्र और पूर्ण चेतावनी प्रणालियों की कमी निचले इलाकों में रहने वाले समुदायों को असुरक्षित बना रही है। केदारनाथ, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश-और अब धराली व किश्तवाड़ से पर्यावरण जो संकेत देना चाहता है, वे स्पष्ट हैं।

अक्सर देखा जाता है कि आपदा के बाद राहत-बचाव कार्य को लेकर तेजी दिखाई जाती है, लेकिन इस बात के प्रयास नहीं किए जाते कि इन आपदाओं से बचा जा सके। ये आपदाएं न सिर्फ बड़े स्तर पर जीवन व आजीविका को क्षति पहुंचाती हैं, बल्कि वे बुनियादी ढांचे पर चोट कर आवागमन व कच्चे माल की उपलब्धता को बाधित करके आपूर्ति शृंखलाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से आपूर्ति शृंखला में आने वाले व्यवधानों और बुनियादी ढांचे को होने वाले नुकसान के खिलाफ भारत का संघर्ष तेज होता जा रहा है, जिससे कठिन चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।

ओडिशा के बाढ़ संभावित जिले जगतसिंहपुर की जिला आपदा प्रबंधन योजना 2025 में कमजोरियों को रेखांकित करते हुए बुनियादी ढांचे के उन्नयन के साथ ही जल निकासी में सुधार और आपातकालीन प्रतिक्रिया केंद्रों के निर्माण की सिफारिश की गई है। तमिलनाडु के अंबत्तूर औद्योगिक क्षेत्र ने चक्रवातों के दौरान बाढ़ के मार्गों को बहाल करने और जलभराव को रोकने के लिए 50 करोड़ रुपये की एक पहल शुरू की है। महाराष्ट्र में पश्चिमी घाटों में भूस्खलन के जोखिमों का समाधान ढलान स्थिरीकरण, पुनर्वनीकरण और आपदा मानचित्रण के माध्यम से किया जा रहा है-जिसमें इंजीनियरिंग और सामुदायिक, दोनों की सहभागिता है। फिर भी, ये पहलें एक खंडित राष्ट्रीय तस्वीर को दर्शाती हैं।

भारत का ज्यादातर औद्योगिक बुनियादी ढांचा बढ़ती जलवायु अस्थिरता से निपटने के लिए अब भी अपर्याप्त है। हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक और सेबी की ओर से जलवायु जोखिम से निपटने को लेकर आदेश दिए हैं, लेकिन कड़ाई से पालन के बिना इनके कागजी कार्रवाई बनकर रह जाने की आशंका है। इस मामले में वियतनाम से कुछ सबक ले सकते हैं। वहां तूफान प्रभावित औद्योगिक केंद्रों में केंद्रीकृत आपदा तैयारी योजनाओं में व्यापक जोखिम आकलन, बाढ़ मानचित्रण और त्वरित परिसंपत्ति सुरक्षा प्रोटोकॉल शामिल होते हैं। ह्यू सिटी का विस्तृत बाढ़ मानचित्रण इस बात का उदाहरण है कि कैसे डाटा आधारित शहरी और आपूर्ति शृंखला नियोजन जलवायु तैयारी को बेहतर बना सकता है। इसके विपरीत भारत की प्रतिक्रियाशील बुनियादी ढांचे के उन्नयन पर निर्भरता छिटपुट और स्थान विशिष्ट तक सीमित होती है, जिसमें दीर्घकालिक लचीलेपन के लिए आवश्यक सामंजस्य का अभाव होता है। भारत की जलवायु रणनीति को पैचवर्क परियोजनाओं से आगे बढ़कर प्रणालीगत सुधार करने होंगे, जिसके लिए एआई समेत तमाम तकनीकें सहायक हो सकती हैं। विशेषकर हिमालयी क्षेत्र में, जहां जलवायु परिवर्तन नदी मार्गों, घाटी संरचनाओं और हिमनद स्थिरता को तेजी से बदल रहा है।

धराली और किश्तवाड़ की आपदाएं स्थानीय न होकर, राष्ट्रीय चेतावनियां हैं। इसके लिए हिमालयी राज्यों में हिमनद झीलों की निगरानी, जोखिमों का आकलन और जलवायु-प्रतिरोधी बस्तियों की योजना बनाने हेतु एक समन्वित रणनीति की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों को न केवल आपदा राहत में, बल्कि दीर्घकालिक वैज्ञानिक अध्ययनों, रियल टाइम निगरानी प्रणालियों और सामुदायिक तैयारियों में भी सहायता की आवश्यकता है। यह कॉरपोरेट छवि या सरकारी वादों के बारे में नहीं है। यह वास्तविकता का सामना करने और ऐसे मजबूत बुनियादी ढांचे-भौतिक, डिजिटल, नियामक और सामाजिक-के निर्माण के बारे में है, जो जलवायु परिवर्तन की वजह से आज और कल आने वाले तूफानों का सामना करने के लिए भी बेहद जरूरी है।

हिन्दुस्तान
1936 सत्य • सार्थक • सदैव

बारिश से बेहाल

बारिश की वजह से कभी मुंबई, तो कभी दिल्ली बेहाल हो रही है, लेकिन फिलहाल दोनों ही महानगरों में जलभराव का खतरा बढ़ा हुआ है। भारी बारिश से निपटने में ये शहर बहुत हद तक नाकाम ही रहे हैं। तभी तो भारत के प्रधान न्यायाधीश बी आर गवई ने एक सुनवाई के दौरान दिल्ली पर टिप्पणी की है कि अगर दो घंटे भी बारिश हो जाए, तो शहर थम सा जाता है। यह बिल्कुल वाजिब शिकायत है। दरअसल, शहरों में जलभराव को हम अभी भी एक तात्कालिक समस्या के रूप में देख रहे हैं। नगर प्रबंधन संभालने वाले शायद यह मानते हैं कि साल में बमुश्किल 15 दिन की समस्या को दूर करने के लिए पूरे 365 दिन के इंतजाम क्यों किए जाएं? धारणा बनी हुई है कि सड़कों पर जलभराव समय के साथ खत्म हो जाता है, उसके लिए विशेष इंतजाम क्यों किए जाएं? ऐसी गलत धारणा की वजह से ही बारिश को हमने अपने अनेक शहरों में समस्या बना लिया है। प्रधान न्यायाधीश की टिप्पणी शहरों को और सजग होने के लिए प्रेरित करे, ऐसी उम्मीद करनी चाहिए।

ध्यान रहे, रविवार को राष्ट्रीय राजधानी के कुछ हिस्सों में भारी बारिश हुई और भारत मौसम विज्ञान विभाग ने आने वाले दिनों में दिल्ली में ज्यादा बारिश का अनुमान जताया है। उधर, मुंबई में सोमवार को लगातार तीसरे दिन भी भारी बारिश हुई, जिसके कारण रेड अलर्ट भी जारी करना पड़ा। मूसलाधार बारिश के कारण कुछ इलाकों में दृश्यता घट गई और यातायात धीमा हो गया। मुंबई में सभी स्कूलों-कॉलेजों को बंद करने की नौबत आ गई। जगह-जगह जाम लगा हुआ है। देश की व्यावसायिक राजधानी में इसकी वजह से जो नुकसान हो रहा है, उसका अनुमान लगाना कठिन है। दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में ही अगर यातायात बाधित होगा, तो सहज ही सवाल उठेंगे। नगर प्रबंधन की निंदा भी होगी। ध्यान रहे, जिस मामले में प्रधान न्यायाधीश ने टिप्पणी की है, वह केरल का है और उस पर अलग से गौर करना देश के लिए उपयोगी है। केरल में एक राजमार्ग पर जाम लगता है, 12 घंटे जाम के बावजूद टोल लिया जाता है, जिसे अदालत में उचित ही चुनौती दी जाती है। वाकई, 12 घंटे की देरी के बावजूद किसी से टोल वसूलना गलत है। सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायमूर्ति ने इस मामले में उचित ही कहा है कि जाम में फंसे लोगों को मुआवजा मिलना चाहिए। समय आ गया, जब जाम की स्थिति में मुआवजे की व्यवस्था का नियम बनना चाहिए।

गलत धारणा की वजह से ही बारिश को हमने अपने अनेक शहरों में समस्या बना लिया है। प्रधान न्यायाधीश की टिप्पणी शहरों को और सजग होने के लिए प्रेरित करेगी।

बहरहाल, बारिश, जाम, अव्यवस्था, असुविधा की बात जब चल रही है, तो मानसून की खोज-खबर भी हमें जरूर लेनी चाहिए। जून के महीने से अब तक की बारिश के आंकड़े हमें बताते हैं कि देश में ज्यादातर राज्यों में वर्षा सामान्य रही है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड में सामान्य बारिश हुई है, जबकि बिहार में कम बारिश हुई है। बिहार में अभी तक सामान्य रूप से 666 मिलीमीटर पानी बरस जाना चाहिए था, पर यहां बारिश में लगभग 25 प्रतिशत कमी हुई है। बिहार में ज्यादातर इलाकों में पर्याप्त बारिश का इंतजार है, जबकि दिल्ली में सामान्य से 42 प्रतिशत ज्यादा बारिश दर्ज हुई है। यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वोत्तर भारत में असम, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय जैसे राज्य सामान्य बारिश के लिए तरस रहे हैं। इस बार केरल में भी सामान्य से कुछ कम वर्षा दर्ज की गई है। अतः बाढ़, जलभराव, भयानक भूस्खलन वाले क्षेत्रों में ही नहीं, कम बारिश वाले क्षेत्रों में बचाव की दिशा में जरूरी कदम उठाने पड़ेंगे।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले
19 अगस्त, 1950

नया समझौता

भारत और पाकिस्तान की सरकारों में नेहरू-लियाकत समझौते की कुछ धाराओं को कार्यान्वित करने के संबंध में जो कठिनाइयां अनुभव की जा रही थीं, उन्हें दूर करने और पश्चिमी बंगाल, पूर्वी बंगाल और आसाम के अल्पसंख्यकों में जल्दी से जल्दी विश्वास की भावना पैदा करने के लिए हाल ही में कुछ नये फैसले किये हैं। इस संबंध में भारत और पाकिस्तान के केन्द्रीय अल्पसंख्यक मंत्रियों और पूर्वी बंगाल या पश्चिमी बंगाल के अल्पसंख्यक कमीशनों के अध्यक्षों ने भारत और पाकिस्तान के प्रधान मंत्रियों और अन्य सरकारी प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श किया था और उसी के परिणामस्वरूप नये कदम उठाने का निश्चय किया गया है। नेहरूजी ने संसद में बंगाल की स्थिति पर जो बहस हुई थी उसके दौरान में इस नये समझौते की घोषणा कर दी थी। भारतीय संसद में इस विषय में जो बहस हुई थी, उसमें यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आ गया था कि मौजूदा परिस्थितियों में बंगाल की अल्पसंख्यक समस्या को नेहरू-लियाकत समझौते द्वारा ही हल किया जा सकता है। जब समझौते के मार्ग को ही अपनाना है तो कोरी ध्वंसात्मक आलोचना से काम नहीं चल सकता। उस दशा में यह विचार करना होगा कि वे कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से अल्पसंख्यकों में विश्वास की भावना पैदा नहीं हो रही है और उनका एक से दूसरे स्थान को प्रवास बन्द नहीं हुआ है। भारत और पाकिस्तान ने उन कारणों पर विचार किया है और उन्हें दूर करने के लिए कुछ आवश्यक उपाय काम में लाने का निश्चय किया है। समस्या को हल करने का यही रचनात्मक मार्ग हो सकता है।

नेहरू-लियाकत समझौते के बाद यद्यपि बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक मार-काट की घटनाएं नहीं हुई हैं, किन्तु छुटपुट घटनायें होती रही हैं। उनके कारण अल्पसंख्यकों में भय की भावना बनी रहती है। अतः भारत और पाकिस्तान के बीच यह तय पाया गया है कि प्रत्येक साम्प्रदायिक घटना की फौरन जांच की जायेगी और उपद्रवकारियों को कड़ा और यथोचित दण्ड दिया जायेगा। इस संबंध में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यदि किसी सरकारी नौकर के बारे में यह पाया जायेगा कि उसने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया है तो उसके विरुद्ध भी कार्रवाई की जायेगी।

राधाकृष्णन की उम्मीदवारी बड़ा इशारा

दक्षिण एक्सप्रेस
यहां स्कैन करें

एस श्रीनिवासन | वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय जनता पार्टी ने बहुत सोच-समझकर उन्हें उप-राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया है। वह तमिल हैं, पिछड़े भी, संघ से जुड़े हैं और प्रधानमंत्री के पुराने करीबी भी।

सीपी राधाकृष्णन को उप-राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाकर भाजपा ने एक साथ कई संदेश देने की कोशिश की है। इसके निहितार्थ राजनीतिक भी हैं और चुनावी भी। अगर राधाकृष्णन इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन होते हैं, तो वहां पहुंचने वाले पिछड़े समुदाय के वह पहले तमिल होंगे। उनसे पहले राज्य के दो उम्मीदवार उप-राष्ट्रपति पद की रेस में उतर चुके हैं, पर वे ब्राह्मण थे। हालांकि, भाजपा की नजर पश्चिमी तमिलनाडु या 'कोंगु बेल्ट' के मतदाताओं पर है, जहां से इस चयन के बाद उसे अच्छे वोट मिलने की उम्मीद है।

राधाकृष्णन साल 1998 और 1999 में कोयंबटूर लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद रह चुके हैं, हालांकि दोनों जीत उन्हें जयललिता के नेतृत्व वाले अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन करने के कारण मिली थी। इसके बाद 2004, 2014 और 2019 के संसदीय चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा, जिसके बाद 2023 में वह झारखंड के राज्यपाल बनाए गए। हालांकि, एक साल के बाद ही उनको महाराष्ट्र भेज दिया गया। उनका सियासी सफर खत्म ही माना जा रहा था कि अचानक रविवार को उनके नाम का एलान कर दिया गया।

राधाकृष्णन 2004 से 2006 के बीच तमिलनाडु के भाजपा अध्यक्ष भी रह चुके हैं और अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन कराने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि, यह साझेदारी बहुत सफल साबित नहीं हुई। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ में भी अपनी जिम्मेदारी निभा चुके हैं। 1970 के दशक में जब भगवा पार्टी जनता पार्टी में शामिल हुई और बाद में दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर उससे अलग हो गई थी, तब उन्होंने ही राज्य की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई थी। फिर भी, वह एक करिश्माई नेता नहीं माने गए। राधाकृष्णन हमेशा शांत, सज्जन और कम बोलने वाले व्यक्ति रहे हैं। किसी बड़े विवाद में भी उनका नाम नहीं आया। तमिलनाडु की राजनीति में यह एक जगजाहिर तथ्य है कि कमोबेश सभी राजनीतिक पार्टियों और नेताओं के साथ उनके अच्छे संबंध रहे हैं, फिर चाहे वह द्रमुक ही क्यों न हो। उन्हें कभी आक्रामक नेता के रूप में नहीं देखा गया। ऐसे में, लोग हैरान हैं कि वह उप-राष्ट्रपति पद की रेस में पहुंचे कैसे?

राधाकृष्णन के खाते में बेशक कोई बहुत बड़ी उपलब्धि न हो, मगर वह 'सही समय पर सही व्यक्ति' के रूप में राजनीति में ऊपर उठते गए। उनका चयन भाजपा द्वारा दो विवादास्पद नियुक्तियों से मिले जख्मों पर मरहम लगाने के रूप में देखा जा रहा है। ये दोनों नियुक्तियां हैं- जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल के रूप में सत्यपाल मलिक (जिनका पिछले दिनों निधन हो गया), और उप-राष्ट्रपति के रूप में जगदीप धनखड़ की। चूंकि धनखड़ के अचानक इस्तीफा देने के कारण ही यह चुनाव हो रहा है, इसलिए बीते घटनाक्रमों से सबक लेकर सावधानीपूर्वक ऐसे व्यक्ति की तलाश की जा रही थी, जो इन हालात में मुफीद हो।

मगर वह कौन सी वजह है, जिसके कारण राधाकृष्णन का पलड़ा भारी हुआ? उनके परिचितों के अनुसार, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'काफी करीब' हैं। उन्हें आरएसएस की पसंद नहीं माना जाता है और न ही तमिलनाडु की राजनीति में उनका कोई खास दबदबा है। इसके अलावा, हिंदी भाषा पर भी उनकी पकड़ कमजोर है, जबकि राज्यसभा की कार्यवाही के सुचारू संचालन के लिए यह जरूरी है।

एक आरएसएस नेता ने 2002 की घटना को याद किया है, जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे और दंगों से निपटने के तरीके को लेकर वह विपक्षी दलों के निशाने पर थे। यह वही समय था, जब प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सार्वजनिक रूप से उनको 'राजधर्म' की याद दिलाई थी। उस वक्त वाजपेयी और पार्टी में नंबर दो कहे जाने वाले लालकृष्ण आडवाणी के विचार मोदी को लेकर बिल्कुल विपरीत थे। तब किसी विवाद में पड़ने से बचने के लिए राज्य के कई भाजपा नेताओं ने मोदी से दूरी बना ली थी, लेकिन राधाकृष्णन ने ऐसा नहीं किया। यहां तक कि बतौर सांसद उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री को अपने निर्वाचन क्षेत्र में एक सार्वजनिक समारोह को संबोधित करने के लिए बुलाया और उनका मान-सम्मान किया। बताते हैं, मोदी इस 'व्यवहार' को कभी नहीं भूले।

राधाकृष्णन अपनी स्पष्टवादिता के कारण भाजपा आलाकमान के बहुत प्रिय रहे हैं। 2024 के संसदीय चुनावों से पहले, जब पार्टी के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई से उनका आकलन पूछा गया, तो उन्होंने एक गुलाबी तस्वीर पेश की और कहा, भाजपा कम से कम 10 सीटों पर जरूर जीत हासिल करेगी। जब 'सीपी' (राधाकृष्णन इसी नाम से लोकप्रिय हैं) से यही सवाल किया गया, तो उन्होंने एक भी सीट न मिलने का अनुमान लगाया था। नतीजे ने सीपी को सच साबित किया था। पार्टी के प्रति उनकी निष्ठा तब भी सराही गई, जब जयललिता के शासनकाल में उन्होंने अन्नाद्रमुक में शामिल होने से इनकार कर दिया। यह उस समय की बात है, जब भाजपा एक पार्टी के रूप में अपने सबसे निचले स्तर पर थी।

एक बड़ा सवाल यह है कि क्या राधाकृष्णन का चयन 2026 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में रुख मोड़ पाएगा? विश्लेषकों के मुताबिक, इसकी संभावना कम ही है, क्योंकि वह जिस समुदाय (कोंगु वेल्लालर) से आते हैं, उसका एकमुश्त समर्थन पहले से ही भाजपा को मिलता रहा है। पूर्व भाजपा अध्यक्ष अन्नामलाई, भाजपा विधायक वनती श्रीनिवासन और गठबंधन सहयोगी अन्नाद्रमुक के नेता ई पलानीस्वामी इसी समुदाय से आते हैं।

क्या राधाकृष्णन की दावेदारी तमिल भावना को उभार सकती है और विपक्षी दलों को उनका समर्थन करने को मजबूर कर सकती है? राज्य के भाजपा नेताओं ने पहले से ही समर्थन मांगना शुरू कर दिया है। मगर इसकी संभावना कम दिखती है, क्योंकि 'इंडिया' ब्लॉक उनके निर्विरोध चयन के पक्ष में नहीं, बल्कि चुनावी मुकाबला चाहता है। द्रमुक और कांग्रेस के नेता पहले ही इस प्रस्ताव को यह कहते हुए खारिज कर चुके हैं कि वे आरएसएस के किसी व्यक्ति का समर्थन नहीं कर सकते। चूंकि एनडीए के पास पर्याप्त संख्याबल है, इसलिए सीपी का उप-राष्ट्रपति बनना करीब-करीब तय है। लिहाजा, सवाल उनकी जीत का नहीं, जीत के अंतर का है और उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह कि क्या वह देश के अगले राष्ट्रपति बन सकते हैं? 67 वर्ष का उनका होना उनके पक्ष में है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

दुनिया में गाजा की फिक्र का नया आगाज होना चाहिए

यहां स्कैन करें

सुरेंद्र कुमार | पूर्व राजनयिक

टीवी चैनलों पर गाजा के जो दृश्य आ रहे हैं, वे हृदय विदारक और स्तब्ध कर देने वाले हैं। इन दृश्यों में हजारों हताश, भूखे बच्चों-बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों को हाथों में खाली बर्तन लिए भोजन बांटने वाली गाड़ियों की ओर भागते हुए हम देख सकते हैं। कई कमजोर व बुजुर्ग उस आपाधापी में गाड़ियों तक पहुंच भी नहीं पाते। जो किसी तरह पहुंच भी जाते हैं, उनमें से कई को कुछ भी हाथ नहीं लगता, क्योंकि भोजन तब तक खत्म हो चुका होता है।

कुछ देश, अपराध-बोध या अंतरात्मा की आवाज पर अनाज, आटे आदि की बोरियां विमान से गिराते हैं। इनको लपकने के लिए फलस्तीनियों की भीड़ दौड़ पड़ती है। उनमें से कई लोग अपने सिर पर बोरी लिए इस डर से पागलों की तरह भागते हैं कि कोई उनसे उसे छीन न ले। कुछ अपने प्रियजनों तक पहुंचने से पहले ही इजरायली गोलियों के शिकार हो जा रहे हैं। उनका शव वहीं अनाज की बोरियों के साथ पड़ा रहता है। उस दिन उनके बच्चे भूखे ही रह जाते हैं।

अक्तूबर 2023 से अब तक गाजा में 30,000 से भी अधिक बच्चे मारे जा चुके हैं। उनकी माओं के विलाप थम नहीं रहे। इनमें से कई संज्ञा शून्य हो चुकी हैं। मौत की छाया हर समय गाजावासियों के साथ चलती है, प्रियजनों को दफनाना उनका नियमित कार्य बन गया है। उन्हें इस दयनीय जीवन से बाहर निकलने का बेसब्री से इंतजार है। वे पूछ रहे हैं, आखिर उनका कुसूर क्या है? ऊपर वाला कोई चमत्कार क्यों नहीं कर रहा, क्या वह भी उन्हें भूल गया है? किसी के पास कोई जवाब नहीं है। इजरायल के पास किसी देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को रौंदने का लाइसेंस है। वह जब चाहे, किसी देश में घुस सकता है, जितना चाहे, उतने लोगों को मार सकता है और स्कूलों, अस्पतालों व घरों को नष्ट कर सकता है। लोकतंत्र और मानवाधिकार के स्वयंभू संरक्षक देश इन भयावह दृश्यों को चुपचाप देख रहे हैं और फलस्तीन को मान्यता देने की खोखली घोषणाएं कर रहे हैं।

प्यार प्यार को जन्म देता है और हिंसा से अधिक हिंसा उपजती है। इतनी सी बात नेतन्याहू नहीं समझ पा रहे हैं। विश्व मानवतावादी दिवस पर विशेष :

हमास ने 7 अक्तूबर, 2023 को इजरायल में घुसकर बेगुनाह इजरायलियों की हत्या कर दी थी और अनेक को बंधक बना लिया था। यह एक जघन्य अपराध था। हालांकि, इसके पीछे दशकों से इजरायली कब्जे के खिलाफ दबा गुस्सा था, जो उस दिन फूट पड़ा था। दूसरी ओर, इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने फलस्तीनियों की हत्या का आदेश दे दिया, जिसमें अब तक 61,000 फलस्तीनी मारे जा चुके हैं। इनमें आधे से ज्यादा बच्चे हैं। इसके साथ ही उनके घरों को ध्वस्त कर दिया गया और उन्हें भुखमरी की हालत में छोड़ दिया गया, जो किसी नरसंहार से कम नहीं है। खाड़ी के देशों का फलस्तीन-समर्थन केवल दिखावटी और खोखला है।

विश्व समुदाय के रूप में हम इतने अमानवीय क्यों हो गए हैं कि फलस्तीनी लोगों की पीड़ा हमारे दिलों को नहीं झकझोरती? हम क्यों नहीं मानते कि ये फलस्तीनी भी शांतिपूर्ण जीवन जीने के हकदार हैं, उनके बच्चों को भी स्कूल जाने और खेलने-कूदने का अधिकार है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि हमारे पास फलस्तीनी लोगों के लिए शांति, समृद्धि और सभ्य समाज का कोई दृष्टिकोण नहीं है। प्यार प्यार को जन्म देता है, नफरत नफरत को पैदा करती है और हिंसा से अधिक हिंसा उपजती है। नेतन्याहू इतनी-सी बात नहीं समझ पा रहे हैं। इजरायल में तब तक शांति और सुरक्षा नहीं आ सकती, जब तक फलस्तीनी लोग सुरक्षित नहीं हो जाते। हजारों गाजावासियों की हत्या करवाकर नेतन्याहू ने दस गुना ज्यादा ऐसे फलस्तीनी पैदा किए हैं, जो इजरायल के प्रति क्रोध, कड़वाहट और नफरत से भरे हैं। यह भावना हिंसा-चक्र को जारी रखेगी।

नेतन्याहू में करुणा का अभाव है, इसलिए वह लक्ष्यहीन हिंसा और रक्तपात को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्हें बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा से मार्गदर्शन लेने की जरूरत है। नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित दलाई लामा के शब्दों में, 'हम धर्म, विचारधारा, अर्जित ज्ञान, सब कुछ छोड़ सकते हैं, लेकिन प्रेम और करुणा के बिना नहीं रह सकते। इसलिए, आइए, हम पूरे दिल से अपने मित्रों और शत्रुओं- दोनों का ध्यान रखें। यही सच्ची करुणा का आधार है।'

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

सादगी कोई चुनाव नहीं

सादगी क्या है? क्या इसका अर्थ चुनाव नहीं है, यानी जो जरूरी है, उसे चुन लेना और जो गैरजरूरी है, उसे छोड़ देना? चुनने की यह प्रक्रिया क्या है? चुनाव करने वाली हस्ती कौन है? मन ही न? आप उसे क्या नाम देते हैं, इसका कोई महत्व नहीं है। आप कहते हैं, 'मैं इसे चुनूंगा, यह आवश्यक है।'

आप कैसे जानते हैं कि आवश्यक क्या है? या तो दूसरे लोगों ने जो कुछ कहा है, उसका आपके मन में कोई प्रारूप है या आपका इस बारे में अपना अनुभव कहता है कि यह आवश्यक है। क्या आप अपने अनुभव पर निर्भर कर सकते हैं? जब आप चुनाव करते हैं, तो आपका चुनाव आकांक्षा पर आधारित होता है। है न? जिसे आप 'आवश्यक' कहते हैं, वह वही होता है, जो आपको संतुष्टि प्रदान करता है। इसलिए आप पुनः उसी प्रक्रिया में लौट आते हैं। ऐसा ही होता है न? तो क्या एक भ्रांत मन चुन सकता है? और यदि यह चुनता है, तो क्या वह चुनाव भी भ्रांत नहीं होता?

अतः आवश्यक और अनावश्यक के बीच चुनाव सादगी नहीं है। विभ्रम में फंसा मन सीधा-सादा कभी नहीं हो सकता। जब आप मन की तमाम झूठी चीजों, इसकी चालाकियों का अवलोकन व निरीक्षण करेंगे और उनको त्याग देंगे; जब आप मन को देखेंगे और इसके प्रति जागरूक होंगे, तब आप स्वयं जान लेंगे कि सादगी, सरलता क्या होती है। किसी विश्वास से बंधा मन कभी सरल नहीं हो सकता। ज्ञान द्वारा पंगु हो चुका मन सरल नहीं होता। जो मन ईश्वर में, स्त्रियों में, संगीत में अपना ध्यान बंटा लेता है, वह सरल मन नहीं है। दफ्तर, कर्मकांड व प्रार्थनाओं की नित्यचर्या से जकड़े मन में सादगी नहीं होती। सादगी तो धारणारहित कर्म है। वह विरल बात है; उसका अर्थ है सर्जनशीलता। जब तक सृजन नहीं होता, तब तक हम दुष्टता, क्लेश और विनाश के केंद्र बने रहते हैं। सादगी कुछ ऐसा नहीं है, जिसका आप अनुशीलन करके अनुभव कर सकते हों। सादगी वैसे ही आती है, जैसे सही वक्त पर फूल खिलता है, जब कोई अस्तित्व और संबंध की समस्त प्रक्रिया को समझ लेता है। हमने उसके बारे में कभी सोचा नहीं है, उसका निरीक्षण नहीं किया है, इसलिए हम उसके प्रति जागरूक नहीं हैं; हम अपरिग्रह के तमाम बाहरी रूपों को मूल्य देते हैं, लेकिन वह सब सादगी नहीं है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

सादगी तभी अभिव्यक्त होती है, जब स्व का पूरी तरह लोप हो जाता है, जब मन अटकलों में, निष्कर्षों में, विश्वासों में, धारणाओं और परिकल्पनाओं में नहीं फंसा रहता।

सादगी को उपलब्ध नहीं किया जा सकता, यह आवश्यक और अनावश्यक के बीच चुनाव नहीं है। वह तभी अभिव्यक्त होती है, जब स्व का लोप हो जाता है; जब मन अटकलों, धारणाओं व परिकल्पनाओं में नहीं फंसा रहता। ऐसा मुक्त मन ही सत्य को पा सकता है। केवल ऐसा मन ही उस अपरिमेय को, उस अनाम को ग्रहण कर सकता है; और यही सादगी है, यही सरलता है।

जे कृष्णमूर्ति

जावेद अख्तर | गीतकार

ट्रैफिक जाम इसलिए नहीं होता कि सड़कों पर बहुत सारी गाड़ियां हैं, बल्कि इसलिए होता है, क्योंकि बहुत सारे ड्राइवर ट्रैफिक नियमों का सम्मान नहीं करते। अपनी बारी से पहले आगे निकलने का उतावलापन उन्हें जाम में फंसा देता है।

जिम्मेदारी दिखा रहे मुख्य चुनाव आयुक्त

मुख्य चुनाव आयुक्त ने जो प्रेस कॉन्फ्रेंस की, उसमें उन्होंने उन सभी मसलों की गांठें खोल दीं, जिनको लेकर आयोग को घेरा जा रहा है। सिलसिलेवार ढंग से उन्होंने न सिर्फ अपनी बातें रखीं, बल्कि पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवालों का भी हरमुमकिन जवाब दिया। उन्होंने ठीक ही तो कहा कि अगर राहुल गांधी को कुछ गलत लग रहा है, तो उन्हें बाकायदा हलफनामा देना चाहिए। अगर नेता प्रतिपक्ष को अपने आरोपों पर यकीन है, तो वह क्यों नहीं ऐसा करते? राहुल गांधी एक राजनेता हैं, तो वह राजनीति ही करेंगे, लेकिन मुख्य चुनाव आयुक्त तो राजनेता नहीं हैं। वह तो तथ्यों के आधार पर अपनी बात कह रहे हैं। वह सिर्फ एक हलफनामा ही तो मांग रहे हैं। अगर यह उनको उपलब्ध करा दिया जाता है, तो राहुल गांधी के आरोपों की पूरी जांच हो जाएगी। इसी तरह, उन्होंने मतदान-केंद्रों के वीडियो उपलब्ध कराने को लेकर भी उचित कहा है। डीप फेक के जमाने में किसका वीडियो या किसकी तस्वीर कहां इस्तेमाल हो जाएगी, कौन जानता है? ऐसे में, चुनाव आयोग द्वारा उपलब्ध कराए गए वीडियो की सुरक्षा कौन सुनिश्चित करेगा? साफ है, राहुल गांधी अपनी राजनीति चमकाने के लिए चुनाव आयोग जैसी विश्वसनीय संस्था को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। इसका उन्हें चाहे राजनीतिक फायदा मिले या नहीं, लेकिन यदि चुनाव आयोग पर जनता का भरोसा डिगता है, तो यह भारतीय लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं होगा और इसके कुसूरवार सिर्फ राहुल गांधी ही होंगे।

स्वाति सिंह, टिप्पणीकार

राहुल गांधी को देखकर अब हर कोई समझ सकता है कि उनका असली खेल क्या है? वह लगातार भारतीय चुनाव प्रक्रिया को बदनाम करने में लगे हैं। कभी लोकतंत्र के खत्म होने का आरोप लगाते हैं, तो कभी भारतीय संविधान को बदलने का, तो कभी मुख्य चुनाव आयुक्त को ही कठघरे में खड़ा करके चुनाव आयोग की विश्वसनीयता खत्म करने का प्रयास करते हैं। उनका यह मकसद कभी सफल नहीं हो सकता। अगर वह सोची-समझी रणनीति के तहत चुनाव आयोग को बदनाम करना चाहते हैं, तो मुख्य चुनाव आयुक्त भी अपने तर्कों से उनकी राजनीति को काटने का संबल रखते हैं। देखा जाए, तो राहुल गांधी भारत के लोकतंत्र के कथित रूप से खत्म होने का माहौल बनाकर विदेशी एजेंटों को न्योता देने का काम कर रहे हैं। मगर नेता प्रतिपक्ष को यह एहसास होना चाहिए कि अभी देश की कमान एक मजबूत नेता के हाथों में है, जो किसी के नहीं डरता।

करुणेश, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
मतदाता सूची सुधार

राहुल को घेरने में खुद घिरा आयोग

मुख्य चुनाव आयुक्त महोदय, राहुल गांधी न हलफनामा देंगे और न माफी मांगेंगे, क्योंकि पहले उनके सवालों का उत्तर आप लिखित में भेजिए। आप खुद शपथपत्र दीजिए कि जो कह रहे हैं, वह सही है। यह कोई प्रवचन नहीं चल रहा, जिस तरह आप एक पद पर हैं, वैसे ही वह भी देश के नेता प्रतिपक्ष हैं, जो आपके चयन की प्रक्रिया का खुद एक हिस्सा हैं। अगर नेता प्रतिपक्ष ने सवाल उठाया है, वह भी पूरे सुबूतों के साथ, तो समझ लीजिए कि दुनिया में आप ही संदिग्ध कहलाएंगे, इसलिए इस मसले की गंभीरता को समझिए। आपने संवाददाता सम्मेलन किया और सवालों के जवाब देने के बजाय प्रवचन देना शुरू कर दिया। इससे आप अपने ही उत्तर में फंसते चले गए। आप शून्य नंबर के मकानों को गरीबों से जोड़कर संवेदना की बात करते हैं, लेकिन आपकी यही संवेदना बाढ़ और बारिश में पूरे बिहार से कागज मांगते वक्त गायब हो जाती है। जिनके पास घर नहीं है, आपने उनका मकान नंबर शून्य कर दिया, मगर यह नहीं बताया कि जिनके पास घर नहीं है, आधार-वोटर कार्ड-राशनकार्ड आपको मानना नहीं है, तो वे कैसे अपनी पहचान बताएंगे? आपने यह तक नहीं कहा कि अदालत ने आधार कार्ड मान्य करने का निर्देश देकर आपको सही रास्ता दिखाया है। कभी यह भी सोचिएगा कि जब से कुर्सी पर बैठे हैं, तब से कभी कोर्ट आपको सुधार रहा, तो कभी नेता प्रतिपक्ष, तो कभी विपक्ष के दूसरे नेता। जनता सब साफ-साफ देख रही है। समाजवादी पार्टी ने तो 18,000 हलफनामा, वह भी समय पर, आपकी पावती परची के साथ जमा कराया था। उस पर तो आज तक कोई जवाब नहीं दे सके आप? अब आपको ही हलफनामा देना होगा। 'वोट चोरी' जैसे अपराध को रोकने के लिए देश के पास पर्याप्त कानून हैं, आपको और इसमें शामिल हर एक अधिकारी को इसका सामना करना ही होगा।

हफीज किदवई, टिप्पणीकार

अजीबोगरीब स्थिति है। पहले राहुल गांधी ने वोट चोरी का 'एटम बम' फोड़कर, चुनाव आयोग पर आरोप लगाया, फिर भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने छह लोकसभा क्षेत्र के आंकड़े प्रस्तुत कर विपक्ष को घेरने की कोशिश की। लेकिन इस ऊहापोह में यह भूल हो गई कि जो वोट चोरी की बात राहुल गांधी कह रहे हैं, वही बात तो भाजपा के नेता भी कह रहे हैं। यानी, इस आरोप-प्रत्यारोप के घेरे में चुनाव आयोग ही आ रहा है। तो क्या वोट चोरी मुमकिन है? आयोग को यह स्पष्ट करना चाहिए। उससे निष्पक्षता की उम्मीद है। अगर ऐसा नहीं होता, तो यह लोकतंत्र के लिए घातक है।

हेमा हरि उपाध्याय, टिप्पणीकार

दैनिक जागरण

कठोर शब्द खड्ग से भी तीक्ष्ण होते हैं

सुप्रीम कोर्ट का सही सवाल

केरल में एक व्यक्ति के जाम में फंसने और फिर भी टोल देने के मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण यानी एनएचएआइ से यह सही सवाल पूछा कि अगर घंटों जाम में फंस रहे हैं तो फिर टोल क्यों दें? सुप्रीम कोर्ट को इस मामले की सुनवाई इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि केरल हाई कोर्ट ने इसी प्रकरण पर आदेश देते हुए यही कहा था कि आखिर ऐसे किसी व्यक्ति को टोल क्यों देना चाहिए, जो 11-12 घंटे जाम में फंसा हो? यह आश्चर्य की बात है कि एनएचएआइ को केरल हाई कोर्ट का यह फैसला रास नहीं आया और उसने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना बेहतर समझा। समझना कठिन है कि एनएचएआइ इस मामले में हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट क्यों पहुंचा? इस प्रश्न पर भारत सरकार और विशेष रूप से राजमार्ग मंत्रालय को गंभीरता से विचार करना चाहिए। क्या वह यह चाहता है कि लोग घंटों जाम में फंसे रहें, समय एवं ईंधन जाया करें और फिर भी टोल के रूप में पैसे चुकाएं? यह तो एक तरह की जबरदस्ती है। राष्ट्रीय राजमार्ग हों या फिर प्रांतीय राजमार्ग अथवा अन्य सड़कें, यदि किसी सड़क पर घंटों जाम लगता है तो फिर लोगों से निर्धारित टोल लेने के बजाय उन्हें राहत दी जानी चाहिए।

यह सही है कि सड़कें आर्थिक विकास का माध्यम हैं और देश की प्रगति के लिए अच्छी सड़कें चाहिए तथा उनका निर्माण एवं रखरखाव तभी संभव है, जब उन पर चलने वाले वाहन चालकों से टोल लिया जाए। ऐसा ही किया जा रहा है। इसमें हर्ज नहीं, लेकिन इसकी अनदेखी की जा रही है कि सड़कों पर जाम तो नहीं लग रहा है और मिनटों का सफर घंटों में तो नहीं तय हो रहा है? बात केवल उन सड़कों पर लगने वाले जाम की ही नहीं है, जिन पर टोल वसूला जाता है। देश भर में तमाम ऐसी सड़कों पर भी जाम लगता है, जिन पर टोल वसूली नहीं होती। ये सड़कें भी लोगों के पैसे से ही बनती हैं। जाम से लोगों के कीमती वक्त की बर्बादी तो होती ही है, लाखों लीटर पेट्रोलियम पदार्थ भी बर्बाद होता है। यह उस संसाधन की बर्बादी है, जिसे आयात किया जाता है और जिस पर अच्छी-खासी विदेशी मुद्रा खर्च होती है। होना तो यह चाहिए कि एनएचएआइ जाम विहीन यातायात सुनिश्चित करने के लिए सक्रियता दिखाए। यदि वह ऐसा करे तो राज्य सरकारें और उनकी एजेंसियां भी सक्रिय होंगी। यदि वही उलटी गंगा बहाएगा तो बात कैसे बनेगी? यह निराशाजनक है कि राजमार्गों एवं अन्य सड़कों के बेहतर निर्माण एवं रखरखाव और टोल वसूली की प्रक्रिया के सुगम तथा सुविधाजनक होने के दावे लोगों का मुंह चिढ़ाते दिखते हैं। आखिर इन दावों पर खरा उतरना इतना कठिन क्यों है?

प्रभावी कार्रवाई जरूरी

पंजाब में नशे के खिलाफ पुलिस की ओर से लंबे समय से अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन अब भी नशे से युवाओं की मौत का सिलसिला रुका नहीं है। साढ़े पांच माह में पुलिस ने 25 हजार से ज्यादा तस्करों को गिरफ्तार किया है, लेकिन इनमें ऐसे लोग अधिक हैं जिन्हें बहुत छोटी मात्रा में नशीले पदार्थ के साथ पकड़ा गया था। पंजाब से यदि नशे की समस्या को खत्म करना है तो प्रभावी कार्रवाई बहुत आवश्यक है।

केंद्रीकृत आनलाइन पोर्टल के माध्यम से तस्करों की संपत्ति फ्रीज करने की गति तेज होगी, जिसका असर दिखना स्वाभाविक है

प्रशासन ने नशीले पदार्थों की तस्करी से मिले पैसों से बनाए गए घरों को ध्वस्त करने की कार्रवाई जब से शुरू की है तब से असामाजिक तत्वों में कुछ भय पैदा हुआ है। ड्रग मनी से बनाई गई संपत्ति को फ्रीज भी किया जा रहा है, लेकिन अभी इसकी गति बहुत धीमी है क्योंकि प्रक्रिया में लंबा समय लगता है। केंद्रीकृत आनलाइन पोर्टल के माध्यम से जब एक सप्ताह में तस्करों की संपत्ति फ्रीज करने की मंजूरी मिलेगी तब इसका असर दिखना स्वाभाविक है। कई लोग तस्करों की तेजी से बढ़ती संपत्ति को देखकर नशीले पदार्थों की तस्करी शुरू कर देते हैं। ड्रग मनी से बनाई गई संपत्ति फ्रीज करने की गति जब तेज होगी तो सख्त संदेश जाएगा। राज्य सरकार की ओर से ऐसे हर कदम उठाए जाने चाहिए जिससे नशे की समस्या को खत्म करने में मदद मिल सके। इसके साथ ही जनता को भी इस समस्या के खिलाफ आगे आना चाहिए। सरकार की ओर से ऐसे लोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो तस्करों के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं।

शिक्षा में इतिहास या राजनीति

राजीव शुक्ला

वास्तविकता है कि कांग्रेस ने विभाजन की मांग कभी नहीं की। उसने तो विभाजन का विरोध किया। भारत विभाजन तो मुस्लिम लीग और जिन्ना का एजेंडा था

अवधेश राजपूत

भारत पर शासन के दौरान 1905 में जब अंग्रेजों ने बंगाल का पहला विभाजन किया तो शायद ही किसी ने सोचा होगा कि वही बीज एक दिन पाकिस्तान के रूप में धरती के मानचित्र पर अंकित होगा। यह औपनिवेशिक सत्ता की ''बांटो और राज करो'' की नीति का परिणाम था। इस नीति ने धीरे-धीरे पूरे उपमहाद्वीप को सांप्रदायिक आधार पर बांटने की राह तैयार की। विडंबना यह है कि 21वीं सदी में भी उसी नीति को अलग-अलग तरीकों से भुनाने की कोशिश की जा रही है। एनसीईआरटी का विशेष माड्यूल ''विभाजन की त्रासदी'' इसी प्रवृत्ति की एक कड़ी प्रतीत होता है। इसमें जिन्ना और माउंटबेटन के साथ-साथ कांग्रेस को भी भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार ठहराने का प्रयास किया गया है। समझना कठिन है कि आखिर ऐसा क्यों किया गया और इससे किसके हित सधेंगे?

यह सच है कि विभाजन भारतीय इतिहास की सबसे भीषण त्रासदियों में से एक था। भारत विभाजन में लाखों लोग मारे गए, करोड़ों विस्थापित हुए और सामाजिक ताने-बाने को गहरी चोट पहुंची। इसी के साथ यह भी उतना ही सच है कि भारत के दुर्भाग्यपूर्ण और त्रासदी विभाजन का कारण केवल कुछ नेताओं के व्यक्तिगत निर्णय नहीं थे, बल्कि दशकों से पनप रही औपनिवेशिक नीतियां, सांप्रदायिक राजनीति और लंबे समय से चले आ रहे किस्म-किस्म के सामाजिक तनाव का नतीजा थे। ऐसे जटिल ऐतिहासिक प्रसंगों का खतरनाक ढंग से सरलीकरण करके जिन्ना और माउंटबेटन के साथ कांग्रेस के माथे पर ठीकरा फोड़ना न केवल अन्याय है, बल्कि इतिहास को वर्तमान की राजनीति के हिसाब से मोड़ने का दुस्साहस भी है। इसका प्रतिकार किया जाना चाहिए। इतिहास वैसा ही पेश किया जाना चाहिए, जैसा घटित हुआ हो। इतिहास का मतलब ही है कि ऐसा हुआ था।

यह एक वास्तविकता है कि कांग्रेस ने विभाजन की मांग कभी नहीं की। उसने तो विभाजन का विरोध किया और उसे रोकने के लिए भरसक प्रयत्न भी किए। भारत विभाजन तो मुस्लिम लीग और जिन्ना का एजेंडा था। अंग्रेजों ने भी इसे प्रोत्साहन दिया, क्योंकि उनका उद्देश्य भारत को कमजोर करके यहां लंबे समय तक शासन करना था। इसके अलावा वे भारत का विभाजन इसलिए भी करना चाहते थे, ताकि उससे अलग होकर बने देश यानी पाकिस्तान में अपनी चला सकें। साल 1909 के चुनावों में अलग निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था हो या 1932 का कम्युनल अवार्ड, हर कदम पर ब्रिटिश शासन ने हिंदू-मुस्लिम एकता को चोट पहुंचाने का काम किया। अंग्रेज हिंदुओं और मुसलमानों के रिश्तों में दरार डालने के काम करते रहते थे, ताकि उन्हें भारत पर शासन करने में आसानी हो। कांग्रेस लगातार राष्ट्रीय एकता की बात करती रही, लेकिन जब 1940 के दशक में सांप्रदायिक तनाव चरम पर पहुंच गया, तब उसके पास समझौते के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। अच्छा होता लोग उस समय की परिस्थितियां समझें।

इस बात को सदैव ध्यान में रखा जाए तो अच्छा कि 1946-47 का भारत आज के लोकतांत्रिक भारत से बिल्कुल अलग था। उस समय 500 से अधिक रियासतें थीं, जिनकी अपनी-अपनी आकांक्षाएं और सोच थी। बंगाल, पंजाब और बिहार में भयंकर दंगे भड़क चुके थे। सांप्रदायिक तनाव इतना बढ़ चुका था कि हर दिन हजारों निर्दोष लोग मारे जा रहे थे। ऐसे में देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में कांग्रेस के सामने दो ही रास्ते थे-या तो विभाजन स्वीकार कर देश को आगे बढ़ने दें या फिर विभाजन रोकने की कोशिश में पूरे उपमहाद्वीप को खून-खराबे में झोंक दें। इतिहास गवाह है कि कांग्रेस ने पहला रास्ता चुना और भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूत नींव दी। इसे उन लोगों को समझना चाहिए, जो विभाजन के लिए कांग्रेस को दोषी ठहराने के लिए तरह-तरह के सुविधाजनक तर्क पेश करते रहते हैं। यह कहना आसान है कि कांग्रेस ने भारत विभाजन को स्वीकार कर गलती की। इसी तरह यह कहना भी भूल होगी कि उस दौर में नेताओं के सामने और कोई विकल्प उपलब्ध था।

महात्मा गांधी जैसे नेता भी विभाजन के सख्त खिलाफ थे, लेकिन जब लाखों लोगों की जान दांव पर लगी थी, तब समझौते को ही व्यावहारिक रास्ता माना गया। कांग्रेस का लक्ष्य सत्ता पाना नहीं, बल्कि देश को भीषण गृहयुद्ध की आग से बचाना था। आज 79 साल बाद सुरक्षित माहौल में बैठकर विभाजन के दौर की विवशताओं को अनदेखा करना आसान है, लेकिन यह समझना जरूरी है कि यदि उस समय कांग्रेस ने विभाजन स्वीकार न किया होता तो शायद हालात और भी भयावह होते। ऐसे में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कांग्रेस ने कठिन, मगर आवश्यक निर्णय लिया, ताकि भारत का भविष्य बचाया जा सके।

एनसीईआरटी का माड्यूल इतिहास की जटिलताओं को सरलीकृत करके वर्तमान की राजनीति के लिए इस्तेमाल करने का प्रयास है। इस नए माड्यूल को भले ही किसी कक्षा में पाठ के तौर पर न पढ़ाया जाए, लेकिन आखिर इसे पूरक शैक्षिक सामग्री के तौर पर पेश करने और उसमें विभाजन के लिए जिन्ना और माउंटबेटन के साथ कांग्रेस को भी जिम्मेदार ठहराने का क्या मतलब? सत्ता चाहे कितनी भी ताकतवर क्यों न हो, इतिहास बदलने की कोशिश हमेशा अधूरी और संदिग्ध रहती है। वास्तविक इतिहास हमें यही सिखाता है कि भारत का विभाजन औपनिवेशिक नीतियों और जिन्ना की सांप्रदायिक राजनीति का परिणाम था, न कि कांग्रेस की महत्वाकांक्षा का। इसलिए यह आवश्यक है कि इतिहास को न्यायपूर्ण और संतुलित दृष्टि से पढ़ाएं। विभाजन के पन्नों से सीखकर हमें आगे बढ़ना चाहिए, न कि उन्हें आज की राजनीति का हथियार बनाना चाहिए। कांग्रेस को दोषी ठहराना आसान है, लेकिन सच्चाई यही है कि उसने उस दौर में देश की एकता और भविष्य की रक्षा के लिए कठिन निर्णय लिया। इतिहास का मूल्यांकन उसी समय की परिस्थितियों के आलोक में होना चाहिए, न कि आज की राजनीतिक सुविधा के आधार पर।

(लेखक कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं)
response@jagran.com

कई हित सधेंगे सीपी राधाकृष्णन से

उमेश चतुर्वेदी

भाजपा को ओबीसी समाज के सीपी राधाकृष्णन के उपराष्ट्रपति बनने का लाभ दक्षिण के राज्यों में भी मिल सकता है

भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने चंद्रपुरम पोन्नुस्वामी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया है। इनकी चर्चा तमिलनाडु के मोदी के रूप में भी होती है। तमिलनाडु में सीपीआर के नाम से चर्चित सीपी राधाकृष्णन 2013 में एक तमिल चैनल के डिबेट में तब शामिल हुए थे, जब नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बनाए जाने पर बहस हो रही थीं। उस चर्चा में तमिलनाडु के मोदी के रूप में उनका परिचय दिया गया था। उपराष्ट्रपति के प्रत्याशी के रूप में उनका चयन कर भाजपा ने एक साथ कई राजनीतिक लक्ष्य साधे हैं। भाजपा को उनके उपराष्ट्रपति बनने का लाभ तमिलनाडु के साथ दक्षिण के अन्य राज्यों में भी मिल सकता है। चूंकि वह ओबीसी हैं, इसलिए तमिलनाडु में डीएमके की ओबीसी केंद्रित राजनीति को जवाब देने में तो आसानी होगी ही, ओबीसी कार्ड खेल रहे राहुल गांधी का मुकाबला करने में भी सुविधा रहेगी।

इसे संयोग कहें या कुछ और, देश के शीर्ष दो पदों पर विराजमान हस्तियों का नाता झारखंड से रहा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु देश के सर्वोच्च पद पर चुने जाने से पहले झारखंड की राज्यपाल रहीं और देश के उपराष्ट्रपति बनने जा रहे सीपी राधाकृष्णन भी इस राज्य के राज्यपाल रहे हैं। इन दिनों वे महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं। वे झारखंड के साथ ही तेलंगाना के राज्यपाल और पुदुचेरी के उपराज्यपाल का भी अतिरिक्त कार्यभार संभाल चुके हैं। मोदी-शाह का उन पर भरोसा कितना है, इसे इससे समझा जा सकता है कि उन्हें एक समय एक साथ तीन-तीन राज्यों के राज्यपालों की जिम्मेदारी थमाई गई थी।

सीपी राधाकृष्णन उत्तर भारत के भाजपा के राजनीतिक गलियारे में राधा जी के नाम से जाने जाते हैं। तमिलनाडु की कोयंबटूर लोकसभा सीट से 1998 और 1999 के आम चुनावों में भाजपा के टिकट पर सांसद चुने गए सीपी राधाकृष्णन ने स्कूली जीवन से ही जनसंघ का दामन थाम लिया था। हालांकि एक दौर में वे तमिल राजनीति में अन्नाद्रमुक के करीब माने जाते थे। उनके तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं से मधुर संबंध हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव में डीएमके भी उनकी उम्मीदवारी का विरोध करना कठिन हो सकता है। इसका कारण तमिल अस्मिता की राजनीति है। तमिल अस्मिता की राजनीति करने वाले मुख्यमंत्री स्टालिन के लिए सीपीआर का विरोध करना आसान नहीं होगा। इस समय लोकसभा में डीएमके के 22 और राज्यसभा में 10 सदस्य हैं। हालांकि डीएमके ने केंद्र सरकार के खिलाफ भाषा, नई शिक्षा नीति और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के खिलाफ जिस तरह मोर्चा खोल रखा है, उसकी वजह से इसमें संदेह है कि वह सीपीआर के पक्ष में खुलकर खड़ी होगी।

पीएम मोदी के साथ सीपी राधाकृष्णन। फाइल

सीपीआर के पिता बताते थे कि उनके पूर्वज उत्तर भारत से ही मीनाक्षीपुरम में व्यापार के लिए आए और फिर वहीं के होकर रह गए। वे अपना संबंध उत्तर भारत के मारवाड़ी और वैश्य बिरादरी से जुड़ा बताते थे। इस नाते कह सकते हैं कि राधाकृष्णन का नाता उत्तर भारत से भी है। सीपी राधाकृष्णन के एक रिश्तेदार कांग्रेस के सांसद रहे। वह तमिलनाडु भाजपा के 2004 से 2007 तक अध्यक्ष भी रहे। इस दौरान उन्होंने पूरे राज्य का दौरा किया था। इसके जरिए उन्होंने तमिलनाडु भाजपा में नया उत्साह भरने की भरपूर कोशिश की थी।

वर्ष 2004 और 2014 के आम चुनावों में सीपी राधाकृष्णन को सफलता नहीं मिली, जबकि 2009 के आम चुनावों में उन्होंने हिस्सा नहीं लिया था। 2014 की प्रचंड मोदी लहर में उन्हें जीत का पूरा भरोसा था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। इसके बाद 2016 में उन्हें राष्ट्रीय केयर बोर्ड का चेयरमैन बनाया गया। सांसद रहते वक्त स्टाक एक्सचेंज घोटाले की जांच करने वाली संसदीय समिति और प्रेस परिषद में लोकसभा के प्रतिनिधि सदस्य रहे राधाकृष्णन को भाजपा ने 2020 में केरल का प्रभारी बनाया था।

उन्होंने झारखंड का राज्यपाल रहते समय भी पूरे राज्य का दौरा किया था और जनता की समस्याएं सुनीं। सीपीआर राज्य की कौंडर जाति से आते हैं, जो अन्य पिछड़ा समाज में आती है। इस जाति विशेष का बड़ा आधार तमिलनाडु में नहीं है, लेकिन राज्य में वह भाजपा का मजबूत वोटबैंक है। सीपीआर के जरिए भाजपा ने तमिलनाडु में अपने आधार वोटबैंक को संदेश देने की भी कोशिश की है। इसके अलावा तमिल नाडु की जनता को भी यह संदेश दिया गया है कि भाजपा राज्य को विशेष महत्व देती है। जब वह पहली बार राज्यपाल बनाए गए थे, तब सक्रिय राजनीति से दूरी का अंदेशा उन्हें निराश कर रहा था, लेकिन नियति ने कुछ और ही रच दिया है। उनका उपराष्ट्रपति बनना लगभग तय है। उपराष्ट्रपति के साथ राज्यसभा के सभापति के रूप में उनके पास बड़ी जिम्मेदारी होगी। इस दायित्व में सक्रियता की खूब गुंजाइश है। ध्यान रहे कि वे ऐसे समय उपराष्ट्रपति बनेंगे, जब जगदीप धनखड़ ने अचानक इस्तीफा देकर भाजपा के लिए समस्या खड़ी करने का काम किया और उस विपक्ष को हमलावर होने का मौका दिया, जो सभापति के तौर पर उनके रुख-रवैये से नाखुश रहता था। एक बार तो उसने सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ महाभियोग लाने की पहल कर दी थी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मा की पुकार

जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं, जब हम अनिर्णय की स्थिति में आ जाते हैं। ऐसे समय में यह तय करना कठिन हो जाता है कि हमें अगला कदम किस दिशा में उठाना चाहिए। इस संदर्भ में हमारे अंतस की ध्वनि सबसे प्रभावी मार्गदर्शक होती है। हमारा शरीर एक ऐसी परिसीमा है, जो दो भिन्न स्वरूपों वाले संसारों को अलग करती है। एक ओर वृहद बाह्य संसार है, जबकि दूसरी ओर एक सूक्ष्म जगत है, जिसे हम अंतस या अंतःकरण कहते हैं। जटिल समस्याओं में फंसने पर अंतस की ध्वनि हमारे लिए एक गुरु का कार्य करती है, बशर्ते कि हम उसे सुनने में सक्षम हों।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

बाह्य जगत की चकाचौंध और हलचलें इस ध्वनि को सुनने में बाधा डालती हैं। यह ध्वनि वास्तव में हमारे अंतरात्मा की पुकार होती है, जो तब उत्पन्न होती है जब हमारा मन एकाग्र, शांत और स्थिर होता है। मौन अवस्था में रहकर आत्मचिंतन करने का प्रयास करने पर हम इस ध्वनि से जुड़ सकते हैं। बाहरी कोलाहल से दूर होकर हमें अपने अंदर के सूक्ष्म जगत में उतरने का प्रयास करना होगा। जब यह ध्वनि हमारे पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करने लगती है, तो कठिन से कठिन राह भी आसान हो जाती है और हम तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगते हैं। अंतस की ध्वनि हमें आत्मप्रेम, आत्मचिंतन और आत्मपरिष्कार की ओर ले जाती है। इसके परिणामस्वरूप हम स्वयं से जुड़कर अपने अस्तित्व को जानने का प्रयास करने लगते हैं। यह अवस्था ही परम ज्ञान की अवस्था होती है। ध्यान, योग, साधना, एकांत, प्रकृति से जुड़ाव और अनावश्यक विचारों से मुक्ति जैसे तत्व हमें अपने अंतस की ध्वनि से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। अंतस की ध्वनि आत्मा का संनाद है, जो हमारे जीवन को दिशा देते हुए हमें आत्मबोध की ओर ले जाती है। अंतस की ध्वनि सुनना और समझना जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रेरणा अवस्थी

चिप निर्माण में जरूरी है आत्मनिर्भरता

रंजना मिश्रा

चिप आज के युग का तेल हैं, और उनकी आपूर्ति पर नियंत्रण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सर्वोपरि है

भारत की पहली 'मेड इन इंडिया' सेमीकंडक्टर चिप इसी वर्ष के अंत तक बनकर तैयार हो जाएगी। गुजरात के धोलेरा और सानंद से लेकर असम के मोरीगांव तक विशाल निर्माण स्थलों पर जो गतिविधि आज दिखाई दे रही है, वह भारत की महत्वाकांक्षा को साकार रूप दे रही है। केंद्र सरकार द्वारा सेमीकंडक्टर चिप निर्माण के लिए हाल में ओडिशा, पंजाब और आंध्र प्रदेश में चार और नई इकाइयों को दी गई मंजूरी भी इस बात का प्रमाण है कि यह प्रयास कुछ विशेष औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय मिशन का रूप ले चुका है।

अभी हम अरबों डालर के सेमीकंडक्टर चिप आयात करते हैं, जो हमारे व्यापार घाटे पर भारी बोझ डालता है। घरेलू उत्पादन न केवल इस आयात बिल को कम करेगा, बल्कि भारत को इलेक्ट्रानिक्स विनिर्माण का एक वैश्विक केंद्र बनने में भी मदद करेगा। जब चिप देश में बनेगी, तो मोबाइल फोन, लैपटाप, आटोमोबाइल, चिकित्सा उपकरण और डाटा सेंटर जैसे अनगिनत उद्योगों को एक नई गति मिलेगी। इससे न केवल उच्च-कौशल वाले रोजगार पैदा होंगे, बल्कि एक ऐसा नवाचार चक्र शुरू होगा, जो हमारी अर्थव्यवस्था को ज्ञान-आधारित और मूल्य-वर्धित विकास की ओर ले जाएगा। यह 'मेक इन इंडिया' की भावना का वास्तविक सार है, जहां हम केवल असेंबली लाइन बनाने के बजाय मूल्य श्रृंखला के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से पर अपनी पकड़ बना रहे हैं। आर्थिक आयामों से परे, इस मिशन का एक गहरा रणनीतिक और भू-राजनीतिक महत्व भी है। कोविड महामारी और वैश्विक भू-राजनीतिक तनावों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सेमीकंडक्टर चिप पर कुछ देशों की निर्भरता कितनी खतरनाक हो सकती है। चिप आज के युग का तेल हैं, और उनकी आपूर्ति पर नियंत्रण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सर्वोपरि है। अपनी स्वयं की विनिर्माण क्षमता विकसित करके, भारत न केवल अपनी आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित कर रहा है, बल्कि दुनिया को एक विश्वसनीय और लोकतांत्रिक विकल्प भी प्रदान कर रहा है। भविष्य के युद्ध और रक्षा प्रणालियां पूरी तरह से उन्नत चिप पर निर्भर होंगी, और इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हमारी संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने के लिए अनिवार्य है।

बेशक, यह यात्रा चुनौतियों से रहित नहीं है। सेमीकंडक्टर निर्माण दुनिया के सबसे जटिल और पूंजी-गहन उद्योगों में से एक है। इसके लिए निर्बाध बिजली, लाखों लीटर अति-शुद्ध जल और एक अत्यंत स्थिर नीतिगत वातावरण की आवश्यकता होती है। हमें फैब संचालन के लिए एक विशाल कुशल कार्यबल तैयार करना होगा, जो डिजाइन इंजीनियरिंग से एक अलग कौशल-सेट की मांग करता है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा भी बहुत कड़ी है, जहां अमेरिका, यूरोप और चीन जैसे देश भी इस क्षेत्र में अरबों डालर का निवेश कर रहे हैं। इसे देखते हुए भारत को इसमें अपने पैर जमाए रखने होंगे।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

ठोस प्रयास की जरूरत

'चुनौतियों से पार पाने का रास्ता' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का सारतत्व रेखांकित किया है। सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और शिक्षा के संदर्भ में लिखी जाने वाली भारत की नई इबारत से दुनिया हैरान है। विशेषकर अमेरिका जिसे पहलगाम आतंकी हमले के बाद 'आपरेशन सिंदूर' के तहत की गई भारत की त्वरित जवाबी कार्रवाई रास नहीं आई। वैश्विक पटल पर अत्यधिक सहनशील, अस्थिर और परमुखापेक्षी भारत की छवि ही अमेरिका और चीन जैसे दंभी देशों को भाती है। इसके लिए वह भारत के पड़ोसी दुश्मन देश पाकिस्तान की पीठ सहलाने में भी संकोच नहीं करते। आज भारत स्वदेशी के मंत्र से आत्मनिर्भर हो रहा है। अपनी आर्थिक सुदृढ़ता से वह विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। देश की शिक्षा भारतीयता के भाव-बोध से समन्वित हो रही है। गरीब देशों की श्रेणी में शुमार भारत के लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए हैं और उच्च स्तर पर होने वाले आर्थिक घोटालों से देश मुक्त हुआ है। फिर भी विकसित और स्वावलंबी भारत के लिए अभी बहुत कुछ करना होगा। निचले स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, कामचोरी और बढ़ती जनसंख्या का दबाव देश के विकास में बाधक है। स्वार्थी जनमानस में 'राष्ट्र सर्वोपरि' के भाव-बोध का अभाव है। इसके लिए हमें 'व्यक्ति निर्माण' के कार्य को गति देनी होगी। शिक्षित और संस्कारी परिवारों के माध्यम से सामर्थ्यवान स्वावलंबी समाज खड़ा करना होगा। देश की किशोरवय पीढ़ी में शिक्षा के माध्यम से सेवा, संस्कार और भारतीयता के भाव-बोध का बीजारोपण करना होगा। ऐसे ही ठोस प्रयास से भारतीयता से समन्वित स्वावलंबी भारत का निर्माण संभव है।

pandeyvp1960@gmail.com

मेलबाक्स

तमिल विरासत का संवर्धन

भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने महाराष्ट्र के वर्तमान राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुनकर दक्षिणी राज्यों में अपनी पकड़ मजबूत करने का एक सराहनीय प्रयास किया है। आरएसएस और भाजपा के प्रति समर्पित व्यक्ति को नामित करना मोदी सरकार के पक्ष में एक समझदारी भरा और परिपक्व राजनीतिक निर्णय है। चूंकि एनडीए के पास संसद में बहुमत है और वह जीत की दहलीज पर रहा है, इसलिए विपक्ष अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने की स्थिति में नहीं हो सकता है। उपराष्ट्रपति चुनाव में सत्तारूढ़ दल के सर्वसम्मति के संकेत को स्वीकार करना विपक्षी दलों के हित में है। ऐसा लगता है कि भाजपा ने सोच-समझकर ऐसे व्यक्तित्व का चयन किया है, जो आरएसएस के आंतरिक और भाजपा शासित राज्यों के साथ-साथ अन्य राज्यों में भी सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने की मिसाल कायम कर सके। एनडीए को सीपी राधाकृष्णन के चेहरे का फायदा उठाना चाहिए।

युगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

विपक्ष का कैसा रवैया

राहुल गांधी हिट, हर्ट एवरीवन एंड रन की नीति पर चलते हैं। जिसके पीछे पड़ जाते हैं बहुत दूर और बहुत देर तक पीछा करते हैं। ताजा नंबर चुनाव आयोग का है। लगातार ईवीएम का मुद्दा उठाया। फिर बिहार में एसआइआर को लेकर संसद के भीतर बाहर हंगामा करवाया। अब ताजा मामला वोट चोरी का है। इसे लेकर तो यात्रा भी निकाली जा रही है। इनके तथ्यहीन, तत्वहीन और तर्क हीन आरोपों का चुनाव आयोग ने बहुत ही शालीन शैली में प्रेस कांफ्रेंस कर ब्योरे वार जवाब दिया। अब चुनाव आयोग ने सारे आरोपों को बाकायदा कानून की धाराएं बताते हुए राहुल गांधी से शपथपत्र के साथ अपनी बातें रखने को कहा है, या देश से माफी मांगने के लिए कहा है। विपक्षी दल किसी का भी अमर्यादित भाषा में मानमर्दन के लिए हमेशा तत्पर हैं। वह सेना तक का मानमर्दन कर चुके हैं। चुनाव आयोग को तुरंत मानहानि एवं धमकी देने का केस दायर करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है।

सीपी बंसल, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : response@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

संपादकीय जागरण

(8) मंगलवार, 19 अगस्त, 2025 : भाद्रपद कृष्ण - 11 वि. 2082

कठोर शब्द खड्ग से भी तीक्ष्ण होते हैं

सुप्रीम कोर्ट का सही सवाल

केरल में एक व्यक्ति के जाम में फंसने और फिर भी टोल देने के मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण यानी एनएचएआइ से यह सही सवाल पूछा कि अगर घंटों जाम में फंस रहे हैं तो फिर टोल क्यों दें? सुप्रीम कोर्ट को इस मामले की सुनवाई इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि केरल हाई कोर्ट ने इसी प्रकरण पर आदेश देते हुए यही कहा था कि आखिर ऐसे किसी व्यक्ति को टोल क्यों देना चाहिए, जो 11-12 घंटे जाम में फंसा हो? यह आश्चर्य की बात है कि एनएचएआइ को केरल हाई कोर्ट का यह फैसला रास नहीं आया और उसने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना बेहतर समझा। समझना कठिन है कि एनएचएआइ इस मामले में हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट क्यों पहुंचा? इस प्रश्न पर भारत सरकार और विशेष रूप से राजमार्ग मंत्रालय को गंभीरता से विचार करना चाहिए। क्या वह यह चाहता है कि लोग घंटों जाम में फंसे रहें, समय एवं ईंधन जाया करें और फिर भी टोल के रूप में पैसे चुकाएं? यह तो एक तरह की जबरदस्ती है। राष्ट्रीय राजमार्ग हों या फिर प्रांतीय राजमार्ग अथवा अन्य सड़कें, यदि किसी सड़क पर घंटों जाम लगता है तो फिर लोगों से निर्धारित टोल लेने के बजाय उन्हें राहत दी जानी चाहिए। यह सही है कि सड़कें आर्थिक विकास का माध्यम हैं और देश की प्रगति के लिए अच्छी सड़कें चाहिए तथा उनका निर्माण एवं रखरखाव तभी संभव है, जब उन पर चलने वाले वाहन चालकों से टोल लिया जाए। ऐसा ही किया जा रहा है। इसमें हर्ज नहीं, लेकिन इसकी अनदेखी की जा रही है कि सड़कों पर जाम तो नहीं लग रहा है और मिनटों का सफर घंटों में तो नहीं तय हो रहा है? बात केवल उन सड़कों पर लगने वाले जाम की ही नहीं है, जिन पर टोल वसूला जाता है। देश भर में तमाम ऐसी सड़कों पर भी जाम लगता है, जिन पर टोल वसूली नहीं होती। ये सड़कें भी लोगों के पैसे से ही बनती हैं। जाम से लोगों के कीमती वक्त की बर्बादी तो होती ही है, लाखों लीटर पेट्रोलियम पदार्थ भी बर्बाद होता है। यह उस संसाधन की बर्बादी है, जिसे आयात किया जाता है और जिस पर अच्छी-खासी विदेशी मुद्रा खर्च होती है। होना तो यह चाहिए कि एनएचएआइ जाम विहीन यातायात सुनिश्चित करने के लिए सक्रियता दिखाए। यदि वह ऐसा करे तो राज्य सरकारें और उनकी एजेंसियां भी सक्रिय होंगी। यदि वही उलटी गंगा बहाएगा तो बात कैसे बनेगी? यह निराशाजनक है कि राजमार्गों एवं अन्य सड़कों के बेहतर निर्माण एवं रखरखाव और टोल वसूली की प्रक्रिया के सुगम तथा सुविधाजनक होने के दावे लोगों का मुंह चिढ़ाते दिखते हैं। आखिर इन दावों पर खरा उतरना इतना कठिन क्यों है?

नई पीढ़ी और उद्यमशीलता

बिहार में अपेक्षाकृत उद्योगों की कमी है। वर्तमान समय में अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए जरूरी है कि नवाचारयुक्त उद्यम को प्रोत्साहन दिया जाए। राज्य सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है। साथ ही निजी क्षेत्र में उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष आर्थिक पैकेज देने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार यह घोषणा कर चुके हैं कि अगले छह महीने में निजी क्षेत्र में उद्योग लगाने वाले उद्यमियों को कैपिटल सब्सिडी, ब्याज सब्सिडी तथा जीएसटी के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि को दोगुना किया जाएगा। रोजगार सृजन पर जोर देते हुए कहा है कि जो उद्योग ज्यादा से ज्यादा रोजगार देंगे उन्हें जमीन भी निःशुल्क दी जाएगी। निश्चित रूप से ऐसे प्रोत्साहन से उद्यमियों को लाभ मिलेगा और वे बिहार में उद्योग लगाने के प्रति आकर्षित होंगे। यह भी जरूरी है कि राज्य के लोगों में उद्यम के प्रति आकर्षण पैदा हो। यह तभी संभव है जब लोगों को इसका महत्व समझ में आने लगे। अब शिक्षा विभाग की ओर से राज्य में सातवीं से बारहवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं को जीवन कौशल, डिजिटल स्किल तथा सतत उद्यमिता सिखाने के उद्देश्य से साप्ताहिक दो-दिवसीय माड्यूल संचालित किया जाएगा। इस प्रयास से नई पीढ़ी में उद्यम के प्रति समझ बढ़ेगी। आगे चलकर इनमें से कई युवा उद्यमी के रूप में स्वयं को स्थापित करना चाहेंगे। यह सराहनीय प्रयास है।

> उद्यम के प्रति नई पीढ़ी में आकर्षण पैदा करने के लिए जरूरी है कि छात्र जीवन से ही इसके महत्व को बताया जाए।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या मुख्य चुनाव आयुक्त का कहना सही है कि राहुल गांधी या तो हलफनामा दें या माफी मांगे?

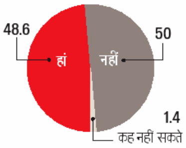

आज का सवाल

क्या सीपी राधाकृष्णन के उपराष्ट्रपति बनने से भाजपा को तमिलनाडु में राजनीतिक लाभ मिलेगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

शिक्षा में इतिहास या राजनीति

राजीव शुक्ला

वास्तविकता है कि कांग्रेस ने विभाजन की मांग कभी नहीं की। उसने तो विभाजन का विरोध किया। भारत विभाजन तो मुस्लिम लीग और जिन्ना का एजेंडा था

भारत पर शासन के दौरान 1905 में जब अंग्रेजों ने बंगाल का पहला विभाजन किया तो शायद ही किसी ने सोचा होगा कि वही बीज एक दिन पाकिस्तान के रूप में धरती के मानचित्र पर अंकित होगा। यह औपनिवेशिक सत्ता की ''बांटो और राज करो'' की नीति का परिणाम था। इस नीति ने धीरे-धीरे पूरे उपमहाद्वीप को सांप्रदायिक आधार पर बांटने की राह तैयार की। विडंबना यह है कि 21वीं सदी में भी उसी नीति को अलग-अलग तरीकों से भुनाने की कोशिश की जा रही है। एनसीईआरटी का विशेष माड्यूल ''विभाजन की त्रासदी'' इसी प्रवृत्ति की एक कड़ी प्रतीत होता है। इसमें जिन्ना और माउंटबेटन के साथ-साथ कांग्रेस को भी भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार ठहराने का प्रयास किया गया है। समझना कठिन है कि आखिर ऐसा क्यों किया गया और इससे किसके हित सधेंगे?

यह सच है कि विभाजन भारतीय इतिहास की सबसे भीषण त्रासदियों में से एक था। भारत विभाजन में लाखों लोग मारे गए, करोड़ों विस्थापित हुए और सामाजिक ताने-बाने को गहरी चोट पहुंची। इसी के साथ यह भी उतना ही सच है कि भारत के दुर्भाग्यपूर्ण और त्रासदी विभाजन का कारण केवल कुछ नेताओं के व्यक्तिगत निर्णय नहीं थे, बल्कि दशकों से पनप रही औपनिवेशिक नीतियां, सांप्रदायिक राजनीति और लंबे समय से चले आ रहे किस्म-किस्म के सामाजिक तनाव का नतीजा थे। ऐसे जटिल ऐतिहासिक प्रसंगों का खतरनाक ढंग से सरलीकरण करके जिन्ना और माउंटबेटन के साथ कांग्रेस के माथे पर ठीकरा फोड़ना न केवल अन्याय है, बल्कि इतिहास को वर्तमान की राजनीति के हिसाब से मोड़ने का दुस्साहस भी है। इसका प्रतिकार किया जाना चाहिए। इतिहास वैसा ही पेश किया जाना चाहिए, जैसा घटित हुआ हो। इतिहास का मतलब ही है कि ऐसा हुआ था।

यह एक वास्तविकता है कि कांग्रेस ने विभाजन की मांग कभी नहीं की। उसने तो विभाजन का विरोध किया और उसे रोकने के लिए भरसक प्रयत्न भी किए। भारत विभाजन तो मुस्लिम लीग और जिन्ना का एजेंडा था। अंग्रेजों ने भी इसे प्रोत्साहन दिया, क्योंकि उनका उद्देश्य भारत को कमजोर करके यहां लंबे समय तक शासन करना था। इसके अलावा वे भारत का विभाजन इसलिए भी करना चाहते थे, ताकि उससे अलग होकर बने देश यानी पाकिस्तान में अपनी चला सकें। साल 1909 के चुनावों में अलग निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था हो या 1932 का कम्युनल अवार्ड, हर कदम पर ब्रिटिश शासन ने हिंदू-मुस्लिम एकता को चोट पहुंचाने का काम किया।

अवधेश राजपूत

अंग्रेज हिंदुओं और मुसलमानों के रिश्तों में दरार डालने के काम करते ही रहते थे, ताकि उन्हें भारत पर शासन करने में आसानी हो। कांग्रेस लगातार राष्ट्रीय एकता की बात करती रही, लेकिन जब 1940 के दशक में सांप्रदायिक तनाव चरम पर पहुंच गया, तब उसके पास समझौते के अलावा कोई विकल्प शेष नहीं बचा। अच्छा होता कि आज लोग उस समय की परिस्थितियों को समझें। कहा भी जाता है कि देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से चलना चाहिए।

इस बात को सदैव ध्यान में रखा जाए तो अच्छा कि 1946-47 का भारत आज के लोकतांत्रिक भारत से बिल्कुल अलग था। उस समय 500 से अधिक रियासतें थीं, जिनकी अपनी-अपनी आकांक्षाएं और सोच थी। बंगाल, पंजाब और बिहार में भयंकर दंगे भड़क चुके थे। सांप्रदायिक तनाव इतना बढ़ चुका था कि हर दिन हजारों निर्दोष लोग मारे जा रहे थे। ऐसे में देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में कांग्रेस के सामने दो ही रास्ते थे-या तो विभाजन स्वीकार कर देश को आगे बढ़ने दें या फिर विभाजन रोकने की कोशिश में पूरे उपमहाद्वीप को खून-खराबे में झोंक दें। इतिहास गवाह है कि कांग्रेस ने पहला रास्ता चुना और भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूत नींव दी। इसे उन लोगों को समझना चाहिए, जो विभाजन के लिए कांग्रेस को दोषी ठहराने के लिए तरह-तरह के सुविधाजनक तर्क पेश करते रहते हैं। यह कहना आसान है कि कांग्रेस ने भारत विभाजन को स्वीकार कर गलती की। इसी तरह यह कहना भी भूल होगी कि उस दौर में नेताओं के सामने और कोई विकल्प उपलब्ध था।

महात्मा गांधी जैसे नेता भी विभाजन के सख्त खिलाफ थे, लेकिन जब लाखों लोगों की जान दांव पर लगी थी, तब समझौते को ही व्यावहारिक रास्ता माना गया। कांग्रेस का लक्ष्य सत्ता पाना नहीं, बल्कि देश को भीषण गृहयुद्ध की आग से बचाना था। आज 79 साल बाद सुरक्षित माहौल में बैठकर विभाजन के दौर की विवशताओं को अनदेखा करना आसान है, लेकिन यह समझना जरूरी है कि यदि उस समय कांग्रेस ने विभाजन स्वीकार न किया होता तो शायद हालात और भी भयावह होते। ऐसे में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कांग्रेस ने कठिन, मगर आवश्यक निर्णय लिया, ताकि भारत का भविष्य बचाया जा सके।

एनसीईआरटी का माड्यूल इतिहास की जटिलताओं को सरलीकृत करके वर्तमान की राजनीति के लिए इस्तेमाल करने का प्रयास है। इस नए माड्यूल को भले ही किसी कक्षा में पाठ के तौर पर न पढ़ाया जाए, लेकिन आखिर इसे पूरक शैक्षिक सामग्री के तौर पर पेश करने और उसमें विभाजन के लिए जिन्ना और माउंटबेटन के साथ कांग्रेस को भी जिम्मेदार ठहराने का क्या मतलब? सत्ता चाहे कितनी भी ताकतवर क्यों न हो, इतिहास बदलने की कोशिश हमेशा अधूरी और संदिग्ध रहती है। वास्तविक इतिहास हमें यही सिखाता है कि भारत का विभाजन औपनिवेशिक नीतियों और जिन्ना की सांप्रदायिक राजनीति का परिणाम था, न कि कांग्रेस की महत्वाकांक्षा का। इसलिए यह आवश्यक है कि इतिहास को न्यायपूर्ण और संतुलित दृष्टि से पढ़ाएं। विभाजन के पन्नों से सीखकर हमें आगे बढ़ना चाहिए, न कि उन्हें आज की राजनीति का हथियार बनाना चाहिए। कांग्रेस को दोषी ठहराना आसान है, लेकिन सच्चाई यही है कि उसने उस दौर में देश की एकता और भविष्य की रक्षा के लिए कठिन निर्णय लिया। इतिहास का मूल्यांकन उसी समय की परिस्थितियों के आलोक में होना चाहिए, न कि आज की राजनीतिक सुविधा के आधार पर।

(लेखक कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं)

response@jagran.com

कई हित सधेंगे सीपी राधाकृष्णन से

उमेश चतुर्वेदी

भाजपा को ओबीसी समाज के सीपी राधाकृष्णन के उपराष्ट्रपति बनने का लाभ दक्षिण के राज्यों में भी मिल सकता है

भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने चंद्रपुरम पोन्नुस्वामी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया है। इनकी चर्चा तमिलनाडु के मोदी के रूप में भी होती है। तमिलनाडु में सीपीआर के नाम से चर्चित सीपी राधाकृष्णन 2013 में एक तमिल चैनल के डिबेट में तब शामिल हुए थे, जब नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बनाए जाने पर बहस हो रही थीं। उस चर्चा में तमिलनाडु के मोदी के रूप में उनका परिचय दिया गया था। उपराष्ट्रपति के प्रत्याशी के रूप में उनका चयन कर भाजपा ने एक साथ कई राजनीतिक लक्ष्य साधे हैं। भाजपा को उनके उपराष्ट्रपति बनने का लाभ तमिलनाडु के साथ दक्षिण के अन्य राज्यों में भी मिल सकता है। चूंकि वह ओबीसी हैं, इसलिए तमिलनाडु में डीएमके की ओबीसी केंद्रित राजनीति को जवाब देने में तो आसानी होगी ही, ओबीसी कार्ड खेल रहे राहुल गांधी का मुकाबला करने में भी सुविधा रहेगी।

इसे संयोग कहें या कुछ और, देश के शीर्ष दो पदों पर विराजमान हस्तियों का नाता झारखंड से रहा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु देश के सर्वोच्च पद पर चुने जाने से पहले झारखंड की राज्यपाल रहीं और देश के उपराष्ट्रपति बनने जा रहे सीपी राधाकृष्णन भी इस राज्य के राज्यपाल रहे हैं। इन दिनों वे महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं। वे झारखंड के साथ ही तेलंगाना के राज्यपाल और पुदुचेरी के उपराज्यपाल का भी अतिरिक्त कार्यभार संभाल चुके हैं। मोदी-शाह का उन पर भरोसा कितना है, इसे इससे समझा जा सकता है कि उन्हें एक समय एक साथ तीन-तीन राज्यों के राज्यपालों की जिम्मेदारी थमाई गई थी।

सीपी राधाकृष्णन उत्तर भारत के भाजपा के राजनीतिक गलियारे में राधा जी के नाम से जाने जाते हैं। तमिलनाडु की कोयंबटूर लोकसभा सीट से 1998 और 1999 के आम चुनावों में भाजपा के टिकट पर सांसद चुने गए सीपी राधाकृष्णन ने स्कूली जीवन से ही जनसंघ का दामन थाम लिया था। हालांकि एक दौर में वे तमिल राजनीति में अन्नाद्रमुक के करीब माने जाते थे। उनके तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं से मधुर संबंध हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव में डीएमके भी उनकी उम्मीदवारी का विरोध करना कठिन हो सकता है। इसका कारण तमिल अस्मिता की राजनीति है। तमिल अस्मिता की राजनीति करने वाले मुख्यमंत्री स्टालिन के लिए सीपीआर का विरोध करना आसान नहीं होगा। इस समय लोकसभा में डीएमके के 22 और राज्यसभा में 10 सदस्य हैं। हालांकि डीएमके ने केंद्र सरकार के खिलाफ भाषा, नई शिक्षा नीति और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के खिलाफ जिस तरह मोर्चा खोल रखा है, उसकी वजह से इसमें संदेह है कि वह सीपीआर के पक्ष में खुलकर खड़ी होगी।

पीएम मोदी के साथ सीपी राधाकृष्णन ● फाइल

सीपीआर के पिता बताते थे कि उनके पूर्वज उत्तर भारत से ही मीनाक्षीपुरम में व्यापार के लिए आए और फिर वहीं के होकर रह गए। वे अपना संबंध उत्तर भारत के मारवाड़ी और वैश्य बिरादरी से जुड़ा बताते थे। इस नाते कह सकते हैं कि राधाकृष्णन का नाता उत्तर भारत से भी है। सीपी राधाकृष्णन के एक रिश्तेदार कांग्रेस के सांसद रहे। वह तमिलनाडु भाजपा के 2004 से 2007 तक अध्यक्ष भी रहे। इस दौरान उन्होंने पूरे राज्य का दौरा किया था। इसके जरिए उन्होंने तमिलनाडु भाजपा में नया उत्साह भरने की भरपूर कोशिश की थी।

वर्ष 2004 और 2014 के आम चुनावों में सीपी राधाकृष्णन को सफलता नहीं मिली, जबकि 2009 के आम चुनावों में उन्होंने हिस्सा नहीं लिया था। 2014 की प्रचंड मोदी लहर में उन्हें जीत का पूरा भरोसा था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। इसके बाद 2016 में उन्हें राष्ट्रीय केयर बोर्ड का चेयरमैन बनाया गया। सांसद रहते वक्त स्टाक एक्सचेंज घोटाले की जांच करने वाली संसदीय समिति और प्रेस परिषद में लोकसभा के प्रतिनिधि सदस्य रहे राधाकृष्णन को भाजपा ने 2020 में केरल का प्रभारी बनाया था।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

उन्होंने झारखंड का राज्यपाल रहते समय भी पूरे राज्य का दौरा किया था और जनता की समस्याएं सुनीं। सीपीआर राज्य की कौंडर जाति से आते हैं, जो अन्य पिछड़ा समाज में आती है। इस जाति विशेष का बड़ा आधार तमिलनाडु में नहीं है, लेकिन राज्य में वह भाजपा का मजबूत वोटबैंक है। सीपीआर के जरिए भाजपा ने तमिलनाडु में अपने आधार वोटबैंक को संदेश देने की भी कोशिश की है। इसके अलावा तमिल नाडु की जनता को भी यह संदेश दिया गया है कि भाजपा राज्य को विशेष महत्व देती है। जब वह पहली बार राज्यपाल बनाए गए थे, तब सक्रिय राजनीति से दूरी का अंदेशा उन्हें निराश कर रहा था, लेकिन नियति ने कुछ और ही रच दिया है। उनका उपराष्ट्रपति बनना लगभग तय है। उपराष्ट्रपति के साथ राज्यसभा के सभापति के रूप में उनके पास बड़ी जिम्मेदारी होगी। इस दायित्व में सक्रियता की खूब गुंजाइश है। ध्यान रहे कि वे ऐसे समय उपराष्ट्रपति बनेंगे, जब जगदीप धनखड़ ने अचानक इस्तीफा देकर भाजपा के लिए समस्या खड़ी करने का काम किया और उस विपक्ष को हमलावर होने का मौका दिया, जो सभापति के तौर पर उनके रुख-रवैये से नाखुश रहता था। एक बार तो उसने सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ महाभियोग लाने की पहल कर दी थी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मा की पुकार

हमारे जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं, जब हम अनिश्चितता और अनिर्णय की स्थिति में आ जाते हैं। ऐसे समय में यह तय करना कठिन हो जाता है कि हमें अगला कदम किस दिशा में उठाना चाहिए। इस संदर्भ में हमारे अंतस की ध्वनि सबसे प्रभावी मार्गदर्शक होती है। हमारा शरीर एक ऐसी परिसीमा है, जो दो भिन्न स्वरूपों वाले संसारों को अलग करती है। एक ओर वृहद बाह्य संसार है, जबकि दूसरी ओर एक सूक्ष्म जगत है, जिसे हम अंतस या अंतःकरण कहते हैं। जटिल समस्याओं में फंसने पर अंतस की ध्वनि हमारे लिए एक गुरु का कार्य करती है, बशर्ते कि हम उसे सुनने में सक्षम हों।

बाह्य जगत की चकाचौंध और हलचलें इस ध्वनि को सुनने में बाधा डालती हैं। यह ध्वनि वास्तव में हमारे अंतरात्मा की पुकार होती है, जो तब उत्पन्न होती है जब हमारा मन एकाग्र, शांत और स्थिर होता है। मौन अवस्था में रहकर आत्मचिंतन करने का प्रयास करने पर हम इस ध्वनि से जुड़ सकते हैं। बाहरी कोलाहल से दूर होकर हमें अपने अंदर के सूक्ष्म जगत में उतरने का प्रयास करना होगा। जब यह ध्वनि हमारे पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करने लगती है, तो कठिन से कठिन राह भी आसान हो जाती है और हम तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगते हैं।

अंतस की ध्वनि हमें आत्मप्रेम, आत्मचिंतन और आत्मपरिष्कार की ओर ले जाती है। इसके परिणामस्वरूप हम स्वयं से जुड़कर अपने अस्तित्व को जानने का प्रयास करने लगते हैं। यह अवस्था ही परम ज्ञान की अवस्था होती है। ध्यान, योग, साधना, एकांत, प्रकृति से जुड़ाव और अनावश्यक विचारों से मुक्ति जैसे तत्व हमें अपने अंतस की ध्वनि से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। अंतस की ध्वनि आत्मा का संनाद है, जो हमारे जीवन को दिशा देते हुए हमें आत्मबोध की ओर ले जाती है। अंतस की ध्वनि सुनना और समझना जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रेरणा अवस्थी

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

ठोस प्रयास की जरूरत

'चुनौतियों से पार पाने का रास्ता' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का सारतत्व रेखांकित किया है। सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और शिक्षा के संदर्भ में लिखी जाने वाली भारत की नई इबारत से दुनिया हैरान है। विशेषकर अमेरिका जिसे पहलगाम आतंकी हमले के बाद 'आपरेशन सिंदूर' के तहत की गई भारत की त्वरित जवाबी कार्रवाई रास नहीं आई। वैश्विक पटल पर अत्यधिक सहनशील, अस्थिर और परमुखापेक्षी भारत की छवि ही अमेरिका और चीन जैसे दंभी देशों को भाती है। इसके लिए वह भारत के पड़ोसी दुश्मन देश पाकिस्तान की पीठ सहलाने में भी संकोच नहीं करते। आज भारत स्वदेशी के मंत्र से आत्मनिर्भर हो रहा है। अपनी आर्थिक सुदृढ़ता से वह विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। देश की शिक्षा भारतीयता के भाव-बोध से समन्वित हो रही है। गरीब देशों की श्रेणी में शुमार भारत के लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए हैं और उच्च स्तर पर होने वाले आर्थिक घोटालों से देश मुक्त हुआ है। फिर भी विकसित और स्वावलंबी भारत के लिए अभी बहुत कुछ करना होगा। निचले स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, कामचोरी और बढ़ती जनसंख्या का दबाव देश के विकास में बाधक है। स्वार्थी जनमानस में 'राष्ट्र सर्वोपरि' के भाव-बोध का अभाव है। इसके लिए हमें 'व्यक्ति निर्माण' के कार्य को गति देनी होगी। शिक्षित और संस्कारी परिवारों के माध्यम से सामर्थ्यवान स्वावलंबी समाज खड़ा करना होगा। देश की किशोरवय पीढ़ी में शिक्षा के माध्यम से सेवा, संस्कार और भारतीयता के भाव-बोध का बीजारोपण करना होगा। ऐसे ही ठोस प्रयास से भारतीयता से समन्वित स्वावलंबी भारत का निर्माण संभव है।

pandeyvp1960@gmail.com

पुतिन की सधी चाल

शिवकांत शर्मा द्वारा लिखित आलेख 'अपनी ही बिसात पर मात खा गए ट्रंप' पढ़ा। गत साढ़े तीन वर्षों से रूस-यूक्रेन युद्ध जारी है। सत्ता में आने के उपरांत ट्रंप इस युद्ध को बंद कराने का दावा कर रहे थे, लेकिन आज भी यह युद्ध जारी है। ट्रंप और पुतिन की मुलाकात पर दुनिया भर की निगाहें टिकी हुई थीं, लेकिन पुतिन की सधी हुई कूटनीतिक चाल में ट्रंप फंस गए और यह वार्ता बेनतीजा रही। पुतिन अमेरिका द्वारा और अधिक आर्थिक प्रतिबंध को कुछ समय के लिए टालने में सफल रहे। पुतिन इस युद्ध में यूक्रेन से कब्जा की हुई भूमि को रूस में मिलाना चाहते हैं, लेकिन यह यूक्रेन एवं अमेरिका को भी मंजूर नहीं है। ट्रंप की नीतियों से अमेरिकी प्रशासन उलझा हुआ है। दुनिया भर में अमेरिका की साख घट रही है। इधर, ट्रंप ने रूस-यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि में भारत पर भारी टैरिफ लगाकर नया मोर्चा खोल दिया है। जिसका अंततः नुकसान अमेरिका को ही भुगतना पड़ सकता है।

ई हिमांशु शेखर, केसपा, गयाजी

आयोग के लिए पक्ष-विपक्ष नहीं

संपादकीय आलेख 'सुप्रीम कोर्ट हस्तक्षेप करे' में देश की संवैधानिक संस्था चुनाव आयोग पर बार-बार अनाप-शनाप आरोप लगाने वाले सदन के नेता राहुल गांधी पर शिकंजा कसने की सुप्रीम कोर्ट से की गई अपील सराहनीय है। सत्ता से बेदखल कांग्रेस पुनः सत्ता में वापसी करने के लिए हर संभव प्रयास करती दिख रही है। 'ईवीएम मशीन को हैक कर लिया गया है' और अब 'वोट की चोरी' का आरोप लगाने वाले नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को चुनाव आयोग द्वारा निराधार आरोपों के संदर्भ में शपथपत्र देने या सात दिनों के अंदर देश से माफी मांगने का निर्देश मिलने पर पूरा विपक्ष उबाल पर है। जब से आयोग ने बिहार में विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा की है, तभी से लगाए जा रहे आरोपों पर चुनाव आयोग ने कहा-पिछले 20 वर्षों में एसआइआर प्रक्रिया नहीं की गई थी। देश में 10 से ज्यादा बार एसआइआर प्रक्रिया अपनाई जा चुकी है। एसआइआर का उद्देश्य मतदाता सूची का शुद्धिकरण है। संविधान के अनुसार केवल भारतीय नागरिक ही लोकसभा और विधानसभा चुनाव में मतदान कर सकते हैं। अन्य देशों के लोगों को यह अधिकार नहीं है। हर राजनीतिक दल का जन्म चुनाव आयोग में पंजीकरण से ही होता है। ऐसे में चुनाव आयोग दलों के बीच भेदभाव कैसे कर सकता है।

युगल किशोर राही, छपरा, बिहार

पोस्ट

जीएसटी में कटौती के साथ-साथ मुनाफाखोरी-रोधी कानून को भी फिर से लागू किया जाना चाहिए। यह कंपनियों को अपने फायदे के लिए कीमतें बढ़ाने से रोकता है। जीएसटी में कटौती का लाभ अनिवार्य रूप से उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाना चाहिए।

आदित्य शाह@AdityaD_Shah

अगर राहुल गांधी कहते हैं कि बारिश हो रही है और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार कहते हैं कि धूप खिली है, तो आपका काम खिड़की से बाहर देखना और सही स्थिति पता कर बताना है कि कौन गलत है। कमलेश सिंह@kamleshksingh

अमित शाह के साथ ज्ञानेश कुमार की तस्वीरें डालकर कहा जा रहा है कि मुख्य चुनाव आयुक्त निष्पक्ष कैसे हो सकते हैं? यह आपत्तिजनक है। अधिकारी अलग-अलग समय अलग-अलग सरकारों के साथ काम करते हैं।

सुकेश रंजन@RanjanSukesh

राष्ट्रपति और राज्यपालों पर समय सीमा उन मामलों में तय करना उचित है, जिनमें लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकारों के कार्य बाधित होते हों, अन्य पर नहीं। मध्य-मार्ग! आरके विज@ipsvijrk

जनपथ

पंगा ले आयोग से उलझे 'राजकुमार',
बड़बोलेपन में करें ये त्रुटि बारम्बार।
ये त्रुटि बारम्बार और फिर मांगें माफी,
पर माफी इस बार न होगी बिल्कुल काफी।
बोल-बोल कर झूठ कराना चाहें दंगा,
तगड़ा एक्शन होय करे जो ऐसा पंगा!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प.बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 26 अंक 128

****

कल्पमेधा

दुनिया में अगर केवल खुशियां ही खुशियां हों, तो हम बहादुर होना और धैर्यवान होना कभी भी सीख ही नहीं सकते।

– हेलेन केलर

आपदा का दायरा

मौसम की अपनी गति होती है और सामान्य स्थितियों में वह पारिस्थितिकी चक्र को बनाए रखने का एक जरूरी हिस्सा होती है। मगर पिछले कुछ समय से इसके स्वरूप में तेजी से बदलाव दर्ज किया जा रहा है और खासतौर पर बारिश की वजह से होने वाली तबाही की तस्वीर ज्यादा बिगड़ती जा रही है। यों हर वर्ष मानसून के पूरे मौसम में बारिश की वजह से देश के ज्यादातर हिस्से कम या ज्यादा प्रभावित होते हैं, लेकिन कई बार ऐसा लगता है कि बरसात अब बेलगाम हो रही है और तबाही का सिलसिला-सा बनता जा रहा है। पिछले दिनों उत्तराखंड के धराली और हर्षिल में, फिर जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में बादल फटने और उससे हुई जानमाल की भारी तबाही की जैसी घटनाएं हुई, उन्होंने देश के बाकी हिस्सों के लोगों को भी दहला दिया। अब कश्मीर के कठुआ में भी बादल फटने और भूस्खलन की घटना में सात लोगों की जान चली गई। दूसरी ओर, मुंबई में लगातार तीन दिन की बारिश के बाद हालत यह हो गई, मानो शहर में बाढ़ आ गई हो। वहां कई इलाकों में जलभराव की वजह से जनजीवन पूरी तरह बाधित हो गया, कई जिलों में चेतावनी जारी कर दी गई है। वहीं मराठवाड़ा क्षेत्र में बादल फटने की घटना में नांदेड़ के पांच लोगों के लापता होने की खबर आई।

इसी तरह, हिमाचल प्रदेश के मंडी सहित कई इलाकों में जिस तरह लगातार बार-बार बादल फटने की घटनाएं सामने आ रही हैं, उससे समूची स्थानीय आबादी के सामने किसी तरह खुद को बचाने की चुनौती खड़ी हो रही है। यह समझना मुश्किल हो रहा है कि कम या ज्यादा बरसात वाले जिस मानसून को देश की खेती-किसानी के लिए एक जरूरत के तौर पर देखा जाता था, अब वह कई राज्यों में व्यापक तबाही का कारण क्यों बन रहा है। कई इलाकों में अब बारिश के समांतर बादल फटने की घटना में भी इतनी तेजी से बढ़ोतरी क्यों देखी जा रही है? दूसरी ओर, कई शहरों में एक-दो घंटे की बरसात में ही सब कुछ ठहर-सा जाता है और चारों ओर बाढ़ का दृश्य बन जाता है। यह निश्चित रूप से अनियोजित शहरी विकास का नतीजा है, जहां बहुत अच्छी सड़कें तो बना दी जाती हैं, लेकिन पानी के निकास का उचित और पर्याप्त इंतजाम नहीं किया जाता है। नतीजतन, दिल्ली जैसे महानगर का बड़ा हिस्सा कुछ देर की घनघोर बरसात में ही जलभराव, सड़क जाम से त्रस्त हो जाता है और पेड़ों के गिरने से होने वाले जानमाल के नुकसान की अनेक घटनाएं सामने आती हैं।

हालांकि समूची दुनिया में मौसम के बिगड़ते स्वरूप को लेकर चिंता जताई जा रही है और इसे वैश्विक तापमान का नतीजा माना जा रहा है। इस मसले पर वैज्ञानिक अध्ययनों में बारिश के बेलगाम होने और उससे तबाही की मूल वजहों की खोज की जा सकेगी और फिर उसी मुताबिक उसका सामना करने के उपाय भी ढूंढ़े जाएंगे। प्राकृतिक आपदाओं को शायद रोका नहीं जा सकता है, लेकिन उससे बचाव के उचित इंतजाम किए जाएं, तो तबाही से जानमाल के नुकसान को कम जरूर किया जा सकता है। विडंबना यह है कि पहाड़ी इलाकों में नदियों के किनारे आबादी बस जाती है, पर्यटन के लिहाज से बड़े होटल बना लिए जाते हैं, लेकिन इस बात का खयाल रखना जरूरी नहीं समझा जाता कि अगर कभी मौसम की वजह से नदी का रुख बिगड़ा तो उससे बचना कैसे मुमकिन होगा। जरूरत इस बात की है कि प्रकृति और मौसम के चक्र को लेकर एक गंभीर समझ बनाई जाए और उसी अनुकूल जीवनशैली को विकसित किया जाए।

शब्दों की मर्यादा

विचारों की अभिव्यक्ति में भी एक मर्यादा होती है। बात जब जनप्रतिनिधियों की हो तो संवेदनशीलता और भी गहरी हो जाती है। जनप्रतिनिधि समाज का नेतृत्व करते हैं, इसलिए उनसे सुव्यवहार, शिष्टाचार और संयमित आचरण की उम्मीद की जाती है। उनके भाषणों को भी इन तत्त्वों के समावेश के नजरिए से देखा जाता है। भारतीय लोकतंत्र में हर किसी को अपने विचार व्यक्त करने की आजादी है, लेकिन जब सरकार में मंत्री पद पर आसीन जनप्रतिनिधि अपने वक्तव्य में देश की आजादी पर ही सवाल खड़े करे, तो उसे क्या कहा जाएगा। मध्य प्रदेश के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के उस बयान से एक नया विवाद खड़ा हो गया है कि 15 अगस्त 1947 को देश को मिली आजादी 'कटी-फटी' थी। सवाल है कि लंबे संघर्षों और तमाम कुर्बानियों के बाद हासिल आजादी पर इस तरह की आपत्तिजनक टिप्पणी करके वे क्या दर्शाना चाहते हैं? एक जिम्मेदार पद पर बैठे किसी जनप्रतिनिधि को क्या ऐसी टिप्पणी शोभा देती है? मर्यादा के विषय पर बड़े-बड़े भाषण देने वाले मंत्री ही अगर इस शब्द का सही अर्थ नहीं समझ पाएं, तो आम नागरिक से क्या उम्मीद की जा सकती है?

कैलाश विजयवर्गीय का इस तरह का यह कोई पहला बयान नहीं है। इससे पहले भी उनकी कई टिप्पणियों पर विवाद हो चुका है। दरअसल, विजयवर्गीय अखंड भारत की बात कर रहे थे, लेकिन उन्होंने जिस तरह से इसे देश की आजादी से जोड़ा, उस पर सवाल खड़े होना स्वाभाविक है। वैसे विवादित बयान देने वाले नेताओं की फेहरिस्त काफी लंबी है। कुछ नेता अपनी टिप्पणियों पर विवाद बढ़ने के बाद खेद जाहिर करते हैं, तो कुछ यह कहकर इतिश्री कर लते हैं कि उनके बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया। ऐसा लगता है कि नेताओं ने विवादित और अमर्यादित बयानों की एक श्रृंखला शुरू कर रखी है, जो बदस्तूर जारी है। मगर, जनप्रतिनिधि, खासकर सरकार में मंत्री इस बात को क्यों भूल जाते हैं कि वे देश और राज्य की नीति निर्माण व्यवस्था का हिस्सा हैं। अगर उनका दृष्टिकोण इस तरह का होगा, तो जाहिर है कि व्यवस्था पर भी इसका असर पड़ेगा। ऐसे में आमजन की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वे अपना प्रतिनिधि चुनने से पहले उन्हें हर कसौटी पर जरूर परख लें।

हरित अर्थव्यवस्था में महिलाओं की जगह

हरित अर्थव्यवस्था की सफलता का वास्तविक आधार समाज के सभी वर्गों की समान और निर्णायक भागीदारी में निहित है। इसमें सबसे अहम भूमिका महिलाओं की है, जो केवल पर्यावरण की पारंपरिक रक्षक नहीं हैं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी हैं।

विनीता परमार

हरित अर्थव्यवस्था केवल पर्यावरण की रक्षा या संसाधनों के संरक्षण तक सीमित कोई तकनीकी अवधारणा नहीं है। यह आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और पारिस्थितिकीय संतुलन का ऐसा संयुक्त विचार है, जिसकी सफलता का वास्तविक आधार समाज के सभी वर्गों की समान, गरिमामय और निर्णायक भागीदारी में निहित है। इसमें सबसे अहम भूमिका महिलाओं की है। महिलाएं केवल पर्यावरण की पारंपरिक रक्षक नहीं हैं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी हैं। वे नवाचार, नेतृत्व और समावेशी विकास की धुरी हैं। इसलिए भारत और दुनिया के लिए यह समय केवल सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में नहीं, बल्कि एक पर्यावरणीय और आर्थिक अनिवार्यता के रूप में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करने और उसे विस्तार देने का है।

हरित अर्थव्यवस्था का विचार उस मोड़ पर है, जहां इसे केवल एक पर्यावरणीय उपाय मानना न केवल अपर्याप्त है, बल्कि खतरनाक भी हो सकता है। यह अवधारणा संसाधनों की रक्षा, सतत विकास और न्याय आधारित समाज की नींव रखने की आकांक्षा है। इसमें तकनीकी नवाचार, अक्षय ऊर्जा, टिकाऊ कृषि और आधुनिक प्रौद्योगिकी का स्थान तो है ही, पर इसकी आत्मा समावेशिता में बसती है। दुर्भाग्यवश, आज भी जलवायु नीति और हरित विकास के ढांचों में महिलाओं की उपस्थिति को अक्सर 'लाभार्थी' या 'संवेदनशील समूह' तक ही सीमित कर दिया जाता है, जबकि वे इस पूरी प्रक्रिया की निर्माता, संचालक और नेतृत्वकर्ता हो सकती हैं। यह सोच जितनी सीमित है, उतनी ही नुकसानदेह भी, क्योंकि जलवायु संकट लैंगिक रूप से तटस्थ नहीं है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पूरी मानवता पर है, लेकिन इसका सबसे तीव्र और जटिल प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। जब हिमनद पिघलते हैं, समुद्र का स्तर बढ़ता है, गर्मी और सूखे से कृषि प्रभावित होती है, तब इसका सीधा बोझ महिलाओं के कंधों पर आता है। संयुक्त राष्ट्र की एक रपट के अनुसार, आने वाले पच्चीस वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण लगभग 15.8 करोड़ महिलाएं और लड़कियां गरीबी की गर्त में पहुंच सकती हैं। यह आंकड़ा सिर्फ एक चेतावनी नहीं है, बल्कि उस गहरे लैंगिक असंतुलन की तस्वीर है, जिसे जलवायु संकट और गहरा कर रहा है।

भारत जैसे देश में यह संकट और भी अधिक जटिल है। यहां पानी, ईंधन, भोजन और देखभाल की जिम्मेदारी पारंपरिक रूप से महिलाओं पर रही है। कुछ गांवों में आज भी महिलाएं सुबह दूर तक पैदल चल कर पानी लाती हैं, जंगलों से जलावन की लकड़ी बटोरती हैं, खेतों में काम करती हैं और घर-परिवार की देखभाल में दिन-रात लगी रहती हैं, लेकिन इन सभी कार्यों को उत्पादक काम नहीं माना जाता। जब जंगल कटते हैं, तो ईंधन के विकल्प खत्म हो जाते हैं। जब फसलें चौपट होती हैं, तो सबसे पहले भूख की चिंता महिलाओं को सताती है। आपदा के समय महिलाएं अपने बच्चों और बुजुर्गों की रक्षा में सबसे अधिक जोखिम उठाती हैं। फिर भी आपदा प्रबंधन योजनाओं, विकास नीतियों और हरित अर्थव्यवस्था के विमर्श में उनकी वास्तविक भूमिका लगभग अदृश्य रहती है।

हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत में जो प्रयास हो रहे हैं, उनमें ऊर्जा क्षेत्र में सबसे बड़ा परिवर्तन देखा जा रहा है। सरकार ने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस और स्वच्छ रसोई ईंधन को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं चलाई हैं। मगर इन योजनाओं में भी महिलाओं की भागीदारी औपचारिक और प्रतीकात्मक ही रही है। देशभर में मकानों की छत पर सौर

> **हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत में जो प्रयास हो रहे हैं, उनमें महिलाओं की भागीदारी औपचारिक और प्रतीकात्मक ही रही है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं का योगदान केवल अठारह फीसद है। अगर उन्हें समान अवसर, संसाधन और निर्णय की ताकत मिले, तो यह आंकड़ा कई गुना बढ़ सकता है। देश की महिलाएं विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित की पढ़ाई में वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं, लेकिन जब नौकरी, नेतृत्व और नीति निर्माण की बात आती है, तो वे पिछड़ जाती हैं। यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि संस्थागत विफलता है।**

ऊर्जा संयंत्र लगाने के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी मात्र ग्यारह फीसद है, जबकि वैश्विक औसत 32 फीसद है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं का योगदान केवल अठारह फीसद है, जबकि उन्हें समान अवसर, संसाधन और निर्णय की ताकत मिले, तो यह आंकड़ा कई गुना बढ़ सकता है। देश की महिलाएं विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित की पढ़ाई में वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं, लेकिन जब नौकरी, नेतृत्व और नीति निर्माण की बात आती है, तो वे पिछड़ जाती हैं। यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि संस्थागत विफलता है। इस विफलता की सबसे गहरी जड़ जलवायु वित्त में लैंगिक दृष्टि की अनुपस्थिति है।

ओईसीडी की एक रपट बताती है कि वैश्विक जलवायु वित्त का केवल 0.01 फीसद हिस्सा ही ऐसे कार्यक्रमों में जाता है, जो लैंगिक रूप से संवेदनशील हैं। महिला नेतृत्व वाली जलवायु पहलों को जब न तो वित्तीय सहायता मिलती है, न तकनीकी प्रशिक्षण और न ही निर्णय में हिस्सेदारी, तब उनके नवाचार, परंपरागत ज्ञान और सामुदायिक अनुभव हाशिये पर चले जाते हैं। महिला किसान, जो अपने श्रम, संवेदनशीलता और ज्ञान से कृषि में योगदान करती हैं, वे बैंक से ऋण लेने में सबसे अधिक पीछे रह जाती हैं। नीति निर्माण में भी उनकी भागीदारी न के बराबर है। ऊर्जा और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में निर्णय लेने वाले शीर्ष पदों पर महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र चौदह फीसद है। जब नीति निर्माण में महिलाएं नहीं होतीं, तब उनके अनुभव, जरूरतें और दृष्टि भी नीतियों से गायब हो जाती हैं।

एक और बड़ी चुनौती देखभाल कार्यों की सामाजिक और संस्थागत उपेक्षा है। भारत में ग्रामीण महिलाएं प्रतिदिन औसतन चौदह घंटे तक बिना वेतन के देखभाल कार्यों में व्यस्त रहती हैं। इसमें पानी लाना, भोजन पकाना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल, पशुओं को चारा देना, घर की सफाई और त्योहारों की तैयारी शामिल है। ये सभी कार्य न तो जीडीपी में गिने जाते हैं, न ही इन पर कोई नीति बनती है। जब महिलाएं इस अदृश्य श्रम के बोझ से दबी होती हैं, तब वे किसी प्रशिक्षण, रोजगार या उद्यमशीलता कार्यक्रम में भाग लेने के अवसर खो देती हैं। यही अदृश्यता हरित अर्थव्यवस्था को अधूरा बना देती है।

फिर भी, उम्मीद की किरणें दिखाई देती हैं। भारत में अनेक महिला स्वयं सहायता समूह सौर ऊर्जा, जल संरक्षण, कचरा प्रबंधन और जलवायु अनुकूल कृषि में अभूतपूर्व काम कर रहे हैं। राजस्थान और महाराष्ट्र में महिलाएं सौर लैंप बना कर गांव-गांव रोशनी पहुंचा रही हैं। झारखंड और ओड़ीशा में महिलाएं जंगलों के संरक्षण में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही हैं। नेपाल, बांग्लादेश और केन्या जैसे देशों में महिला समूह बायोगैस संयंत्र और स्वच्छ जल योजनाएं सफलतापूर्वक चला रहे हैं।

हरित अर्थव्यवस्था की वास्तविक सफलता इस बात में निहित है कि वह केवल तकनीकी नवाचार या कार्बन उत्सर्जन में कटौती तक सीमित न रहे, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशी विकास से गहराई से जुड़ी हो। यह न भूला जाए कि पर्यावरणीय संकट मानवता का संकट है और इसका समाधान केवल तकनीकी ही नहीं, मानवीय पहलू से भी होना चाहिए। महिलाएं न केवल पर्यावरणीय चेतना की संवाहक हैं, बल्कि उनके पास वह सामूहिक चेतना, संबंधों का ताना-बाना और व्यावहारिक ज्ञान है, जो किसी भी हरित परिवर्तन को जमीनी स्तर पर प्रभावशाली और टिकाऊ बना सकता है। भारत जैसे देश के लिए यह चुनौती और अवसर दोनों है। जलवायु संकट की अग्रिम पंक्ति में खड़ी महिलाओं को यदि परिवर्तन की अग्रिम पंक्ति में लाया जाए, तो भारत न केवल अपने राष्ट्रीय जलवायु लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकता है, बल्कि वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करते हुए एक नई विकास दृष्टि भी प्रस्तुत कर सकता है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

संबंधों का सरोकार

नरेंद्र सिंह 'नीहार'

समाज की मूल इकाई परिवार को माना जाता है। परिवार की संरचना में संयुक्त परिवार भारत की बड़ी विशेषता रही है। एकल परिवार पश्चिमी सभ्यता की नकल के रूप में आज दिखाई दे रहे हैं। परिवारों में आपसी प्रेम, सहयोग, सहकार, सेवा और त्याग जैसे मूल्य आजकल अपनी चमक खोते नजर आ रहे हैं। हाल की कुछ घटनाओं से दरकते आपसी विश्वास और कमजोर नींव का संकेत मिलता है। हमने सुना था कि जोड़ियां आसमान में बनकर आती हैं... रिश्तों का बंधन सात जन्मों के लिए होता है। मगर आजकल रिश्तों की उम्र कम होती जा रही है। इसके पीछे कौन-से कारण हो सकते हैं।

जब हम आज की जीवन शैली को देखते हैं, तो ज्यादातर लोग इस सुविधा का लाभ उठाने को लेकर सहज हैं कि सब कुछ चुटकी बजाते घर पर उपलब्ध हो रहा है। खाना, कपड़े, जूते और जरूरत भर के सभी सामान। बाजार की पहुंच घर तक हो गई है। हम जितना ज्यादा आनलाइन सुविधाओं पर निर्भर होते जा रहे हैं, उतना ही ये हमारे मन को व्यग्र और उतावला बना रही हैं। हमारे अंदर का संयम, धैर्य और प्रतीक्षा तिरोहित हो रहे हैं। धीरे-धीरे हम भोगवादी बनते जा रहे हैं। सुख-सुविधाओं को हमने जीवन का सच्चा सुख मान लिया है। मीडिया, सोशल मीडिया और रंग-रंगीले विज्ञापनों ने संबंधों की सरसता और अपनेपन के भावों को हमसे छीन लिया है। नई पीढ़ी बाजार की चकाचौंध और सामान के सुख को जीवन का उत्स मान बैठी है। बनावट और ब्रांडेड वस्तुओं का दिखावा आवश्यक बनता जा रहा है।

दुनिया मेरे आगे

महानगरों में अब आमतौर पर एकल परिवारों और उनमें भी एक बच्चे का चलन तेजी से बढ़ा है। अभिभावक बचपन में अपने बच्चे की हर जिद और मांग को पूरा करते हैं। धीरे-धीरे यह उसकी आदतों का हिस्सा बन जाती है। यही बच्चे किशोर बनकर मनमानी के रास्ते पर निकल जाते हैं। जब तक माता-पिता को उनकी बुरी आदतों का पता चलता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। 'चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत हमारे घर में चरितार्थ होती दिखाई देती है। मोबाइल पर खेले जाने वाले खेल और नियंत्रण से बाहर की विषय-वस्तु इन किशोर-किशोरियों को गुमराह कर रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे निजता की दुहाई देकर अपने माता-पिता को मोबाइल दिखाने में आनाकानी करते हैं। यहीं से मनमाने व्यवहार की शुरुआत होती है, जो बाद में कई बार बेलगाम भी होती है और स्वाभाविक रूप से एक दिन उसके दुष्परिणाम भी प्रकट हो जाते हैं।

> **जानकारी ही बचाव है। इस मसले पर बेहद संवेदनशील होकर जागरूकता अभियान चलाने की नितांत आवश्यकता है। हमें सामाजिक सरोकारों की ओर लौटना होगा। मोबाइल को किनारे रखकर आमने-सामने होकर अपनों से सहजतापूर्वक बातें करनी होंगी। घर में बड़े होते बच्चों पर दबाव तो ठीक नहीं है, लेकिन उन पर सतर्क दृष्टि रखनी होगी।**

अब ऐसे में प्रश्न उठता है कि किया क्या जाए? समस्या का निदान कहां पर है? कौन करेगा इस उल्टी धारा की निगरानी? या फिर सब कुछ बदलाव और वक्त की जरूरत के नाम पर ऐसे ही चलता रहेगा? उत्तर स्पष्ट है कि जानकारी ही बचाव है। इस मसले पर बेहद संवेदनशील होकर जागरूकता अभियान चलाने की नितांत आवश्यकता है। हमें सामाजिक सरोकारों की ओर लौटना होगा। मोबाइल को किनारे रखकर आमने-सामने होकर अपनों से सहजतापूर्वक बातें करनी होंगी। घर में बड़े होते बच्चों पर दबाव तो ठीक नहीं है, लेकिन उन पर सतर्क दृष्टि रखनी होगी। उनके व्यवहार की अनदेखी भारी पड़ सकती है और उनके अनुकूल होते हुए उन्हें वास्तविकता का अहसास कराने की जरूरत है। घर में अपने बड़ों के प्रति आदर, सद्भाव और आत्मीयता को प्रदर्शित करना होगा। बच्चे अनुकरण से बहुत कुछ सीखते हैं। घर के वातावरण को अनुशासित, मर्यादित के साथ मैत्रीपूर्ण भी होना चाहिए।

समाज को भी इस दिशा में अपनी भूमिका को समझना होगा। बौद्धिक विचारों और सामाजिक समस्याओं की चर्चा से विचार-प्रक्रिया समृद्ध होती है। जिस तरह आंखों की जांच, रक्तदान शिविर और स्वास्थ्य जांच आदि के लिए शिविर लगते हैं, उसी तर्ज पर सामाजिक विकृतियों को दूर करने के उपाय बताए जा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक पद्धति से काम करने वाले सलाहकारों के साथ काम किया जा सकता है और अभिभावकों को जागरूक किया जा सकता है। दरअसल, अब समय आ गया है, जब मानवीय संवेगों और मूल प्रवृत्तियों पर काम करना बहुत जरूरी हो गया है। अन्यथा समाज को इसका खमियाजा भुगतना पड़ेगा। स्वच्छंदता और मनमाना व्यवहार हमें अपराध की ओर ले जाता है।

पाठ्यक्रम में भी इस दिशा में कुछ पाठ जोड़े जाने चाहिए। विद्यार्थियों में नैतिकता और मूल्यपरक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। मोटी तनख्वाह के लिए तैयार किए जा रहे विद्यार्थियों से नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अपेक्षा रखना ही बेमानी है। येन-केन प्रकारेण खुद को सबसे आगे रखना और अधिक से अधिक संसाधनों तथा संपत्ति को बटोरना ही इनके जीवन का लक्ष्य बन जाता है। विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर काम होना चाहिए। विशेषकर व्यवहारगत परिवर्तनों पर सजग और सतर्क दृष्टि रहनी चाहिए। कक्षा में प्रोन्नत करते समय ये मानक बहुत जरूरी हैं। विद्यालय के मंच से अनुशासित और मर्यादित विद्यार्थियों को सदैव प्रशंसित और पुरस्कृत किया जाना चाहिए। अनुशासन एक स्तर पर दबाव बन जाता है तो उससे बचना चाहिए, लेकिन स्वअनुशासन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। खुद शिक्षकों को एक बेहतरीन उदाहरण पेश करना चाहिए। कुल मिलाकर काम बहुत कठिन है। समाज में आ रहे बदलावों को नजरअंदाज भी नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों को इस दिशा में चेतावनी की घंटी बजाते रहना होगा। अन्यथा बदतर परिस्थितियां भी देखने को मिल सकती हैं। मनुष्यता के हक में सुधार के लिए परिवार, समाज और विद्यालय को जिम्मेदारी लेनी होगी।

ताक पर नियम

इजराइल युद्ध उन्माद में अपनी सारी हदें भूल चुका है। भले ही इसकी शुरुआत हमास की हिंसक, अमर्यादित और शर्मनाक हरकत के विरोध में शुरू हुई हो। मगर उससे उपजी परिस्थितियों के बाद प्रभावी रूप से निपटने के लिए इजराइल ने जिस तरह व्यापक सैन्य अभियान छेड़ा है, वह गाजा के आम नागरिकों के लिए घातक साबित हुआ। बच्चों-बुजुर्गों और महिलाओं की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं। अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों पर हमले किए जा रहे हैं। हमास के आम लोगों पर हमले को अगर सही नहीं कहा जा सकता, तो इजराइल के बेइंतिहा जुल्म को भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह भी सत्य है कि युद्ध में कमजोर पक्ष हमेशा दबाया जाता है। व्यवस्था नियमों से बनती है। युद्ध के भी अंतरराष्ट्रीय नियम हैं। मगर उनका पालन नहीं हो रहा। आज तमाम अंतरराष्ट्रीय संगठन इजराइल के आगे बेबस हैं। वह किसी की नहीं सुन रहा। ताकतवर देशों के आगे सभी संगठन बौने प्रतीत हो रहे हैं। मनुष्य हाशिये पर जा रहा है। इंसानियत लुप्त हो रही है। यह विडंबना ही कही जाएगी कि मानव रक्षा के नाम पर निर्दोष लोगों को मारा जा रहा है।

– जोगिंद्र भारद्वाज, नरेला, दिल्ली

निष्पक्षता का तकाजा

पिछले दिनों राहुल गांधी ने वोट चोरी का मुद्दा उठाया था। उसके बाद भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने छह लोकसभा क्षेत्र के आंकड़े प्रस्तुत कर विपक्ष को घेरने की कोशिश की। मगर इस फेर में यह भूल गए कि जो बात राहुल गांधी कह रहे हैं, वही बात वे भी कह रहे हैं। इसके लिए जिम्मेदार तो आयोग ही है। इस आरोप-प्रत्यारोप के घेरे में अब चुनाव आयोग है। उल्टे भाजपा ने राहुल के आरोपों की तस्दीक कर दी। दरअसल, भाजपा के साथ-साथ चुनाव आयोग भी कठघरे में आया। जबकि भाजपा चुनाव आयोग के बचाव में उसकी वकील बनी हुई थी। राहुल के मुद्दा उठाते ही आयोग ने उन्हें नोटिस देने में तनिक भी देर नहीं की, जबकि अनुराग ठाकुर को नोटिस देने में उसे झिझक हो रही है। यह बेवजह नहीं है कि आयोग से निष्पक्ष होने की मांग की जा रही है। यह लोकतंत्र के लिए घातक है। आयोग को निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ काम करना चाहिए।

– हेमा हरि उपाध्याय, 'अक्षत', उज्जैन

भ्रष्टाचार का दलदल

देश में भ्रष्टाचार न बढ़ता, तो आज भारत दुनिया में शीर्ष पर होता। एक उदाहरण से स्पष्ट है कि जब कोई नागरिक अपना कारोबार शुरू करने अथवा चालू कारोबार बढ़ाने के लिए ऋण लेने के वास्ते आवेदन करता है, तो बैंक कर्ज मंजूर करने से पहले वसूली सुनिश्चित करने के लिए कई प्रकार के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कराता है। अनुबंध की शर्तों के अनुसार ऋण अदा करने में नाकाम होने पर वसूली एजंट उनको परेशान करते हैं। जबकि बड़े उद्योगपति पहला ऋण न चुका पाने पर और कर्ज लेते हैं। जब यह ऋण भी नहीं चुका पाते तो उस राशि को बट्टे खाते में डाल दिया जाता है। कुछ तो देश छोड़ कर भाग जाते हैं। उस स्थिति में बैंक ऋण पर ब्याज तो क्या, मूलधन भी वसूल करने में असहाय हो जाते हैं। जबकि ऋण स्वीकृति तथा वसूली के नियम दोनों ही प्रकार के लोगों के लिए एक ही हैं। क्या बैंक अधिकारियों की मिलीभगत से यह सब खेल चल रहा है?

– वेद प्रकाश, गुरुग्राम

सुधार के बरक्स

विपक्षी दल मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर सड़कों पर उतर चुके हैं, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने विशेष गहन पुनरीक्षण को मतदाता हितैषी प्रक्रिया बताया है। बिहार की मतदाता सूची का पहला प्रारूप जारी होने के दो सप्ताह बाद भी किसी भी राजनीतिक दल ने चुनाव आयोग में लिखित शिकायत दर्ज नहीं कराई है। आज देश में फर्जी मतदाताओं की संख्या बढ़ रही है। अवैध रूप से रह रहे घुसपैठियों ने भी फर्जी मतदाता पहचानपत्र हासिल कर लिया है। कई मतदाताओं का एक से अधिक क्षेत्रों में नाम दर्ज है। अब पुनरीक्षण प्रक्रिया से अवैध मतदाताओं को सूची से हटाया जाएगा। चुनाव आयोग अपने अधिकार के मुताबिक चुनावी प्रक्रिया में सुधार की प्रक्रिया जारी रखे हुए है। मतदाता पहचानपत्र और ईवीएम चुनाव सुधार प्रक्रिया की ही देन है।

– हिमांशु शेखर, गयाजी

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, मंगलवार 19 अगस्त 2025

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

और घिर गया चुनाव आयोग

रविवार को मुख्य चुनाव आयुक्त समेत तीनों चुनाव आयुक्तों की प्रेस कांफ्रेंस से देश में मताधिकार की रक्षा और मत चोरी के सवाल पर नयी हलचल खड़ी हो चुकी है। चुनाव आयोग को यह गलतफहमी रही होगी कि उसकी प्रेस कांफ्रेंस के बाद विपक्ष थोड़ा दब जाएगा। लेकिन अब विपक्ष दोगुनी ताकत से चुनावी घोटाले पर आवाज उठा रहा है। सोमवार को आठ विपक्षी दलों के सांसदों ने दिल्ली के कॉंस्टीट्यूशन क्लब में प्रेस कांफ्रेंस की। खास बात यह थी कि इसमें आम आदमी पार्टी से सांसद संजय सिंह भी शामिल हुए, जबकि आप ने घोषणा की है कि वह अब इंडिया गठबंधन का हिस्सा नहीं है। कांग्रेस से गौरव गोगोई और नासिर हुसैन, सपा से रामगोपाल यादव, राजद से मनोज झा, वामदलों से जॉन ब्रिटास, डीएमके से तिरुचि शिवा, शिवसेना से अरविंद सावंत और टीएमसी से महुआ मोइत्रा इन आठ सांसदों ने पत्रकारों के जरिए देश के सामने फिर से निर्वाचन आयोग पर गंभीर सवाल उठाए। बल्कि कुछ ऐसे सवाल भी उठे, जिनमें निर्वाचन आयोग की सत्तापक्ष की तरफ झुकाव का साफ आरोप था।

हमने इसी जगह कल लिखा था कि निर्वाचन आयोग 7 अगस्त की राहुल गांधी की प्रेस कांफ्रेंस के बाद केवल वक्तव्य जारी कर रहा था, जबकि उसके पास सामने आकर जवाब देने के लिए पूरा वक्त था। लेकिन आयोग ने सामने आकर अपनी बात रखने के लिए वही दिन चुना जब राहुल गांधी और तेजस्वी यादव बिहार में वोटर अधिकार यात्रा पर निकल रहे थे। फिर भी बड़ी संख्या में पत्रकार चुनाव आयोग की प्रेस कांफ्रेंस में पहुंचे और यह देखकर अच्छा लगा कि कमोबेश तमाम पत्रकारों ने सीधे-सीधे सवाल चुनाव आयोग से किए। यह खेदजनक है कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने एक बार में पांच-पांच सवाल तो सुने, लेकिन किसी का भी सीधा जवाब नहीं दिया। जलेबी की तरह बात को घुमाया जाता रहा कि वोट चोरी के आरोप लगाना संविधान का अपमान है, हमारे सामने सब समकक्ष हैं, कोई पक्ष-विपक्ष नहीं है, सच सच होता है और सूरज पूरब से निकलता है। 80 मिनट की प्रेस कांफ्रेंस के बाद ज्ञानेश कुमार अपने सहयोगियों के साथ उठकर चले गए, लेकिन 79 बरसों से जो लोकतंत्र देश में बना हुआ है, उसे बचाए रखने की कोई आश्वस्ति उनके जवाबों से नहीं मिली। लिहाजा सोमवार को पांच दिनों के अंतराल के बाद फिर से जब संसद का मानसून सत्र लगा तो विपक्ष को विरोध के लिए संसद परिसर में उतरना पड़ा। लोकसभा और राज्यसभा के भीतर भी स्पेशल इंटेसिव रिविजन (एसआईआर) पर चर्चा की मांग विपक्ष करता रहा। जिसके कारण सदन बाधित हुआ। आसंदी पर बैठे महानुभावों का कहना है कि एसआईआर पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई चल रही है इसलिए उस पर चर्चा नहीं हो सकती। तो क्या यही तर्क चुनाव आयोग पर लागू नहीं होता कि जब दो दिन में सुप्रीम कोर्ट फिर से अपनी सुनवाई को आगे बढ़ा रहा है और हो सकता है इस बार कोई फैसला ही आ जाए, तब चुनाव आयोग को छुट्टी के दिन दोपहर में प्रेस कांफ्रेंस क्यों की, क्या आयोग कुछ दिन और नहीं रुक सकता था।

सोमवार को विपक्षी दलों की प्रेस कांफ्रेंस में यह मुद्दा भी उठा। इसके अलावा बिहार में एसआईआर की गड़बड़ियों पर पुराने सवालों को विपक्ष ने दोहराया। ज्ञानेश कुमार के लिए सवाल उछाला गया कि जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक मतदान केंद्रों के बाहर महिलाएं खड़ी रहती हैं और उनसे मीडिया बात करता है, तब क्या माताओं-बहनों की निजता का हनन नहीं होता। महुआ मोईत्रा ने बताया कि ममता बनर्जी ने सबसे पहले प.बंगाल में दो-दो एपिक कार्ड की गड़बड़ी पकड़ी थी तो संजय सिंह ने दिल्ली का उदाहरण दिया कि विधानसभा चुनावों से पहले कई सांसदों के घरों पर 15-20 लोगों के मतदान कार्ड बने। जॉन ब्रिटास ने बताया कि केरल की एकमात्र सीट किस तरह बीजेपी ने जीती तो अरविंद सावंत ने बताया कि किस तरह चुनाव आयोग पूरी तरह से सत्ता के पक्ष में है, क्योंकि शिवसेना का नाम और निशान पार्टी तोड़ने वाले एकनाथ शिंदे को दिया गया, जबकि वे इसके पात्र नहीं थे। गौरव गोगोई ने पूछा कि राहुल गांधी को एफिडेविट दिखाने कहते हैं तो अनुराग ठाकुर से एफिडेविट क्यों नही मांगते। और रामगोपाल यादव ने उन शपथपत्रों की पावती दिखा दी, जो चुनाव आयोग ने सपा के 18 हजार शपथपत्रों पर दी थी। राजद सांसद मनोज झा ने संविधान के अपमान वाले बयान पर ज्ञानेश कुमार को घेरा कि आपसे सवाल करना संविधान का अपमान नहीं है, क्योंकि आप संविधान से हैं, खुद संविधान नहीं हैं। श्री झा ने पहले निर्वाचन आयुक्त सुकुमार सेन का स्मरण ज्ञानेश कुमार को कराया कि उन्होंने जिस तरह का मापदंड स्थापित किया था, चुनाव आयोग को उसके मुताबिक चलना चाहिए, सरकार के निर्देशों पर नहीं।

कुल मिलाकर रविवार को कई चैनलों से लेकर सोशल मीडिया तक मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की जो आलोचना हो रही थी, सोमवार की विपक्ष की प्रेस वार्ता के बाद वो और तेज होगी, साथ ही मोदी सरकार के रवैये पर भी सवाल की तीक्ष्णता बढ़ेगी, यह तय है।

बेशक रविवार शाम ही उपराष्ट्रपति पद के लिए एनडीए उम्मीदवार के तौर पर सी पी राधाकृष्णन का नाम घोषित कर भाजपा ने चुनाव चोरी के मुद्दे से ध्यान भटकाने की कोशिश की, लेकिन सोमवार सुबह ही नजर आ गया कि भाजपा अपने मकसद में कामयाब नहीं हुई है। बल्कि विपक्ष की आवाज दबाने के चक्कर में उसने इंडिया गठबंधन को और मजबूत होने का मौका दे दिया है।

आखिरी बात, विपक्षी दलों की प्रेस कांफ्रेंस में सारे सांसद अलग-अलग दलों और राज्यों के थे। उनके हिंदी और अंग्रेजी बोलने का लहजा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग था। फिर भी सबने सबकी बात सुनी भी और समझी भी। भाषायी विविधता और दलगत विचारधारा की भिन्नता के बावजूद सबने सबका साथ दिया, यही इंडिया की खूबसूरती है। काश हमेशा एक ही रंग में सबको रंगने की कोशिश करने वाले लोग इसे समझ पाते।

भाजपायी चुनाव आयोग

सोशल मीडिया में पिछले कुछ हफ्तों से एक मजाक चल रहा था। चुनाव आयोग ने इसका जोरदार तरीके से खंडन किया है कि उसने भाजपा में विलय कर लिया है; आयोग ने कहा है कि वह भाजपा सरकार का बाहर से ही समर्थन करता रहेगा! मुख्य चुनाव आयुक्त, ज्ञानेश कुमार की पहली खुली प्रेस कान्फ्रेंस के बाद ऐसा लगता है कि उस मजाक को अपडेट करने का समय आ गया है। चुनाव आयोग अब और बाहर से समर्थन नहीं देता रह सकता है। 'विदेशी घुसपैठ' के खतरों को देखते हुए, उसने भाजपा में विलय का फैसला कर लिया है। व्यवहार में वर्तमान चुनाव आयोग के इस फैसले का ऐलान जिस संवाददाता सम्मेलन में किया गया है, वह कहने को तो पूरे चुनाव आयोग की ही प्रेस कान्फ्रेंस थी। तीनों चुनाव आयुक्त मंच पर मौजूद भी थे। लेकिन, बोलने का काम सिर्फ मुख्य चुनाव आयुक्त, ज्ञानेश कुमार ने किया। इसलिए, अभी निश्चयपूर्वक यह कहना मुश्किल है कि चुनाव आयोग के भाजपा में इस विलय में, पूरे चुनाव आयोग की पूर्ण सहमति है या नहीं!

बेशक, चुनाव आयोग ने अब भी भाजपा में विलय की औपचारिक घोषणा नहीं की है। उल्टे उसने संवाददाता सम्मेलन में तो इसका भी दावा करने की कोशिश की है कि वह न पक्ष में है, न विपक्ष में, वह तो निष्पक्ष है। लेकिन, संवाददाता सम्मेलन में मुख्य चुनाव आयुक्त की प्रस्तुति और सवालों के जवाब का जो मुख्य स्वर था, उसने निष्पक्षता के इस दावे का मजाक ही बनाकर रख दिया। चुनाव आयोग का यह संवाददाता सम्मेलन, चुनावों के मामले में उसकी निष्पक्षता और विशेष रूप से मतदाता सूचियों की गड़बड़ियों के संबंध में लगातार सघन होते संदेहों और बढ़ते सवालों की पृष्ठभूमि में हो रहा था। इन सवालों में एक ओर अगर बिहार पर थोपी गयी एसआईआर नाम की अभूतपूर्व प्रक्रिया को लेकर बेशुमार सवाल हैं, तो दूसरी ओर पिछले चुनावों की मतदाता सूचियों को और इसलिए, चुनावों को लेकर गंभीर सवाल भी हैं।

ये बाद वाले सवाल, महाराष्ट्र के विधानसभाई चुनाव के समय से तथा खासतौर उस चुनाव में भाजपा-नीत मोर्चे की अप्रत्याशित जीत के बाद से लगातार उठते रहे थे। फिर भी इन सवालों को, कर्नाटक की बंगलूरु सेंट्रल लोकसभा सीट के अंतर्गत, महादेवपुरा विधानसभाई सीट की मतदाता सूची के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर, इसी महीने के शुरू में संसद में विपक्ष के नेता, राहुल गांधी द्वारा लगाए गए मतदाता सूचियों में गड़बड़ी के जरिए, चुनाव में धांधली के आरोपों ने, एक नयी धार दे दी है। इसी की पृष्ठभूमि में बिहार में, जहां मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण या एसआईआर की प्रक्रिया जारी है और इस प्रक्रिया से निकलकर तैयार की जाने वाली अंतिम मतदाता सूचियों के आधार पर, इसी साल के आखिरी महीनों में विधानसभाई चुनाव होने जा रहे हैं, इंडिया गठबंधन द्वारा जिस रोज नेता विपक्ष, राहुल गांधी की अगुआई में 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरूआत की जा रही थी, ठीक वही दिन तथा समय, चुनाव आयोग ने अपनी इस लड़ाकू-मुद्रावाली प्रेस कान्फ्रेंस के लिए चुना था।

ऐसे में चुनाव अयोग का नेता विपक्ष द्वारा उठाए गए सवालों का गंभीरता से तथा भरोसा पैदा करने वाले तरीके से जवाब देने के बजाय, चुनौती और धमकी के स्वर में यह कहना कि -दो ही विकल्प हैं, या तो (राहुल गांधी या अन्य सवाल उठाने वाले) एक हफ्ते में एफिडेविट दें या देश से माफी मांगें, और कोई विकल्प नहीं है; दिखाता है कि निष्पक्ष एंपायर या रेफरी की भूमिका को छोड़कर, आयोग ने 'खिलाड़ी' की भूमिका संभाल ली है। वह अपनी भूमिका विपक्ष के विपक्ष यानी सत्तापक्ष के खिलाड़ी की ही मान रहा है। इस संबंध में अगर कोई कसर रह भी गयी थी, तो उसे इस सवाल पर चुनाव आयोग की बहुत ही मुखर चुप्पी ने दूर कर दिया कि जब राहुल गांधी जैसे ही सवाल, सत्ताधारी पार्टी के प्रवक्ता की हैसियत से, अनुराग ठाकुर ने उठाए थे और वास्तव में भाजपा सांसद ने तो छः-छः संसदीय क्षेत्रों में मतदाता सूचियों में लाखों वोटों की हेरा-फेरी के जरिए चुनाव गड़बड़ी के आरोप लगाए थे, तब उनके साथ, उनके अरोपों के साथ चुनाव आयोग का सलूक, राहुल गांधी के साथ उसके सलूक से इतना भिन्न क्यों था? क्या अनुराग ठाकुर के आरोपों को चुनाव आयोग अपना 'घरेलू' या 'अंदरूनी' मामला समझता है, जिनका असली मकसद तो उसकी गड़बड़ियों पर पर्दा डालना ही है। चुनाव आयोग के अपना पक्ष चुन लेने का इससे स्पष्ट सबूत और क्या होगा?

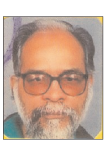
राजेंद्र शर्मा

> किसी निष्पक्ष रेफरी की सामान्य प्रतिक्रिया तो यही होती कि बड़े पैमाने की जिन गड़बड़ियों को इंगित किया गया है, उनका स्वत: संज्ञान लेकर आयोग जांच कराएगा और त्रुटियों को दूर करेगा, ताकि चुनाव और निष्कलंक हो सकें। लेकिन, चुनाव आयोग ने तो शुरू से ही गड़बड़ियों को इंगित करने वालों के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख अपनाया, जैसे उसी की चोरी पकड़ी गयी हो।

अब तक करीब सभी जान चुके हैं कि राहुल गांधी ने महादेवपुरा विधानसभाई सीट की खुद चुनाव आयोग द्वारा ही फोटो प्रिंटआउट के रूप में दी गयी मतदाता सूची के विश्लेषण के आधार पर, करीब छः लाख मतदाताओं में से एक लाख से ज्यादा मतदाताओं के मामले में गड़बड़ियां पकड़ी थीं और इनके आधार पर इन मतदाताओं की वैधता पर सवाल उठाए थे। इन गड़बड़ियों में फर्जी पता, छोटे-छोटे घरों में साठ-साठ, अस्सी-अस्सी रजिस्टर्ड वोट, कई-कई जगहों पर रजिस्टर्ड वोट, फार्म-6 के जरिए नये वोटर के तौर पर बनाए गए, सत्तर-सत्तर, अस्सी-अस्सी साल की उम्र के पहली बार के वोटर, बिना तस्वीर के या इतनी छोटी तस्वीर वाले वोटर, जिनकी तस्वीर से किसी की पहचान हो ही नहीं सकती है, आदि शामिल हैं।

किसी निष्पक्ष रैफरी की सामान्य प्रतिक्रिया तो यही होती कि बड़े पैमाने की जिन गड़बड़ियों को इंगित किया गया है, उनका स्वत: संज्ञान लेकर आयोग जांच कराएगा और त्रुटियों को दूर करेगा, ताकि चुनाव और निष्कलंक हो सकें। लेकिन, चुनाव आयोग ने तो शुरू से ही गड़बड़ियों को इंगित करने वालों के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख अपनाया, जैसे उसी की चोरी पकड़ी गयी हो और उन्हें डरा-धमका कर, 'सब चंगा सी' की मुद्रा प्रदर्शित करने की कोशिश की। याद रहे कि ऐसा सिर्फ राहुल गांधी द्वारा लगाए गए आरोपों के मामले में ही नहीं किया गया बल्कि बिहार की एसआईआर प्रक्रिया के पहले चरण में हुई भारी गड़बड़ियों को ढांपने के लिए, और पहले से यही किया जा रहा था। इस सिलसिले में प्रतिष्ठित पत्रकार, अजीत अंजुम के खिलाफ बाकायदा एफआईआर तक दायर करायी गयी थी।

चुनाव आयोग की ऐसी ही झगड़ालू स्तर प्राधिकार वाली प्रतिक्रिया, गड़बड़ियों के इन भंडाफोड़ों के संदर्भ में और भी बलपूर्वक उठी इसकी मांगों पर देखने को मिली कि मतदाता सूचियां, मशीन रीडेबल या डिजिटल फार्मेट में मुहैया करायी जाएं, न कि सिर्फ इमेज फार्मेट में जिसमें अब दी जाने लगी हैं। मशीन रीडेबल फार्मेट में कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटैलीजेंस की मदद से, विशाल सूचियों को भी आसानी से छाना जा सकता है और उनकी तरह-तरह की गड़बड़ियों को पकड़ा जा सकता है। जहां चुनाव आयोग के पास इस फार्मेट में सूची उपलब्ध होने के बावजूद, मतदाता सूचियों में इस तरह की गड़बड़ियों का बने रहना, उसकी लापरवाही से लेकर गड़बड़ियों में मिलीभगत तक की ओर इशारा करता है, वहीं विपक्ष के मांगने पर भी चुनाव आयोग का ऐसे फार्मेट में सूचियां न देने की जिद पकड़ना, आयोग की मिलीभगत के ही संदेहों को बढ़ाता है।

इसके बावजूद, ज्ञानेश कुमार ने न सिर्फ मशीन रीडेबल फार्मेट में मतदाता सूचियां देने से अपने इंकार को उचित ठहराने की कोशिश की है, इसके लिए निजता के अधिकार के उल्लंघन से लेकर, सुप्रीम कोर्ट के आदेश तक की झूठी दलीलें दी हैं। सच्चाई यह है कि इस तरह के फार्मेट में सूचियां उपलब्ध कराने में निजता के अधिकार का कोई उल्लंघन देखने के बजाय, सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में एसआईआर प्रक्रिया में ड्राप हुए 65 लाख लोगों की सूची देने के अपने आदेश में, विशेष रूप से इसका निर्देश दिया है कि सूची मशीन रीडेबल फार्मेट में दी जाए। दूसरी ओर, चुनाव आयोग मतदाता सूची के फार्मेट को पर्दापोशी का हथियार बनाने पर किस कदर बजिद है, इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि बिहार में एसआईआर के पहले चरण के अंत में 1 अगस्त को कच्ची मतदाता सूची, मशीन रीडेबल फार्मेट में डाल दी गयी थी। लेकिन, चार-पांच दिन में ही चुनाव आयोग को अपनी 'गलती' का एहसास हो गया और उसने इस कच्ची सूची का फार्मेट बदलकर मशीन नान-रीडेबल कर दिया।

मशीन रीडेबल सूचियों के खिलाफ चुनाव आयोग की निजता के अधिकार की दलील इसलिए और भी बेतुकी है कि सूची के मशीन रीडेबल फार्मेट में, दूसरे फार्मेट के अलावा कोई अतिरिक्त जानकारी तो होती नहीं है, जो निजता के अधिकार के पहलू से दोनों सूचियों में कोई अंतर हो। दोनों प्रकार की सूचियों में अंतर इतना ही होता है कि मशीन रीडेबल सूची न मिलने से, कांग्रेस पार्टी को एक महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची की छानबीन कर गड़बड़ियों का पता लगाने में चार महीने से ज्यादा लग गए। दूसरी ओर, संभवत: किसी प्रकार से मशीन रीडेबल फार्मेट में सूची उपलब्ध होने के बल पर, अनुराग ठाकुर के लिए सिर्फ छ: दिन में छ: लोकसभाई क्षेत्रों की मतदाता सूचियों का, उसी प्रकार की गड़बड़ियों के लिए विश्लेषण करना संभव हो गया। इसी प्रकार, मतदान की वीडियोग्राफी का रिकार्ड उपलब्ध न कराने के लिए ज्ञानेश कुमार ने जो 'बहन-बहुओं-बेटियों' की वीडियोग्राफी नहीं देने की दलील दी है, और भी ज्यादा खोखली है। मतदान केंद्र की वीडियोग्राफी में ऐसा क्या हो सकता है, जिसका चुनाव आयोग के सिवा किसी और का देखना आपत्ति का कारण हो सकता हो। जाहिर है कि ये सब धांधलियों को ढांपने के बहाने हैं।

हैरानी की बात नहीं है कि ऐसे चुनाव आयोग से बिहार में एसआईआर प्रक्रिया के थोपे जाने की जरूरत से लेकर, उस प्रक्रिया में पहले ही उजागर हो चुकी गड़बड़ियों तक, एक भी सवाल का विश्वसनीय जवाब नहीं दिया गया है। एक-एक वोटर के साथ, गरीब वोटरों के साथ 'चट्टान की तरह खड़े रहने' की डॉयलागबाजी को छोड़कर, चुनाव आयोग न तो इसका जवाब दे पाया है कि कैसे भारी संख्या में मृतक कच्ची मतदाता सूचियों में पहुंच गए हैं, जबकि और भी बड़ी संख्या में जिंदा वोटर, सूची से बाहर कर दिए गए हैं। यहां तक कि आयोग यह तक नहीं बता पाया कि बिहार में कितने संभावित वोटरों के फार्म संबंधित दस्तावेजों के साथ प्राप्त हुए हैं तथा कितने के बिना संबंधित दस्तावेजों के और कितने के मतदाता फार्म पर बीएलओ ने नॉन-रिकमंडेड पर निशान लगाया है। यह भी कि इन नॉन-रिकमंडेड या बिना दस्तावेज के फार्म वालों का क्या होगा? इन हालात में जब चुनाव आयोग ज्यादा से ज्यादा सत्तापक्ष की चोरी की चौकीदारी का काम कर रहा है, बिहार की राजनीतिक रूप से जागरूक जनता विपक्ष की 'वोटर अधिकार यात्रा' को अभूतपूर्व समर्थन नहीं दे, तो ही हैरानी की बात होगी।

(लेखक साप्ताहिक पत्रिका लोक लहर के संपादक हैं।)

15 अगस्त के बाद क्या?

■ **डॉ. सुधीर सक्सेना**

15 अगस्त बीत गया। पंद्रह अगस्त भारत के आरोह-अवरोह भरे सुदीर्घ इतिहास का महत्वपूर्ण दिनांक है। शायद सबसे मानीखेज तारीख। इस दिन वैश्विक-परिदृश्य में एक ऐसा राष्ट्र उभरा, जिसने सत्याग्रह के बूते आजादी पाई थी और इस उपलब्धि में किसी एक समुदाय, कौम या वर्ग का नहीं, अपितु समग्र समाज का योगदान था। विश्व में सैन्य कार्रवाइयों विद्रोह और छल-छद्म से आजादी हासिल करने अथवा सत्ता-परिवर्तन की परंपरा रही है, लेकिन भारत का स्वतंत्रता-पर्व विरल और अभूतपूर्व प्रसंग था। हाड़मांस के एक कृशकाय व्यक्तित्व ने अपने तपःपूत अथक प्रयासों से उस बर्बर कुटिल सत्ता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके वैश्विक साम्राज्य में सूरज नहीं डूबता था। अंग्रेजों की विदाई तय थी, क्योंकि कोई भी सत्ता एक वर्ग, एक वर्ण, एक समूह, एक बल से लड़ सकती है, लेकिन कोटि-कोटि जनों के उस जागृत बल से नहीं लड़ और जीत सकती, स्वतंत्रता ही जिसका एकमेव अभीष्ट था। अपने इसी अपूर्व उपक्रम से गांधी महान है। वह अलीक शख्सियत हैं। सहस्राब्दी के महानायक है। मनुष्य की मुक्ति और उत्थान के तमाम योद्धाओं से भिन्न और अतुल्य है। उनसा तेजोमय व्यक्तित्व विश्व-इतिहास में दूसरा नहीं है।

> यह सुखद है कि पंद्रह अगस्त की बेला में हमें राष्ट्रव्यापी तिरंगा अभियान देखने को मिला और इसमें उन समूहों ने सोत्साह शिरकत की, जिनकी दैनंदिन परंपरा में तिरंगा अनुपस्थित रहा है। तिरंग त्रिदेव की भारतीय परंपरा की याद दिलाता है। वह बहुलता और सामासिकता का प्रतीक है। उसके रंग क्रमश: त्याग-बलिदान, शांति और हरीतिमा व समृद्धि के द्योतक है।

बहरहाल, अब हम आजाद हैं। हम और हमारे समवयस्क लोग स्वतंत्र भारत में जनमें हैं, लिहाजा हम लोग खुशकिस्मत हैं। बिलाशक आजादी नेमत हैं, ऐसी नेमत, जिसकी महत्ता और कीमत को कूता नहीं जा सकता। वह अमूल्य और गर्वीली है। वह लाखों लोगों की शहादत और त्याग का नतीजा है। आजादी हमारी आत्मिक वृत्ति है। सिर्फ जातियां या कौमें ही आजादी नहीं चाहतीं। हर कोई बंधनों से मुक्ति चाहता है। गुलाम दासता की बेड़िया तोड़ना चाहते हैं। परिन्दे क़फ़स से आजादी चाहते हैं और शुभ्रता कालिमा से मुक्ति चाहती है। गुलामी कलंक है। स्वतंत्रता सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं होती। राजनीतिक स्वतंत्रता एक पड़ाव है; दूर के गंतव्य का एक महत्वपूर्ण पड़ाव। महात्मा गांधी और भगत सिंह जैसे महान नायकों ने इस तथ्य को बार-बार रेखांकित किया। स्वतंत्रता और स्वतंत्र समाज में बड़ा फासला है। बहुत कठिन है स्वतंत्रचेता समाज के निर्माण की डगर। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का लक्ष्य हासिल करना बड़ा कठिन है। महात्मा गांधी की आजादी की लड़ाई सिर्फ विदेशी दासता से मुक्ति की लड़ाई न थीं। वह भाषा की भी लड़ाई थी। अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष के साथ ही उनका आंदोलन लैंगिक असमानता के विरूद्ध अहिंसक युद्ध भी था। वहां श्रम की गरिमा की पुनर्स्थापना का संकल्प भी था। वहां रूढ़ियों कुरीतियों-बेगारी, सामंतवाद, अशिक्षा, बाल-विवाह, भेदभाव, जातिवाद, दहेज प्रथा आदि से मुक्ति की जद्दोजहद भी थी।

इसी को परिलक्षित कर एक भारतीय आत्मा पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'सिर के ऊपर पेट चढ़ाकर अपना सत्यानाश न कर तू। जनगणमन, अधिनायक तेरा, उसे विश्व का दास न कर तू' जैसी ओजभरी पंक्तियां लिखी थीं। पंद्रह अगस्त तक वह तारीख है, जो सूरज ढलने या रात गहराने से बीतती नहीं, बल्कि पटल पर बनी रहती है। वह हमें सोचने का साजोसामां देती है। सामूहिकता का पाठ पढ़ाती है और कुतुबनुमा मानिंद हमारे जीवन की दिशा तय कर समवेत सार्थक उपक्रमों के लिए प्रेरित करती है। पंद्रह अगस्त के बाद पंद्रह अगस्त का यही तकाजा और संदेशा है।

इन कसौटियों पर हम अपने आज को परखें तो हमें इस बात का आभास हो सकता है कि हम कहां खड़े हैं और विश्व परिदृश्य में गणतंत्र के तौर पर उभरने के उपरांत इस अमृतकाल तक हमने कितना और कैसा सफर तय किया है? हमारी यात्रा सार्थक रही है अथवा निरर्थक? हम इतिहास के गलियारे में कहीं उलटे पांव तो नहीं चल रहे हैं? कहीं हम पुनरूत्थानवादी शक्तियों से परिचालित तो नहीं है? हम अपने वक्त के तकाजों को बूझकर आगामी सुनहरे कल के लिये समवेत प्रयासों के विपरीत कहीं अतीत की गौरव स्थापना कर गुहांधकार में तो नहीं लौट रहे हैं? निर्विविवादित: समय कठिन है। चुनौतियां संगीन है; घरेलू मोर्चे पर भी, सरहदों पर भी और राजनय के धरातल पर भी। विचारकों का बार-बार यह कहना अकारण नहीं है कि यह बेढब, हिंस्र और अराजक समय है, जहां असहमति के लिये कोई ठौर नहीं है और व्यवस्था या तो उसे अनसुना करने अथवा उसे कुचलने के फेर में है। प्रख्यात विचारक परकाला प्रभाकर ने संकटग्रस्त गणराज्य पर अपने आलेखों के संकलन 'नये भारत की दीमक लगी शहतीरें' में 'फादर स्टैन स्वामी का हत्यारा कौन' शीर्षक अध्याय में इसके अनेक संदर्भ उजागर किये हैं। उनकी और राजीव भार्गव की किताब 'राष्ट्र और नैतिकता हमारे आज के अनेक महत्वपूर्ण सवालों से जूझती है और चतुर्दिक फैलते बेहिसाब अंधेरे को दर्शाती है। परकाला स्पष्ट कहते हैं कि हिन्दुत्व को राष्ट्रीयता का सत्यापित सूचक मान लिया गया है। बात सही है, लेकिन क्या यह हिंदुत्व ही वास्तविक और प्रतिनिधि हिन्दुत्व है? इसी से यह यह प्रश्न भी उभरता है कि आगामी समय में भारत गणराज्य अनेक धर्मों के प्रति कैसे सलूक से गुजरेगा, जबकि संविधान ने उसे सेक्यूलर और समाजवादी विशेषण से नवाजा है। राजीव सचान के शब्दों का आसरा लें तो क्या लिबरल या उदार लोकतंत्र की अवधारणा विकृतियों के लिये अभिशप्त है? क्या इस लोकतंत्र में लोग कहने को नागरिक हैं, अन्यथा प्रजा का अस्तित्व कायम है। क्या यह सक्रिय नागरिक के गमन और निश्चेष्ट प्रजा के आगमन का दु:सह काल है? सचान का यह कहना सच है कि राज्यविहीनता कोई कुदरती आपदा नहीं, आदमी का पैदा किया हुआ संकट है। यह सरहदों की सनक में पगलाये नवगठित राष्ट्र राज्यों की पैदाइश है।

कहना कठिन है कि इन 'हांकों' और 'खदेड़ो' अभियानों के क्या नतीजे निकलेंगे? वे लोमहर्षक भी हो सकते हैं। क्या गरीबों और हाशिये के लोगों के मूलभूत अधिकारों के लिए लड़ना आगे और मुश्किल होता जायेगा? क्या लोग सच के लिये हलफनामा उठाने से कतरायेंगे? प्रश्न यह भी है कि घृणा की मानसिकता अंतत: हमें कहां ले जायेगी? दंभ और सत्ता में बने रहने की ज़िद क्या गुल खिलायेगी? अमेरिका में फेडरेलिस्ट पार्टी ने सन्1798 में राजद्रोह कानून बनाया था। कानूनन आलोचना जुर्म हुई। बड़ी संख्या में विपक्षी दंडित हुये। राष्ट्रपति जॉन एडम्स पर टिप्पणी के एवज में रिपब्लिकन सांसद ने जेल की हवा खाई। मगर परिवर्तन ही शाश्वत है, अत: सत्ता बदली और विपक्षी थॉमस जेफरसन राष्ट्रपति बने। न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ ने टिप्पणी की थी कि असहमति लोकतंत्र का फक़त सेफ्टी वाल्व नहीं है, बल्कि सार्थक सामाजिक जीवन जीने के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत में असहमति और मत-मतांतर की भव्य और सुदीर्घ परंपरा रही है। लोकतंत्र में 'लोक' ही सर्वोपरि है। हमारा संविधान भी 'वी द पीपुल' की बात करता है। स्वतंत्रता दिवस पर यह कामना अनुचित नहीं कि इस महादेश में 'जनगणमन अधिनायक' के जयगान की परंपरा अक्षुण्ण रहेगी।

यह सुखद है कि पंद्रह अगस्त की बेला में हमें राष्ट्रव्यापी तिरंगा अभियान देखने को मिला और इसमें उन समूहों ने सोत्साह शिरकत की, जिनकी दैनंदिन परंपरा में तिरंगा अनुपस्थित रहा है। तिरंग त्रिदेव की भारतीय परंपरा की याद दिलाता है। वह बहुलता और सामासिकता का प्रतीक है। उसके रंग क्रमश: त्याग-बलिदान, शांति और हरीतिमा व समृद्धि के द्योतक है। 15 अगस्त, सन् 47 को एक महादेश जनमा था; जनपदों सूबों, रियासतों के भेदों से ऊपर एक महादेश, सार्वभौम गणतंत्र जिसकी नियति था। संविधान ने से शक्ति और संकल्प दिया। इन अर्थों में 15 अगस्त और 26 जनवरी एकमेक होते हैं। संविधान हमारी ताकत है और एकता, अखंडता और सार्वभौमिकता की गारंटी भी। यह संविधान भी पंद्रह अगस्त का ऋणी है। वस्तुत: भारत छोड़ो आंदोलन 15 अगस्त और पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी की भूमिका रचता है। याद रखें कि पंद्रह अगस्त पंद्रह अगस्त को खत्म नहीं होता। वह प्रेरक है और उत्प्रेरक भी। निस्संदेह, पंद्रह अगस्त के बाद क्या का उत्तर भी पंद्रह अगस्त की प्रासंगिता और महत्ता में निहित है।

आपके पत्र

सुरक्षित कैंपस, सम्मानजनक कार्यस्थल बुनियादी आवश्यकता

शिक्षण संस्थान ज्ञान देने के साथ-साथ आदर्श आचरण के केंद्र भी होते हैं। लेकिन जब यहां कार्यरत महिला शिक्षिकाएं असुरक्षा, अशोभनीय व्यवहार और अनुचित दबाव का सामना करती हैं, तो यह केवल एक व्यक्ति नहीं, पूरे माहौल की गरिमा को चोट पहुंचाता है। महिला सुरक्षा के लिए केवल कानून होना पर्याप्त नहीं, बल्कि संस्थानों में सख्त नियम और रोकथाम के उपाय जरूरी हैं। महिला स्टाफ रूम और शौचालय अलग हों, परिसर में हर जगह सक्रिय कैमरे लगे हों, खाली पीरियड में महिला और पुरुष शिक्षक अपने-अपने स्टाफ रूम में ही रहें, कार्य-संबंधी संदेश कार्य समय में ही भेजे जाएं, निजी चैटिंग पर प्रतिबंध हो। शिक्षण संस्थान केवल पढ़ाई-लिखाई की जगह नहीं होते, बल्कि समाज का आईना और भविष्य का निर्माण स्थल होते हैं। यहां का वातावरण सीधे तौर पर बच्चों की सोच, शिक्षकों की प्रेरणा और पूरे संस्थान की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। एक स्वस्थ और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई विलासिता नहीं, बल्कि बुनियादी आवश्यकता है। विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं और महिला कर्मचारियों के लिए यह सुनिश्चित करना कि वे अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें, किसी भी संस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

हर संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति सक्रिय रहे, गोपनीय शिकायत तंत्र हो, और दोषी पाए जाने पर तुरंत कार्रवाई हो। साथ ही, साल में कम से कम एक बार कार्यस्थल आचरण और कानून पर प्रशिक्षण हो, ताकि सभी को सम्मान और मर्यादा का महत्व समझ में आए। सुरक्षित कैंपस और सम्मानजनक कार्यस्थल केवल महिला का अधिकार नहीं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और समाज की गरिमा का आधार है। अब समय है चुप्पी तोड़ने और सख्त कदम उठाने का। ऐसी घटनाएं केवल एक महिला के मानसिक स्वास्थ्य को चोट नहीं पहुंचातीं, बल्कि पूरे वातावरण को विषैला बना देती हैं। असुरक्षा का भाव महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करता है। वे हमेशा सतर्क और तनावग्रस्त रहती हैं, जिससे उनका ध्यान पढ़ाने से भटकता है। बार-बार अपमानजनक स्थिति का सामना करने से उनका आत्मसम्मान टूटने लगता है। कई महिलाएं ऐसे माहौल से बचने के लिए नौकरी छोड देती हैं या स्थानांतरण की मांग करती हैं। इसका असर छात्रों पर भी पड़ता है, क्योंकि असुरक्षित और असंतुष्ट शिक्षक पूरी ऊर्जा और सकारात्मकता के साथ पढ़ाने में सक्षम नहीं रहते।

महिला शिक्षिकाओं ने अपने ही सहयोगियों या वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए अनुचित व्यवहार, अशोभनीय संदेश और निजी तौर पर अनुचित हरकतों की शिकायत की है। देशभर से समय-समय पर ऐसी खबरें आती रही है। महिलाओं की कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत में यौन उत्पीड़न (कार्यस्थल पर) अधिनियम, 2013 यानी पॉश अधिनियम लागू है। इसके तहत प्रत्येक संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य है, जिसकी अध्यक्ष महिला हो और आधे से अधिक सदस्य महिलाएं हों। शिकायत दर्ज होने पर सात कार्य दिवस में प्रारंभिक सुनवाई और नब्बे दिनों में जांच पूरी करनी होती है। दोषी पाए जाने पर प्रशासनिक और अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। शिकायतकर्ता के साथ किसी भी प्रकार के प्रतिशोध को रोकना भी संस्थान की जिम्मेदारी है।

-डॉ. प्रियंका सौरभ

ललित सुरजन की कलम से

कलम पर भरोसा रखने की ज़रुरत

'अगर हमें ठीक-ठीक याद है तो 1908 में कांग्रेस पार्टी के सूरत अधिवेशन में नरमपंथियों और गरमपंथियों के बीच जूते चले थे। यह देश की राजनीति में जूते के इस्तेमाल की शायद पहली घटना मानी जाएगी। इसके कुछ साल बाद अपने तीखे व्यंग्य के लिए मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी ने लिखा था कि डासन कंपनी का बनाया जूता चल गया लेकिन मेरी कलम से निकला लेख नहीं चला। इससे अनुमान लगता है कि राजनीति में जूते का प्रयोग उनके समय तक आकर मान्य हो गया होगा। इसके बाद हमने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही जूते का प्रयोग होते देखा जब अक्टूबर 1960 में संयुक्त राष्ट्रसंघ महासभा में भाग लेते हुए रूसी राष्ट्रपति निकिता कुश्चेव ने अपना जूता दिखलाते हुए अमेरिकी प्रतिनिधि को धमकाया। उसके कुछ समय बाद ही मध्यप्रदेश विधानसभा में ऐसा ही नजारा देखने मिला जब धमतरी के जनसंघी विधायक पंडरीराव कृदत्त ने सदन के भीतर जूता फेंका। छत्तीसगढ़, बल्कि अविभाजित मध्यप्रदेश के लोग इस तरह स्वतंत्र भारत में जूता संस्कृति का पहला उदाहरण पेश करने का श्रेय ले सकते हैं।'

https://t.me/AllNewsPaperPaid

(15 अप्रैल 2009 को देशबन्धु में प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2012/05/blog-post_21.html

गुरुवाणी विचार

करि बंदे तू बंदगी जीचर घट में साहो

अमृत नाम मनहि आधारे
जिन दिया तिसके कुरबानै गुर पूरे नमस्कारो
(रहाओ)
बुझि तृष्णा लहजि सुहेला काम क्रोध बिख जारो
आए न जाइ बसै इह ठाहर नह आसन निरंकारो
एके परगट एक गुपता-धूधूकारो।
आदि मधि अंति प्रभु सोई- काहो नानक साच बिचारो।।

गुरुवाणी की ये पंक्तियां सारंग राग से ली गई है जो गुरु ग्रंथ साहिब के अंग 1215 पर सुशोभित है। इन पंक्तियों द्वारा पांचवे नानक गुरु अर्जुन देव जी मानव मन को समझा रहे हैं कि मेरे आत्मिक जीवन को हर वक्त आनंदित करने वाला प्रभु नाम मेरे मन का आसरा बन गया है। मैं उस प्रभु परमात्मा को बार-बार नमस्कार करता हूं, बलिहार जाता हूं। जिसकी विशेष कृपा हो जाने पर ही उस प्रभु परमात्मा की अमृतमयी नाम मेरे मन का आसरा बन सकता है क्योंकि गुरुवाणी द्वारा हमें समझाया गया है-

जाकां मीत साजन है समिया।
तिस जन को कहो का की कमिया।।

जब प्रभु परमात्मा का ओट आसरा मिल जाए तो फिर उसे किसी भी प्रकार की कमी कहां रहने वाली है और फिर जब उसे हर बात से प्रभु अपनी कृपा से साधन संपन्न कर देता है उसका मित्र बन कर उसकी हर प्रकार की सहायता करता है तब उसे किसी भी बात का दुख कलेष कहां रहने वाला है-

जिसके सिर ऊपर तूं सुवामी सो दुख कैसा पावै।
बोल न जाने माया मदमाता मरणा चित न आवै।।

उसे फिर यमराज के जूतों की मार का भी भय नहीं रहता इसलिए हर इंसान को चाहिए कि वह प्रभु नाम सिमरन करते रहकर प्रभु परमात्मा की प्राप्ति कर ले। अगली पंक्तियों में आप फरमा रहे हैं कि प्रभु नाम सिमरन करते रहने के कारण मेरी तृष्णा खत्म हो गई है और मैं आत्मिक अडोलता की स्थिति में आ गया हूं और अंदर जो काम क्रोध का दावानल भड़क रहा था वह शांत हो गया है। मैंने प्रभु नाम सिमरन कर कर के उसने अपने अंदर विराजमान काम क्रोध रूपी जहर को जला दिया है। अब उसका मन किसी भी किस्म के विकारों की तरफ नहीं भटकता क्योंकि उसे इस बात की समझ आ गई है कि प्रभु नाम सिमरन करते रहना चाहिए। सांचे सुख की प्राप्ति की जा सकती है। गुरुदेव जी भी मानव मन को समझाते हैं कि वह अपने आप को संबोधित करते रहते हैं पर हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि वे जो भी समझा रहे हैं समस्त मनुष्यों को समझा रहे हैं। आगे आप कहते हैं कि मेरे मन में यह अटल विश्वास आ चुका है कि प्रभु परमात्मा ने इस समस्त संसार की रचना की है इसीलिए वे संसार के प्रारंभ में भी था वर्तमान में भी है और संसार के अंत होते तक भी वह रहेगा। इसलिए गुरवाणी द्वारा समझाया गया है-

अविनाशी जीयन को दाता सिमरत सब सब कोई।
गुण निधान भगतन को बरतन बिरला पावे कोई।।

इस बात की समझ हर किसी को नहीं हो पाती जिस पर प्रभु परमात्मा की कृपा हो जावे उसे ही इस बात का ज्ञान हो पाता है कि इस संसार के चारों तरफ फैले हुए अंधकार का एकमात्र प्रकाश स्तंभ प्रभु सिमरन भक्ति ही है इसलिए कहा गया है कि-

करि बंदे तू बंदगी जीचर घट में साहो।

-इंदर सिंह आहुजा

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

चिंतन

रोजगार सृजन पर और अधिक ध्यान देना जरूरी

मौजूदा वैश्विक परिस्थितियां और सुस्त ग्रोथ के दौर में भारत में बेरोजगारी दर में कमी को एक उपलब्धि के तौर पर देखा जा सकता है। लगातार यह तीसरा महीना है जब बेरोजगारी दर में क्रमशः कमी दर्ज की जा रही है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के मुताबिक, जुलाई में देश में बेरोजगारी दर घटकर 5.2 प्रतिशत पर आ गई जबकि जून में यह 5.6 प्रतिशत थी। मई में भी बेरोजगारी दर 5.6 प्रतिशत थी। वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (सीडब्ल्यूएस) में एकत्र किए गए नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, जुलाई के दौरान सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए बेरोजगारी दर 5.2 प्रतिशत रही। पुरुषों में बेरोजगारी की दर थोड़ी अधिक 5.3 प्रतिशत रही, जबकि महिलाओं में यह 5.1 प्रतिशत थी। जुलाई में शहरी क्षेत्रों में सभी आयु वर्ग के लिए बेरोजगारी दर बढ़कर 7.2 प्रतिशत हो गई जो जून में 7.1 प्रतिशत थी। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में सभी आयु वर्ग के लिए बेरोजगारी दर घटकर 4.4 प्रतिशत रही जो इससे पहले जून में 4.9 प्रतिशत थी। सर्वेक्षण के मुताबिक, 15 से 29 आयु वर्ग के युवाओं में बेरोजगारी घटकर जुलाई में 14.9 प्रतिशत रही, जो जून 2025 में 15.3 प्रतिशत थी। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में इस आयु वर्ग के लिए बेरोजगारी दर जुलाई में मामूली रूप से बढ़कर 19 प्रतिशत हो गई, जो इससे पिछले महीने 18.8 प्रतिशत थी। ग्रामीण क्षेत्रों में इसी आयु वर्ग (15-29 वर्ष) के लिए यह दर घटकर जुलाई में 13 प्रतिशत हो गई जो इससे पिछले महीने 13.8 प्रतिशत थी। बेशक भारत विश्व में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है, इसके बावजूद आर्थिक संकेतक आगाह करते रहते हैं कि देश को नए आर्थिक सुधार की जरूरत है। जीडीपी साढ़े छह फीसदी के दायरे में अनुमानित है, जोकि देश की आर्थिक जरूरत के अनुरूप नहीं है। आयात व निर्यात संतुलन भारत के खिलाफ है, मतलब हम आयात अधिक कर रहे हैं। छोटे व मध्यम उद्योग कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, कृषि क्षेत्र आधिक तवज्जो की मांग कर रहा है। निवेश की रफ्तार कम हुई है, सरकारी निवेश की गति भी धीमी है। करीब दस वर्ष में देश में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं, इसके बावजूद करीब 80 करोड़ लोगों को खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत 5 किलो निःशुल्क अनाज दिया जा रहा है, यह बड़ा विरोधाभास है। देश में सरकारी के बेरोजगारी के आंकड़े को लेकर बहस चलती रही है। वास्तविक बेरोजगारी के अधिक होने का अनुमान है। भारत में बेरोजगारी विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्र, जनसांख्यिकीय चुनौतियां, कौशल असंतुलन, सीमित रोजगार सृजन, युवाओं में उच्च बेरोजगारी, सामाजिक मानदंड जो महिलाओं को रोजगार लेने/जारी रखने से रोकते हैं, अनौपचारिक क्षेत्र और कौशल-नौकरी असंतुलन शामिल हैं। बेरोज़गारी का व्यक्तियों, समुदायों और समग्र अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। लम्बे समय तक बेरोजगारी रहने से उपभोक्ता खर्च में कमी आ सकती है। कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर, उद्यमिता और स्टार्टअप को प्रोत्साहित कर, विनिर्माण और औद्योगिक क्षेत्रों को मज़बूत कर, ग्रामीण रोज़गार के अवसरों में वृद्धि कर, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) को प्रोत्साहित कर, डिजिटलीकरण और प्रौद्योगिकी की क्षमता का दोहन कर व शिक्षा और उद्योग सहयोग को मज़बूत कर नए रोजगार सृजित किए जा सकते हैं। रोजगार सृजन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

विश्लेषण
उमेश चतुर्वेदी

जीईएम की पारदर्शी दशक यात्रा

वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक और सरकारी खरीद में पारदर्शिता की शुरूआत के लिए सरकारी मार्केट प्लेस यानी बाजार की शुरूआत जीईएम यानी गवर्नमेंट इलेक्ट्रॉनिक मार्केट प्लेस शुरू किया। जीईएम का मूल मंत्र है, पारदर्शी, समावेशी और कुशल शासन की आधारशिला। जीईएम ने आपी नौ वर्ष की यात्रा पूरी कर ली है। अपने दसवें वर्ष में राज्यों पर फोकस करने की दिशा में जीईएम प्रबंधन ने तैयारी की है। कागज रहित, वास्तविक समय के लेन-देन को सक्षम बनाने से लेकर स्वास्थ्य, खनन और बीमा में करोड़ों रुपये के अनुबंधों को सुगम बनाने तक, जीईएम ने नीति निर्माण और जमीनी स्तर की भागीदारी के बीच की खाई को पाटने की सफल कोशिश की है।

नौ अगस्त की तारीख हमारे इतिहास में अगस्त क्रांति के लिए प्रसिद्ध है। भारत से अंग्रेजी राज को उखाड़ फेंकने वाले निर्णायक 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरूआत इसी दिन हुई। यह तारीख इतिहास में एक और वजह से भी महत्वपूर्ण बन गई है। इसी दिन वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक और सरकारी खरीद में पारदर्शिता की शुरूआत के लिए सरकारी मार्केट प्लेस यानी बाजार की शुरूआत जीईएम यानी गवर्नमेंट इलेक्ट्रॉनिक मार्केट प्लेस शुरू किया। जीईएम का मूल मंत्र है, पारदर्शी, समावेशी और कुशल शासन की आधारशिला। इस ऑनलाइन सार्वजनिक और पारदर्शी बाजार ने नौ साल की आधिकारिक यात्रा पूरी कर ली है और एक दशक की यात्रा के लिए आगे बढ़ चुका है। प्रधानमंत्री बनते ही नरेंद्र मोदी ने एक नारा दिया था, 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन'। इसके सीईओ मिहिर कुमार कहते हैं कि जीईएम प्रधानमंत्री के इसी दृष्टिकोण को साकार कर रहा है। मिहिर कुमार के अनुसार, सिर्फ नौ साल की ही अवधि में यह पोर्टल देश का सबसे भरोसेमंद डिजिटल खरीद मंच बन गया है। पिछले कुछ वर्षों में इस पोर्टल पर महिला उद्यमियों, स्टार्टअप्स, मध्यम और लघु उद्योग, शिल्पकारों, स्थानीय कारीगरों और दिव्यांगजनों समेत पूरे देश के विक्रेताओं और सेवाप्रदाताओं के सशक्तीकरण में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। इस पोर्टल या ऑनलाइन बाजार पर विक्रेताओं के लिए जमानती राशि रखने का प्रावधान है। लेकिन अब इस प्रावधान को खत्म कर दिया गया है। इसकी वजह से विशेषकर छोटे निर्माताओं और कारोबारियों को ज्यादा फायदा होना है।

सार्वजनिक और सरकारी खरीद में भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहे हैं। इसी भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए प्रधानमंत्री ने पारदर्शी और समावेशी ऑनलाइन मार्केट की अवधारणा प्रस्तुत की थी। जीईएम उसी अवधारणा का विस्तार है। इसके कामकाज शुरू करने के बाद केंद्र सरकार के सभी दफ्तरों के लिए इसी पोर्टल के जरिए खरीद अनिवार्य कर दिया गया। अब जीईएम प्रबंधन का जोर राज्य सरकारों की खरीद को भी इसी के जरिए जरूरी बनाने पर है। अपने दसवें वर्ष में राज्यों पर फोकस करने की दिशा में जीईएम प्रबंधन ने तैयारी की है। जीईएम को उम्मीद है कि उनके जरिए हो रही सार्वजनिक खरीद में जिस तरह सार्वजनिक क्षेत्र को बचत हो रही है, उसकी वजह से राज्य सरकारें भी इसकी ओर आकर्षित होंगी। वैसे राज्यों की ओर से इसके जरिए खरीद होने भी लगी है। हालांकि उसकी मात्रा अभी कम है। जीईएम के जरिए होने वाली खरीद में अब तक एनटीपीसी को जहां करीब दो हजार करोड़ की बचत हुई है, वहीं बैंक ऑफ बड़ोदा को 34 करोड़। इसी तरह भारतीय नौसेना ने भी पंद्रह करोड़ की बचत की है। जीईएम के अधिकारी तो इसे स्वीकार नहीं करते, लेकिन जाहिर है कि यह बचत जहां खरीद में घपले की कमी से हुई है, वहीं सार्वजनिक मार्केट प्लेस पर उपलब्ध ढेरों और गुणवत्तापूर्ण सामानों में मूल्यों को लेकर हुई प्रतिद्वंद्विता की वजह से हुई है।

जीईएम के सीईओ मिहिर कुमार के अनुसार, इस ऑनलाइन मार्केट प्लेस ने सिर्फ खुद के दम पर साल 2024-25 में 5.4 लाख करोड़ रुपये के सकल व्यापारिक मूल्य सार्वजनिक खरीद को न केवल सुव्यवस्थित किया है, बल्कि शासन में पहुंच,समानता और सशक्तीकरण को

फिर से पारिभाषित किया है। जीईएम ने अपने स्थापना के दसवें वर्ष का सूत्र वाक्य, सुगमता, पहुंच और समावेशन विषयों पर केन्द्रित किया है। मिहिर कुमार का कहना है कि उसका यह सूत्र वाक्य सार्वजनिक खरीद को अधिक सुलभ और न्यायसंगत बनाने की दिशा में उनके संगठन की प्रतिबद्धता और पारदर्शी कामकाज को प्रदर्शित करता है। मिहिर कुमार यह भी कहते हैं कि वैसे तो ऑनलाइन खरीद के कई पोर्टल हैं। लेकिन वे सभी कारोबारी पोर्टल हैं, जबकि जीईएम मार्केट प्लेस है। वह खुद कारोबार नहीं करता, बल्कि पारदर्शी कारोबार का मंच उपलब्ध कराता है। जिसमें खरीददार और विक्रेता, दोनों का फायदा है।

जीईएम की कामयाबी ही कही जाएगी कि इसके जरिए अब तक तीन करोड़ से ज्यादा खरीदादारी हो चुकी है। जिनके जरिए 4.81 लाख करोड़ की खरीददारी हुई है। इस मार्केट प्लेस पर मौजूदा वित्त वर्ष में 11हजार से ज्यादा प्रोडक्ट, 344 से ज्यादा सर्विस श्रेणी, 20 लाख से ज्यादा ऑर्डर मिल चुके हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस पोर्टल पर सबकुछ ऑटोमेशन में सॉफ्टवेयर संचालित है, कोई मैनुअल हस्तक्षेप नहीं है। हालांकि जीईएम के अधिकारी मानते हैं कि इसमें और सुधार की गुंजाइश है और वह लगातार होती रहेगी। ताकि खरीद-बिक्री में पारदर्शिता रहे।

यह ठीक है कि अब विक्रेताओं के लिए जमानती राशि की व्यवस्था खत्म कर दी गई है। इसके साथ ही जीईएम ने कई और सुधार शुरू किये हैं। इसमें विक्रेता के मूल्यांकन शुल्क को तार्किक बनाना और लेनदेन शुल्क में उल्लेखनीय कमी करना भी सामिल है। वेंडर चार्ज भी पहले की तुलना में 68 प्रतिशत से लेकर 92 प्रतिशत तक कम किए जा चुके हैं। इन सबकी वजह से यहां मिलने वाले 97 प्रतिशत ऑर्डरों को छूट मिल गई है। मिहिर कुमार कहते हैं कि उनकी कोशिश, विक्रेताओं को सशक्त बनाना, मध्यम और लघु उद्योगो बढ़ावा देने की है। इस दिशा में पहली बार विक्रेताओं और छोटे उद्यमों के लिए मजबूत सहायता द्वारा समर्थन दिया जा रहा है। जीईएम की कोशिश ना सिर्फ बड़े, बल्कि दूर-दराज के इलाकों में स्थित कारीगरों, निर्माताओं, उद्यमियों और कारोबारियों को समावेशी मंच उपलब्ध कराना भी है। जीईएम के अधिकारी कहते हैं कि उनका ध्यान यह सुनिश्चित करने पर है कि आदिवासी कारीगरों से लेकर तकनीक-संचालित स्टार्टअप तक हर उद्यम तक सार्वजनिक खरीद के अवसरों आसानी से पहुंच सकें। इस दिशा में इसके दिल्ली मुख्यालय में छह अगस्त को जीईएमविक्रेता संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जीईएम के मंच पर देश के हर वर्ग के उद्यमियों, कारोबारियों और निर्माताओं को साथ लाने की कोशिश हुई।

कागज रहित, वास्तविक समय के लेन-देन को सक्षम बनाने से लेकर स्वास्थ्य, खनन और बीमा में करोड़ों रुपये के अनुबंधों को सुगम बनाने तक, जीईएम ने नीति निर्माण और जमीनी स्तर की भागीदारी के बीच की खाई को पाटने की सफल कोशिश की है। दसवें वर्ष में दाखिल होते हुए इसके अधिकारियों ने अनूठी शपथ ली है। उनका कहना है कि वे सार्वजनिक खरीद को नागरिक-केंद्रित, डेटा-संचालित और समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र में बदलने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हालांकि सार्वजनिक खरीद में इन विशेषताओं के बावजूद कुछ अतिरिक्त की चाहत रखने वाले भ्रष्टाचारी तत्व अब भी कुछ ना कुछ राह निकाल लेते हैं। जिस पर काबू पाने के लिए जीईएम के इंजीनियर लगातार सक्रिय रहते हैं। फिर भी उम्मीद की जानी चाहिए कि अपने एक दशक की यात्रा में यह सार्वजनिक ऑनलाइन बाजार पारदर्शिता की नई मिसाल कायम करेगा। इस संदर्भ में जीईएम के सीईओ मिहिर कुमार के इन शब्दों को देखा-परखा जा सकता है। वे कहते हैं, ₹पारदर्शिता को परिवर्तन के साथ जोड़ते हुए, GeMभारत के खरीद परिदृश्य की रीढ़ बन गया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

विवेचना
डॉ. मोनिका शर्मा

ट्रंप के बयान-वैश्विक जन समुदाय में खो रही साख

अमेरिका के राष्ट्रपति ने डोनॉल्ड ट्रंप सत्ता संभालने के पहले से ही अजीबोगरीब बयान देते रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान भी बहुत सी उनकी बातें सोशल मीडिया से लेकर आम संसार तक लोगों हैरान-परेशान करने वाली रही हैं। कभी युद्धरत देशों के बीच सीजफायर तो कभी नोबेल पुरस्कार के लिए संस्तुति को लेकर बहुत कुछ ऐसा कह चुके हैं, जो वैश्विक जनसमुदाय में उनकी छवि बिगाड़ रहा है। यह बर्ताव स्वयं उनकी ही नहीं उनके देश की साख को भी नुकसान पहुंचाने वाला है। हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नॉर्वे के वित्त मंत्री को फोन पर धमकाया है। नॉर्वे के बिजनेस अखबार डेगेन्स नेरिंगस्लिव के अनुसार डोनाल्ड ट्रंप ने देश के वित्त

मंत्री को टेलीफोन पर धमकी दी है कि यदि उन्हें नोबेल पुरस्कार नहीं दिया जाता है तो वो नॉर्वे पर भारी भरकम टैरिफ लगा देंगे। ज्ञात हो कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले महीने नॉर्वे के वित्त मंत्री को टैरिफ पर चर्चा के लिए बुलाया था। उस समय भी ट्रंप यह कहने से नहीं चूके थे कि उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार चाहिए। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था है कि 'वह नॉर्वे द्वारा दिए गए उस सम्मान के हकदार हैं, जो वाइट हाउस के चार पूर्ववर्तियों को मिला था।' गौरतलब है कि इजरायल, पाकिस्तान और कंबोडिया जैसे देशों ने डोनाल्ड ट्रंप को शांति समझौते और युद्ध विराम करवाने के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया हुआ है। विडम्बना ही है कि अमेरिकी राष्ट्राध्यक्ष के रूप में उनके विचार समग्र वैश्विक समुदाय को कभी चकित तो कभी चिंतित करते रहते हैं। यही कारण है कि ना तो आपसी संवाद का कोई परिणाम निकलता है और न ही वैश्विक स्तर पर बनी नीतियों और नियमों को लागू करने से जुड़ी गंभीरता नजर आती है। उनके बर्ताव अपने विचार थोपने का अंदाज़ स्पष्ट नजर आता है। इसी के चलते अलास्का के एंकोरेज में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की करीब तीन घंटे तक चली आमने-सामने की मुलाक़ात भी बेनतीजा रही। न तो रूस-यूक्रेन युद्धविराम पर सहमति बन पाई और न कोई ठोस समझौता हो सका। इसी वर्ष मार्च महीने में राष्ट्रपति ट्रम्प और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच व्हाइट हाउस में तीखी बहस हो चुकी है। व्हाइट हाउस के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि जब दो राष्ट्राध्यक्षों की चर्चा इतने तनाव भरे माहौल में हुई। भारत के समक्ष भी ट्रंप कभी टैरिफ़ बढ़ाने की चुनौती तो ऑपरेशन सिंदूर के बाद सीजफायर करवाने से जुड़े बयान देकर उलझनें खड़ी करते रहे हैं। पहलगांव में हुए बर्बर आतंकी हमले के बाद भारतीय देना द्वारा किए गए ऑपरेशन सिंदूर में सीजफायर को लेकर बार-बार अपने बयान बदलने से भी नहीं चूके। जिसके सरकार और विपक्ष में भी वैचारिक घमासान मचा रहा है। सैन्य बलों की कार्रवाई पर प्रश्न उठाए गए। इस विवाद ने भारत की छवि को भी नुकसान पहुंचाया, जबकि भारत सरकार द्वारा प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट कहा गया कि सीजफायर में किसी भी देश का हाथ नहीं है। दुखद है कि इस विवाद को हवा देने के बाद खुद राष्ट्रपति ट्रंप भी भारत-पाकिस्तान सीजफायर पर दिये अपने बयान से पलट गए। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि मैंने भारत-पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता नहीं कराई। मैंने दोनों देशों के बीच तनाव का समाधान निकालने में मदद की थी। इसके पहले अपने एक बयान में कहा कि अमेरिका ने भारत और पाकिस्तान को चेतावनी दी थी कि अगर दोनों ने सीजफायर नहीं किया तो वह किसी के साथ व्यापार नहीं करेगा। हालांकि ट्रंप के इस बयान से भारत कभी सहमत नहीं हुआ और इसे खारिज कर दिया गया। इसी फेहरिस्त में ईरान और इज़राइल के युद्ध को लेकर दिये गए उनके बयान भी वैश्विक समाज को स्तब्ध कर चुके हैं। असल में ऐसे राष्ट्रपति ट्रंप के ऐसे वक्तव्यों की लंबी सूची है। दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश माने जाने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति अपने बयानों से हलचल मचाते रहे हैं और मचा रहे हैं। कभी अपनी ही बात से मुकर जाना तो धमकी भरी बोलचाल में आर्थिक प्रतिबंध लगाने की बात। दुनिया के बहुत से देश उनके इस बर्ताव को लेकर परेशान हैं। यह लाजिमी भी है क्योंकि राष्ट्राध्यक्षों की भाषा का रुख और वैचारिक सधापन केवल उनकी अपनी राजनीतिक छवि से जुड़ा पहलू भर नहीं होता। जिसके चलते हर विषय में संशय बढ़ाने और बेवजह सख्ती दिखाने वाले शब्द लिए राष्ट्रपति ट्रंप का यह व्यवहार अमेरिका की साख को भी ठेस ही पहुंचाएगा।

(लेखिका स्वतंत्र पत्रकार व स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

व्यक्ति को निरंतर रूप से निखारती है प्रतिस्पर्धा

संकलित
दर्शन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह अनेक छोटे-बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। समाज का अंग होते हुए, समाज में अपनी पहचान बनाना भी प्रत्येक व्यक्ति का एक उद्देश्य जैसा ही प्रतीत होता है। इन उद्देश्यों, लक्ष्यों व उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए चल रहे अनवरत प्रयत्नों के फलस्वरूप एक सामाजिक प्रक्रिया जन्म लेती है। इस सामाजिक प्रक्रिया का नाम है-प्रतिस्पर्धा। यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो बेहतर प्रदर्शन करने की तीव्र लालसा। यह लालसा एक अबोध शिशु से लेकर एक वृद्ध तक सभी में विद्यमान रहती है। वस्तुतः जब आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं होती, तो प्रतिस्पर्धा स्वतः ही जन्म ले लेती है। प्रतिस्पर्धा में कदाचित विरोध व ईर्ष्या की भावनाएं भी अंतर्निहित होती हैं, किंतु ऐसी प्रतिस्पर्धा स्वस्थ नहीं कही जाती। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा वास्तव में उत्कृष्टता का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रतिस्पर्धा की यही विशेषता इसे संघर्ष से अलग करती है। एक अन्य विशेष बात यह है कि प्रतिस्पर्धा किसी तंत्र विशेष तक ही सीमित रहती है। एक विशेष तरह की प्रतिस्पर्धा एक विशेष तंत्र में ही दृष्टिगोचर होती है। किसी व्यक्ति के साथ आपकी प्रतिस्पर्धा केवल तभी तक रहती है, जब तक आप उसके साथ किसी तंत्र को साझा करते हैं। किसी व्यक्ति द्वारा वह तंत्र छोड़ते ही प्रतिस्पर्धा स्वतः समाप्त हो जाती है। यह आवश्यक नहीं कि प्रतिस्पर्धा सदैव दूसरे व्यक्ति के साथ ही हो।

आखिर कर्म ही महान

संकलित
प्रेरणा

एक बार बुद्ध एक गांव में अपने किसान भक्त के यहां गए। शाम को किसान ने उनके प्रवचन का आयोजन किया। बुद्ध का प्रवचन सुनने के लिए गांव के सभी लोग उपस्थित थे, लेकिन वह भक्त ही कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। गांव के लोगों में कानाफूसी होने लगी कि कैसा भक्त है कि प्रवचन का आयोजन करके स्वयं गायब हो गया। प्रवचन खत्म होने के बाद सब लोग घर चले गए। रात में किसान घर लौटा। बुद्ध ने पूछाः कहां चले गए थे? गांव के सभी लोग तुम्हें पूछ रहे थे। किसान ने कहा, दरअसल प्रवचन की सारी व्यवस्था हो गई थी, पर तभी अचानक मेरा बैल बीमार हो गया। पहले तो मैंने घरेलू उपचार करके उसे ठीक करने की कोशिश की, लेकिन जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब होने लगी तो मुझे उसे लेकर पशु चिकित्सक के पास जाना पड़ा। अगर नहीं ले जाता तो वह नहीं बचता। आपका प्रवचन तो मैं बाद में भी सुन लूंगा। अगले दिन सुबह जब गांव वाले पुनः बुद्ध के पास आए तो उन्होंने किसान की शिकायत करते हुए कहा, यह तो आपका भक्त होने का दिखावा करता है। प्रवचन का आयोजन कर स्वयं ही गायब हो जाता है। बुद्ध ने उन्हें पूरी घटना सुनाई और फिर समझाया, उसने प्रवचन सुनने की जगह कर्म को महत्व देकर यह सिद्ध कर दिया कि मेरी शिक्षा को उसने बिल्कुल ठीक ढंग से समझा है। उसे अब मेरे प्रवचन की आवश्यकता नहीं है। मैं यही तो समझाता हूं कि अपने विवेक और बुद्धि से सोचो कि कौन सा काम पहले किया जाना जरूरी है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

अंतर्मन

आज की पाती

आवारा कुत्तों की समस्या का समाधान जरूरी

कितनी हैरानी और चकित करने वाली बात है कि देश के सर्वोच्च न्यायालय को देश की एक छोटी सी समस्या पर भी बयान देना पड़ रहा है। यह समस्या है देश में आवारा कुत्तों से आमजन को होने वाली परेशानी। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने देश में आवारा कुत्तों द्वारा लोगों को काटने से जो परेशानी हो रही है, और इससे रैबीज से होने वाली लोगों की मौतों पर चिंता जताई है। जबकि इस पर राज्य सरकारों को चिंता नहीं, बल्कि चिंतन करना चाहिए। मीडिया भी इस समस्या के लिए गंभीरता दिखाता है और प्रशासन को जगाने की कोशिश करता है, लेकिन नेतागण व प्रशासन यह गंभीरता नहीं दिखाते। रैबीज की बीमारी जानलेवा भी बन सकती है। इसलिए समूह समाज को इसका ठोस समाधान तलाशना चाहिए। *- प्रतीक मिश्रा, भिलाई*

करंट अफेयर

इंडिया डे परेड पहली बार सिएटल में हुई आयोजित

भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सिएटल में पहली बार भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा आयोजित 'इंडिया डे परेड' में भारत के सभी राज्यों की सांस्कृतिक झलकियां दिखाई गईं। शनिवार को हुई इस परेड में 'इंडिया पैवेलियन' भी आकर्षण का केंद्र रहा, जिसमें हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश के ओडीओपी (एक जिला एक उत्पाद) प्रदर्शित किए गए। सिएटल में भारतीय वाणिज्य दूत प्रकाश गुप्ता और शहर के मेयर ब्रूस हैरेल ने परेड की शुरुआत झंडी दिखाकर की। जैसे ही आकाश में तिरंगे गुब्बारे छोड़े गए, सड़कें भारतीय तिरंगे के रंगों से सराबोर हो गईं।

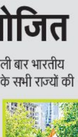

सिएटल में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने एक समाचार विज्ञप्ति में कहा कि 'इंडिया पैवेलियन' में 30 से अधिक स्टॉल लगाए गए थे, जहां भारत के 28 राज्यों के पारंपरिक उत्पाद, उनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता के साथ प्रदर्शित किए गए। आगंतुकों ने क्षेत्रीय व्यंजनों का स्वाद लिया और सांस्कृतिक कलाकृतियों का अवलोकन किया, जिससे भारत की समृद्ध विरासत और परंपराओं की झलक मिली। लगभग 2,000 से अधिक लोगों को संबोधित करते हुए मेयर हैरेल ने कहा कि अमेरिका को भारत के प्रेम, करुणा और अहिंसा के संदेश से सीखना चाहिए।

ऑफ बीट

बच्चों को खाना खिलाना एक बड़ी समस्या

कई परिवारों के लिए बच्चों को भोजन कराना रोजाना एक चुनौती होती है। कोई बच्चा अचानक अपना पसंदीदा खाना खाने से मना कर देता है, कोई दिन भर कुछ

न कुछ खिलाए जाने के कारण चिड़चिड़ा हो जाता है, भाई-बहन खाने की मेज पर झगड़ने लगते हैं। लेकिन अगर माता-पिता और बच्चों की देखभाल करने वाले लोग इस बारे में सलाह के लिए सोशल मीडिया का रुख करते हैं, तो इससे फायदे से ज्यादा नुकसान हो सकता है। क्योंकि सोशल मीडिया पर बच्चों को खाना खिलाना बिल्कुल आसान लगता है। हमारे नए शोध में पता चला है कि इंस्टाग्राम पर ऐसे कंटेंट की भरमार है, जिसमें भोजन के समय के अवास्तविक मानकों के बारे में बताया जाता है। इससे बच्चों की देखभाल करने वालों की समस्याएं और बढ़ सकती हैं। हम जानते हैं कि जब बच्चों को खाना खिलाने की बात आती है तो माता-पिता को कई दबावों का सामना करना पड़ता है, लेकिन उन्हें इस बारे में बहुत कम जानकारी होती है कि सोशल मीडिया किस प्रकार इन दबावों को बढ़ाने में योगदान दे रहा है। यह जानने के लिए कि सोशल मीडिया पर पारिवारिक भोजन को कैसे दर्शाया जाता है, हमने एक लोकप्रिय प्लेटफ़ॉर्म इंस्टाग्राम पर नजर डाली। लगभग दो अरब यूजर वाले इंस्टाग्राम पर खान-पान से जुड़ी तस्वीरों व वीडियो का अंबार है।

ट्रेंड

विशिष्ट पहचान

थिरु सीपी राधाकृष्णन ने अपनी लगन, विनम्रता और बुद्धिमत्ता से अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। विभिन्न पदों पर रहते हुए, उन्होंने हमेशा सामुदायिक सेवा और वंचितों के सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

शोध पर चर्चा

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय के उप-कुलपति प्रो. गाय लिटिलफेयर से भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच शैक्षणिक और शोध साझेदारी को और गहरा करने पर उपयोगी चर्चा हुई। खनन और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में उनकी व्यापक विशेषज्ञता और एक मजबूत प्रतिष्ठा है।

-धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री

केस दर्ज होगा

वोटर लिस्ट में घपला करने वाला बड़े-से-बड़ा अधिकारी और बूथ स्तर तक का चुनावकर्मी देख ले कि उसकी बेईमानी पकड़े जाने पर केस भी होगा और निलंबन व दंडात्मक कार्रवाई भी। वो देश के साथ दगा करने का दोषी घोषित होगा।

- अखिलेश यादव, सपा नेता

असाधारण उपलब्धि

जाकिर खान ने मैडिसन स्क्वायर गार्डन में जो कर दिखाया, ये एक असाधारण उपलब्धि हिन्दुस्तान का यह सितारा आज पूरी दुनिया से हिंदी में बातचीत कर रहा है और लोग रुक कर उसे सुन भी रहे हैं।

- अनिल अग्रवाल, उद्योगपति

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 18 अंक 156

कृषि होगी सशक्त

कृषि क्षेत्र सिंचाई कार्यों के लिए देश की कुल बिजली के करीब पांचवें हिस्से की खपत करता है। डीजल का बहुत बड़ा हिस्सा भी इसी काम में लगता है। डीजल पंप की जगह सौर ऊर्जा से संचालित पंप लगाकर और ग्रिड से जुड़े पंपों को सौर ऊर्जा से जोड़कर पीएम-कुसुम (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान) योजना कार्बन उत्सर्जन कम करने, सब्सिडी कम करने और किसानों को इनपुट की लागत के उतार-चढ़ाव से बचाने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

योजना का पहला चरण 2025-26 में चल रहा है और इसका लक्ष्य है सोलर पंपों, ग्रिड से जुड़े पंपों को सौर ऊर्जा से जोड़कर तथा बंजर भूमि पर छोटी सौर ऊर्जा परियोजनाओं की मदद से सिंचाई के लिए 34.8 गीगावॉट अतिरिक्त सौर ऊर्जा तैयार करना। करीब 34,000 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ योजना का लक्ष्य 14 लाख सोलर पंप स्थापित करना और 35 लाख ग्रिड से जुड़े कृषि पंपों को सौर ऊर्जा संचालित पंप में बदलना है। इसमें फीडर स्तर तक को भी सोलर में बदलना शामिल है। वास्तव में मांग में इजाफा हुआ है और यह इस बात को रेखांकित करता है कि सौर ऊर्जा को स्वीकार करने और इसका विस्तार करने की अत्यधिक आवश्यकता है। 2024-25 में ही भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी ने योजना के तहत ऋण की मंजूरी में 27 फीसदी इजाफा दर्ज किया और ऋण राशि 47,453 करोड़ रुपये पहुंच गई। ऋण वितरण में 20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

इस संबंध में अगस्त 2024 में कृषि अधोसंरचना निधि में इसके एकीकरण के बाद नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा इस योजना के दूसरे चरण को शुरू करने की काफी संभावनाएं नज़र आती हैं। पहले चरण के सबकों से सीख लेते हुए अब केंद्रीय वित्तीय सहायता की सीमा हटाई जा सकती है और एग्रोवॉल्टेइक स्थापनाओं को समायोजित किया जा सकता है जहां फसल और सोलर पैनल एक साथ होते हैं। इसके साथ ही महाराष्ट्र के केंद्रीकृत भू-एकीकरण पोर्टल की तरह बड़े पैमाने पर अपनाए जाने वाले मॉडल भी अपनाए जा सकते हैं जहां 40,000 एकड़ से अधिक जमीन का इस्तेमाल सौर खेती के लिए किया जा रहा है।

डीजल पंप को बदलने से कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और ईंधन कीमतों के उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलेगी। सौर ऊर्जा दिन के समय उच्चतम उत्पादन करती है जो सिंचाई की जरूरतों के अनुरूप है और इसे अधिक किफायती बनाता है। इतना ही नहीं किसानों द्वारा जो अतिरिक्त बिजली तैयार की जाएगी उसे वापस ग्रिड में भेजा जा सकता है। इससे उन्हें न्यूनतम लागत पर अतिरिक्त आय अर्जित करने में भी मदद मिलेगी। इस प्रकार सौर ऊर्जा न केवल कार्बन उत्सर्जन कम करने में मदद कर सकती है बल्कि उसकी बदौलत हम विकेंद्रीकृत और मजबूत बिजली सहयोग हासिल कर सकते हैं और ग्रामीण समुदायों को भी मजबूत बना सकते हैं। यह सही है कि पवन ऊर्जा और बायोमास भी देश में नवीकरणीय ऊर्जा मिश्रण के अहम घटक हैं। वे भी मायने रखते हैं लेकिन पवन ऊर्जा क्षमताओं का पूरा लाभ लेने में भौगोलिक बाधाएं आड़े आती हैं। यह किसानों के लिए भी उतना अनुकूल नहीं है। दूसरी ओर बायोमास लॉजिस्टिक्स और टिकाऊपन से जुड़े कई सवाल खड़े करती है। इनके विपरीत सौर ऊर्जा किसानों के नियंत्रण वाली और किफायती ऊर्जा साबित होती है। आम परिवारों द्वारा सौर ऊर्जा को अपनाना पहले ही हमें अच्छे परिणाम देने वाला साबित हुआ है। देश में छतों पर स्थापित सौर ऊर्जा संयंत्रों की उत्पादन क्षता 19 गीगावॉट से अधिक हो चुकी है जबकि जुलाई 2025 तक कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता 119 गीगावॉट से अधिक हो चुकी थी। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना जैसी योजनाओं ने 10 लाख से अधिक घरों को सोलर पॉवर ग्रिड में शामिल किया है। इससे पता चलता है कि विकेंद्रीकृत मॉडल कामयाब हो सकते हैं।

अगर पीएम-कुसुम का दूसरा चरण पहले चरण से अधिक विस्तार हासिल कर सका तो भारत बहुत सफलतापूर्व ग्रामीण ऊर्जा क्रांति हासिल कर लेगा। बहरहाल, क्रियान्वयन में कई बाधाएं हैं। अक्सर जमीन के ऐसे टुकड़े हासिल करने में दिक्कत होती है जिन्हें एक साथ जोड़कर बिजली परियोजना विकसित करने वाले को दिया जा सके। इसके अलावा कई राज्य किफायती दरों पर बिजली देते हैं जिससे किसान सौर ऊर्जा पंपों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित नहीं होते। देश के बिजली क्षेत्र को गहन सुधारों की आवश्यकता है। ऐसे में कृषि में सौर ऊर्जा को अपनाना सकारात्मक संकेत है।

प्रबंधन स्कूलों की बदलेगी भूमिका

एआई के दौर में प्रबंधकों की भूमिका में तब्दीली को देखते हुए प्रबंधन स्कूलों की भी नए सिरे से परिकल्पना जरूरी है। विस्तार से बता रहे हैं अजित बालकृष्णन

हर बार जब मैं किसी खबर की सुर्खियां देखता हूं जिसमें लिखा होता है कि अमेरिका की किसी बड़ी कंपनी ने, जो आमतौर पर हाईटेक कंपनियां होती हैं, अपने हजारों कर्मचारियों की छंटनी कर दी है तो मैं हिल जाता हूं। जब इन खबरों की सुर्खियों में मुझे इंटेल और माइक्रोसॉफ्ट जैसे नाम नजर आते हैं और ऐसे संकेत दिखते हैं कि नौकरी गंवाने वालों में 'वरिष्ठ प्रबंधक' स्तर के अधिकारी शामिल हैं तो मुझे जिज्ञासा होती है कि कहीं ये क्लिकबेट में सिद्धहस्त वेबसाइटों द्वारा दी गई गलत सुर्खियां तो नहीं हैं। परंतु जब मैं देखता हूं कि ये खबरें द न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे प्रतिष्ठित अखबार के पोर्टल पर प्रकाशित हैं तो फिर मुझे जिज्ञासा होती है कि हम जिस दुनिया को जानते थे क्या वह खुद को नए सिरे से तलाश रही है?

जिस समय मैं इन तमाम झटकों से उबर रहा था, मेरा सामना एक और चौंकाने वाली सुर्खी से हुआः माइक्रोसॉफ्ट के एक शोध पत्र में 40 ऐसे पेशे का जिक्र है जिनके बारे में माना जा रहा है कि उन्हें आर्टिफिशल इंटेलिजेंस यानी एआई से सबसे अधिक खतरा है। इस सूची में बिक्री प्रतिनिधि, ग्राहक सेवा प्रतिनिधि, टिकट एजेंट और ट्रैवल क्लर्क जैसे नामों की मौजूदगी ने मुझे नहीं चौंकाया। जिस बात ने मुझे स्तब्ध किया वह यह थी कि उस सूची में प्रबंधन विश्लेषकों और बाजार शोध विश्लेषकों का नाम शीर्ष पर था। मुझे लगता था कि भारतीय प्रबंध संस्थानों और अन्य प्रबंधन स्कूलों से एमबीए आदि की पढ़ाई करने वाले लोग ही वह काम कर सकते हैं। इन रिपोर्ट के मुताबिक यह सारी अनिश्चितता एआई के कारण आई है।

इस सदी के आरंभ से यानी जब से इंटरनेट ने कदम रखा है, हमने समाज में काफी बदलाव देखा है। उदाहरण के लिए हमने देखा कि कैसे बड़े-बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर जो छोटे कारोबारियों की जगह ले रहे थे उन्हें एमेजॉन जैसे शॉपिंग प्लेटफॉर्म्स के लिए जगह खाली करनी पड़ी। ट्रैवेल एजेंट्स को मेक माई ट्रिप जैसे पोर्टल के लिए जगह बनानी पड़ी और शेयर ब्रोकर्स को जिरोधा जैसे संस्थानों के लिए जगह खाली करनी पड़ी। परंतु अब जबकि हमें किफायती दामों और 30 मिनट के भीतर आपूर्ति की आदत पड़ती जा रही है तो एक नया परिदृश्य उभरता नजर आ रहा है। वह है मझोले स्तर के प्रबंधकों का नदारद होना। ये वे लोग हैं जो किसी वस्तु की बिक्री, सेवा और उत्पादन श्रमिकों के बीच हुआ करते थे। इसी तरह सॉफ्टवेयर कोड लिखने वाले, मुख्य कार्यकारी अधिकारी और संगठनों के कार्य प्रमुख आदि भी नदारद हो रहे हैं। ये वे भूमिकाएं हैं जिन्हें बिज़नेस स्कूल के स्नातक अपनाते थे।

मुझे लगता है कि किसी संगठन की पिरामिड संरचना को हमने हमेशा एक स्वाभाविक चीज़ मान लिया है। मेरी समझ से इसका उद्गम 18वीं शताब्दी में लंदन के लीडेनहॉल स्ट्रीट स्थित ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के कार्यालय से हुआ था। तब से लेकर अब तक, मध्य स्तर के प्रबंधक इस पिरामिड के बीच में स्थान पाते रहे हैं।

1990 के दशक और सूचना के युग के आगमन तक, हमने शायद यह मान लिया था कि बड़े संगठनों की मध्य परत में कई प्रबंधक होते हैं। इनमें से कई 30 से 50 की उम्र में होते हैं, जो स्वयं कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं करते, बल्कि अपने कार्यालयों में बैठकर उन लोगों की निगरानी करते हैं जो वास्तव में काम करते हैं।

इसके प्रमाण नजर आने लगे थे कि मध्यम प्रबंधन स्तर की पारंपरिक परत पतली हो रही है। रिपोर्ट बताती हैं कि कंपनियां छोड़कर जाने वाले प्रबंधकों की जगह नई भर्ती नहीं कर रही हैं। इतना ही नहीं पिछले पांच साल में किसी एक प्रबंधक को रिपोर्ट करने वाले कर्मचारियों की संख्या भी बढ़कर दोगुनी हो गई है। इससे संकेत मिलता है कि कंपनियां प्रबंधन संबंधी जिम्मेदारियों को चुनिंदा लोगों के बीच समेट रही हैं। इसके अलावा हाई-प्रोफाइल टेक कंपनियों मसलन मेटा (फेसबुक) आदि से खबरें आ रही हैं कि वे किफायत और गति बढ़ाने के लिए अपने संगठनात्मक ढांचे को समतल करना चाहती हैं यानी वे प्रबंधकों द्वारा प्रबंधकों के प्रबंधन की व्यवस्था को समाप्त करना चाहती हैं।

मुझे बताया गया कि अब पारंपरिक प्रबंधकों के काम का बहुत बड़ा हिस्सा एआई कर रही है। वह प्रदर्शन संबंधी आंकड़े एकत्रित करती है, परियोजनाओं की प्रगति पर नजर रखती है, रिपोर्ट बनाती है और वरिष्ठ नेतृत्व तथा पहले दर्जे की टीमों के बीच सूचनाओं का समन्वय करती है। भारत में, और शायद दुनिया भर में, हम एक और चुनौती देखते हैं जो मध्य प्रबंधक अक्सर संगठनों में लेकर आते हैं। वह यह कि जब लोग अपनी उम्र के चौथे दशक में प्रवेश करते हैं, तो वे अपना समय प्रबंधन कार्य की रस्मों को निभाने में बिताते हैं (जैसे समीक्षा बैठकें करना, काम का ब्योरा लिखना और उस पर चर्चा करना आदि), लेकिन वास्तव में कोई ठोस काम नहीं करते।

उदाहरण के लिए क्वोरा पर ऐसे सवालों की बाढ़ आई हुई है कि : भारत में 50 वर्ष की आयु के बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियरों और प्रबंधकों का जीवन कैसा है? इनके जवाब कुछ इस तरह के होते हैंः संक्षेप में जवाब यह है कि भारत में इस उम्र में इन भूमिकाओं में जीवन बहुत अधिक कठिन है। हमेशा पढ़ते रहने और अपने कौशल को उन्नत बनाते रहने की जरूरत होती है।

मुझे जिज्ञासा होती है कि बिज़नेस स्कूल कैसे संगठनों को इन चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकते हैं। क्या उन्हें मझोले दर्जे के प्रबंधकों को नई तकनीक से परिचित बनाने के कार्यक्रमों पर अधिक ध्यान देना चाहिए? या उन्हें व्यावहारिक कार्य संस्कृति पर जोर देना चाहिए? क्या पाठ्यक्रम में ऐसी बातें शामिल की जानी चाहिए जो बच्चों को व्यावहारिक प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण दें।

यहां कुछ ऐसी बातें हैं जो बिज़नेस स्कूलों में कर्मचारी केंद्रित स्नातकों के बजाय कार्य केंद्रित नेता तैयार करने में मदद कर सकती हैं। विश्लेषण और रणनीति कुशल स्नातकों को तैयार करने के बजाय ऐसे स्नातक तैयार किए जाएं जो वास्तविक दुनिया में प्रभावशाली काम कर सकें, क्रियान्वयन और विस्तार कर सकें। केस स्टडीज को केवल विश्लेषण तक सीमित नहीं रखा जाए। उन्हें क्रियान्वयन आधारित असाइनमेंट से जोड़ा जाए। अनुभव आधारित शिक्षा को केंद्र में रखें। स्टार्टअप्स, कंपनियों और सामाजिक संस्थानों के साथ तीन-चार महीने की साझेदारी करें ताकि छात्र वास्तविक परियोजनाओं पर काम करें। परियोजना रिपोर्ट में केवल नतीजे नहीं बल्कि ठोस क्रियान्वयन की सिफारिशें शामिल हों। ऐसे मंच बनें जहां छात्रों को कंपनियां चलाने का प्रशिक्षण मिले और वे वास्तविक समय में निर्णय ले सकें। गलतियां करके सीखने की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए। उन पूर्व छात्रों को तवज्जो दी जाए जो व्यवसाय खड़ा कर चुके हैं, जिन्होंने नेतृत्व किया है या पुनर्गठन किया है। उन्हें छात्र परियोजनाओं के मेंटर के रूप में आमंत्रित किया जाए।

लब्बोलुआब यह कि बिज़नेस स्कूलों को यह संकल्प लेना होगा कि उनका लक्ष्य अब केवल विश्लेषकों को बैक ऑफिस के काम का प्रशिक्षण देना नहीं बल्कि यह होना चाहिए कि ऐसे निर्णय लेने वाले नेतृत्वकर्ता तैयार करने हैं जो अनिश्चित माहौल में भी परिणाम दे सकें।

(लेखक प्रौद्योगिकी और समाज के बीच संबंधों के अन्वेषण में लगे हैं)

क्यूएमएनएस तकनीक का बढ़ता महत्त्व

दुनिया में हाल की सैन्य झड़पों में दूर से मार करने वाले साधन एवं हथियार जैसे लड़ाकू विमान, मिसाइल एवं ड्रोन जमकर इस्तेमाल में लाए गए हैं। इन्हें चलाने के लिए सैनिकों के जमावड़े या उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने की जरूरत नहीं पड़ती है। दूर से ही दुश्मनों के ठिकानों पर हमले करने के लिए उपग्रह प्रणाली से संचालित तकनीकों जैसे जीपीएस (अमेरिका), ग्लोनास (रूस), गैलीलियो (यूरोपीय संघ) और बेईदोउ (चीन) की जरूरत पड़ती है। ये तकनीक मिसाइलों एवं ऐसे अन्य हथियारों को लंबी दूरी तक मार करने और सटीक निशाना साधने में मदद करती हैं।

मगर युद्ध में स्वयं ये तकनीक निशाने पर आने लगी हैं। नए जमाने के युद्ध में जैमिंग (रिसीवरों को शोर से निष्क्रिय कर देना), स्पूफिंग (स्थान को लेकर गलत सूचना भेजना) और मीकोनिंग (देरी से मिल रहे या बदले संकेतों को दोबारा प्रसारित करना) की भूमिका काफी बढ़ गई है। अन्य तकनीकों में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक शील्डिंग, सिग्नल मास्किंग और रेडार को निष्प्रभावी करने वाली सामग्री शामिल हैं। प्राकृतिक घटनाएं जैसे सौर ज्वालाएं या आयन मंडल में होने वाली हलचल भी उपग्रहों से आने वाले संकेतों की गुणवत्ता बिगाड़ सकते हैं जिनसे ये तकनीक अधिक कारगर नहीं रह जाते हैं।

यूक्रेन से लेकर पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया में जैमिंग, स्पूफिंग और साइबर हमले आम हो गए हैं जिससे जीपीएस वंचित माहौल में एक मजबूत और मल्टी-मॉडल नेविगेशन तकनीक की जरूरत महसूस की जा रही है। हालांकि, विकल्प के तौर पर जड़त्वीय संचालन प्रणाली (इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम), भूभाग समोच्च मिलान (टेरकॉम), छवि आधारित निर्देश (इमेज बेस्ड गाइडेंस), एन्क्रिप्टेड सैटेलाइट सिग्नल और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित उपाय इस्तेमाल में लाए गए हैं मगर इनमें प्रत्येक की अपनी कुछ सीमाएं हैं। जड़त्वीय संचालन प्रणाली समय के साथ बेअसर हो सकती है और इसके लिए समय-समय पर उपग्रहों को अद्यतन करने की आवश्यकता होती है। टेरकॉम के साथ दिक्कत यह है कि यह कम रोशनी या सपाट जगह पर प्रभावी तरीके से काम नहीं करती है और विस्तृत अद्यतन मानचित्रों पर निर्भर रहती है। अधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में कूट संकेत (एन्क्रिप्टेड सिग्नल) भी बेअसर हो सकते हैं। एआई एल्गोरिद्म भी अनजानी परिस्थितियों में सीमित सूचनाओं के अभाव में बेअसर हो सकता है। इनमें कोई भी पूरी तरह पुख्ता नहीं है जिसे देखते हुए एक एकीकृत, अनुकूलित संचालन प्रणाली की जरूरत महसूस की जा रही है।

अजय कुमार

इन्हीं कारणों से क्वांटम मैग्नेटिक नेविगेशन सिस्टम (क्यूएमएनएस) का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। क्यूएमएनएस पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में बदलाव का पता लगाने के लिए क्वांटम सेंसर का इस्तेमाल करती है और इसके लिए उसे जीपीएस या उपग्रह से प्राप्त संकेतों पर भी निर्भर नहीं रहना पड़ता है। क्यूएमएनएस अति संवेदनशील क्वांटम मैग्नेटोमीटर सेंसरों को चुंबकीय विसंगति मानचित्रों और एक इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम के साथ जोड़ देता है। इन मानचित्रों की मदद से स्थानीय चुंबकीय मापों की तुलना कर क्यूएमएनएस प्रणाली जीपीएस की गैर-मौजूदगी में भी सटीक स्थान का पता लगा सकती है।

माना जा रहा है कि आने वाले समय में हवाई युद्ध और पानी के अंदर चलाए जाने वाले अभियानों दोनों में क्यूएमएनएस तकनीक का महत्त्व काफी बढ़ सकता है। पानी के अंदर परंपरागत उपग्रह आधारित संचालन प्रणाली जैसे जीपीएस उपलब्ध नहीं हैं। सैन्य पनडुब्बियों, मानव रहित पनडुब्बी वाहन (यूयूवी) और गहरे समुद्र में काम आने वाले टोही प्लेटफॉर्म आदि के लिए क्यूएमएनएस सटीक एवं भटकाव मुक्त संचालन में मदद करती हैं। रक्षा क्षेत्र के अलावा यह तकनीकी आर्थिक गतिविधियों जैसे समुद्र के अंदर खनन, तेल अन्वेषण, समुद्र के अंदर केबल के निरीक्षण में भी काफी उपयोगी हो सकती है। समुद्री संसाधनों और समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा की होड़ दुनिया के देशों के बीच तेज होने के बाद क्यूएमएनएस समुद्र के भीतर स्वायत्त अभियानों को बढ़ावा देने में एक तेजी से उभरती अहम तकनीक साबित हो रही है।

स्पिन-एक्सचेंज रिलेक्सेशन-फ्री मैग्नेटोमीटर के विकास के बाद 1990 के दशक के अंत में क्वांटम मैग्नेटिक सेंसिंग में दुनिया की दिलचस्पी बढ़ने लगी। स्पिन-एक्सचेंज रिलेक्सेशन-फ्री मैग्नेटोमीटर पुराने सेंसर की तुलना में कहीं अधिक सटीक अनुमान के साथ अत्यंत छोटे चुंबकीय क्षेत्र का पता लगा सकते हैं। 2010 के मध्य में अमेरिका और चीन में रक्षा एजेंसियों ने सैन्य इस्तेमाल (खासकर पनडुब्बियों और जीपीएस वंचित माहौल के लिए) के लिए क्वांटम मैग्नेटोमीटर के इस्तेमाल में निवेश करना शुरू कर दिया। 2020 के दशक की शुरुआत से छोटे नमूनों का परीक्षण हुआ है और उन्हें अगली पीढ़ी के इनर्शियल और समुद्र के अंदर के नेविगेशन प्रणाली से जोड़ा जा रहा है। माना जा रहा है कि अमेरिका की रक्षा उन्नत अनुसंधान परियोजना एजेंसी 2027 के बाद पनडुब्बियों और स्टेल्थ ड्रोन नेविगेशन के लिए पूरी तरह तैयार प्रणाली का उपयोग शुरू कर सकती है। अमेरिका ने हाल में जो परीक्षण किए हैं उनसे पता चलता है कि एक्यूएनएवी (क्वांटम नेविगेशन और एआई का संयुक्त रूप) समर्थित जीपीएस रहित विमानों का संचालन व्यावसायिक विमानों के संचालन से भी अधिक असरदार रहा है। दूसरे परीक्षणों से भी पता चला है कि क्यूएमएनएस सटीकता के मामले में जीपीएस को पीछे छोड़ सकता है। कई देश क्यूएमएनएस के रणनीतिक महत्त्व को समझते हुए इसके विकास को आगे बढ़ा रहे हैं। उदाहरण के लिए चीन ने उच्च संवेदनशीलता वाले एटॉमिक मैग्नेटोमीटर का प्रदर्शन किया है और 2017-2018 की शुरुआत में क्वांटम नेविगेशन सिस्टम के फील्ड ट्रायल का दावा भी किया। माना जा रहा है कि यह सीमित परिचालन उपयोग के करीब है, खासकर पनडुब्बियों के मामले में। ब्रिटेन और जर्मनी भी अगली पीढ़ी की पनडुब्बियों और पानी के अंदर चलने वाले मानव रहित वाहनों में क्वांटम सेंसर लगाने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं।

भारत धीरे-धीरे क्यूएमएनएस तकनीक हासिल कर रहा है और उसके मौजूदा प्रयास शुरुआती चरण के अनुसंधान और नमूने के विकास पर केंद्रित हैं। 6,000 करोड़ रुपये की लागत से चल रहे राष्ट्रीय क्वांटम मिशन में क्वांटम सेंसिंग को काफी अहमियत दी जा रही है। रक्षा अनुसंधान एवं शोध संगठन (डीआरडीओ) ने अति सूक्ष्म परमाणु घड़ी विकसित करने के लिए क्वांटम टेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर की स्थापना की है। यह परमाणु घड़ी जीपीएस वंचित वातावरण में संचालन के लिए महत्त्वपूर्ण है। डीआरडीओ एक परमाणु मैग्नेटोमीटर के विकास में भी लगा हुआ है। आईआईटी बंबई एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाले मैग्नेटोमीटर के साथ क्वांटम सेंसर विकसित करने की भी प्रक्रिया में है। पोर्टेबल मैग्नेटोमीटर ड्रोन में इस्तेमाल किए जा सकते हैं। कई स्टार्टअप कंपनियां अन्य दूसरी जरूरी तकनीक के विकास में भी लगी हुई हैं। उल्लेखनीय है कि जून 2025 में क्यूबीट्स (एक डीप टेक स्टार्टअप) को 'अदिति 2.0' डिफेंस चैलेंज के तहत भारतीय नौसेना के लिए क्वांटम पोजिशनिंग सिस्टम विकसित करने के लिए 25 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। यह एक क्रियाशील क्यूएमएनएसन नमूना तैयार करने की दिशा में भारत की तरफ से किया गया पहला गंभीर प्रयास है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

भारत में तेजी से बढ़ रहा क्वांटम शोध, जीवंत स्टार्टअप तंत्र और उभरती रक्षा जरूरतों का समागम स्थानीय क्यूएमएनएस तकनीक को आगे बढ़ाने का एक अनोखा अवसर प्रदान कर रहा है। भारत के पड़ोस में इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली एवं उपग्रह रोधी हथियारों की तैनाती के कारण केवल उपग्रह-आधारित प्रणाली पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। क्यूएमएनएस सामरिक लिहाज से महत्त्वपूर्ण हिंद महासागर में पानी के अंदर से मौजूद महत्त्वपूर्ण जानकारियां हासिल करने के लिए भी जरूरी है। इतना ही नहीं, क्यूएमएनएस तकनीक गहरे समुद्र में खोज, खनन और लचीले परिवहन ढांचे के माध्यम से भारत की समुद्री अर्थव्यवस्था को भी ताकत दे सकती है। फिलहाल 'नाविक' का अधिक विस्तार नहीं हो पाया है इसलिए क्यूएमएनएस भारत को परंपरागत संचालन प्रणाली से एक संप्रभु, पुख्ता तकनीक की तरफ कदम बढ़ाने की दिशा में उपयुक्त अवसर दे रही है।

(लेखक यूपीएससी के चेयरमैन और पूर्व रक्षा सचिव हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

आपका पक्ष

बढ़ रहे सड़क हादसे, कार्रवाई की जरूरत

देश में सड़क हादसों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी है और इन हादसों में जान गंवाने वालों की संख्या में भी तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इसके बाद भी लोग कोई सबक नहीं ले रहे हैं। सरकार भी इन हादसों पर लगाम लगाने में असफल दिखाई पड़ रही है और न ही वाहन चालक सड़क हादसों से सबक लेकर लापरवाही बरतना छोड़ रहे हैं। सड़क पर कोई ओवर स्पीड का शिकार हो रहा है, तो कोई ओवरटेक का, तो कोई नशे में स्वयं के साथ-साथ निर्दोषों की भी बलि ले रहा है। वहीं कोई सड़कों पर स्टंटबाजी कर अपनी तथा दूसरों की भी जान ले रहा है। कई नाबालिग भी तेज गति से वाहन चलाने से बाज नहीं आ रहे हैं। सड़क में बने गड्ढे भी मौत का कारण बन रहे हैं। इसके लिए सरकार को सड़कों की मरम्मत करानी चाहिए तथा लोगों को भी वाहन जिम्मेदारी के साथ चलाने की आवश्यकता है। लोगों को संकल्प लेना होगा कि न ओवर स्पीड, न बेतरतीब ओवर टेक, न स्टंटबाजी, न नशे में ड्राइविंग, न नाबालिगों के हाथों में वाहन देने जैसा कार्य करेंगे। सरकार को भी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ मौत के गड्ढों व जानलेवा सड़कों की बेतरतीब डिजाइन को सुधारना होगा। इसके साथ ही लोगों को भी जागरूक होने की आवश्यकता है।

हेमा हरि उपाध्याय, उज्जैन

नई दिल्ली के बुराड़ी में सोमवार को एक कार बारिश के कारण सड़क धंसने से बने गड्ढे में जा गिरी

बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन के बाद मतदान की हो अनुमति

मतदान प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने हेतु मतदाता सूची को अद्यतन किया जाना जरूरी है ताकि पात्र व्यक्ति ही मतदान करें। साथ ही आधार नंबर से एपिक नंबर को लिंक किया जाना चाहिए। बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन (थंब इम्प्रेशन) से पुष्टि करने के बाद ही मतदान की अनुमति मिले। मतदान स्थल पर सीसीटीवी कैमरे लगे हो और संपूर्ण प्रक्रिया की वीडियोग्राफी की जाए। ऑनलाइन मतदान की सुविधा भी हो। मतदान और मतगणना के तत्काल बाद जारी आंकड़ों में समरूपता हो। राजनीतिक दलों द्वारा दी जा रही सभी मुफ्तखोरी की योजनाएं चुनावी वर्ष में बंद हो क्योंकि यह मतदान के लिए रिश्वत है।

मोहित सोनी, कुक्षी

आधार सत्यापन से हो मतदान

मतदान की पूरी प्रक्रिया बेहतर करने के लिए पूरे देश के मतदाताओं का सत्यापन आधार कार्ड और किसी एक नागरिकता प्रमाणपत्र द्वारा किया जाए। किसी एक नागरिक के एक से अधिक वोटर कार्ड होंगे तो आधार द्वारा पता चल जाएगा। मतदान के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं। 70 वर्ष से अधिक वरिष्ठ लोगों को घर से मतदान करने की सुविधा दी जाए। मुफ्त सुविधाओं द्वारा मतदाताओं को लालच देने पर कानून बना कर रोक लगाई जाए। उम्मीदवार द्वारा आचार संहिता का उल्लंघन करने पर उसकी उम्मीदवारी या चुनाव निरस्त किया जाए और उसका प्रचार करने वालों द्वारा उल्लंघन पर उस व्यक्ति और उम्मीदवार दोनों पर भारी जुर्माना लगाया जाए। मतदान ईवीएम से ही जारी रखा जाए। चुनाव आयोग के बारे में झूठी जानकारी प्रचारित करने वालों पर मुकदमा चलाकर त्वरित सजा दी जाए।

ललित दुबे, रतलाम

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो – पीटीआई

रूस के मिसाइल हमले से सोमवार को यूक्रेन के खारकीव में एक बहुमंजिला आवासीय इमारत में आग लग गई जिसके बाद अग्निशमन कर्मियों ने राहत एवं बचाव अभियान चलाया।